मौजी जीवन

मौजी जीवन

नोसोव

प्र भा त प्र का श न

प्रकाशक :

प्रभात प्रकाशन

मथुरा

अनुवादक :

यादवचन्द्र जैन ऐम०

मुद्रक :

सुभाष प्रिन्टिंग प्रेस,

मथुरा

१९५७ ई०

मूल्य :

पाँच रुपया

आवश्यक निर्णय

जब मिश्का और मैंने एक टीन के टुकड़े से उस वाष्प-इञ्जिन को बनाने का प्रयत्न किया तभी वैसा हुआ। मिश्का ने बरतन में जब अधिक पानी खौलाया तो वह फूट पड़ा और उसकी भाप से उसके हाथ जल गये। सौभाग्य से उसकी माँ ने अलकतरा का मरहम ठीक प्रकार से लगा दिया। वह अमोघ औषधि है। यदि तुम्हें विश्वास न हो तो स्वयं अनुभव कर देखो। किन्तु ध्यान रक्खो जैसे ही जलो उसे उस स्थान पर तुरंत रगड़ो नहीं तो छाले पड़ जायँगे।

तब, हमारे बाष्प-इञ्जिन में विस्फोट होने के पश्चात् मिश्का की माँ ने हमें उससे नहीं खेलने दिया और उसको कूड़े की बाल्टी में फेंक दिया। कुछ समय तो कुछ करने के सम्बन्ध में हम सोच भी न सके और बड़ी उदासी छाई रही।

वसन्त-ऋतु प्रारम्भ हो रही थी। बर्फ हर स्थान पर गल रही थी। पतली धाराओं में पानी नालियों में बह रहा था। वसन्त-कालीन चमकीला सूर्य खिड़कियों से झाँक रहा था। किन्तु मिश्का और मैं जैसे सील में बैठे थे। हमारा जोड़ा बड़ा मजेदार था। जब तक हम कुछ करते नहीं तब तक हमें प्रसन्नता नहीं होती थी। जब हमें कुछ करने को न होता तो हम पास बैठ जाते और तब तक शैतानी करते रहते जब तक कुछ करने को ढूँढ़ न लेते।

एक दिन मैं मिश्का के निकट आया और उसे पुस्तक में लीन पाया; उसका सिर उसके हाथों में टिका हुआ था। वह पढ़ने में इतना व्यस्त था कि उसने मेरे आने की आहट भी नहीं सुनी। मुझको द्वार को ज़ोर से खड़खड़ाना पड़ा तब उसने ऊपर देखा।

"ओह! तुम हो निकोलेदुज", उसने दाँत निकालते हुए कहा।

मिश्का मुझको मेरे सही नाम से कभी नहीं पुकारता था। औरों की भाँति मुझे कोल्या न कहकर वह नये-नये नाम आविष्कार करके विलक्षण नामों से मुझे पुकारता था जैसे निकोला, मिकोला, मिकूला सेल्यियानोविच या मिकलुखा-मकलाई और एक बार उसने मुझे निकोलाकी कहकर भी पुकारा। प्रतिदिन मुझे अपने नये नाम से उत्तर देना पड़ता। किन्तु उसे वह प्रिय था अतः मैं विरोध भी नहीं करता था।

"हाँ," मैंने कहा—"मैं हूँ। यह कौन सी पुस्तक है?"

"बड़ी मजेदार किताब है", मिश्का ने कहा, "एक पुस्तक-विक्रेता के यहाँ से मैं आज प्रातःकाल ही लाया हूँ।"

मैंने उसे देखा। पुस्तक का नाम था—मुर्गी पालन। मुख-पृष्ठ पर एक मुर्गा व मुर्गी की तस्वीर थी और हर पृष्ठ पर मुर्गी के बच्चे रखने की टोकरियों के रेखाचित्र बने हुए थे।

"इसमें आकर्षक क्या है?" मैंने कहा! "यह तो मुझे एक प्रकार से विज्ञान की पुस्तक प्रतीत होती है।" "इसी से यह मजेदार है। इसमें तुम्हारे वे काल्पनिक किस्से-कहानियाँ तो हैं नहीं। इसमें तो हर वस्तु सत्य लिखी है। यह एक आवश्यक पुस्तक है।"

मिश्का ऐसा लड़का था जो प्रत्येक वस्तु की आवश्य-कता पर ज़ोर देता था। जब भी उसकी जेब में पैसे होते, वह इसी प्रकार की आवश्यक वस्तुयें ले आता, जैसी यह पुस्तक। एक बार वह एक पुस्तक ले आया जिसका नाम था 'चेबीशेव्स इनवर्स ट्रिगनोमेट्रिक फंक्शन्स एण्ड पालीनोम्स'। वह उसका एक अक्षर भी नहीं समझ पाया अतः उसने उसे यह सोचकर रख दिया कि जब वह समझने के योग्य हो जावेगा तब पढ़ेगा। तब से वह अलमारी में इस प्रतीक्षा में रक्खी है कि मिश्का कब चतुर होगा।

जिस पृष्ठ को वह पढ़ रहा था उसको उसने चिह्नित कर दिया और बन्द करके रख दिया।

"तुम इससे हर प्रकार की बातें जान सकते हो", वह बोला—"कैसे मुर्गी के बच्चों, बत्तखों, हंसों, मुर्गियों को बढ़ाया जा सकता है—इत्यादि।"

"तुम किसी भी प्रकार मुर्गियों के बढ़ाने की बात नहीं सोच सकते ?"

"नहीं, किन्तु मैं उसे इसीलिये पढ़ना चाहता हूँ। वह बताती है कि तुम इन्क्यूबेटर नामक एक मशीन का निर्माण कर सकते हो जो बिना मुर्गी के भी बच्चे से लेती है।"

"ह: !" मैंने कहा—"प्रत्येक व्यक्ति यह जानता है। इसमें नया क्या है ? विगत वर्ष जब मैं माँ के साथ खेतों पर था तब मैंने उसे देखा था। वह पांच सौ से एक हज़ार अंडे तक एक दिन में निकालती थी। उन्हें बाहर आने में एक पल भी नहीं लगता था।

"सच !" मिश्का ने चकित होकर कहा। "वह मैं नहीं जानता था। मैं सोचता था कि केवल पारिवारिक-मुर्गियाँ ही बच्चे दे सकती हैं। जब मैं गाँव में रहता था तब मैंने बहुत सी सेती हुई मुर्गियाँ देखी थीं।"

"ओह ! मैंने स्वयं बहुत देखी हैं", मैंने कहा—"किन्तु, इन्क्यूबेटर उनसे कहीं अच्छा है। एक मुर्गी एक बार में अधिक से अधिक एक दर्जन बच्चे से सकती है किन्तु एक इन्क्यूबेटर हज़ारों निकाल सकती है।"

"मैं जानता हूँ", मिश्का बोला—"यही सब कुछ इस पुस्तक में है। और एक दूसरी बात भी है। एक मुर्गी जब बच्चे पालती है तब अंडे नहीं दे सकती किन्तु यदि तुम्हारे पास एक इन्क्यूबेटर है तो मुर्गी निरन्तर बच्चे दे सकती है।"

तब हम बैठ गये और गणना करने लगे कि सारी मुर्गियाँ यदि बच्चे न पालें तो कितने अण्डे दे सकती हैं। लगभग इक्कीस दिन सेकर एक मुर्गी बच्चे तैयार करती है और यदि तुम उस समय को जोड़ो

जब वह उनकी देख-भाल करती है तो तुम पाओगे कि दुबारा बच्चे देने में उसे तीन मास लग जाते हैं।

"तीन महीने—यानी नब्बे दिन," मिश्का बोला—"यदि मुर्गी को बच्चों की देखभाल न करनी पड़े तो एक मुर्गी साल में नब्बे अंडे अधिक दे सकती है—यदि वह एक अंडा रोज भी दे। तब एक छोटा सा फार्म, जिसमें केवल दस मुर्गियाँ हों, साल में नौ सौ अंडे तैयार कर सकता है। और यदि तुम एक बड़ा फार्म जिसमें हजार मुर्गियाँ हों, तैयार करो तो तुम्हारे पास नब्बे हजार अंडे होंगे। जरा सोचो तो! नब्बे हजार अंडे!"

इन्क्यूबेटर के लाभ को लेकर हम घन्टों विचार करते रहे।

तब मिश्का बोला—"हमको एक छोटा इन्क्यूबेटर बनाना चाहिये और कुछ अंडे तैयार करने चाहिये।"

"हम कैसे बना सकते हैं?" मैंने प्रश्न किया—"यह कोई सरल काम नहीं है, ऐसा मेरा विश्वास है।"

"मैं सोचता हूँ, यह वैसा कठिन नहीं है," मिश्का बोला—"पुस्तक बताती है कि तुम कैसे करो। मुख्य बात यह है कि इक्कीस दिन तक अंडों को गरम रखना होगा तब बच्चे अपने आप तैयार होंगे।"

हमारे अपने मुर्गी के बच्चे होंगे इस कल्पना से मैं बड़ा प्रसन्न हुआ। मुझे प्रत्येक प्रकार के पशु-पक्षियों से बड़ा स्नेह था। मिश्का और मैंने पिछली शरद-ऋतु में, स्कूल में, प्रकृतिवादी-बाल-कक्ष में भाग लिया था और अपने प्रिय पशु-पक्षियों में काम भी किया था। किन्तु तब मिश्का के मन में वाष्प-इञ्जिन बनाने की बात आई और हमने उस कक्षा में जाना छोड़ दिया। वितृया स्मिरननोव,

कक्षा के मानीटर ने कहा कि यदि हम लोग कोई काम न करेंगे तो वह सूची से हमारा नाम काट देगा। किन्तु हमने प्रार्थना की कि हमें और अवसर दिया जाय।

मिश्का ने यह सोचने की चेष्टा की कि जब अपने मुर्गी के बच्चे तैयार हो जावेंगे तो कितना अच्छा होगा।

"वे बड़ी प्यारी चीज होंगे," वह बोला—"हम लोग रसोईघर के एक कोने में उन्हें रख देंगे, उन्हें खाना देंगे तथा उनकी देखभाल करेंगे।"

"किन्तु वैसा करने के पहले हमें बहुत कुछ करना होगा। यह मत भूलो कि उनके तैयार होने में तीन सप्ताह लगते हैं", मैंने कहा।

"उससे क्या? हमें तो केवल एक इन्क्यूबेटर तैयार करना होगा और बच्चे अपने आप निकल आवेंगे।"

मैंने एक पल सोचा। मिश्का ने उत्कंठा से मुझे देखा। मैंने देखा कि वह तुरन्त कार्य में संलग्न हो जाने के लिये उतावला है।

"ठीक है," मैं बोला—"हमें और कुछ करने को है भी नहीं। चलो, वही चेष्टा करें।"

"मैं जानता था कि तुम तैयार हो जाओगे," मिश्का ने प्रफुल्लित होते हुए कहा—"वैसे मैं स्वयं ही वह सब कर लेता किन्तु बिना तुम्हारे उसका मजा अधूरा रहता।"

आकस्मिक रुकावट

"वस्तुतः हमें इन्क्यूबेटर ही बनाने की क्या आवश्यकता है? हम अंडों को एक बर्तन में रख कर स्टोव पर रख देंगे," मैंने प्रस्ताव किया।

"ओह ! नहीं, वह ठीक नहीं होगा," मिश्का बोला—"अग्नि तीव्र हो जायगी और अंडे नष्ट हो जायँगे। इन्क्यूबेटर में समान ताप रहता है—१०२ डिग्री।"

"१०२ डिग्री क्यों ?"

"क्योंकि यही उस पारिवारिक-मुर्गी का ताप होता है जो बच्चों को सेते समय बैठती है।"

"तुम कहना चाहते हो मुर्गियों के भी तापमान होता है ? मेरा विचार था कि केवल बीमारी की अवस्था में मनुष्यों के ही तापमान होता है।"

"प्रत्येक के तापमान होता है, पागल, चाहे वे बीमार हों या न हों। केवल, जब तुम बीमार होते हो तो तापमान चढ़ जाता है।"

मिश्का ने पुस्तक खोली और एक चित्र की ओर संकेत किया।

"देखो ! इन्क्यूबेटर कैसा होता है ? यह एक पानी का वर्तन है और यह पाइप है जो टैंक से उस बक्स तक जाता है जहाँ अंडे रहते हैं। टैंक को नीचे से गरम किया जाता है। गरम पानी पाइप के द्वारा जाता है जो अंडों को गरम करता है। देखो ! वह थर्मामीटर है जिससे तुम तापमान को देख सकते हो।"

"तब हमको टैंक कहाँ से मिलेगा ?"

"हमें टैंक की आवश्यकता नहीं। हम उसके लिये खाली टीन व्यवहार में ला सकते हैं। हमको तो केवल एक छोटा इन्क्यूबेटर चाहिए।"

मैंने प्रश्न किया—"हम उसे गरम कैसे करेंगे ?"

"किसी भी साधारण पैराफीन-लैम्प से ! एक पुराना, वहाँ, सायबान में पड़ा है।"

तब हम सायबान में गये और वहाँ कूड़े के ढेर को खखोलते रहे। वहाँ पुराने जूते थे, रबड़ के खोल थे, टूटे छाते थे, एक तांबे का पाइप था, बहुत सी बोतलें थीं और थे खाली टीन के डिब्बे। हमने समस्त ढेर को खखोल डाला तब हमें एक खाने में लैम्प रखखा दीख पड़ा। मिश्का ऊपर चढ़ा और उसे उतार लाया। उस पर धूल जमी थी किन्तु शीशा ठीक था। हमें बड़ी प्रसन्नता हुई जब हमने देखा कि उसके अन्दर एक बत्ती भी थी। हमने लैम्प उठाया; वह तांबे का पाइप, बड़ा टीन और सब सामान लेकर रसोई में आये।

पहले मिश्का ने लैम्प साफ किया, उसमें पैराफीन भरा और जलाकर देखा कि वह कैसे जलता है। वह ठीक जलता रहा और उसकी बत्ती भी इच्छानुसार कम-अधिक करने के लिए ऊपर-नीचे होती रही। तब हमने लैम्प को इन्क्यूबेटर पर काम करने के लिये पूरी तरह ठीक कर लिया। प्रारम्भ करने के लिए हमने प्लाई-वुड का एक बक्स तैयार किया—इतना बड़ा कि उसमें सुगमता से पन्द्रह अंडे आ सकें। तब उसके चारों ओर हमने रुई की तह लगाई जिससे अंडे ठीक व गरम बने रहें। तब थर्मामीटर के लिए स्थान छोड़कर हमने बक्स का ढक्कन तैयार किया। अब आगे हीटर बनाना था। हमने टीन का एक डब्बा लिया और उसमें ऊपर-नीचे दो छेद किये। ऊपर के छेद में हमने पाइप फिट किया और इन्क्यू-बेटर बक्स की ओर उसको खोला तथा पाइप को अन्दर कर दिया। अब पाइप को मोड़कर उसको आसानी से घुमा देने के बाद टीन के नीचे वाले छेद में जमा दिया। वह मुड़ा हुआ ट्यूब बक्स के अन्दर एक प्रकार का रेडियेटर सा बन गया।

टीन का डब्बा गरम हो इसके लिये उसके नीचे लैम्प

बैठालना था। मिश्का प्लाईवुड की एक टोकरी उठा लाया। हम उसके सिरे पर खड़े हुए, उसके उपर एक गोल छेद बनाया और उस पर इन्क्यूबेटर रख दिया। अब टीन उस छेद के ठीक ऊपर था और लैम्प उसके नीचे ।

अन्त में, सब चीज़ तैयार हो गई। हमने टीन में पानी भर दिया और लैम्प जला दिया। टीन का पानी और पाइप गरम होने लगा। थर्मामीटर का पारा ऊपर उठने लगा और थोड़ी ही देर में ताप-मान १०२ डिग्री पहुँच गया। मिश्का की माँ यदि उस समय न आ जाती तो वह और भी बढ़ जाता।

"तुम दोनों यहाँ क्यों हो ? सब तरफ पैराफीन को गन्ध आ रही है," उसने कहा।

"यह इन्क्यूबेटर है," मिश्का ने उत्तर दिया।

"इन्क्यूबेटर क्या ?"

"तुम जानती हो, एक चीज़ जो अंडे सेती है और मुर्गी के बच्चे निकालती है।"

"मुर्गी के बच्चे ? तुम क्या कहते हो ?"

"माँ ! देखो, मैं तुम्हें बताऊँगा कि यह कैसे होता है ? तुम अंडों को यहाँ रक्खो और लैम्प को यहाँ।"

"लैम्प किसलिए है ?"

"इसको गरम करने के लिए। यह लैम्प परम आवश्यक है अन्यथा यह काम नहीं करेगा।"

"वाहियात ! मैं तुम लोगों को पैराफीन-लैम्प से नहीं खेलने दूँगी। तुम लोग उसको बिगाड़ दोगे, और पैराफीन में आग लग जायगी। नहीं-नहीं, मैं ऐसा नहीं करने दूँगी।"

"कृपा करके, माँ ! हम लोग सतर्क रहेंगे।"

"नहीं, मैं कभी भी जलते हुए लैम्प से तुम लोगों को नहीं खेलने दूँगी। अब आगे और क्या करोगे ? पहले तुम लोगों ने खौलते पानी का तमाशा बनाया था। अब क्या घर में आग लगाओगे ?"

मिश्का ने खुशामद की और माँ को समझाने की निरर्थक चेष्टा भी।

मिश्का भयानक रूप से परेशान था।

"भाड़ में जाय इन्क्यूबेटर," वह बोला।

हमने एक मार्ग निकाला

उस रात्रि मैं देर तक नहीं सोया, सारी रात अपने इन्क्यूबेटर के सम्बन्ध में सोचता रहा। पहले तो मैंने सोचा कि मैं अपनी माँ से अनुमति लूँ कि वह मुझे पैराफीन-लैम्प जलाने दे। किन्तु यह भी ठीक नहीं था क्योंकि वह आग से बहुत डरती थी और मुझसे छिपा कर दियासलाई रक्खा करती थी। अब आगे क्या ? मिश्का की मां लैम्प उठा ले गई है और अब वह हमको लौटायेगी भी नहीं।

घर में सब लोग गहरी नींद में सो रहे थे किन्तु मैं अपना

सर खपा रहा था। तब अचानक एक भव्य विचार मेरे मन में आया। पानी गरम करने के लिए क्यों न हम बिजली का लैम्प व्यवहार में लावें ?

मैं तुरन्त उठा और चुपचाप डेस्क के लैम्प को जलाकर और उँगली से छूकर देखा कि वह गरम होता है अथवा नहीं। वह तुरन्त गरम हो गया और शीघ्र ही इतना गरम कि मैं अपनी उँगली उस पर नहीं रख सका। तब मैंने लैम्प के सामने दीवार के सहारे थर्मामीटर लगाया। पारा चोटी तक ऊपर चढ़ गया। नि:सन्देह लैम्प ने पर्याप्त गरमी उत्पन्न की।

अपने को ठीक करके मैंने थर्मामीटर टाँग दिया और बिस्तर पर चला गया। संयोगवश, उस रात के बाद थर्मामीटर ने, आगे ठीक काम नहीं किया। कुछ समय बाद हमने भूल को पाया। जब कमरे में शीत होता तो वह शून्य से भी १०४ डिग्री ऊपर चला जाता और जब वह ज़रा भी गरम होता तो उसका पारा चोटी तक ऊपर चढ़ जाता और तब तक चढ़ा रहता जब तक वह हिला कर नीचे न किया जाता। वह ८६ डिग्री से नीचे कभी नहीं गया अत: जाड़ों में थर्मामीटर रख कर स्टोव जलाने की आवश्यकता नहीं थी। अस्तु, लैम्प के समक्ष रख कर मैंने उसे बिगाड़ दिया था।

दूसरे दिन मैंने उस सम्बन्ध में मिश्का से कहा। उसकी परीक्षा करने का हमने तुरन्त निर्णय किया। जब हम लोग स्कूल से घर लौटे तो मैंने माँ से कहा कि वह बहुत दिनों से पड़े पुराने डेस्क-लैम्प को हमें देवे। तब हमने पैराफीन-लैम्प के स्थान पर उसे बक्स के नीचे खड़ा किया। मिश्का ने उसके नीचे कुछ पुस्तकें रख दीं जिससे वह पानी के बर्तन के निकट आ जाय। तब हमने

उसका स्विच ऊपर कर दिया और उस थर्मामीटर को देखना प्रारम्भ किया जिसे मिश्का अपने घर से लाया था।

बहुत देर तक कुछ नहीं हुआ। पारा वैसा ही बना रहा। हमें डर था कि हमारे प्रयोग से कुछ भी लाभ न होगा। किन्तु थोड़ी देर में पानी गरम होने लगा और पारा चढ़ने लगा। लगभग आध घंटे में वह १०२ डिग्री तक चढ़ गया। प्रसन्नता में मिश्का ने अपने हाथ भींच लिये और चिल्लाया—"हुर्रे! इतना ही तापमान हमें बच्चों के लिये चाहिए। आखिर बिजली भी पैराफीन की भाँति ही अच्छी है।"

"वह तो है ही," मैंने कहा—"सचमुच वह कहीं अच्छी है क्योंकि पैराफीन-लैम्प से आग लगने का भय है जब कि बिजली सुरक्षित है।"

तभी हमने देखा कि पारा और ऊपर चढ़ कर १०४ डिग्री तक पहुँच गया है।

"हः", मिश्का चिल्लाया—"देखो! वह ऊपर चढ़ रहा है।"

"जैसे भी हो हमें उसे रोकना चाहिये," मैंने कहा।

"हाँ! किन्तु कैसे? अगर वह पैराफीन लैम्प होता तो तुम उसकी बत्ती धीमी कर देते।"

"बिजली में बत्तियाँ नहीं होतीं!"

"मैं तुम्हारी बिजली के बारे में अधिक नहीं जानता," ऊबते हुए मिश्का बोला।

मैं भी दुःखी हो रहा था। "मेरी बिजली! वह मेरी बिजली क्यों है?"

"जनाब ! बिजली व्यवहार करने का तुम्हारा मस्तिष्क था, क्या नहीं था ? देखो ! वह १०८ तक पहुँच गया है। यदि यही होता रहा तो सारे अराडे भुन जायंगे और एक भी बच्चा नहीं निकलेगा।"

"एक मिनट रुको !" मैंने कहा—"हमको लैम्प नीचा करने दो जिससे पानी गरम होने से तापमान तेजी से नहीं चढ़ेगा और वह नीचा हो जावेगा।"

तब हमने सब से मोटी पुस्तक लैम्प के नीचे से हटा ली और क्या होता है—इसकी प्रतीक्षा करते रहे। पारा धीरे-धीरे उतर कर १०२ डिग्री तक आ गया। हमने संतोष की साँस ली।

"अब सब ठीक है," मिश्का बोला—"अब हम लोग ठीक से बच्चे उत्पन्न कर सकेंगे। मैं अपनी मां से कुछ पैसे लूँगा और तुम भी घर जाकर अपनी मां से लो। तब उन्हें मिला कर हम एक दर्जन अण्डे ख़रीदेंगे।"

मैं घर भागा और मां से अराडे खरीदने के लिए पैसे मांगे। पहिले तो माँ यही नहीं समझ सकी कि मैं अराडे क्यों चाहता हूँ तब थोड़ी देर में उसकी समझ में आया और मैंने बताया कि अराडे मुझे अपने इन्क्यूबेटर के लिए चाहिये।

"उससे कुछ लाभ नहीं होगा। यह कोई सरल काम नहीं है कि बिना मुर्गी के बच्चे तैयार हो जावें। तुम केवल अपना समय नष्ट करोगे' मां बोली।"

किन्तु जब तक उसने पैसे दे नहीं दिये मैं ज़िद करता ही रहा।

"ठीक है, किन्तु अराडे लाओगे कहाँ से ?" मां ने अन्त में कहा।

"दूकान से ! और कहाँ से ?" मैंने कहा ।

"ओह ! नहीं, उससे कुछ नहीं होगा," माँ बोली—"तुमको ताज़ा दिये हुए अण्डे चाहिये अन्यथा बच्चे पैदा नहीं होंगे ।"

मैं मिश्का के पास दौड़ा और उसे यह बताया ।

"मैं भी क्या गधा हूँ," मिश्का बोला—"ठीक तो है । यही तो किताव कहती है, मैं तो भूल ही गया था ।"

तव हमने निश्चय किया कि हम निकटवर्ती गांव में जायेंगे जहाँ हम लोग पिछली गर्मियों में गये थे । चची नताशा के पास, जो एक मकान मालकिन हैं, मुर्गियाँ रहती हैं और हमें विश्वास है कि उनसे ताज़ा दिये हुए अण्डे मिल जायंगे ।

अगले दिन

जीवन बड़ा मधुर है । कल तक हमने कहीं भी जाने की कल्पना तक नहीं की थी और आज चची नताशा के गांव की ओर जाने के लिए हम लोग ट्रेन में बैठे हैं । हम उन अण्डों को शीघ्रातिशीघ्र चाहते थे जिससे तुरन्त बच्चे पैदा करें किन्तु लग रहा था ट्रेन धीरे-धीरे रेंग रही थी और हमें यात्रा में बड़ा समय लग गया । यह सदैव होता है । जब तुम्हें किसी कार्य की शीघ्रता हो तो निश्चय ही देर होगी । इसके अतिरिक्त हमें यह भी चिन्ता थी कि सम्भवतः जब तक हम लोग पहुँचें चची नताशा कहीं चली गई हों, तो । तब हम क्या करें ?

किन्तु सब ठीक होता रहा । चची नताशा घर पर ही थीं । वह हम लोगों को देखकर अत्यधिक प्रसन्न हुईं । उन्होंने सोचा कि हम लोग उनके पास ठहरने आये हैं ।

"हमें बड़ा अच्छा लगता, किन्तु इस समय नहीं," मिश्का ने कहा—"छुट्टियों के पहले नहीं।"

"हम कार्यवश आये हैं," मैंने कहा—"हमें कुछ अंडे चाहिए।"

"क्या मामला है ? क्या शहर में अंडे नहीं मिलते ?" चची नताशा ने प्रश्न किया।

"हाँ, वहाँ हैं," मिश्का बोला—"किन्तु, हमें ताज़े अंडे चाहिये।"

"और क्या तुम्हें दूकानों में ताज़े अंडे नहीं मिलते ?"

"जब मुर्गी अंडे देती है तो वे सीधे दूकान पर नहीं पहुँच जाते, क्या पहुँच जाते हैं ?" मिश्का ने प्रश्न किया।

"हाँ, सीधे नहीं।"

"यही बात है," मिश्का चिल्लाया।

"जब तक बहुत नहीं हो जाते तब तक वे इकट्ठे किये जाते हैं और इसमें एक या दो सप्ताह लग जाता है; तब वे दूकानों में पहुँचते हैं।"

"लेकिन, इससे क्या ? अंडे दो हफ्ते में नष्ट थोड़े ही हो जाते हैं," चची नताशा ने कहा।

"ओह ? नहीं। किन्तु हमारी पुस्तक कहती है कि यदि अंडा दस दिन से अधिक का हो जावे तो तुम उससे बच्चे नहीं उत्पन्न कर सकते।"

"ओह, उत्पन्न करना ! वह दूसरी बात है," चची नताशा बोली। "हाँ ! तुमको उसके लिए बिलकुल ताज़े अंडे चाहिए। किन्तु जो अंडे तुम खाते हो वे एक दो महीने तक नष्ट नहीं होते। तुम लोग मुर्गी पालने तो नहीं जा रहे ? क्या पाल रहे हो ?"

"हाँ, तभी तो हम यहाँ आये हैं," मैंने कहा।

"किन्तु तुम अंडों से बच्चे कैसे उत्पन्न करोगे ?" चची नताशा ने प्रश्न किया—"तुमको बच्चे देने वाली मुर्गी चाहिए।"

"नहीं हम विना मुर्गी के वैसा करेंगे। हमने एक इन्क्यूबेटर बनाया है।"

"इन्क्यूबेटर ? बहुत अच्छा ! किन्तु इन्क्यूबेटर से तुम क्या करना चाहते हो।"

"हम मुर्गी के छोटे बच्चे चाहते हैं।"

"किसलिए ?"

"ओह केवल आनन्द के लिए," मिश्का ने उत्तर दिया। "बिना बच्चों के बड़ा नीरस रहता है। आप, गाँव वालों के पास सब कुछ है—मुर्गियाँ, बत्तखें, गायें, सुअर। किन्तु हम लोगों के पास कुछ नहीं है।"

"हाँ, किन्तु हम लोग गाँवों में रहते हैं। तुम लोग नगरों में ठीक से गाय नहीं रख सकते।"

"किन्तु किसी भी प्रकार के जानवर तो रक्खे जा सकते हैं।"

"शहरों में नहीं, बड़ी कठिनाई होती है," चची नताशा ने कहा।

"हमारे मकान में एक व्यक्ति है जो चिड़ियों को पालता है।" मिश्का ने कहा "उसके पास बहुत से पिंजड़े हैं जिनमें वह अनेक प्रकार के पक्षी जैसे कैनरी चिड़िया, गोल्ड फिन्च और मैना भी रखता है।

"हाँ, वह उन्हें पिंजड़ों में रखता है, किन्तु तुम लोग अपने मुर्गी के बच्चों को पिंजड़ों में तो नहीं रक्खोगे, या रक्खोगे ?"

"नहीं, हम लोग उन्हें रसोईघर में रक्खेंगे। हम लोग उनके

लिए बहुत अच्छा स्थान ढूँढ़ेंगे। आप परेशान न हों। केवल जो सबसे अच्छे अंडे हों वो आप हमें दे दें, बहुत, बहुत ताजे अन्यथा उनसे कुछ पैदा न होगा।"

"बहुत अच्छा ? तुमको वो मिलेंगे। जिस प्रकार के तुम्हें चाहिए, मैं जानती हूँ। वे उतने ही ताजे होंगे जितने हो सकते हैं।"

चची नताशा रसोई घर में गईं और बड़े सुहावने पन्द्रह अंडे ले आईं। प्रत्येक बहुत चिकना व बिलकुल सफेद था। उनमें कोई चिह्न तक न था। कोई भी देख सकता था कि वे ताजे थे। उन्होंने उन्हें हमारी डलिया में रख दिया और ऊपर से एक ऊनी शाल उढ़ा दिया जिससे वे मार्ग में ठंडे न हो जावें।

"शुभ-विदा और शुभ-कामना, तुम लोगों को" चची नताशा ने,

जैसे ही हमको फाटक के बाहर जाते हुए देखा, कहा। अँधेरा होने वाला था अत: मैं और मिश्का जल्दी स्टेशन की ओर लपके।

जब हम घर पहुँचे तो बहुत देर हो गई थी और मां ने बहुत डाँटा। मिश्का की माँ भी बिगड़ी। किन्तु हमने उसका बुरा नहीं माना। हमको जो बात कष्ट देती थी वह थी कि हम लोग उतनी रात को बच्चे उत्पन्न करने का कार्य प्रारम्भ नहीं कर सकते थे। हमें अगले दिन तक प्रतीक्षा करनी पड़ी।

प्रारम्भ

जैसे ही हम लोग अगले दिन, स्कूल से लौट कर आये हमने अण्डे इन्क्यूबेटर में रख दिये। उनके लिए उसमें पर्याप्त स्थान था तथा कुछ बचा भी रहा।

हमने इन्क्यूबेटर का ढक्कन बन्द कर दिया, थर्मामीटर स्थिर कर दिया और ज्यों ही हम लैम्प का बटन दबाने को थे कि मिश्का बोला— "हमको पहले इसका संतोष कर लेना चाहिए कि हमने हर काम कर लिया है। क्या ऐसा है कि हमको पहले इन्क्यूबेटर गर्म करना चाहिये तब अण्डे रखना चाहिए ?"

"मैं इस सम्बन्ध में कुछ नहीं जानता" मैंने कहा—"हमें पुस्तक देखनी चाहिये कि उसमें क्या है।"

मिश्का किताब उठा लाया और पढ़ने लगा। वह देर तक पढ़ता रहा तब बोला—"तुम जानते हो, हमने लगभग उनका दम ही घोट दिया है।"

"किसका दम घोट दिया है ?"

"अण्डों का ! ऐसा पता चलता है कि वे जीवित हैं।"

"जीवित ?" मैंने बिस्मित होकर दोहराया।

"हाँ। यह है जो पुस्तक में लिखा है : अण्डों में प्राण है हालांकि उनमें जीवन का कोई बाह्य चिह्न नहीं होता है। किन्तु यह अभी स्पष्ट नहीं है। किन्तु जब अण्डे गर्म किये जाते हैं तो उनमें जीवन के चिह्न प्रारम्भ होते हैं और शनैः शनैः भ्रूण बढ़ना प्रारम्भ हो जाता है और अन्ततः परिन्दों का रूप प्रकट होता है। अन्य प्राणियों की भाँति अण्डे साँस लेते हैं........ देखो, हमारी तुम्हारी ही भाँति अण्डे सांस लेते हैं।"

"निरर्थक," मैंने कहा—"हम और तुम मुंह से साँस लेते हैं। किन्तु अण्डे कहाँ से साँस लेते हैं ?"

"हम मुंह से साँस नहीं लेते। हम फेफड़ों से साँस लेते हैं। मुंह के द्वारा फेफड़ों को साँस मिलती है किन्तु अण्डे अपने खोलों से साँस पाते हैं। हवा खोलों में भरती है और इस प्रकार वे साँस लेते हैं।"

"ठीक है, वे जितनी चाहें साँस लें। हम लोग उन्हें रोक नहीं रहे, क्या रोक रहे हैं ?" मैं बोला।

"किंतु एक बक्स में वे साँस कैसे लेंगे ? जब तुम साँस लेते हो तो कार्बन डाइआक्साइड (अन्दर की गंदी हवा) छोड़ते हो। यदि तुम किसी बक्स में बंद कर दिये जाओ तो थोड़ी देर बाद इतनी कर्बान डाइआक्साइड निकाल दोगे कि दम घुटने लगेगा।"

"मैं क्यों किसी बक्स में बंद होऊं ? मैं अपना दम नहीं घोटना चाहता," मैंने कहा।

"हाँ, न ही अण्डे, किन्तु हमने तो उन्हें बक्स में बन्द कर दिया है।"

"इसके लिए हम क्या करें ?"

"हमें रोशनदान चाहिए," मिश्का बोला। "सब असली इन्क्यूबेटरों में रोशनदान होते हैं।"

हमने सब अण्डे बक्स से निकाल लिए। कोई टूटे नहीं यह ध्यान करते हुए हमने उन्हें डलिया में रख दिया। तब मिश्का एक बर्मा ले आया और उसने अनेक छोटे-छोटे छेद बना दिए जिनसे कार्बन डाइआक्साइड निकल सके।

जब यह पूरा हो गया तो हमने पुनः अण्डे बक्स में रख दिये और ढक्कन बन्द कर दिया।

"एक मिनट ठहरो," मिश्का बोला—"हमें अभी यह ज्ञान नहीं है कि हम क्या पहले करें—इन्क्यूबेटर पहले गरम करें या अण्डे पहले रक्खें।"

उसने फिर पुस्तक पढ़ी।

"हम फिर ग़लत हैं। पुस्तक बताती है कि इन्क्यूबेटर के अन्दर की हवा नम होनी चाहिए। यदि वह तर नहीं होगी तो अण्डों के अन्दर का तरल पदार्थ खोल से उड़ जायगा और भ्रूण मर जायगा। तुमको इन्क्यूबेटर के अन्दर पानी के बर्तन रखने होंगे। पानी भाप बन कर उड़ता है और वायु को नम बनाता है," मिश्का ने कुछ रुक कर कहा।

तब हमने सब अण्डे फिर निकाल लिए और पानी के गिलास अन्दर रखने की चेष्टा की किन्तु वे इतने ऊँचे थे कि ढक्कन बंद नहीं हो पाया। हमने इधर-उधर कोई छोटी वस्तु ढूँढ़ी किन्तु नहीं मिली। तब मिश्का को ध्यान आया कि उसकी छोटी बहन माया के पास लकड़ी के खिलौनों के छोटे-छोटे प्याले हैं।

"क्यों न हम माया से कुछ छोटे प्याले ले आयें ?" उसने कहा।

"बड़ा अच्छा विचार है। जाओ और ले आओ," मैंने कहा।

मिश्का ने माया की तश्तरियाँ पा लीं और चार छोटे प्याले ले आया। वे ठीक माप के थे। हमने उन्हें पानी से भरा और चारों कोनों में एक एकइन्क्यूबेटर के अन्दर रख दिये। किन्तु जब हमने दुबारा अण्डे अन्दर रखने की चेष्टा की तो उसमें केवल बारह अण्डों का स्थान ही शेष रह गया था। तीन बाहर रह गये।

"इससे कुछ नहीं। बारह बच्चे भी बहुत हैं। अब हमें और क्या करना है ? हमको इन्हीं को खाना देने को बहुत सा भोजन चाहिए," मिश्का बोला।

तभी माया आ गई और जब उसने देखा कि उसके प्याले इन्क्यूबेटर के अन्दर हैं तो उसने हल्ला मचाना प्रारम्भ किया।

"सुनो !" मैंने कहा, "हम उन्हें रक्खे नहीं ले रहे हैं। आज से ठीक इक्कीस दिन बाद तुम उन्हें ले लेना। यदि तुम चाहो तो इसके बदले हम तुम्हें तीन अण्डे अभी दे सकते हैं।"

"मैं अण्डे क्यों लूँ ? वे खाली हैं।"

"नहीं। वे वैसे नहीं हैं। उनमें चिकनाई है, सफेदी है और सब कुछ है।"
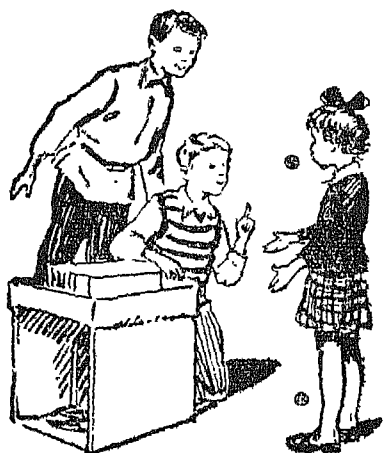
"किन्तु उनमें बच्चे नहीं हैं।"

"जब बच्चे निकल आयेंगे तो हम तुम्हें उनमें से एक दे देंगे।"

"सचाई और ईमानदारी से?"

"हाँ, हाँ! लेकिन अब भाग जाओ और हमें तंग मत करो! हमको काफी परिश्रम करना पड़ रहा है कि कैसे प्रारम्भ करें! हमें पता नहीं कि पहले अण्डे रक्खें तब इन्क्यूबेटर गरम करें या पहले उसे गरम करें तब अण्डे रक्खें।"

मिश्का ने पुनः पुस्तक का अवलोकन किया और बताया कि तुम कैसे भी कर सकते हो।

"ठीक है," मैंने कहा—"बिजली का बटन दबाओ और प्रारम्भ करने दो।"

"मुझे कुछ भय लगता है," मिश्का बोला—"मैं कहूँ क्या? अच्छा तो बटन तुम दबाओ क्योंकि मैं सदैव ही अभागा रहा हूँ।"

"तुमने ऐसा क्यों सोचा?"

"मैं केवल भाग्यहीन हूँ, बस। मैं कभी सफल नहीं होता।"

"यहां भी यही हाल है," मैंने कहा—"मुझ पर भी हमेशा दुर्भाग्य बना रहता है।"

तब हम अपने जीवन की प्रत्येक बात को सोचते रहे और यह निष्कर्ष निकाला कि हम बड़े दुर्भागी हैं।

"इस प्रकार हम दोनों को ही किसी कार्य को प्रारम्भ करने से कोई लाभ नहीं है। वह निश्चित असफल होगा," मिश्का ने कहा।

"हमें माया को बुलाना चाहिए।"

मिश्का अपनी बहन को बुला लाया।

"सुनो माया" मैंने कहा "तुम भाग्यवान हो ?"

"ओह ! हाँ ?"

"क्या तुमको जीवन में कभी असफलता मिली ?"

"कभी नहीं ?"

"ठीक ! तो तुम उस लैम्प को इस बक्स के अन्दर देख रही हो ?"

"हाँ।"

"ठीक ! तो जाओ और प्लग लगा आओ।"

माया इन्क्यूबेटर के पास गई और डोरी में प्लग जोड़ दिया।

"और क्या ?" उसने पूछा।

"कुछ नहीं" मिश्का ने उत्तर दिया—"अब भाग जाओ, फिर तंग मत करना।"

माया हल्ला मचाते हुये चली गई। हमने जल्दी से ढक्कन बंद कर दिया और थर्मामीटर का निरीक्षण प्रारम्भ किया। पहले पारा ६४ डिग्री पर स्थिर था किन्तु धीरे-धीरे वह बढ़ा और ६८ तक जा पहुँचा। जब वह बढ़कर ८६ पर पहुँचा तो कुछ गिरा। लगभग आध घण्टे में वह ६५ डिग्री तक पहुँच कर रुक गया। मैंने लैम्प के नीचे एक किताब और रख दी, तब पारा फिर ऊपर चढ़ने लगा। वह १०२ डिग्री पहुँच गया और बढ़ता ही गया।

"रोको" मिश्का चिल्लाया—"देखो ! वह १०४ डिग्री तक है। किताब मोटी अधिक है।"

मैंने वह किताब हटा ली और उससे पतली रख दी। पारा नीचे उतरने लगा। वह १०२ डिग्री पहुँच गया, तब और उतर गया।

"वह अधिक पतली है" मिश्का बोला—"मैं कापी ले आऊँ।"

वह कापी के लिये भागा और लाकर लैम्प के नीचे रख दी। पारा फिर चढ़ने लगा। १०२ डिग्री पर पहुँच कर वह रुक गया। हमने अपनी आँखें थर्मामीटर पर स्थिर कर दीं। पारा थमा हुआ था।

"यह" मिश्का बुदबुदाया "हमें ऐसा स्थिर तापमान इक्कीस दिन तक रखना होगा। सोचो, हम रख सकते हैं?"

"अवश्य" मैंने कहा।

"और यदि नहीं; तो हमारा सारा कार्य व्यर्थ।"

"निश्चित, हम करेंगे। कौन कहता है हम नहीं करेंगे?"

हम सारे दिन अपने इन्क्यूबेटर के पास बैठे रहे। हमने रसोई में ही पढ़ा और आँखें थर्मामीटर पर लगाये रहे। वह १०२ डिग्री पर स्थिर था।

"सब चीज़ ठीक चल रही है," मिश्का कौए की बोली में कह गया। "यदि हम यही बनाये रहे तो ठीक इक्कीस दिन में हमारे बच्चे तैयार हो जावेंगे। सोचो तो! बारह नन्हे मुलायम मुर्गी के बच्चे? कैसा मजेदार परिवार वे बनायेंगे।"

तापमान गिरा

मैं और लड़कों की बावत नहीं जानता किन्तु मैं रविवार को देर तक सोना पसन्द करता हूँ। रविवार को न तो स्कूल जाना

होता है न कहीं की जल्दी रहती है। केवल सप्ताह में एक दिन ही तो कोई बिस्तर पर लेट सकता है। मुझसे पूछो तो इसमें कोई बुराई नहीं है। अगला दिन ही रविवार था किन्तु किन्हीं कारणोंवश मैं जल्दी उठ बैठा। सूर्य अभी नहीं निकला था किन्तु प्रकाश फैल चुका था। ज्योंही घूमकर मैं पुनः सोने जाने की तैयारी में था कि मुझे इन्क्यूबेटर का ध्यान आया। मैं बिस्तर पर से कूदा, शीघ्र कपड़े पहने और मिश्का के यहाँ भागा। मिश्का ने स्वयं ही द्वार खोला।

"शि इ इ इ इ" उसने चुप करते हुए कहा। "तुम हरेक को जगा दोगे ! इतनी सुबह आने की तथा घंटी बजाने की क्या बात थी; जैसे घर में आग लग गई हो।"

वह अपनी रात्रि-पोशाक में नंगे पैर था।

"किन्तु तुम भी तो जग गये, क्या नहीं ?" मैंने प्रश्न किया।

"जग गये ?" मिश्का गुर्राया—"अभी तक बिस्तर पर गया ही नहीं।"

"क्यों नहीं गये ?"

"केवल उस लपलप करते इन्क्यूबेटर के कारण।"

"क्या कुछ हुआ ?"

"यह गिरता जा रहा है।"

"किन्तु वह गिरता क्यों है ? कल तो बहुत अच्छी तरह से स्थिर था।"

"इन्क्यूबेटर नहीं, पागल ! मेरा अभिप्राय है थर्मामीटर।"

"वह गिरता क्यों है ?"

"वही तो मैं जानना चाहता हूँ ! जब मैं बिस्तर पर गया तब सब ठीक था। किन्तु मैं अपने बच्चों का ध्यान करते-करते देर तक नहीं सोया। थोड़े समय पश्चात् मैं 'इन्क्यूबेटर कैसे चल रहा है' यह देखने के लिए उठ बैठा और रसोई में गया। जानते हो— थर्मामीटर १०१ डिग्री तक गिर गया था। तब मैंने दूसरी पुस्तक रक्खी और जब तक वह १०२ डिग्री तक नहीं पहुँचा गया, देखता रहा। यह अच्छा हुआ कि मैं सोया नहीं, अन्यथा मेरे सब बच्चे समाप्त हो जाते। बिस्तर पर लौट जाने की अपेक्षा मैंने यह उचित समझा कि यह देखूँ कि क्या होता है। मैंने प्रतीक्षा की : एक घंटा बीता, दो बीते, किन्तु तापमान में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। विना कुछ किये अकेले बैठे रह कर मैं थक गया तब मैंने एक पुस्तक ढूँढ़ी और पढ़ता रहा। किन्तु मुझे कहानी में इतना आनन्द आया कि थर्मामीटर के सम्बन्ध में सब कुछ भूल गया। जब मैंने फिर देखा तो वह गिर कर १०१ डिग्री हो गया था। उसने एक डिग्री और कम किया। तब मैंने लैम्प के नीचे एक कापी और रक्खी और तापमान पुनः ऊपर चढ़ गया। तुम देखो ! अब वह स्थिर है, किन्तु तुम कह नहीं सकते कि बाद में क्या होगा ?"

"अब तुम सो जाओ ?" मैंने कहा—"अब मैं यहाँ बैठूँगा और इसको देखूँगा ?"

"अब बिस्तर पर जाने से लाभ क्या है ? देखो कितना प्रकाश फैल गया है ?" मिश्का बोला।

वह आहिस्ते से पंजों के बल चल कर अपने कमरे में गया और अपने कपड़े ले आया। उसने कपड़े पहनना प्रारम्भ किया,

अपनी कमीज और पाजामा पहना और जूते का फीता बाँधा और तब अपने कोच पर लेटा और सो गया।

"मैं उसे जगाऊँगा नहीं," मैंने सोचा—"किसी को थोड़ा समय तो अवश्य ही सोना चाहिए।"

मैं इन्क्यूबेटर के सामने जा बैठा और थर्मामीटर को देखता रहा। कुछ समय पश्चात् कुछ न करते रहने के कारण मैं थकने लगा अतः मैं वहीं 'मुर्गी-पालन' पुस्तक ले आया और इन्क्यूबेटर के सम्बन्ध में कुछ पढ़ता रहा। उससे ज्ञात हो रहा था कि यदि अण्डे एक ही स्थिति में रक्खे रहेंगे तो भ्रूण खोल में एक ही ओर चिपक कर रह जावेगा और तब बच्चे बिगड़े हुए और भद्दी शक्ल के पैदा होंगे अथवा बड़े दुबले-पतले और कमज़ोर होंगे। अतएव भ्रूण खोल में चिपक न जाय इसके लिए हर तीन घंटे में अण्डों को अदलते-बदलते रहना चाहिए।

मैंने इन्क्यूबेटर को खोला और अण्डों को पलटना प्रारम्भ किया। तभी मिश्का जाग गया। जब उसने देखा कि मैंने इन्क्यूबेटर खोला है तो वह कूद पड़ा और चिल्लाया—"तुम शैतान! क्या कर रहे हो?"

मुझे इतना डर लगा कि मैंने एक अण्डा गिरा दिया होता।

"कुछ नहीं," मैंने कहा।

"'कुछ नहीं' से क्या मतलब? तुमने इन्क्यूबेटर क्यों खोला? क्या मैंने तुम्हें यह नहीं बताया था कि हमें इक्कीस दिन तक प्रतीक्षा करनी है। मेरा ख्याल है कि तुम समझते हो कि हम अण्डे एक ही दिन में निकाल सकते हैं।"

"नहीं, मैं इस प्रकार की बात नहीं सोचता हूँ," मैंने उत्तर

दिया। मैंने हर प्रकार से उसे समझाने की चेष्टा की कि अण्डों को हर तीन घण्टे में बदलते रहना चाहिए किन्तु उसने कुछ नहीं सुना और अपनी पूरी आवाज से चिल्लाता रहा।

"ढक्कन बन्द करो! बन्द करो, मैं कहता हूँ! कोई एक मिनट को भी नहीं सो सकता! जैसे ही मैंने नेत्र बन्द किए तुमने इन्क्यूबेटर खोल डाला।"

"मैं उनको बिलकुल नहीं देख रहा था," मैंने कहा।

उसने शीघ्रता से आगे बढ़ कर ढक्कन को बन्द कर दिया किन्तु तब तक मैं सब अण्डे पलट चुका था।

मिश्का इतनी जोर से चिल्लाया था कि उसके पापा और ममी दोनों दौड़ते हुए उधर आये।

"यह क्या शोर हो रहा है?" वे बोले।

"यह गधा गया और इन्क्यूबेटर को खोल डाला," मिश्का बोला।

मैंने समझाया कि अण्डों को बदलते रहना चाहिए अन्यथा वे एक ओर ही दबे रह जायंगे।

"किसने कहा?" मिश्का ने प्रश्न किया—"मुर्गियाँ क्या ऐसे ही बच्चे नहीं सेतीं।"

"मुर्गियाँ सदैव बच्चा सेते समय अण्डा पलट देती हैं।" मिश्का की माँ बोली।

"वह मूर्ख मुर्गी क्या समझ सकती है कि अण्डों को बदलना चाहिए।"

"वे ऐसी मूर्ख नहीं हैं जैसा तुम उन्हें समझते हो," मिश्का की माँ बोली। मिश्का एक क्षण तक सोचता रहा।

"अब मैं समझ रहा हूँ। मैंने स्वयं उन्हें अंडे बदलते देखा है," उसने अन्त में कहा—"मुझे सदैव आश्चर्य होता था कि ये अपनी नाक से अंडों को क्यों सरकाती हैं।"

मिश्का के पापा हँसे। "मूर्ख लड़का!" उन्होंने कहा—"तुमने मुर्गी के नाक कब देखी है?"

"चोंच, मेरा मतलब है। किन्तु वही तो मुर्गी की नाक है।"

तापमान बढ़ा

दस बजे के आसपास थर्मामीटर का पारा किसी कारण से ऊपर चढ़ा। अतः हम लोगों को एक कापी हटा कर लैम्प नीचा करना पड़ा।

"मैं यह सब नहीं कर सकता," मिश्का ने परेशान होते हुए कहा—"सारी रात तापमान गिरता रहा और अब बढ़ रहा है। विचित्र बात है।"

हमको भोजन के पूर्व लैम्प को एक बार और नीचे करना पड़ा क्योंकि तापमान बढ़ता गया। भोजन के बाद—मिश्का सोफे पर पैर फैला कर सो गया। वहाँ बैठे-बैठे मुझे अकेलेपन का अनुभव होता रहा। एक आदमी की तस्वीर उस समय बनाना जब वह सो रहा हो, सदा ही बड़ा सरल होता है क्योंकि वही एक ऐसा समय होता है जब वह निश्चल रहता है।

थोड़ी देर बाद कोस्त्या देवीयात्कीन अन्दर आया। जब उसने मिश्का को सोते हुए पाया तो बोला—"उसे क्या हुआ, क्या कुछ बीमार है?"

"नहीं," मैंने कहा—"वह केवल एक नींद ले रहा है।"

कोस्त्या गया और कन्धे हिलाकर उसे जगाने लगा।

"हः इस समय उचित है कि तुम जग जाओ!"

मिश्का उठ पड़ा—"ऐं! क्या सुबह हो गई।"

"सुबह?" कोस्त्या हँसा—"अब शीघ्र ही संध्या होने वाली है। उठो और खेलने के लिए बाहर आओ। देखो! सूर्य चमक रहा है और चिड़ियाँ चहचहा रही हैं।"

"हमारे पास खेलने का समय नहीं है। हमारे पास काम है," मिश्का बोला।

"क्या काम?"

"अत्यावश्यक कार्य।"

मिश्का इन्क्यूबेटर तक गया, थर्मामीटर देखा और एक कराह छोड़ी:

"तुम क्या कर रहे हो? जैसे बाजार में बकरी बैठी रहती है, ऐसे बैठे हो! देखो, क्या हुआ?"

मैंने थर्मामीटर देखा। वह १०३ डिग्री बता रहा था।

मिश्का ने तुरन्त लैम्प नीचा कर दिया।

"मैं शर्त बद सकता हूँ कि यदि मैं न जाग जाता तो तुम उसे १०४ डिग्री तक चढ़ने देते," वह गर्माया।

"यह मेरा क़सूर नहीं है कि तुम हर समय सोते रहो," मैंने कहा।

"क्या यह मेरा क़सूर है कि मैं सारी रात नहीं सोया?"

"यह मेरा भी दोष नहीं है," मैंने कहा।

कोस्त्या ने इन्क्यूबेटर देखा। "यह क्या है ? दूसरा भाप का इञ्जिन ?" उसने प्रश्न किया।

"उल्लू मत बनो ! क्या यह भाप का इञ्जिन दिखाई देता है ?"

"तब वह क्या है ?"

"सोचो।"

"हूँ !" अपना सर खुजलाते हुए कोस्त्या बोला—"तब यह पनचक्की होगी।"

"ग़लत। फिर कोशिश करो।"

"ठीक है। तब यह किसी प्रकार का जेट-इञ्जिन होगा।"

मिश्का और मैं खिलखिलाते रहे। "तुम सौ साल तक सोचते रहोगे और नहीं बता पाओगे।"

"तब यह क्या है ?"

"एक इन्क्यूबेटर।"

"आह ! एक इन्क्यूबेटर ! मैं समझा ! किन्तु यह है किस कार्य के लिये ?"

"इन्क्यूबेटर किस काम आता है, तुम नहीं जानते ?" मिश्का ने प्रश्न किया—"यह मुर्गी के बच्चे उत्पन्न करता है।"

"किस प्रकार उत्पन्न करता है ?"

मिश्का बिगड़ पड़ा—"अंडों से, मूर्ख !"

"ओह ! अंडे, सच ! मुर्गी के स्थान पर। मैं उसके सम्बन्ध में जानता था। किन्तु मेरा ख्याल था कि उसे हेनकूपेटर कहते हैं। और अंडे कहाँ हैं ?"

"यहाँ , बक्स के अन्दर ।"

"लाओ देखें।"

"यह नहीं करना है। यदि हम सबको योंही दिखायेंगे तो हम बच्चे नहीं उत्पन्न कर पायेंगे। अगर तुम चाहते हो तो उस समय तक प्रतीक्षा करो जब वे बच्चे बन जांय। तब तुम देख लेना।"

"और यह होगा कब ?"

मिश्का और मैंने जल्दी-जल्दी सोचा और तब यह समझ में आया कि आठ बजे अंडों को बदलना है।

कोस्त्या ने कहा कि वह प्रतीक्षा करेगा। तब मिश्का शतरंज ले आया और हम खेलने बैठ गये। सत्यता यह है कि वह कुछ आनन्दप्रद नहीं होता जब तीन व्यक्ति शतरंज का खेल खेलें, क्योंकि उसे केवल दो ही खेल सकते हैं, तीसरा सलाह दे सकता है, और यह कुछ रुचिकर नहीं होता है। यदि तुम जीत जाओ तो वे कहेंगे कि सहायता से जीते और यदि हार जाओ तो वे तुम पर हँसेंगे और कहेंगे कि बताने पर भी नहीं जीत सकते। शतरंज एक ऐसा खेल है कि उसे दो व्यक्तियों को ही खेलना चाहिये। उसमें किसी की कोई छेड़छाड़ नहीं होनी चाहिये।

अन्त में घड़ी ने आठ बजाये। मिश्का ने इन्क्यूबेटर खोला और अंडों को घुमाना प्रारम्भ किया। कोस्त्या खड़ा-खड़ा उन्हें गिनता रहा।

"दस, ग्यारह," उसने गिना—"ग्यारह अंडे। तो तुम्हें ग्यारह बच्चे प्राप्त होंगे ?"

"ग्यारह?" मिश्का ने विस्मय में दोहराया—"तुमने ग़लती की है। वे बारह हैं। सबको भाड़ में झोंको, किसी ने एक चुरा लिया है। यह बड़ी लज्जा की बात है। अंडे चोरी न जायें इसके लिये कोई सो भी नहीं सकता। तुम क्या कर रहे थे?" वह मुझ पर झल्लाया—"तुम तो देख रहे थे?"

"वही मैं कर रहा था। मैं निरन्तर यहीं रहा। हम फिर गिनें। कोस्त्या ने सम्भवत: ग़लती की हो।"

मिश्का ने फिर अंडे गिने। वे तेरह थे।

"यह देखो," वह गुर्राया—"अब यहाँ एक फालतू है। किसने उसको यहाँ रक्खा?"

तब मैंने गिना। वे ठीक-ठीक बारह थे।

"ऐसे गिनने वाले" मैंने कहा—"जो ठीक से बारह तक नहीं गिन सकते।"

"ओह! प्रिय!" खेदसहित मिश्का ने कहा—"अब हमने सब मिला दिये। एक अंडा रह गया था जिसको मैंने नहीं पलटा था; लेकिन पता नहीं कौन सा रह गया।"

जब वह याद कर रहा था तभी माया दौड़ती हुई आयी। उसने सीधे इन्क्यूबेटर के निकट जाकर और सबसे बड़े अंडे की ओर संकेत कर कहा—"वहाँ, वह मेरा बच्चा है।"

मिश्का और मैं बिगड़े और उसे ढकेल दिया। "यदि तुम फिर यहाँ आकर गड़बड़ी करोगी तो तुमको एक भी बच्चा नहीं मिलेगा," हमने कहा। माया ने चिल्लाना प्रारम्भ कर दिया।

"तुमने मेरे प्याले लिये हैं; मैं जितनी देर चाहूँ देख सकती हूँ।"

"ओह ? क्या तुम देख सकती हो ? अच्छा देखो तो" उसके पीछे ज़ोर से दरवाजा बन्द करते हुए मिश्का ने कहा ।

"तब हमें क्या करना होगा ?" मैंने कहा—"तब क्या हम दुबारा सब अंडों को घुमायें ?"

"न, हम ऐसा न करें यही ठीक है या फिर जिस प्रकार वे रक्खे हैं, उन्हें हम पलट दें । अच्छा तो, एक को वैसा ही रहने दो जैसा वह था । अगली बार हम विशेष सतर्क रहेंगे ।"

"तुमको अंडों पर चिह्न बनाते जाना चाहिए जिससे पता चले कि तुम कौनसा बदल चुके और कौन सा नहीं," कोस्त्या ने सुझाव दिया ।

"कैसे ?" मिश्का ने प्रश्न किया ।

"तुम उस पर × चिह्न बना सकते हो ।"

"नहीं, मैं उन पर अंक लिख दूँगा ।" मिश्का एक पैंसिल उठा लाया और उसने एक से बारह तक सब पर नम्बर डाल दिये ।

"अगली बार जब हम बदलेंगे तो सब नम्बर नीचे हो जायेंगे और बाद में सब पुनः ऊपर हो जायेंगे । अब आगे ग़लती करने का कोई अवसर नहीं रहेगा," मिश्का ने कहा और इन्क्यूबेटर को बन्द कर दिया ।

ज्यों ही कोस्त्या जाने लगा मिश्का बोला—

"इन्क्यूबेटर के सम्बन्ध में स्कूल में किसी से मत कहना ।"

"क्यों ?"

"ओह ! मुझे पता नहीं·········शायद वे हम पर हँसेंगे ।"

"वे हँसेगे क्यों ? इन्क्यूबेटर तो बड़े लाभ की वस्तु है।"

"हाँ, तुम नहीं जानते कि लड़के कैसे होते हैं। वे कहेंगे कि जैसे हम अंडा देने वाली मुर्ग़ी हैं। और तब मान लो कि यह असफल हो जाय। तब हमारी उस मजाक का कभी अन्त न होगा।"

"किन्तु यह असफल क्यों होगा ?"

"कुछ भी हो सकता है। जैसा तुम सोचते हो यह वैसा सरल नहीं है। हम जो कुछ भी जानते हैं सम्भव है वही ग़लत कर रहे हों। अतः तुम उसके बारे में मौन रहना।"

"ठीक है, मैं चुप रहूँगा," कोस्त्या बोला।

माया की ड्यूटी

"हाँ ! सब कैसा चल रहा है ?" मैंने अगले दिन मिश्का से सुबह मिलते ही प्रश्न किया।

"सुन्दर, सिवाय इसके कि समस्त रात्रि पुनः तापमान गिरता रहा।"

"तुम कहना चाहते हो कि कल रात को भी तुम नहीं सोये ?"

"नहीं, अब मैं अधिक स्फूर्ति का अनुभव कर रहा हूँ। मैंने अलार्म-घड़ी को अपने तकिये के नीचे रख छोड़ा है जो मुझे हर तीन घंटे पश्चात् जगा देती है।"

"किन्तु यह तापमान गिरता क्यों है ? दिन में तो वह स्थिर रहा," मैंने कहा।

"इसका कारण मैं जानता हूँ," मिश्का बोला—"रात्रि में अपेक्षाकृत सर्दी रहती है अतः इन्क्यूबेटर शीघ्र ठंडा हो जाता है। किन्तु दिन

में वह गरम रहता है यही कारण है कि तापमान दिन में ऊँचा व रात में नीचा हो जाता है।"

"हम उसे कैसे सँभालेंगे ?" मैंने प्रश्न किया—"जब हम स्कूल में होंगे तो तापमान कौन देखेगा ?"

"सम्भवतः माया ; हम उससे पूछ लें।"

मिश्का ने माया को बुलाया और उससे पूछा कि क्या वह इस बात पर राजी हो जायगी कि उन लोगों के स्कूल जाने पर वह इन्क्यूबेटर की देखभाल करती रहे।

"नहीं, मैं नहीं देखूँगी," माया ने उत्तर दिया—"कल तो तुमने मुझे कमरे के बाहर ढकेल दिया और आज चाहते हो कि मैं तुम्हारी सहायता करूँ।"

"इधर देखो," मैंने कहा—"तुम बच्चों को मरने तो नहीं देना चाहतीं या मरने देना चाहती हो ? यदि हम उनकी देख-भाल नहीं करेंगे तो वे और उनके साथ तुम्हारा मुर्ग़ी का बच्चा भी मर जायगा। हम अपने लिए कुछ नहीं चाहते, वह तो बच्चों की बात है।"

जब मैंने उसके सामने इस प्रकार की बात रक्खी तो वह उसे मना न कर सकी। जो कुछ करना था, मैंने उसे समझा दिया। "यह थर्मामीटर देखो," मैंने कहा "पारे को ठीक १०२ डिग्री पर रुके रहना है। तुम याद रक्खोगी ?"

"मैं याद रक्खूँगी।"

अधिक सुरक्षा के लिए मैंने एक लाल पेंसिल ली और उस स्थान पर चिह्न बना दिया जहाँ पारा स्थिर करना था।

"अब, तुम देखो, कुछ ऊटपटांग न कर देना। जैसे ही पारा

किंचित ऊपर उठे तुम तुरन्त लैम्प के नीचे से एक कापी हटा देना। जब लैम्प नीचे कर दी जाती है तो तापमान भी नीचे उतर जाता है। समझीं ?" मैंने कहा।

"हाँ, मैं समझती हूँ।"

इसके पश्चात् मैंने उसे यह भी समझा दिया कि अंडे कैसे बदले जाते हैं; और उससे कहा कि जैसे ही घड़ी में ग्यारह का घंटा बजे, वह तुरन्त इन्क्यूबेटर खोल कर अंडे बदल दे।

माया सब समझ गई। इसकी पुष्टि करने के लिए कि माया सब समझ गई, मैंने उसको जो भी संकेत दिये थे वे उससे दोहरवाये। तब मैं और मिश्का स्कूल चले गये।

"हाँ, तुम्हारे इन्क्यूबेटर के क्या हाल हैं ?" हमारे क्लास में घुसते ही कोस्त्या ने प्रश्न किया।

"श श श !" मिश्का ने इधर-उधर देखकर कि कोई सुन तो नहीं रहा कोस्त्या को मना किया।

"मैं धीरे से कह रहा हूँ।"

"धीरे से कह रहे हो," मिश्का गुर्राया "या अपनी शक्ति भर चिल्ला कर कह रहे हो।"

"ठीक है, धीरे से बताओ। किन्तु मैं कहता हूँ कि मुझे औरों से कहने दो।"

"यदि तुम ऐसा करोगे तो इससे अच्छा होगा कि अब तुम न कभी हमारे यहाँ आना न हमसे मिलना। तुमने वचन दिया था कि इसका रहस्योद्घाटन नहीं करोगे और अब............"

"अच्छा ! मैं शान्त रहूँगा। सुनो ! मेरे मस्तिष्क में एक बड़ा

अनोखा विचार आया है। 'प्राकृतिक-इतिहास' के पाठ में, मैं मार्या पेत्रोवना से इन्क्यूबेटर के सम्बन्ध में कहूँगा। वे अत्यधिक प्रसन्न होंगी।"

"तुम इतना साहस करोगे! यदि तुम मार्या पेत्रोवना से कहोगे तो पूरा क्लास सुन लेगा।"

"ठीक है, मैं नहीं कहूँगा। मैं इतना चुप रहूँगा जितना एक शव।"

कोस्त्या ने अपना मुँह अपने हाथों से ढांप लिया और चला गया। लेकिन, तुम देखते हो कि, किसी से हमारे इन्क्यूबेटर के सम्बन्ध में कहने के लिए वह तड़प रहा था।

पाठ प्रारम्भ हुए। इन्क्यूबेटर सम्बन्धी चिन्ता से मिश्का कठिनाई से मुक्त हो रहा था—

"कहीं माया कुछ खराब न कर दे?"

"किन्तु वह क्या कर सकती है?"

"वह तापमान को देखना भूल सकती है।"

"किन्तु मैंने उसे कठिन निर्देश किए हैं।"

"सोचो, वह घर पर रुके रहने में थक जाय और बाहर खेलने चली जाय।"

"उसने वचन दिया है कि वह ऐसा नहीं करेगी।"

"यदि वह जाय और इन्क्यूबेटर से अपने प्याले निकाल ले?"

"वह ऐसा नहीं कर सकती।"

"बल्ब ही कहीं जल जाय, तब हम क्या करेंगे?"

प्राकृतिक-इतिहास के पाठ में हम लोगों ने इतनी बात-चीत की

कि मार्या पेत्रोवना ने हम दोनों को अलग-अलग कर दिया। मिश्का एक तूफान के बादल जैसा बैठा रहा और कमरे के दूसरे कोने से मुझ पर दृष्टि गड़ाये रहा। तब सारे मामले को और भी खराब करते हुए कोत्स्या अपना हाथ मुंह पर रखते हुए उच्च स्वर में चिल्लाया—

"ओ! मैं मार्या पेत्रोवना से तुम्हारे इन्क्यूबेटर के सम्बन्ध में कह रहा हूँ।"

मिश्का अपनी कुर्सी पर ऐंठता रहा और फुसफुसाते हुए बोला—"धोखेबाज! कपटी!"

किन्तु कोस्त्या ने पहले ही अपने हाथ हटा लिए थे।

"हाँ, कोस्त्या ?" मार्या पेत्रोवना ने प्रश्न किया।

मिश्का ने कोस्त्या पर मुट्ठियाँ बांध लीं।

"मार्या पेत्रोवना! इन्क्यूबेटर क्या है ?" कोस्त्या ने मानो अनभिज्ञता में प्रश्न किया।

मार्या पेत्रोवना ने समझाना प्रारम्भ किया कि इन्क्यूबेटर क्या है। उसने कहा कि बहुत युग बीते आदमी ने खोज की कि बच्चे देने वाली मुर्गी की सहायता के बिना अण्डों को एक निश्चित तापमान तक गरम कर बच्चे कैसे सेये जा सकते हैं ? यहाँ तक कि इजिप्ट और चीन में दो हजार वर्ष पूर्व इन्क्यूबेटर थे। पुरातत्व-वेत्ताओं ने पुराने इजिप्सियनों के बने इन्क्यूबेटर पाये हैं। वस्तुतः वे उतने बड़े इन्क्यूबेटर नहीं हैं और न उनसे एक साथ अधिक बच्चे ही उत्पन्न किये जा सकते हैं। आज कल ऐसे ऐसे इन्क्यूबेटर हैं जिनमें एक समय में हजारों अण्डे रखे जा सकते हैं।

"मैं जानता हूँ, दो लड़कों ने मिलकर एक इन्क्यूबेटर बनाया है," कोस्त्या बोला—"क्या आप समझती हैं कि वे कोई बच्चा उत्पन्न कर सकते हैं ?"

"तुम घर में बने इन्क्यूबेटर से मुर्गी के बच्चे उत्पन्न कर सकते हो," मार्या पेत्रोवना ने उत्तर दिया—"किन्तु उसमें बड़ा परिश्रम और कष्ट होता है। फैक्टरी के बने इन्क्यूबेटरों में प्रत्येक प्रकार की सुविधा होती है। उनमें तापमान व नमी को व्यवस्थित करने के साधन होते हैं किंतु घर के बने इन्क्यूबेटरों में अधिक देख-भाल की आवश्यकता है। यदि तुम्हारे मित्र अध्यवसायी व कटिबद्ध हैं तो वे अवश्य ही सफल होंगे। किंतु यदि वे किसी प्रकार से हमारे मिश्का और कोस्त्या की भांति हैं तो मुझे भय है कि कुछ लाभ न होगा।"

"क्यों ?" मिश्का उबल पड़ा।

"क्योंकि तुम लोग अत्यधिक उद्दण्ड हो और क्लास में भी स्थिरचित्त नहीं रहते हो," मार्या पेत्रोवना ने कहा और पाठ प्रारंभ कर दिया।

उस दिन जैसे ही हम लोग स्कूल से चलने वाले थे वित्या स्मिरनोव ने हमें रोक लिया और हमसे कहा कि प्रकृतिवादी-बाल-कक्ष में काम करने का हमारा दिन है।"

"ओह ! नहीं। हमारा कदापि नहीं," मिश्का ने यकायक उत्तेजित होते हुए कहा—"हमारे पास कोई समय नहीं है।"

"तुम्हारे पास किसी काम के लिए कोई समय नहीं होता। यदि तुम नहीं आ सकते तो तुमने 'कक्ष' में क्यों नाम लिखाया ? यह बसन्त है—सर्वाधिक व्यस्त मौसम ! हमको चिड़ियों के घोंसले बनाने हैं।"

"हम चिड़ियों के घोंसले बाद में बना लेंगे।"

"किन्तु, चिड़ियाँ जल्दी आने वाली हैं।"

"नहीं, वे नहीं आवेंगी।"

"तुम्हारा क्या अभिप्राय है ? क्या तुम समझते हो कि चिड़ियाँ तुम्हारी प्रतीक्षा करती रहेंगी।"

"वे थोड़ी प्रतीक्षा कर लेंगी," मिश्का बोला।

हम घर भागे ! हमारी सान्त्वना के लिए सब ठीक-ठाक था। बल्ब नहीं जला था और तापमान ठीक था। माया अपने स्थान पर इन्क्यूबेटर के समक्ष बैठी थी। हमने उसे धन्यवाद दिया और खेलने भेज दिया।

एक संकट

उस समय के पश्चात् जीवन का यह क्रम बन गया कि थर्मामीटर देखते रहना और अण्डों को प्रत्येक तीन घंटे बाद बदलना तथा पानी के टैंक व लकड़ी के प्यालों का पानी बदलना क्योंकि पानी शीघ्र भाप बन कर उड़ जाता था।

इसको कहते हैं कठिन परिश्रम; किन्तु उस पर भी तुम्हें निरन्तर देख-भाल करते रहना है अन्यथा कुछ न कुछ गड़बड़ अवश्य होगी—या तो तापमान अचानक ऊपर चला जावेगा या तुम अण्डे पलटना भूल जाओगे। तुमको हर समय अपना मस्तिष्क इन्क्यूबेटर पर ही लगाना होगा।

इसका सबसे बुरा प्रभाव मिश्का पर पड़ा क्योंकि उसे रात में भी देखना पड़ता था। उसने अच्छी नींद इधर ली ही नहीं थी और पतझड़ की मक्खी की भाँति कई दिन तक वह जैसे

शराबी की तरह घूमता रहा। वहुत बार वह, खाना खाने के पश्चात् रसोई में पड़े कोच पर ही नींद ले लेता और मैं अपनी ड्राइङ्ग की कापी लाकर सोते समय की उसकी तस्वीर खींचता रहता।

यह क्रम पाँच दिन व पाँच रात तक चलता रहा। छठे दिन मिश्का, पाठ के बीच में ही स्कूल में सो गया। नेज्दा विक्टोरोवना ने उसको ठीक ही डाँटा और सारे क्लास ने उसकी खिल्ली भी उड़ाई।

मिश्का ने उसका वहुत बुरा माना। प्रत्येक व्यक्ति दूसरों पर हँसना चाहता है किन्तु कोई अपने ऊपर हँसी पसन्द नहीं करता है।

सब से भद्दा यह हुआ कि मैं अपनी ड्राइङ्ग की कापी लड़कों को दिखाने के लिए उस दिन ले आया। उन्होंने अनुमान लगा लिया कि वह मिश्का है जिसको सोते हुए मैंने भिन्न-भिन्न आकृतियों में खींचा हैं—सोते, बैठे और आधा खड़े।

"तुम सचमुच महान् सोने वाले हो," ल्योशा कुरोचकिन ने मिश्का से कहा।

"उसने संसार का रिकार्ड तोड़ दिया है।" सेन्या बावरोव ने जोड़ दिया—"चौबीसों घण्टे गिलहरी की भाँति सोता है।"

वह ड्राइङ्ग एक हाथ से दूसरे हाथ में घूमती रही। प्रत्येक ने मजेदार व्यंग्य कसे और सब खूब हँसे।

"तुम क्यों गये और इस प्रकार की धूर्त्ततापूर्ण ड्राइङ्ग यहां क्यों लाये," मिश्का ने मुझ पर बिगड़ते हुए कहा।

"मुझे क्या पता था कि वे इसकी इतनी हँसी करेंगे ?" मैंने कहा।

"तुमने यह जानबूझ कर किया जिससे समस्त क्लास मुझ पर हँसे। तुम मेरे अच्छे दोस्त हो! इससे अधिक मैं तुम्हारे साथ क्या कर सकता हूँ।"

"मिश्का! मैं सौगन्ध खाता हूँ कि मैंने जानबूझ कर ऐसा नहीं किया। सच, मैंने वह नहीं किया। यदि मुझे पता होता कि ऐसा होगा तो मैं कभी तुम्हारी तस्वीर ही न खींचता" मैंने विरोध किया।

किन्तु मिश्का ने उस समूचे दिन मुझसे बातचीत नहीं की। शाम को वह बोला—

"तुमको चाहिए कि इन्क्यूबेटर तुम अपने यहाँ ले जाओ और बजाय इसके कि मेरे शैतानी-भरे कार्टून बनाओ, रात में कुछ देखभाल करो।"

"मुझे कोई आपत्ति नहीं," मैंने कहा—"तुमने पाँच दिन तक देखभाल की, अब मेरा कर्तव्य है।"

मैं व मिश्का इन्क्यूबेटर को मेरे घर ले आये। अब मुझ पर विपत्तियां आना प्रारम्भ हुई।

प्रत्येक रात्रि को मैं अलार्म-घड़ी अपने तकिये के नीचे रख लेता जब आधी रात को वह मेरे कानों में भन-भन करती, मैं उठ जाता और लड़खड़ाता हुआ रसोई तक पहुँचता, तापमान देखता, अंडे घुमाता और तब खड़-खड़ करता पुनः बिस्तर पर लौट आता। अधिकतर तो मैं सो ही नहीं पाता था। जब भी मैं किंचित सोता तभी वह घड़ी गन-गन करके तब तक कान फोड़ती, जब तक मैं यह न सोच लेता कि वह मुझे सोने नहीं देगी और तब मैं उसके टुकड़े-टुकड़े करने की सोच जाता और उसे बन्द कर देता।

सुबह प्रतिदिन मुझे नशा चढ़ता और बिस्तर से उठने का मेरा जी ही न होता। अर्ध-निद्रावस्था में मैं अपने कपड़े पहनने लगता और देखता कि पायजामा सर पर व कमीज पैरों में चढ़ा रहा हूँ। एक बार मैंने अपना जूता उल्टा पहन लिया। लड़कों ने वह देखा और मेरी अच्छी खिल्ली उड़ाई तब पढ़ते समय ही मुझे वह बदलना पड़ा।

किन्तु, सर्वाधिक दुर्भाग्य दसवीं रात्रि में प्रकट हुआ। मुझे पता नहीं कि क्या हुआ—या तो मैं घड़ी में चाबी देना भूल गया या मैंने उसे बजते नहीं सुना। जैसे भी हो मैं ऐसा सो गया कि दिन निकलने तक नहीं उठा। जब मेरी आँख खुली तो खूब रोशनी हो गई थी। पहले तो मेरी समझ में ही नहीं आया कि हुआ क्या, और तब मुझे स्मरण आया कि मैं रात्रि में एक बार भी नहीं उठा। मैं बिस्तर से कूदा और इन्क्यूबेटर के निकट गया। थर्मामीटर में ९९ डिग्री दिख रहा था—जितना होना चाहिए था उससे पूरा तीन डिग्री कम! मैंने तुरन्त दो कापियाँ लैम्प के नीचे रखदीं किन्तु मैं अपने मन में सोचता रहा कि कोई लाभ नहीं है। अंडे अब तक ठंडे हो गये होंगे। दस दिन का कठिन परिश्रम समाप्त हो गया। भ्रूण अब तक काफी बढ़ गया होगा मैंने वह सब नष्ट कर दिया।

मैं स्वयं से ही इतना रुष्ट था कि मैंने अपना सिर फोड़ लिया।

पारा धीरे-धीरे बढ़ने लगा और वह १०२ डिग्री तक पहुँच गया। मैंने जैसे ही उसे देखा खेदसहित कहा—

"वहाँ! वह तापमान ठीक है। अंडे जैसे पहले थे, अब ठीक वैसे ही लग रहे हैं किन्तु अन्दर वे सब मर गये होंगे, अब एक भी बच्चा नहीं निकलेगा।"

किन्तु यह भी हो सकता है कि कुछ भी न हुआ हो। यह भी हो सकता है कि भ्रूण को मृत्यु का समय ही न मिला हो। हमें कैसे ज्ञात होगा ? एक ही उपाय था कि इक्कीस दिन तक अंडों को गरम करते जाओ और इक्कीसवें दिन यदि बच्चे उत्पन्न न हों तो समझो कि वे सब मर गये। यह भी सम्भव है कि वे न मरें। किन्तु इसमें अभी पूरे ग्यारह दिन हैं जब ज्ञात होगा कि क्या हुआ ?

"वह हमारे सुखी परिवार का अन्त होगा।" मैंने दुःख के साथ सोचा—"बारह अंडों के स्थान पर वहाँ एक भी न होगा।"

तभी मिश्का आया। उसने थर्मामीटर देखा, प्रसन्न होते हुए बोला—"आश्चर्यजनक ! वही तापमान ! सब बातें ठीक चल रही हैं। अब रात्रि जागरण का मेरा अवसर है।"

"नहीं," मैंने कहा—"मैं ठीक तरह सँभाल लूँगा। व्यर्थ के लिए तुम कष्ट क्यों सहो ?"

"व्यर्थ के लिये क्यों ?"

"सोचो, कहीं अंडे न उत्पन्न हों।"

"हाँ, यदि यह भी हो कि वे न पैदा हों तो तुम ही पूरा परिश्रम क्यों करो ? हम लोग मित्र हैं। हमें अपना-अपना हिस्सा पूरा करना चाहिए।"

मैं नहीं समझ पाया कि क्या उत्तर दूँ। सब कुछ कह देने का मुझमें साहस नहीं हो रहा था अतः मैंने कुछ न कहने का ही निश्चय किया। मैं जानता था कि मेरे लिये यह उचित नहीं था किन्तु कोई दूसरा उपाय भी नहीं था।

मित्रमेला

कास्त्या प्रतिदिन हमसे मिलने आता और सब साथियों से बकता फिरता कि सेने की क्रिया किस २ प्रकार चल रही है। निःसन्देह उसने यह नहीं बताया कि वे लड़के मिश्का व मैं ही हूँ जिन्होंने इन्क्यूबेटर बनाया है। उसने बहाना किया कि वे दूसरे स्कूल के कुछ लड़के हैं।

"मैं उन लड़कों से मिलना चाहूँगी" वित्या स्मिरनोव ने एक दिन कहा।

"किसलिये।"

"वे आकर्षक प्रतीत होते हैं। वैसा हम अपने प्रकृतिवादी वाल कक्ष में कुछ तैयार कर सकते हैं। हमको कुछ अच्छी चीज़ मिलेगी। किन्तु मिश्का और कोस्त्या सरीखे लड़कों से कुछ भी सम्भव नहीं है। वे कभी कुछ काम नहीं करना चाहते। न तो उन्होंने पेड़ लगाने में सहायता की और न वे चिड़ियाघर ही बना रहे हैं........"

"उन्होंने पेड़ भी नहीं लगाये"—कोस्त्या ने मिश्का और मेरी ओर आँख मारते हुए कहा।

"यह दूसरी बात है, किन्तु इसके अतिरिक्त भी उन्हें करने को बहुत कुछ है।"

"वित्या को यह संदेह भी नहीं था कि जिन लड़कों की बात कोस्त्या कह रहा था वे मिश्का व मैं ही हूँ। और हमें सचमुच बहुत चिन्तायें भी थीं। इन्क्यूबेटर के कारण हमने अपने पाठ में ढोल डाल दी थी। बीजगणित में हमें ५ में २ नम्बर मिले।

एलेक्जेन्दर येफरमोविच ने मुझे एक रेखागणित का प्रश्न हल करने को ब्लैकबोर्ड पर दिया। मैं वह पूरा नहीं कर सका अतः उसने मुझे २ नम्बर दिये। तब उसने मिश्का को बुलाया और उसे भी + २ (धन दो) दिये। हाँ हम उसी लायक थे क्योंकि हम पढ़ते ही न थे। किन्तु कम नम्बर मिलना भी बड़े खेद की बात थी।

"वह तुम्हारे लिए उतनी बुरी बात नहीं है" मिश्का बोला तुमको केवल २ मिले हैं और मुझे +२ (धन दो)।"

"पागल ! +२ (धन दो) २ से बड़ा है" मैंने कहा।

"खफ्ती ! २ के बाद एक + (धन) तीन तो नहीं बना देते, या बना देते हैं ?"

"नहीं, वह वैसा ही २ रहेगा।"

"तब + (धन) किसलिये है।"

"मुझे पता नहीं।"

"मैं बताऊँगा। +(धन) ऐसा है कि तुम्हें दो के लिये बुरा नहीं मानना चाहिये। वह कहने में ऐसा लगता है। तुम्हारे लिये एक सुन्दर +(धन) है। मगर २ तो २ ही रहेगा। यही बुरा लगता है।"

"वह बुरा क्यों लगता है ?"

"क्योंकि उससे प्रकट होता है कि तुम बुद्धिहीन हो। यदि तुम वैसे न होते तो एक अकेला २ इतना पर्याप्त था कि तुम यह समझ लेते कि तुम कुछ नहीं जानते। किन्तु एक दूसरा बुद्धि-हीन+२ (धन २) पाता है जिससे वह यह न समझे कि उसके साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया गया। किन्तु मैं यह पसन्द नहीं करता कि कोई मुझे बुद्धिहीन कहे। तुम — २ (ऋण २) भी

पा सकते हो।" वह कहता गया—"किन्तु मैं उसका कुछ अर्थ नहीं समझ पा रहा हूँ। एक २ के माने हैं कि तुम कुछ नहीं जानते। किन्तु तुम 'कुछ नहीं' से कम कैसे जान सकते हो ?"

"कुछ नहीं," मैंने कहा।

"वही मैं कहता हूँ !" मिश्का बोला—"एक – २ (ऋण २) के अर्थ हैं कि तुम केवल यही नहीं कि कुछ नहीं जानते अपितु यह कि तुम कुछ जानना भी नहीं चाहते। यदि तुमने पाठ नहीं पढ़ा है तो तुमको २ मिले और यदि तुम एक प्रसिद्ध लोफर (बदमाश) हो तो वे तुमको – २ देंगे जिससे तुम कुछ अनुभव करो। तुम १ भी पा सकते हो, समझते हो !" वह लम्बी सांस भरता जाता और कहता जाता।

किन्तु उसे आगे कहने का कोई अवसर नहीं मिला क्योंकि एलेक्जेन्दर जेफरमोविच ने हमें पृथक कर दिया।

अन्त में जेन्या स्कवार्तसोव ने कहा—"पाठ के बाद क्लास में रुकना। हम लोग एक सम्मेलन कर रहे हैं।"

"ओह ! किन्तु हम नहीं रुक सकते। हमारे पास समय नहीं है," मैंने और मिश्का ने कहा।

"तुमको रुकना होगा" जेन्या ने कहा—"क्योंकि हम, तुम दोनों के विषय में ही बात करेंगे।"

"हमने क्या किया है ?"

"तुमको बैठक में पता चलेगा," जेन्या ने इतना ही कहा।

"यही मैं चाहता हूँ," मिश्का बोला—"हमको केवल २ मिला और उसके लिए वह एक बैठक बुला सकता है। वह समझता है

कि वह समूह का अध्यक्ष है अतः शिक्षा के लिए भी बैठक बुला सकता है। प्रतीक्षा करो, वह भी कभी दो पावेगा। तब हम देखेंगे कि उसके लिये भी वह बैठक बुलाता है।"

"वह दो नहीं पावेगा। वह अच्छा पढ़ने वाला है," मैंने कहा।

"तुम क्यों उसकी बड़ाई कर रहे हो ?"

"मैं उसकी बड़ाई नहीं कर रहा हूँ।"

"जाने दो, अब हम लोगों को रुकना चाहिये," मिश्का फुस-फुसाया।

"यह ठीक है," मैंने कहा—"माया इन्क्यूबेटर का निरीक्षण कर रही होगी।"

हम लोग बैठक के लिये रुक गये।

"आज हम अंकों और चाल-चलन के सम्बन्ध में बात करेंगे," जेन्या स्कवर्तसोव ने प्रारम्भ किया—"क्लास में कुछ लड़के, बहुत दिन से उद्दण्डता करते रहे हैं: कुलबुलाना, बातें करना, औरों से छेड़छाड़ करना। मिशा और कोल्या सर्वाधिक शैतान हैं। अनेक अवसरों पर उन्हें बातचीत के कारण पृथक किया -गया। पर इससे कुछ नहीं होगा। निश्चित, इससे कोई लाभ नहीं। और उस सब के ऊपर उन्होंने आज दो पाया।"

"हम दोनों को ऐसा कुछ प्राप्त नहीं हुआ है। मुझे तो +२ मिला है," मिश्का बोला।

"इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता," जेन्या ने कहा, "अन्य विषयों में भी तुम दोनों कम नम्बर पाते रहे हो।"

"हमको और किसी में दो नहीं मिले। मुझे रूसी भाषा में तीन मिला है," मिश्का बोला।

"उसको ३ ऋण मिला है।" वान्या लोजाकिन ने जोड़ दिया।

"तुम क्यों अपनी नाक घुसेड़ती हो," मिश्का ने कहा।

"तुम्हारा क्या मतलब है? यह एक सम्मिलित बैठक है। हमको अधिकार है कि हम कुछ भी कहें।"

"तुमको पहले सभा से पूछना होगा।"

"ठीक है, मैं सभा से पूछती हूँ। लड़को! यदि आप मुझसे पूछें—ये लोग कम अंक इसलिये पा रहे हैं कि ये, किसी कारण से, घर का काम बहुत दिन से नहीं करते हैं। उनसे पूछा जाय कि वह कौनसा कारण है।"

"यह ठीक है, बताओ। हमको जानने का अधिकार है," जेन्या ने कहा।

"उसका कोई कारण नहीं है," मिश्का ने उत्तर दिया।

"मैं जानता हूँ, वह क्या है," ल्योशा कुरोचकिन बोला—"वे क्लास में पूरा समय बातचीत में बिताते हैं और शिक्षक की बात नहीं सुनते तथा घर पर भी नहीं पढ़ते। मैं समझता हूँ कि उन दोनों को सदैव के लिये पृथक कर दिया जावे जिससे वे व्यर्थ बातें न करें।"

"तुम हमको पृथक नहीं कर सकते," मिश्का बोला—"हम लोग मित्र हैं। तुम मित्रों को पृथक नहीं कर सकते; कर सकते हो?"

"यदि तुम्हें केवल मित्र होने से ही नुकसान होता है तो यही सबसे ठीक उपाय है," सेन्या बाबरोव बोला।

इस पर हमारे लिये कोत्स्या उठा। "किसी ने मित्रता में, कभी सुना है कि, किसी ने किसी को हानि पहुँचाई," वह बोला।

"वे ऐसा ही करते हैं क्योंकि प्रत्येक बात पर वे एक दूसरे की नकल करते हैं। यदि एक कोई काम करता है तो दूसरा भी वही करता है; यदि इन में से एक पाठ नहीं पढ़ना चाहता तो दूसरा भी नहीं पढ़ेगा। यदि एक दो पाता है तो दूसरा भी। नहीं, इनको पृथक ही कर देना चाहिये और उतना पर्याप्त है," वित्या स्मिरनोव बोलीं।

"एक मिनट रुकिये," कोत्स्या ने कहा—"हम उन्हें पृथक तो कभी भी कर सकते हैं। किन्तु देखें कि क्या हम उनकी सहायता नहीं कर सकते। मान लिया जाय कि उनके पास इतना समय ही नहीं है कि वे अपना पाठ पढ़ें।"

"तुम क्या कहना चाहते हो? उनके पास समय नहीं है?"

"समझो, वे किसी अत्यावश्यक कार्य में व्यस्त हैं।"

सेन्या बाबरोव हँसा—"कुछ अत्यावश्यक! वह क्या हो सकता है।"

"अनुमान लगाओ, वे एक इन्क्यूबेटर बना रहे हों?"

"एक इन्क्यूबेटर?" सेन्या फिर हँसा।

"हाँ, इन्क्यूबेटर। तुम समझते हो वह कोई सरल काम है? तुम सब को जानना चाहिए कि वे सारी रात जाग-जाग कर तापमान का निरीक्षण करते हैं। तुम सब को जानना चाहिये कि वे उस पर

सारे दिन काम करते हैं और यहाँ हम उन्हें झिड़कियाँ दे रहे हैं। तुम सबको जानना चाहिये……।"

"यह क्या रहस्य है मैं जानना चाहता हूँ," जेन्या ने सरोष पूछा—"क्या उन्होंने सचमुच कोई इन्क्यूबेटर बनाया है ?"

"हाँ," कोत्स्या ने उत्तर दिया।

"क्या उन लोगों के पास जाकर—जिनके सम्बन्ध में तुम कह रहे थे— इन्होंने उनकी नक़ल की है ?" वित्या ने प्रश्न किया।

"नहीं," कोत्स्या बोला—"उन्होंने किसी की नक़ल नहीं की है। ये ही वे लड़के हैं जिनके सम्बन्ध में मैं कह रहा था

"क्या ?"

"यह ठीक है।"

"किन्तु—किन्तु तुमने कहा था कि वे किसी दूसरे विद्यालय के हैं।"

"मैंने केवल मज़ाक में कहा था।"

सबने मुझे व मिश्का को घेर लिया।

"तो तुमने अकेले ही इन्क्यूबेटर बना डाला।"

और वित्या स्मिरनोव ने कहा—"यह लज्जा की बात है। सच्चे नेचरलिस्ट (प्रकृतिवादी) इस प्रकार काम नहीं करते हैं। सोचो, एक इन्क्यूबेटर, और चुपचाप बनाना। क्या तुम यह नहीं जानते थे कि हम लोग भी इस प्रकार की वस्तु में दिलचस्पी लेते ? तुमने उसको छिपाया क्यों ?"

"हमने सोचा आप सब केवल उस पर हँसेंगे," हम दोनों ने कहा।

"हम क्यों हँसते ? उसमें हँसी की क्या बात थी ? इसके विपरीत हम तो तुम्हारी सहायता करते, बारी-बारी से तुम्हारे तापमान का निरीक्षण करते । तुम्हारे लिए वह सुगम हो जाता और तुम अपने पाठ भी पढ़ सकते ।"

"लड़कों !" वादिक जैत्सेव बोला—"हमको उस इन्क्यूबेटर को प्रोत्साहित करना चाहिये ।"

"यह ठीक है," वे सब चिल्लाये ।

वित्या ने कहा कि वे भोजनोपरान्त हम लोगों के यहाँ आवेंगी । तब हम लोग एक कार्यक्रम बनायेंगे और प्रत्येक अपना कार्य निर्धारित कर लेगा ।

इसके अनन्तर मीटिङ्ग समाप्त होगई ।

सहयोगी काम पर

भोजनोपरान्त लगभग सम्पूर्ण बाल-प्रकृतिवादी-कक्ष हमारे रसोईघर में एकत्र होगया । हमने अपने इन्क्यूबेटर को उन सब को दिखलाया और समझाया कि गरम करने का यन्त्र कैसे कार्य करता है, कैसे हमने तापमान की गति को निर्धारित व स्थिर किया और कैसे निश्चित समय पर अण्डों की अदल-बदल की । तब हम लोग कार्यक्रम बनाने बैठ गये । किन्तु, सर्वप्रथम, वित्या स्मिरनोव के सुझाव पर, हमने काम करने वालों के लिये नियमों की एक तालिका बनाई ।

प्रतिदिन, स्कूल के बाद दो लड़के हमारे पास आवेंगे और मैं तथा मिश्का उनको 'क्या करना होगा' यह समझावेंगे, तब वे समस्त दिन उस इन्क्यूबेटर को अपने निरीक्षण में रक्खेंगे । वे आपस में

ही यह निश्चित कर लेंगे कि कैसे बारी-बारी से घर खाना खा आवें और स्कूल का पाठ पढ़लें। उनका यह भी काम होगा कि वे देखते रहें कि मैं व मिश्का इन्क्यूबेटर के आसपास न घूमकर अपना पाठ पढ़ रहे हैं।

इसके पश्चात्, वित्या ने एक सूची तैयार की जिससे प्रत्येक यह जान सके कि उसकी ड्यूटी किस दिन है। उसे हमने दीवार पर टाँग दिया।

"हमारे नाम उस सूची में क्यों नहीं हैं?" मिश्का ने प्रश्न किया—"क्या हम लोगों को निकाल बाहर किया गया है?"

"रात्रि को कैसे होगा?" वित्या ने उत्तर दिया—"तुम लोगों को रात्रि में बारी-बारी से काम करना होगा।"

तदनन्तर जेन्या ने सब लड़कों को वापस भेज दिया।

"आज जिनकी ड्यूटी है उन दो को छोड़कर बाकी सब जा सकते हैं," उसने कहा—"हरेक पास में मंडराता रहे इसकी कोई आवश्यकता नहीं है।"

जेन्या, वित्या, मिश्का और मुझे छोड़कर शेष सब चले गये।

"तुम लोग भी जा सकते हो," जब हम लोग अकेले रह गये सब जेन्या ने कहा।

"हम कहाँ जाँय?"

"जाओ और अपना पाठ पढ़ो।"

"किन्तु, मानलो, यहाँ कोई बात गड़बड़ होजाय।"

"कुछ गड़बड़ नहीं होगा। कुछ होगा तो तुम्हें बुला लिया जायगा।"

"ठीक है। किन्तु, ध्यान रखना, तुम सब ठीक करोगे।"

मिश्का और हमको बैठकर पाठ याद करने पड़े। हमने व्याकरण पढ़ा, भूगोल पढ़ा और एक जोड़ लगाया। वहाँ दो जोड़ थे, दूसरा वाला अधिक कठिन था। अस्तु, वह सब एक ओर रख कर हम रसोईघर में क्या हो रहा है, यह देखने गये।

"तुम यहाँ क्या कर रहे हो?" जैसे ही हम अन्दर पहुँचे जेन्या ने कहा—"क्या तुम्हें अपना पाठ याद करने के लिये नहीं बताया गया था?"

"हमने वह सब पहले ही कर लिया है।"

"सच? अपनी कापी लाओ तो, हम देखें।"

"हूँ? यह क्या रोकथाम?" मिश्का ने कहा।

"हमने तुम्हारी देखभाल का भार लिया है, अतः हम तुम्हारे लिये उत्तरदायी हैं, समझते हो?"

तब हम अपनी कापियाँ ले आये।

"किन्तु तुमने एक ही जोड़ किया है जब कि ये दो हैं।"

"दूसरा हम कुछ देर बाद करेंगे।"

"ओह! नहीं। उसे अभी करो। यदि इसे रख दोगे तो भूल जाओगे, और बिना कुछ किये ही कल स्कूल पहुँचोगे।"

"हमने एक जोड़ कर तो लिया है, क्या नहीं किया है?"

"एक पर्याप्त नहीं है," जेन्या ने तीव्रता से कहा—"तुम वह कहावत जानते हो—

"पहले कर्तव्य पालन, फिर खेल खालन।"

अतः हम लौट आये और गणित के उस प्रश्न में उलझे रहे। हम करते रहे-करते रहे; किन्तु कुछ भी न बना। हमने उस पर पूरा एक घंटा व्यय कर दिया और तब तक फिर रसोई में गये।

"वह सही नहीं आता," मिश्का ने कहा—"हमने सब ठीक किया है किन्तु उसका फल पुस्तक में पीछे दिये हुये फल से नहीं मिलता। सम्भव है छपने में कुछ अशुद्धि रह गई हो।"

"यह ठीक है, नाच न जाने आँगन टेढ़ा," जेन्या ने कहा।

"ऐसा बहुत बार होता है कि पुस्तक में दिया हुआ उत्तर ठीक नहीं मिलता।"

"बकवास !" जेन्या बोला—"लाओ देखें तो !"

वह साथ-साथ हमारे कमरे में गया और 'हमने क्या किया है', यह देखता रहा। वह भी जुटा रहा—उलझा रहा—सब सही दिख रहा था किन्तु उत्तर नहीं निकला।

"मैंने क्या कहा था ?" मिश्का ने प्रफुल्लित हो कहा।

किन्तु जेन्या ने सोचा कि कहीं कोई गलती अवश्य होगी और जब तक वह उसे ठीक नहीं कर लेगा—छोड़ेगा नहीं। उसने उस जोड़ को फिर प्रारम्भ से देखा और एक गलती पकड़ ली।

"यह है," उसने कहा—"सात गुणा सात क्या होता है ? हः हः!"

"उनंचास।"

"हाँ, लेकिन देखो, तुमने क्या लिखा है—इक्कीस !"

उसने गलती सुधार दी और सवाल सही सही लग गया।

"यह सब तुम्हारी लापरवाही का नतीजा है।" उसने कहा और इन्क्यूबेटर की ओर वापस चला गया।

हम लोगों ने सवाल को अपनी अपनी अभ्यास-पुस्तिकाओं में उतार लिया और फिर रसोईघर में पहुँच गए।

"हम लोग कर चुके," हमने कहा।

"शाबास ! अब अच्छा यह रहेगा कि तुम लोग कुछ देर बाहर घूम आओ। थोड़ी सी ताजी हवा लगने से तुम्हें आराम मिलेगा।"

इन्कार करने से कोई लाभ होने को था नहीं इसलिए मैं और मिश्का चल दिए। दिन काफ़ी अच्छा था और धूप फैली हुई थी मैदान में लड़के वॉलीबाल खेल रहे थे। हम लोग भी उन्हीं लोगों में मिल गए। खेल ख़तम होने पर हम कोस्त्या देवियेत्किन के घर गए। जब हम उसके यहाँ थे उसी समय वैदिक जैतसेव भी आ गया और फिर हम चारों शाम तक 'लोटो' और बहुत से अन्य खेल खेलते रहे। जब हम घर पहुँचे तो क़ाफी देर हो चुकी थी। हम लोग सीधे रसोईघर में गए। वहाँ जैनिया और वित्या के साथ ही हमने वेन्या लोज़किन को भी बैठे हुए देखा। उसने बताया कि उसने अपनी माँ से अनुमति प्राप्त कर ली है कि उस रात वह इन्क्यूबेटर की देखभाल करे।

"वाह ! इसका क्या मतलब ?" मिश्का बोला "इस तरह तो मुझे और कोत्स्या को कभी कोई काम कर सकने का अवसर ही नहीं मिलेगा। आज रात की ड्यूटी वित्या ने ले ली है, कल कोई दूसरा यही अनुमति प्राप्त कर लेगा। नहीं नहीं, मैं इस बात को बिल्कुल नहीं मान सकता।"

"बहुत अच्छा," वित्या बोला—"मैं तुम्हारा नाम भी टाइम-टेबुल में चढ़ाए देता हूँ और अब तुम्हें भी सब की तरह अवसर मिला करेगा।"

इस तरह उसने लिस्ट के अन्त में हम लोगों का नाम चढ़ा दिया।

मैंने और मिश्का ने हिसाब लगाना शुरू किया कि हम लोगों की बारी कब आयेगी, तो पता चला कि हमारी ड्यूटी सबसे अच्छे दिन पड़ेगी—इक्कीस तारीख को, जिस दिन बच्चे पैदा होने की उम्मीद थी।

अन्तिम तैयारियाँ

अन्त में अब मुझे और मिश्का को कुछ चैन मिला। सच-सच पूछा जाय तो हमें कोई अफ़सोस नहीं था क्योंकि इन्क्यूबेटर हम लोगों के लिए एक बोझ बन गया था। हम रात-दिन उसी में उलझे रहते थे। कुछ न कुछ भूल कर जाने का भय हमें ऐसा सताया करता था कि हम बराबर इसी के विषय में सोचा करते थे। अब तो हमारे बिना भी सारा का सारा कार्य व्यवस्थित रूप से सम्पादित हो रहा था।

हम लोगों ने बाल-प्रकृतिवादी-दल में अपने हिस्से का काम करना शुरू कर दिया। हम लोगों ने दो चिड़ियादान बनाए, उन्हें अपने बगीचे में लटका दिया; अपने स्कूल के बगीचे में फूलों के तथा अन्य पौधे लगाए। सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह थी कि अब हमारे पास अपने पाठ याद करने के लिए पर्याप्त समय रहता था और जब मेरी तथा मिश्का की माँ ने देखा कि हम लोगों को अच्छे अंक मिलने लगे हैं तो वे लोग भी खुश होने लगीं कि अन्य लड़के अब हमें इन्क्यूबेटर की देखभाल करने में सहायता देने लगे हैं।

जब बाल-प्रकृतिवादी-दल आपस में मिला, तो मेरिया पेत्रोवना ने हम लोगों को बताया कि बच्चों के आगमन के समय के लिए हमें कैसी तैयारियाँ करनी चाहिए। उसने हमें कुछ वनस्पतियाँ लगाने की सलाह भी दी जिससे कि उन लोगों को सदैव ताजे हरे शाक खाने को मिल सकें। उसने बताया कि सबसे बढ़िया लगाने लायक चीज़ है—ओत्स, क्योंकि वे बहुत पुष्टिकारक होते हैं और जल्दी उगते हैं।

अब प्रश्न यह था कि लगाने के लिए हमको ओत्स मिलें कहाँ से? "हम लोगों को चिड़िया बाज़ार तक चलना पड़ेगा," वेन्या लोज़किन ने कहा "वहाँ के दूकानदार चिड़ियों का प्रत्येक भोजन बेचते हैं।"

स्कूल की छुट्टी के बाद वेन्या और जेन्या भाग कर चिड़िया-बाजार पहुँचे। दो घन्टे बाद जब वे लौटे तो उनकी जेबें ओत्स से भरी हुई थीं और हम लोगों को सुनाने के लिए एक अच्छी खासी कहानी भी उनके पास तैयार थी।

"चिड़िया-बाजार में ओत्स बिल्कुल नहीं थे, हम लोगों ने सारा बाजार छान डाला और वहाँ पर सन, बाजरा, बर्डाक के बीज इत्यादि तथा ओत्स के अलावा और सभी कुछ देखने को मिला। हम लोगों ने समझा कि हमें बिना ओत्स के ही लौटना पड़ेगा लेकिन लौटने के पहिले हमने खरगोशों के बाड़े की ओर जाकर देखने का निश्चय किया। जब हम लोग खरगोशों के बाड़े में इधर-उधर देख रहे थे, तभी हमने एक घोड़े को एक थैले में ओत्स खाते हुए देखा। बस हमने थोड़े से माँग लिए।"

"किससे माँग लिए? घोड़े से?" मिश्का ने आश्चर्य से पूछा।

"बेवकूफी की बात मत करो। अरे हमने उसके मालिक किसान से माँगा जो खरगोशों को बाजार लाया था। वह बड़ा भला आदमी था। उसने हमसे पूछा कि हम लोग ओत्स किसलिए माँग रहे हैं और जब हमने बताया कि हमें मुर्ग़ी के बच्चों के लिए उनकी ज़रूरत है तो उसने कहा, "अरे भाई! बच्चों को तुम ओत्स मत खिलाओ" लेकिन हम लोगों ने उसको बताया कि हम पैदा

करने के लिए कुछ ओत्स बोना चाहते हैं तब उसने कहा कि हम लोगों को जितनी जरूरत हो ले लें। बस, हमने अपनी जेबें भर लीं।"

हम लोग तुरन्त काम में लग गए और दो खोखले बक्से बनाए। उनमें हमने मिट्टी भर दी और पानी डालकर उसे ऐसा साना कि वह पतली कीचड़ बन गई। तब हमने ओत्स को मिट्टी में डाल

कर फिर अच्छी तरह मिलाया और बक्स को स्टोव के नीचे रख दिया ताकि बीज गरम हो जाएं।

मेरिया पेत्रोवना ने हमें बतला रखा था कि पौधों के बीज भी, चिड़ियों के अण्डों की तरह ही, जानदार होते हैं। बीज के अन्दर चेतना तब तक सोया करती है जब तक उसे ऊष्ण और नम मिट्टी नहीं मिलती। वह मिट्टी ही बीज की चेतना को जगाती है और तब वह उगना प्रारम्भ कर देता है। सभी जीवित पदार्थों की भांति ही बीजों की भी मृत्यु होना सम्भव है और मरे हुए बीज फिर उगते नहीं हैं।

हमें इस बात का बहुत भय था कि कहीं हमारे बीज मरे हुए न हों, और इसीलिए हम लोग बराबर बक्सों में देखा करते थे कि बीज उग रहे हैं अथवा नहीं। दो दिन तो बीत गए और उनके उगने का कोई चिन्ह हमें न दिखाई पड़ा। तीसरे दिन हमने देखा कि बक्सों की मिट्टी कहीं कहीं पर चिटक सी गई है और उसमें दरारें पड़ गई हैं।

"यह क्या हुआ," मिश्का ने उलझन में पूछा—"किसी न किसी ने बक्सों के साथ जरूर कुछ छेड़खानी की होगी।"

"ऐसी तो कोई बात नहीं हुई," ल्योशा क्यूरोच्किन जो उस दिन सेन्या बाबरोव के साथ ड्यूटी पर था, बोला।

"तब मिट्टी इस तरह फट क्यों गई है?" मिश्का चिल्ला उठा। "तुम लोगों ने जरूर इसमें अपनी उंगलियाँ घुसेड़ी होंगी, यह देखने के लिए कि बीजों का क्या हाल है।"

"हमने ऐसा कुछ भी नहीं किया," सेन्या ने विरोध किया।

मैंने मिट्टी का एक टुकड़ा उठाया और उसके नीचे बीज के दाने के स्पर्श का अनुभव किया। वह फूल कर कुछ-कुछ खुल सा गया था और इसकी चोटी पर एक सफेद अंकुर सा मौजूद था। मिश्का ने भी एक बीज को बाहर निकाल लिया और बड़ी देर तक इसकी परीक्षा करता रहा।

"मैं समझ गया क्या हुआ है," वह चिल्लाकर बोला—"इन्होंने स्वयं ही मिट्टी को फोड़ दिया है।"

"किसने ?"

"बीजों ने। वे जाग उठे हैं और अब मिट्टी के भीतर से अपना मार्ग खोज रहे हैं। जरा देखो मिट्टी किस तरह फूल गई है। मिट्टी के नीचे अब उनको जगह नहीं मिल रही है।"

मिश्का दौड़ कर बीज किस तरह उग रहे हैं, यह दिखाने के लिए, लड़कों को बुलाने चला गया। ल्योशा, सेनिया और मैंने थोड़े से और बीज मिट्टी के भीतर से निकाल लिए। उन सबों में अंकुर निकलने शुरू हो गये थे। शीघ्र ही लड़के भी आ गये और भीड़ लगा कर खड़े हो गए। सभी बीजों को एक निगाह देखना चाह रहे थे।

"देखो", वित्या स्मिरनोव ने कहा—"बीज फूट रहे हैं और उनसे ओत्स ठीक उसी तरह निकल रहे हैं जैसे बच्चे निकलते हैं।"

"बिल्कुल सही है," मिश्का बोला—"ओत्स भी जीवित पदार्थ हैं, वह सिर्फ उग कर एक ही जगह पर खड़े रहते हैं, लेकिन जब हमारे बच्चे बाहर निकलेंगे तो ये चारों तरफ दौड़ेंगे, चिल्लाएँगे और

खाना माँगेंगे। देखना यह छोटा सा परिवार कैसा खुश नजर आयेगा।"

सबसे कठिन दिन

हँसी खुशी से सब लोगों का साथ-साथ काम करना चलता रहा और समय जल्दी-जल्दी बीतता गया। अन्त में इक्कीसवां दिन भी आ पहुँचा; उस दिन शुक्रवार था। हम लोगों ने बच्चों के निकलने के समय के लिए हरेक तैयारो कर रखी थी। हमें शेड में एक बड़ा सा बर्तन मिल गया था, जिसके चारों ओर हमने फेल्ट का किनारा लगा दिया था और इस तरह नवजात बच्चों के लिए हमने एक 'वार्मिग पैन' तैयार कर लिया था। अब बिल्कुल तैयार होकर यह गर्म पानी के एक बर्तन के सिरे पर खड़ा हुआ था और पहले पहल निकलने वाले मुर्गी के बच्चे का इन्तजार कर रहा था।

उस दिन की पहले वाली रात को मैं और मिश्का वहाँ पर ठहरना चाहते थे, लेकिन वैदिक जेत्सेव ने अपनी माँ से रात की ड्यूटी लेने के लिए अनुमति प्राप्त कर ली थी। हम लोगों के वहाँ ठहरने की बात तक सुनने के लिए वह तैयार न था।

"मैं नहीं चाहता कि जब मैं यहाँ पर रहूँ तो आप मेरी खोपड़ी पर सवार रहें," वह बोला—"आप अपने बिस्तर पर जाकर सो सकते हैं।"

"लेकिन अगर मुर्गी के बच्चे रात में ही अंडे फोड़कर निकलने लगें, तब क्या होगा ?" हमने कहा।

"उसकी क्या चिंता ? ज्यों ही कोई बच्चा निकला मैं उसको पॉट में डाल दूँगा ताकि वह सूख जाय।"

"तुम उसे फेंक देने की हिम्मत न करना," मैंने डर कर कहा—"मुर्गी के बच्चों के साथ तुमको बहुत कोमल व्यवहार करना पड़ेगा।"

"फिक्र मत करो। मैं कोमल ही रहूँगा। अब तुम लोग भले लड़कों की तरह अपने बिस्तर की ओर खिसक जाओ। भूलना नहीं कि कल तुम लोगों की ड्यूटी है। इसलिए तुम्हारे लिए यह अच्छा होगा कि तुम लोग रात भर अच्छी तरह आराम कर लो।"

"ठीक है," मिश्का राजी होगया—"सिर्फ इस बात का निश्चय कर लो कि अगर मुर्गी के बच्चे निकलने लगें तो हम लोगों को जगा देना। हम लोग इतने दिनों से इस बात का इन्तजार करते रहे हैं।"

वैदिक ने इस बात का वादा कर दिया।

हम लोग बिस्तर पर चले गए लेकिन मैं बड़ी देर तक सो न सका, क्योंकि मुझे मुर्गी के बच्चों की फिकर लगी हुई थी। दूसरे दिन सबेरे मैं बहुत जल्दी जाग गया और सीधे मिश्का के घर दौड़ गया। वह भी पहले ही जाग गया था और इन्क्यूबेटर के पास बैठा हुआ अण्डों की परीक्षा कर रहा था।

"मुझे तो अभी कोई आसार नज़र नहीं आ रहे हैं।"

"मेरा ख्याल है अभी बहुत जल्दी है," वैदिक ने कहा।

वैदिक जल्दी ही घर चला गया क्योंकि रात बीत चुकी थी और हमारा पहरा शुरू होगया था। जब वह चला गया तो मिश्का ने निश्चय किया कि सभी अण्डों की एक बार पुनः परीक्षा की जाय। हम लोगों ने उनको घुमा-फिरा कर देखना और कोई छोटा-मोटा छेद खोजना शुरू किया कि शायद अन्दर के बच्चों ने अपनी

चोंच से कोई छेद कर दिया हो लेकिन और तो और किसी अंडे के ऊपर के बकले में जरा सी चिटकन भी न थी। हम लोगों ने इन्क्यूबेटर बन्द कर दिया और बड़ी देर तक बिना कुछ बोले चुपचाप बैठे रहे।

"अच्छा, अगर हम एक अण्डे को तोड़ कर खोलें और देखें कि इसके अन्दर बच्चा है या नहीं, तो कैसा रहे ?" मैंने प्रस्ताव किया।

"नहीं, ऐसा नहीं करना चाहिए। अभी नहीं"—मिश्का ने कहा, "मुर्गी का बच्चा अभी अपनी खाल से ही साँस ले रहा है, फेफड़ों से साँस लेना उसने अभी प्रारम्भ नहीं किया है। ज्योंही यह फेफड़ों से साँस लेना शुरू कर देगा, त्योंही अपने आप अंडे के छिलके को फाड़ देगा। अगर हम इसे बहुत जल्दी तोड़ देंगे तो बच्चा मर जाएगा।"

"लेकिन अन्दर तो वे जीवित होंगे", मैंने कहा—"अगर तुम सावधान होकर ध्यान दोगे, तो शायद तुम्हें इनके हिलने-डुलने की ध्वनि सुनाई पड़ जाएगी।"

मिश्का ने इन्क्यूबेटर से एक अण्डा निकाल लिया और उसको अपने कान के पास रखा। मैं उसके ऊपर झुक गया और अपना कान भी उससे लगा दिया।

"शान्त रहना", मिश्का ने गुर्राकर कहा—"यदि तुम मेरे कान में भनभनाये तो मैं कैसे कोई आवाज़ सुन सकता हूँ ?"

मैंने अपनी साँस रोक ली। अब बिल्कुल शान्ति थी। इतनी शान्ति कि आप टेबुल पर रखी हुई घड़ी की आवाज़ को भी सुन सकते थे। इतने में एकाएक घंटी बज उठी। मिश्का उछल पड़ा और अंडा उसके हाथ से लगभग छूट सा गया। मैं दर्वाजा

खोलने दौड़ा। वह वित्या था। वह यह जानना चाहता था कि बच्चों ने अण्डे फोड़कर बाहर निकलना प्रारम्भ कर दिया कि नहीं।

"नहीं" मिश्का ने कहा, "अभी बहुत जल्दी है।"

"कोई बात नहीं, स्कूल जाने के पहिले मैं एक बार और आऊँगा", वित्या ने कहा।

वह चला गया और मिश्का ने फिर अण्डे को निकाल कर अपने कान के पास रखा। वह उसी तरह अपनी आंखें बन्द किए हुए बड़ी देर तक बैठा रहा, और ध्यान देता रहा।

"मुझे कोई आवाज़ नहीं सुनाई पड़ती," अन्त में उसने कह दिया। मैंने भी अंडा लिया और ध्यान दिया। लेकिन मुझे भी कोई आवाज़ सुनाई न पड़ी।

"शायद भ्रूण मर चुका है," मैंने कहा, "हमें दूसरे अण्डों की परीक्षा करनी चाहिए।"

हमने एक के बाद एक करके अण्डों को बाहर निकाला, और उन सब में ध्यान लगा कर सुना। लेकिन उनमें से एक में भी जीवन का कोई चिन्ह नहीं था।

"ये सबके सब मर तो नहीं गए होंगे—कि मर गए होंगे ?" मिश्का ने कहा, "कम से कम एक तो जिन्दा होना चाहिये।"

फिर घंटी बज उठी। अब की बार सेन्या बाब्रोव आया था।

"तुम इतने सवेरे उठ कर क्या करते फिर रहे हो ?" मैंने उससे पूछा।

"मैं तो यह पता लगाने चला आया हूँ कि मुर्गी के बच्चे बाहर कैसे निकल रहे हैं।"

"वे निकल ही नहीं रहे हैं," मिश्का ने जवाब दिया, "अभी समय नहीं हुआ है।"

उसके बाद सेरियोज़ा आ पहुँचा।

"अच्छा बताओ, अब तक कोई मुर्गी का बच्चा निकला ?"

"तुम बड़े अधैर्यवान् हो," मिश्का ने कहा, "तुम यह समझते हो कि बच्चे सबेरे से ही निकलना शुरू कर देंगे। अरे अभी समय तो काफी है।"

सेरियोज़ा और सेन्या थोड़ी देर बैठे और फिर चले गए। मिश्का और मैंने फिर अंडों की ओर ध्यान देना शुरू कर दिया।

"नहीं, इससे कोई फ़ायदा नहीं," उसने परेशानी से कहा, "मुझे कोई आवाज़ नहीं सुनाई पड़ती है।"

"शायद वे सिर्फ़ हमको बेवक़ूफ़ बनाने के विचार से शान्त हैं," मैंने सुझाया।

"अब तक उन्हें अंडों का छिलका फोड़ना शुरू कर देना चाहिये था।" फिर यूरा फ़िलिप्पोव और स्तैंजिक लेब्सकिन और उनके बाद वेन्या लोजकिन आये। वे लोग, एक के बाद एक करके, आते ही रहे और जब हमारे स्कूल जाने का समय हुआ, उस समय तक वहाँ एक आम-सभा सी दिखाई देने लग गई थी। हम लोगों ने माया को बुलाया और उसको बतला दिया कि अगर हमारे वापस आने से पूर्व ही बच्चे अंडों के बाहर निकलने लगें तो उसे क्या करना चाहिए। फिर सब लोगों के साथ ही हम भी स्कूल चले गये।

मैं कह नहीं सकता कि वह दिन हम लोगों ने कैसे बिताया।

हम लोगों के जीवन में यह सबसे कठिन दिन था। हमें ऐसा प्रतीत होता था कि कोई मनमाने ढंग से समय को बढ़ाता और हरेक पाठ को रोज से दस गुना बनाता जा रहा था। हम लोगों को इस बात

का बड़ा डर लग रहा था कि जब हम लोग स्कूल में होंगे तभी बच्चे निकलना शुरू कर देंगे और माया अकेली कुछ भी सम्हाल न पायेगी। आखिरी पाठ तो सबसे ज्यादा खराब था। हम समझने लगे कि यह कभी ख़त्म ही न होगा। वह इतनी देर तक चलता रहा कि हम लोगों को ताज्जुब होने लगा कि कहीं हमने घन्टी सुनने में ग़फलत तो नहीं कर दी है। फिर हमने सोचा कि शायद घंटी खराब हो गई है या शायद दुन्या चाची, जो स्कूल की दर्बानि थी, आखिरी घंटी बजाना ही भूल गई और अपने घर चली गई है और अब हमें कल सबेरे तक स्कूल में ही बैठे रहना पड़ेगा। पूरे दर्जे में उत्तेजना और बेचैनी छाई हुई थी। सब कोई छोटे-छोटे कागज के टुकड़ों पर लिखकर जेनिया से पूछ रहे थे कि क्या बजा है, लेकिन, जैसी कि भाग्य की मर्ज़ी थी, ज़ेनिया उस दिन अपनी घड़ी घर पर ही भूल आया था। दर्जे में इतना शोर मच रहा था कि

अलेक्ज़ेन्दर येफ़र्मोविच को कई बार रुक कर चुप रहने के लिए कहना पड़ा। लेकिन शोर फिर भी मचता रहा। आखिरकार मिश्का ने अपना हाथ यह कहने के लिये उठाया कि अब पढ़ाई खतम हो जानी चाहिये। लेकिन उसी क्षण घंटी भी बोल गई और हम सब लोग उठ कर दर्वाजे की ओर भागे। अलेक्ज़ेन्दर येफर्मोविच ने हम सब लोगों को फिर से बैठाल दिया और कहा कि जब तक मास्टर कमरे के बाहर न चला जाय तब तक किसी को अपनी डेस्क नहीं छोड़नी चाहिए। फिर वह मिश्का की ओर घूमे—

"तुम मुझसे कुछ पूछना चाहते थे ?"

"जी नहीं ! मैं सिर्फ यह कहना चाहता था कि पढ़ाई खतम हो गई।"

"लेकिन तुमने घंटी बजने के पहले ही अपना हाथ उठाया था ?"

"मैं समझता था कि घंटी खराब हो गई है।"

अलेक्ज़ेन्दर येफर्मोविच ने अपना सिर हिलाया, रजिस्टर उठाया और कमरे के बाहर चले गये। लड़के भाग कर बरामदे में पहुँचे। वे सीढ़ियों से नीचे की ओर दौड़ पड़े। प्रवेश द्वार पर भीड़ के मारे रास्ता रुक सा गया लेकिन मैंने और मिश्का ने किसी प्रकार धक्कों से अपने रास्ते को निकाल ही लिया। हम लोग सड़क पर सिर के बल दौड़ पड़े और दूसरे लोग भी हमारे पीछे दौड़ लगाने लगे।

पाँच मिनट बाद हम लोग घर पर थे। माया, इन्क्यूबेटर के पास अपनी जगह पर बैठी हुई थी और अपनी गुड़िया ज़िनायदा के लिये एक नई ड्रेस सीं रही थी।

"कोई बात तो नहीं हुई ?" हमने पूछा ।

"कुछ नहीं ।"

"तुमने कितनी देर पहिले इन्क्यूबेटर के अन्दर देखा था ?"

"बड़ी देर हो गई, जब मैंने अंडों को उलटा-पलटा था ।"

मिश्का, इन्क्यूबेटर के पास चला गया । सब लड़के भीड़ लगा कर चारों ओर खड़े हो गए और अपनी-अपनी गर्दनें उठा कर पैर के अँगूठे के बल उचकने लगे । वेन्या लोज़किन और अच्छी तरह देख सकने के लिए एक कुर्सी पर चढ़ गया, लेकिन वहाँ से गिर पड़ा और अपने धक्के से ल्योशा क्यूरोच्किन को भी करीब-करीब गिरा दिया । लेकिन मिश्का की हिम्मत ढक्कन खोलने की नहीं पड़ रही थी । वह तो उनकी ओर देखने में भी डर रहा था ।

"चलो, चलो, आओ, इसको खोलो ! तुम इन्तजार किस बात का कर रहे हो ?" किसी ने कहा ।

अन्त में मिश्का ने ढक्कन उठाया । पत्थर के बड़े बड़े टुकड़ों की भांति अंडे उसके अन्दर पहले की ही तरह पड़े हुए थे ।

एक क्षण के लिए मिश्का बिना कुछ कहे हुये चुपचाप खड़ा रहा, फिर उसने एक-एक करके सावधानी पूर्वक उन्हें उलटा-पलटा और सब ओर से उनकी परीक्षा कर डाली ।

"एक भी चिटका तक नहीं," दुःख के साथ उसने घोषित किया ।

कलङ्क किस पर ?

लड़के चारों ओर चुप्पी साधे खड़े हुए थे ।

"मुमकिन है वह बिल्कुल निकलें ही नहीं," सेन्या बाब्रोव ने कहा, "बोलो तुम्हारी समझ में क्या आता है ?"

मिश्का ने अपने कन्धों को उचकाया, "मैं कैसे बतला सकता हूँ ? मैं कोई मुर्गी थोड़े ही हूँ ! मैं अंडों के फूटने की बाबत क्या जानूँ ?"

सभी लोगों ने फौरन बातचीत शुरू कर दी। कुछ लोगों ने कहा कि बच्चे बिल्कुल ही नहीं निकलेंगे। कुछ ने कहा कि वे अभी भी निकल सकते है। अन्य लोगों ने कहा कि भाई ! या तो निकलेंगे और या फिर नहीं ही निकलेंगे। अन्त में वित्या स्मिर-नोव ने सारी बहस खत्म कर दी।

"निश्चित बात कहने के लिए तो अभी बहुत जल्दी है," उसने कहा, "अभी दिन बीत तो गया नहीं। हम लोगों को पहले ही की तरह काम चालू रखना चाहिए। और अब ड्यूटी पर के लोगों को छोड़ कर बाकी लोग जगह को खाली तो करो।"

लड़के घर चले गए। मिश्का और मैं अकेले रह गये। हम लोगों ने यह देखने को कि कहीं किसी अण्डे में कम से कम एकाध जगह जरा सी ही चिटकी हुई मिल जाय फिर अण्डों पर एक निगाह डाली लेकिन वहाँ कुछ नहीं था। मिश्का ने ढक्कन बन्द कर दिया।

"सब ठीक है। मुझे कोई पर्वाह नहीं कि क्या होता है। किसी भी प्रकार से इतनी जल्दी परेशान हो उठना बिल्कुल बेकार है। हम लोग शाम तक इन्तजार करेंगे और अगर फिर भी कोई बात नहीं होगी तब हमें चिन्ता करनी चाहिए।"

हम लोगों ने चिन्ता न करने का निश्चय कर लिया और धैर्य के साथ इन्तजार करने को तत्पर हो गए। लेकिन यह कहने में तो आसान था परन्तु करने में कहीं अधिक कठिन।

बहुत प्रयत्न करने पर भी हम लोगों का चिन्ता करना बन्द न हो सका और दस-दस मिनट बाद हम लोग बराबर इन्क्यूबेटर के अन्दर झाँकते रहे। दूसरे लड़कों को भी चिन्ता सवार थी। वे लोग एक के बाद एक करके पता लगाने के लिये आते रहे। सब के पास एक ही सवाल रहता था, "कहो कैसा चल रहा है ?"

थोड़ी देर बाद मिश्का ने जवाब देना बन्द कर दिया और उत्तर में अपने कन्धों को ही बिचकाना और हिलाना शुरू कर दिया। लेकिन उसको इतनी बार कन्धे हिलाने पड़े कि दिन ढलने तक उसके कन्धों में कान तक का कूबड़ सा निकल आया।

अब शाम हो गई थी इसलिए लड़कों ने आना बन्द कर दिया। सबसे अन्त में आने वाला वित्या था जो हम लोगों के पास बड़ी देर तक बैठा रहा।

"शायद दिन गिनने में ग़लती हो गई है," उसने कहा।

हम लोगों ने फिर गिनना शुरू कर दिया मगर कोई ग़लती नज़र न आई। आज इक्कीसवाँ ही दिन था और यह भी खतम होने जा रहा था और बच्चों का कहीं कोई पता न था।

"घबड़ाओ नहीं," वित्या ने हमें धीरज देते हुए कहा, "हम लोग सबेरे तक बैठे रहेंगे। मुमकिन है कि वे रात में अंडे फोड़कर निकलने लगें।"

मैंने अपनी माँ को किसी तरह मिश्का के ही घर पर ठहरने के लिए राजी कर लिया और फिर हम लोगों ने रात भर बैठे रहने और पहरा देने का निश्चय किया। इन्क्यूबेटर के नज़दीक हम लोग बड़ी देर तक चुपचाप बैठे रहे, हम लोगों के पास अब बातें करने के लिए कोई विषय ही न था। अब हम लोगों

को दिवा-स्वप्न भी नहीं दिखाई पड़ रहे थे क्योंकि हमारी सभी आशायें नष्ट हो गई थीं। थोड़ी ही देर में ट्रामों का चलना भी बन्द हो गया और चारों ओर बिल्कुल नीरव शान्ति छा गई। खिड़की के बाहर दिखाई पड़ने वाला सड़क पर का लैम्प भी बुझ गया। मैं सोफ़ा पर लेट गया। मिश्का ने बैठे रहने की कोशिश की लेकिन वह कुर्सी से नीचे गिरने सा लगा। इस पर वह भी उठ कर मेरे पास आ गया और मेरी बगल में ही सोफा पर लेट गया। तब हम लोग सो गए।

जब हम लोग जागे तो सूर्य का प्रकाश फैल चुका था और सब कुछ पहले जैसा ही था। अण्डे अब भी इन्क्यूबेटर में पड़े हुए थे। उनमें से किसी में भी जरासी चिटकन तक न थी और न किसी के अन्दर से कोई आवाज ही आ रही थी।

सब लड़के बुरी तरह निराश हो गए थे।

"आखिर क्या हुआ या हो सकता है ?" उन लोगों ने प्रश्न किया, "हम लोगों ने तो हरेक निर्देश का सावधानी से पालन किया है, किया है न ?"

"मैं नहीं जानता," अपने कन्धों को बिचकाते हुए मिश्का बोला। क्या हुआ है, इसे तो सिर्फ मैं जानता था। असल में जब मैं देर तक सोता रहा था, उसी बीच में भ्रूण मर गये थे। तापक्रम कम हो गया था और वे बेचारे सर्दी से कष्ट पाकर मर गए थे—तभी, जब कि उनका जीवन वस्तुतः भली प्रकार से प्रारंभ भी न हो पाया था। दूसरों के सामने मैं अपने आपको बहुत अपराधी सा अनुभव कर रहा था। उन लोगों का इतना कष्ट उठाना, सारा का सारा निरर्थक हो गया और यह सब कुछ हुआ मेरे कारण।

लेकिन इस बात को मैं उसी समय उन लोगों को बतला न सका। मैंने यह बात कुछ समय बाद खोलने का निश्चय किया जब कि सारी घटना पुरानी हो जाएगी और मुर्गी के बच्चों का अपने हाथ से निकल जाना उन्हें इतना अधिक बुरा न लगेगा।

उस दिन हम सब लोग स्कूल में भी बड़े उदास रहे। सब लड़के हम लोगों की ओर ऐसी सहानुभूति-युक्त दृष्टि से देख रहे थे मानो हम किसी की मृत्यु के दुख को मना रहे हों और जब सेन्या बाब्रोव ने अपनी सदैव की आदत के अनुसार यह कहा कि हम लोगों को "चिकाबिद्दी" कहकर चिढ़ाया जाय तो दूसरे सभी लोग उस पर झपट पड़े और कहा कि उसे अपने ऊपर शर्म आनी चाहिए। मुझे और मिश्का को बहुत तकलीफ सी महसूस हो रही थी।

"मैं तो चाहता हूँ कि वे हमें खूब बुरा भला कहलें," मिश्का ने कहा।

"क्यों कह लें ?"

"और नहीं क्या ! देखो उन लोगों ने हमारे लिये कितना काम किया। उनको नाराज़ होने का पूरा अधिकार है।"

स्कूल से छुट्टी होने के बाद कुछ लड़के अन्दर आये लेकिन जल्दी ही उनका आना रुक गया। सबों ने आना बन्द कर दिया, सिवाय कोस्त्या देवियेत्किन के, जो एक या दो बार आया था। सिर्फ वही एक ऐसा लड़का था, जिसने अभी भी आशाएं बिल्कुल न छोड़ी थीं।

"देखो," मिश्का ने मुझसे कहा, "सारे के सारे लड़के हम लोगों से नाराज़ हैं। मैं यह जानना चाहता हूँ कि आखिर वे क्यों

नाराज़ हो रहे हैं। ग़लती किसी से भी हो सकती है।"

"लेकिन तुमने तो खुद कहा था कि उन्हें नाराज़ होने का हक़ है।"

"हाँ वह तो है ही," मिश्का ने चिढ़कर कहा, "और वह हक़ तो तुम्हें भी है। मैं जानता हूँ, यह सब ग़लती मेरी ही है।"

"तुम्हारी ग़लती क्यों है ? तुम्हारे ऊपर तो कोई किसी बात के लिए कलंक नहीं लगा रहा। और इसमें तुम्हारा दोष भी तो बिल्कुल नहीं है," मैंने कहा।

"है, भाई, है। मगर तुम मुझसे ज्यादा नाराज़ न होना। होगे ?"

"मैं काहे को नाराज़ होऊँगा ?"

"अरे सिर्फ इसीलिए कि मैं किसी भी प्रकार अच्छा नहीं हूँ। यह सब मेरा दुर्भाग्य है। मैं जो कोई भी कार्य करता हूँ, उसका कभी अच्छा नतीजा नहीं निकलता।"

"यह सच नहीं। यह तो मैं हूँ जो सारा काम बिगाड़ देता हूँ," मैंने कहा, "यह सारा कसूर मेरा है।"

"नहीं; तुम्हारा नहीं है। यह मेरा क़सूर है। यह मैं हूँ, जिसने सारे मुर्गी के बच्चों को मार डाला।"

"तुमने कैसे मार डाला है ?"

"मैं तुमको बता दूंगा। सिर्फ इस बात का वादा करो कि नाराज नहीं होगे," मिश्का ने कहा, "एक बार मैं सबेरे तड़के सो गया था और जब जागकर मैंने थर्मामीटर की ओर देखा तो उसका पारा १०४ डिग्री तक चढ़ गया था, मैंने फौरन ढक्कन खोला ताकि अंडों को ठंडक मिल जाय। लेकिन मैं समझता हूँ तब तक काफी देर हो चुकी थी।"

"यह कब की बात है ?"

"पाँच दिन हुए !"

मिश्का बड़ा अपराधी सा और दुःखी दिखाई पड़ रहा था।

"अच्छा। तुमको फिक्र करने की जरूरत नहीं है," मैंने उससे कहा, "अंडे तो उससे बहुत पहले ही बेकार हो गए थे।"

"किससे पहले ?"

"तुम्हारे देर तक सो जाने के पहले।"

"किसने उन्हें खराब कर दिया था ?"

"मैंने।"

"तुमने ? कैसे ?"

"मैं भी देर तक सोता रहा, तापक्रम कम हो गया और अंडे खराब हो गए।"

"यह बात कब हुई ?"

"दसवें दिन।"

"तुमने पहले कोई बात क्यों नहीं कही ?"

"मैं अपनी ग़लती स्वीकार करने में डरता था। मैं समझता था कि शायद बच्चे किसी तरह न मरे हों, लेकिन अब मैं समझता हूँ कि वे मर गए थे, मैंने ही उन्हें मार डाला था।"

"और तुमने लड़कों को बेकार ही में इतना काम करने दिया," मिश्का ने कठोरता पूर्वक मेरी ओर देखते हुए कहा, "सिर्फ इसलिए क्योंकि तुम अपनी ग़लती स्वीकार करने में डर रहे थे।"

"हाँ ! मैंने सोचा था कि सब ठीक होगा। लड़के काम पूरा तो करेंगे ही, चाहे जो हो, नहीं तो हम लोगों को पता भी न चल पाएगा कि मुर्गी के बच्चे मर गए वे या जीवित रहे।"

"और वे करते या न करते।" मिश्का ने गुस्से में कहा, "चाहे जो भी हो, तुमको अपनी ग़लती स्वीकार कर लेनी चाहिए थी

जिससे कि हम सब लोग मिलकर किसी बात का निश्चय करते, बजाय इसके कि तुमने अकेले ही सबों के बदले में सोच-विचार कर निश्चय कर लिया।"

"देखो इधर," मैंने कहा, "तुम आखिर मेरे ऊपर चिल्ला क्यों रहे हो ? तुम्हीं ने अपनी ग़लती क्यों न मान ली थी ? तुम भी तो बहुत देर तक सोते रहे थे, थे कि नहीं ?"

"मैंने जरूर ऐसा किया था," मिश्का ने क्रोधित होकर कहा, "यह तो निश्चित है कि मैं पूरा सुअर हूँ। अगर चाहो तो तुम मेरी नाक में छेद कर सकते हो।"

"इस तरह का कोई काम करने मैं नहीं जा रहा हूं। लेकिन इतना याद रखना कि जो कुछ मैंने तुम्हें बताया है, लड़कों में जाकर उसे चिल्लाने न लगना," मैंने कहा।

"मैं कल उनको बता दूँगा, लेकिन तुम्हारे बारे में नहीं, अपने बारे में। सबको पता तो चल जाय कि मैं कितना बड़ा सुअर हूँ। मेरे लिये यही सज़ा का काम करेगा।"

"ठीक है। तब फिर मैं भी स्वीकार कर लूँगा," मैंने कहा।

"न–न। अच्छा यही होगा कि तुम अपनी ग़लती को स्वीकार मत करो।"

"क्यों न करूँ ?"

"देखो, तुम उन लोगों को अच्छी तरह जानते हो। वे लोग हमेशा हम लोगों की हँसी उड़ाया करते हैं, सिर्फ इसलिए कि हम लोग हर काम साथ-साथ करते हैं। हम लोग साथ-साथ स्कूल जाते हैं, साथ-साथ अपने पाठ याद करते हैं और साथ ही साथ कम अंक भी पाते है। अब वे लोग यह कहना भी शुरू कर देंगे कि ये लोग

अपने यहाँ पर साथ ही साथ बहुत देर तक सोते भी रहते हैं।"

"उन लोगों को, जो मन हो, कहने दो," मैंने कहा, "इसके अलावा एक बात और भी है। मैं सामने खड़ा रहूँ, और उन लोगों को तुम्हारे ऊपर हँसने दूँ। भला तुम्हीं बताओ, आखिर ऐसा मैं कैसे होने दूंगा ?"

पूर्ण निराशा के बाद

यह दुःख भरा दिवस भी व्यतीत हो गया और फिर संध्या आ गयी। बच्चों की हालत में कोई परिवर्तन नहीं हुआ—इन्क्यूबेटर में गर्मी मौजूद थी, लैम्प अब भी जल रहा था, लेकिन हमारी आशाएँ मर चुकी थीं। मिश्का अपने हाथ में अण्डा लेकर उसे घूरता हुआ चुपचाप बैठा था। हम लोग इस बात का निश्चय न कर पा रहे थे कि अंडे को चिटका कर खोल दें या थोड़ी देर इन्तजार करें। एकाएक मिश्का एक दम चौंक कर उठ बैठा और मेरी ओर आँखें फाड़ कर घूरने लगा। मैंने समझा कि उसने मेरे पीछे की ओर किसी भूत को देख लिया है और मैं भी तेजी से पीछे की ओर घूम गया। लेकिन उधर तो कुछ था नहीं। मैंने फिर घूम कर मिश्का की ओर देखा।

"देखो"—उसने अण्डे वाले हाथ को फैलाते हुए भर्राये गले से कहा।

पहले तो मुझको कोई भी चीज बिल्कुल दिखाई न पड़ी लेकिन फिर मैंने देखा कि अंडे में एक जगह पर ज़रा सा चिटकने का सा निशान बना हुआ था।

"क्या तुमने इसे किसी चीज़ पर पटका है ?"

मिश्का ने सिर हिला दिया।

"तब—तब फिर क्या मुर्गी के बच्चे ने इसे चिटकाया है ?"

मिश्का ने सिर हिलाकर स्वीकृति दी।

"क्या तुम्हें इस बात का पूरा विश्वास है ?"

मिश्का ने अपने कन्धे बिचकाए।

मैंने सावधानी-पूर्वक अपने नाखून से अंडे के टूटे हुए छिलके को उठाया और अंडे में छोटा सा सूराख किया। फौरन एक नन्हीं सी पीले रंग की चोंच छेद के बाहर निकलती हुई दिखाई दी और फिर ग़ायब हो गई।

हम लोग इतने उत्तेजित हो गये थे कि मुँह से आवाज़ न निकल सकी। हमने मारे खुशी के सिर्फ एक दूसरे का आलिङ्गन कर लिया।

"हुर्रा ! हो गया !" मिश्का चिल्ला पड़ा और खूब जोरों से हँसी के ठहाके लगाने लगा—"अब हम लोगों को किधर दौड़ना चाहिए ? पहले किधर चलोगे ?"

"एक मिनट रुको !" मैंने कहा, "भड़भड़ क्या है ? आखिर तुम भागे कहाँ जा रहे हो ?"

"हम लोगों को दौड़कर लड़कों को बताना है न," वह दरवाजे की ओर दौड़ पड़ा।

"रुको !" मैंने कहा, "पहले अंडे को वापस रख दो, मैं समझता हूँ तुम इसे अपने साथ तो ले नहीं जाओगे !"

"मिश्का लौटकर आया और अंडे को वापिस इन्क्यूबेटर में रख दिया। उसी वक्त कोस्त्या आ गया।

"अरे, हम लोगों को एक मुर्गी का बच्चा मिल गया है," मिश्का ने चिल्लाकर कहा।

"तुम झूठ बोल रहे हो।"

"कसम से।"

"कहाँ है ?

मिश्का ने इन्क्यूबेटर का ढक्कन उठा दिया और तब कोत्स्या ने अन्दर झाँक कर देखा।

"मुर्गी का बच्चा कहाँ है ? मुझे तो सब के सब अंडे ही दिखाई पड़ रहे हैं।"

मिश्का ने चिटके हुए अंडे को कहीं रख दिया था और अब भूल गया था और वह उसको ढूँढ़ने से मिल नहीं रहा था। अन्त में किसी न किसी तरह संयोग से वह उसे मिल गया और उसने विजयोल्लास के साथ उसे कोत्स्या को दिखाया।

कोत्स्या खुशी के मारे चिल्ला पड़ा—"देखो इसके अन्दर से सचमुच एक मुर्गी के बच्चे की चोंच सी निकल रही है," उसने चिल्ला कर कहा।

"अरे यह बिल्कुल सच है। क्या तुमने समझा था कि मैं सब से किसी तमाशे की बात कर रहा हूँ, या और कुछ समझा था ?"

"थोड़ी देर रुको, यारो ! तुम इस अंडे को लटका दो और मैं दौड़ कर जाता हूँ और दूसरे लोगों को बुला कर लाता हूँ।"

"बिल्कुल ठीक ! जाओ, उन लोगों को बुला लाओ। उन लोगों को यक़ीन ही नहीं था कि मुर्गी का एक भी बच्चा निकलेगा। समूची शाम बीत गई और कोई नहीं आया।"

"यही तो बात है जो तुम ग़लत समझ रहे हो। वे सब के सब मेरे घर में एकत्र हैं और उन्हें अब भी मुर्गी के बच्चों वाली बात पर पूरा विश्वास है। लेकिन वे लोग तुमको परेशान करने में डरते

हैं और इसीलिये मुझे यह पता लगाने भेजा है कि यहाँ के क्या हाल-चाल हैं ?"

"क्यों, डर क्यों रहे थे ?"

"अरे भाई, वे इस बात को खूब अच्छी तरह से समझते थे कि तुम्हें इस समय कैसा बुरा लग रहा होगा। और इसीलिए वे तुम्हें बीच में बाधा नहीं पहुँचाना चाहते थे।"

कोस्त्या दौड़ कर बाहर गया, हम लोगों को सीढ़ियों से उसके कूदने की आवाज सुनाई देने लगी। वह तीन-तीन सीढ़ियाँ एक साथ फांद रहा था।

"गौली", मिश्का चिल्ला पड़ा—"मैंने अपनी माँ को भी अभी तक नहीं बताया है।" वह अपनी माँ को बुलाने भाग गया और मैंने अंडे को उठा लिया तथा उसे लेकर अपनी माँ को दिखलाने के लिए दौड़ पड़ा।

माँ ने उसे देखा और देख कर कहा कि तुरन्त दौड़ कर वापस जाओ और इसे इन्क्यूबेटर में वापस रख दो नहीं तो इसमें ठण्ड लगेगी और मुर्गी के बच्चे को सर्दी लग जाएगी।

मैं लौट कर मिश्का के घर पहुँचा और देखा कि वहाँ पर वह रसोई में बड़ा उत्तेजित सा खड़ा हुआ था तथा उसकी माँ और पिता खड़े-खड़े उस पर हँस रहे थे। मिश्का ने ज्यों ही मुझे देखा, उसने झपट कर पूछा—

"क्या तुमने देखा था कि मैंने उस अंडे को वहाँ पर रख दिया है ? मैंने सारा का सारा इन्क्यूबेटर छान डाला मगर मुझे वह कहीं मिला ही नहीं।"

"कौन सा अण्डा ?"

"अरे जानते नहीं हो ? वही जिसमें बच्चा था।"

"यह है," मैंने कहा।

जब मिश्का ने अंडे को मेरे हाथ में देखा तो उसे करीब-करीब ग़श सा आ गया।

"बेवक़ूफ़, गधा ! अंडे को उठा लेने और उसको लेकर भाग जाने में तुम्हारा क्या मतलब था ?"

"हिश", मिश्का की माँ ने कहा—"एक अंडे के पीछे इतना बवाल मचा रहे हो।"

"लेकिन माँ, यह कोई ऐसा-वैसा अंडा थोड़े ही है। जरा इसको ओर देखो तो।"

मिश्का की माँ ने अंडे को ले लिया और छिद्र में से दिखाई पड़ती हुई छोटी-सी, नन्हीं-सी चोंच को देखा। उसके पिताजी ने भी उसकी ओर देखा।

"हूँ", उन्होंने मुस्करा कर कहा—"है ध्यान देने योग्य !"

"इसमें ध्यान देने योग्य तो कोई बात नहीं है," मिश्का ने अपनी बात में गुरुता का पुट देते हुए कहा—"यह तो सीधा-सादा स्वाभाविक दृश्य है।"

"तुम स्वयं एक स्वाभाविक दृश्य हो," मिश्का के पिता हँसे—"सचमुच मुर्गी के बच्चों के विषय में ध्यान देने योग्य कोई बात नहीं है। जो ध्यान देने की बात है वह यह कि यह तुम्हारे इन्क्यूबेटर में अंडे को फोड़ कर निकल सका। मैं यह मान लेता हूँ कि मैंने यह कभी नहीं सोचा था कि इसमें से भी कोई चीज निकलेगी।"

"अच्छा, तब आपने कुछ कहा क्यों नहीं ?"

"मैं क्यों कहता ? मुझे तो यह अच्छा लगता है कि तुम अपना समय मुर्गी के बच्चों को पालने में व्यतीत करो बजाय इसके कि सड़क पर जंगलियों की तरह घूमा करो।"

ये बातें चल ही रही थीं कि माया भी रसोई में आ गई। वह अभी-अभी बिस्तरे पर से सोकर उठी थी और आगे पीछे चारों ओर से अपनी पोशाक में लिपटी हुई थी और पैरों में जूता भी पहने थी। हमने उसको भी दो एक मिनट के लिए अंडा अपनी हथेली पर रख लेने दिया। उसने अपनी आँख सूराख पर रख दी, ठीक उसी समय बच्चे ने भी अपनी चोंच सूराख के बाहर निकाली।

माया चीख़ उठी। "वह मुझे चोंच मारना चाहता था," उसने चिल्ला कर कहा—"जरा सा बच्चा! शैतान, अभी तुम अंडे के बाहर तो निकले नहीं हो और लड़ने के लिए पहले से ही तैयारियाँ किए हुए हो।"

"अभी-अभी पैदा हुए मुर्गी के बच्चे के ऊपर तुमको इस तरह चिल्लाना नहीं चाहिए", मिश्का ने कहा—"तुम तो इसको डरा दोगी।" उसने अंडा ले लिया और उसे वापस इन्क्यूबेटर में रख दिया।

इसी समय बाहर सीढ़ियों पर शोर सुनाई पड़ा और दौड़ते हुए पैरों की आवाजें भी आईं। जरा सी ही देर में सारा रसोई घर लड़कों से भर गया। अण्डे को फिर बाहर निकालना पड़ा और वह फिर सब को दिखाया गया। हर लड़का छेद के अन्दर झाँक कर बच्चे को देखना चाहता था।

"दोस्तो !" मिश्का चिल्लाया—"हम लोगों को अण्डा वापस दे दो। हमें इसको इन्क्यूबेटर में फिर रख देना है, नहीं तो मुर्गी के बच्चे को ठंड लग जाएगी।"

"लेकिन किसी ने उसकी ओर जरा सा भी ध्यान न दिया। आखिर हमें जबर्दस्ती अण्डा वापस लेना पड़ा।

"क्या दूसरे अंडे बिल्कुल नहीं चिटके हैं ?" वित्या ने पूछा।

उसने दूसरे अंडों का भी निरीक्षण किया लेकिन उनमें कहीं भी चिटकने का निशान नहीं था।

"नहीं नहीं, सिर्फ एक नं० ५ ही है। बाकी में चिटकने का कोई निशान नहीं हैं।" मिश्का ने कहा।

"वे शायद देर में निकलेंगे !" लड़कों ने कहा

"कोई पर्वाह नहीं !" मिश्का बोला—"अगर सिर्फ एक ही मुर्गी का बच्चा निकले, तब भी मैं प्रसन्न होऊँगा। कम से कम हम लोगों ने जो तकलीफ़ उठाई है, वह बिल्कुल बेकार तो नहीं जाएगी।"

"अच्छा, हम लोग अंडे को फोड़ न डालें, बच्चे को निकल आने दें," सेनिया वाब्रोव ने कहा—"उसे अन्दर बैठे-बैठे बड़ी तक-लीफ हो रही होगी।"

"अरे नहीं," मिश्का ने कहा—"अंडे को कहीं छू भी न लेना। बच्चे की त्वचा अभी भी बड़ी मुलायम है और सम्भव है तुम उसे हानि पहुँचा दो।"

थोड़ी ही देर में लड़कों ने कमरे को बिल्कुल खाली कर दिया। यों सबके सब वहीं रुकना चाहते थे और बच्चे को अंडे

के बाहर फुदकते हुए देखना चाहते थे। लेकिन देर पहले ही काफी हो चुकी थी। उन बेचारों को लाचार अपने-अपने घर जाना ही पड़ा।

"घबड़ाओ नहीं," मिश्का ने कह दिया--"अकेला यही बच्चा तो होगा नहीं। तुम लोग देखना, दूसरे भी जल्दी अंडा फोड़ कर बाहर निकलने लगेंगे।"

जब लड़के चले गये तो मिश्का ने एक बार और अंडों की परीक्षा की और चिटकने का एक और निशान पाया।

"देखो," उसने चिल्ला कर कहा-"नं० ११ ने भी निकलना शुरू कर दिया है।"

मैंने देखा और निश्चय ही उस अंडे में, जिसके उपर नं० ११ लिखा हुआ था, चिटकने का एक चिन्ह बना हुआ था।

"कितने अफसोस की बात है कि लड़के चले गये हैं", मैंने कहा-"और अगर उनको बुलाने के लिए दौड़कर जाया जाय तो भी इसके लिए अब बहुत देर हो गई।"
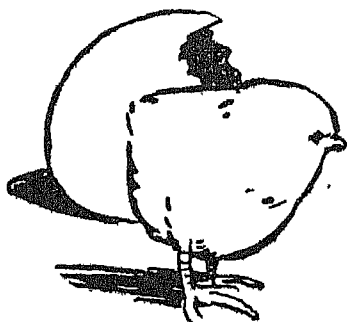
"हूँ, अफसोस की बात तो है,"-मिश्का ने बड़बड़ाकर कहा-"लेकिन चिन्ता मत करो, कल वे मुर्गी के बच्चों को पहले से ही निकले हुए पावेंगे।"

हम लोग इन्क्यूबेटर के बगल में ही बैठ गये। खुशी से हमारा दिल फटा सा जा रहा था।

"हम-तुम निश्चय ही अधिक सौभाग्यशाली हैं," मिश्का ने कहा-

"मैं शर्त बद कर कह सकता हूँ कि जितने सौभाग्यशाली हम लोग हैं, उतने बहुत कम लोग होते हैं।"

रात आ गई। सब लोग बहुत पहले ही बिस्तर पर सोने चले गए थे मगर मेरी और मिश्का की आँखों में जरा सी भी नींद नहीं थी।

समय बहुत जल्दी बीत गया। प्रातःकाल दो बजे के लगभग दो और अंडे चिटक गए—नं० ८ और १०। अगली बार जब हमने इन्क्यूबेटर के अन्दर देखा तो वहाँ पर एक महान् आश्चर्य-जनक वस्तु हमारी प्रतीक्षा कर रही थी। उसमें, अण्डों के बीच में, एक छोटा सा नवजात मुर्गी का बच्चा बैठा हुआ था। वह अपने पैरों पर खड़े होने का प्रयत्न कर रहा था, मगर वह सिर्फ फुदक भर पा रहा था।

प्रसन्नता से लगभग मेरा दम घुटने सा लगा।

मैंने मुर्गी के बच्चे को उठा लिया। अभी यह भीगा हुआ ही था और पंख मौजूद होने पर भी इसकी गुलाबी रंग की कोमल पीठ के ऊपर पीले रंग के रेशम के से फाहे गन्दगी के साथ चिपके हुए थे।

मिश्का ने बर्तन को खोला और मैंने मुर्गी के बच्चे को उसके अन्दर रख दिया तथा हमने 'पैन' के नीचे और गरम पानी डाल दिया ताकि बच्चे को गर्माहट पहुँचे।

"उसके अन्दर बहुत गर्मी है, जल्दी ही वह सूख जाएगा और तब बड़ा सुन्दर और रोएंदार दिखाई पड़ने लगेगा," मिश्का ने कहा।

फूटे हुए अंडे के दोनों टुकड़ों को उसने इन्क्यूबेटर के अन्दर से उठा लिया।

"बड़े ताज्जुब की बात है कि इतना बड़ा मुर्गी का बच्चा इतने छोटे से अंडे के भीतर रह कैसे सका।"

और वास्तव में अंडे को देखते हुए बच्चा काफ़ी बड़ा दिखाई पड़ता था लेकिन, जो भी हो, वह सिकुड़ा और मुड़ा हुआ उसी के अन्दर रहा होगा। उसके पैर उसके नीचे सिमटे रहे होंगे और उसका सिर मुड़ा रहा होगा किन्तु अब वह सीधा होकर अपने छोटे छोटे और पतले पैरों पर, खड़ा हो गया था और अपनी गर्दन उसने फैला रखी थी।

मिश्का अंडे के टूटे हुए टुकड़ों को देख ही रहा था कि यकायक चिल्ला उठा, "अरे देखो! यह तो ग़लत बच्चा निकल आया है।"

"क्या मतलब? ग़लत बच्चा?"

"यह पहले वाला थोड़े ही है। सबसे पहले जो चिटका था, वह तो नं० ५ था और यह नं० ११ है।"

और यह बात बिल्कुल सच थी कि अंडे के ऊपर ११ का ही अंक लिखा हुआ था।

हम लोगों ने इन्क्यूबेटर के अन्दर झाँका। नं० ५ अब भी वहीं पड़ा हुआ था, जहाँ हमने उसे रक्खा था।

"इसमें मामला क्या हुआ है?" मैंने कहा—"अंडे के छिलके को तो पहले-पहल इसी ने फोड़ा था और अब यह निकल नहीं रहा है।"

"शायद यह बहुत ज्यादा कमजोर है और अपने आप अंडे के बक्कल को फोड़ने में असमर्थ है," मिश्का ने कहा,—"थोड़ी देर तक

इसको पड़ा रहने दो, शायद यह कुछअधिक शक्ति आने पर तगड़ा हो जाए।"

हमारी भूल

हम लोग इतने अधिक व्यस्त थे कि जान भी न पाए कि प्रात:काल हो गया है। हमें इसका पता तब चला जब हमने देखा कि सूर्य खिड़की में से चमक रहा है। सूर्य की प्रसन्न किरणें रसोईघर के फर्श पर खेल रही थीं। उन्होंने सारे कमरे को ऐसा बना दिया था कि वह प्रसन्नता से ओतप्रोत और चमकता हुआ सा दिखाई पड़ रहा था।

"अभी देखना, लड़के अभी-अभी आ ही रहे होंगे", मिश्का ने कहा—"वे अधिक देर तक बाहर रुकेंगे नहीं।"

मुश्किल से ये शब्द उसके होठों से बाहर निकल पाए होंगे कि उन लोगों में से दो आ पहुँचे—ये ज़ेन्या और कोस्त्या थे।

"एक विस्मयजनक वस्तु देखना चाहते हो?" मिश्का ने चिल्लाकर कहा और नवजात मुर्गी के बच्चे को वार्मिंग-पैन में से उठा लिया—"देखो, प्रकृति की विस्मयजनक घटना।"

लड़कों ने गम्भीरतापूर्वक बच्चे की परीक्षा की।

"तीन और अंडे भी चिटके हैं," मिश्का ने अपना गर्व प्रकट किया—"देखो, नं० ५, नं० ८ और नं० १०"

बच्चा सर्दी को बिल्कुल पसन्द नहीं कर रहा, यह साफ़ दिखाई पड़ रहा था। जब हम लोग उसे हाथ में पकड़ लेते थे तो वह फड़फड़ाने लगता था और जब उसे वापस इन्क्यूबेटर में फिर रख देते थे तो अपने आप वह बिलकुल शान्त हो जाता था।

"तुमने इसे कुछ खिलाया है ?" कोत्स्या ने पूछा।

"ओह नहीं," मिश्का ने कहा—"अभी उसे खिलाना तो आवश्यकता से अधिक शीघ्रता करना होगा। जब वे सबके सब निकल आवें उसके दूसरे दिन उन्हें खाना देना चाहिए।"

"अच्छा, मैं शर्त बद सकता हूँ कि तुम रात भर सोए नहीं हो," ज़ेन्या ने कहा।

"नहीं........हम लोग बहुत ही अधिक व्यस्त रहे हैं।"

"तो यह काफी अच्छा रहेगा कि तुम जाकर एक झपकी ले लो, और हम लोग थोड़ी देर तक पहरा देते रहें," कोस्त्या ने प्रस्ताव किया।

"ठीक, लेकिन इस बात का वादा करो कि अगर दूसरा बच्चा निकलेगा तो तुम हमको जगा दोगे।"

"बिल्कुल, बिल्कुल।"

मिश्का और मैं कोच के ऊपर लेट गये और फ़ौरन सो गए। सच बात तो यह थी कि मुझे बड़ी देर से नींद लगी हुई थी। लड़कों ने हम लोगों को लगभग १० बजे जगाया।

"आओ, आश्चर्य के विषय नं० २ को देखो," कोस्त्या चिल्लाया।

"नं० २ क्या ?" मैंने बुदबुदा कर कहा। अब भी मैं आधी नींद में ही था। जब मैंने चारों ओर नजर दौड़ाई तो देखा कि रसोईघर में लड़के ही लड़के भरे हैं।

"देखो यह है!" चिल्लाकर उन लोगों ने कहा और उस वार्मिंग-पैन की ओर इशारा कर दिया।

मैं और मिश्का कूद कर खड़े हो गए और पैन में झांकने के लिए दौड़े। इस समय उसके अन्दर दो बच्चे मौजूद थे उनमें से एक रोएंदार और गोल-मटोल था और अंडे के पाउडर की तरह पीला था। वह सही अर्थों में सुन्दरता थी।

"है नहीं बढ़िया !" मैंने कहा–"पहले वाला इतना सूखा क्यों दिखाई पड़ता है ?"

लड़के हँसने लगे, "पहले वाला वह है।"

"कौन सा ?"

"वह रोयें वाला।"

"नहीं, नहीं। वह नहीं है। वह यह है जो खाल वाला है।"

"अरे खालदार तो अभी अंडा फोड़कर निकला है। पहले वाला ही सूख गया है और इसीलिए वह रोयेंदार दिखाई पड़ रहा है।"

"यह क्या बड़ी बात नहीं है ?" मैंने कहा–"तब तो फिर यह दूसरा वाला भी जब सूख जाएगा तो रोऐंदार दिखाई पड़ने लगेगा ?"

"बिल्कुल !"

"वह किस नम्बर वाला है ?" मिश्का ने पूछा।

लड़के उलझन में पड़ गए।

"मैं समझता था कि तुम लोग जानते होगे कि अंडों पर नम्बर पड़े हुए हैं।"—मिश्का ने कहा।

"नहीं, हम लोगों ने कोई नम्बर नहीं," देखा कोत्स्या ने कहा।

"हम लोगों को बक्कल से पता चल सकता है," मैंने कहा—"बक्कल तो अभी अन्दर होगा ही।"

मिश्का ने इन्क्यूबेटर के अन्दर झाँक कर देखा और हर्ष की एक चीख़ के साथ सिर बाहर निकाल लिया।

"देखो, दो और नवजात बच्चे इसके अन्दर मौजूद हैं।"

सब लोग एक दम इन्क्यूबेटर की ओर झपट पड़े। मिश्का ने सम्हाल कर सावधानी से दोनों नये बच्चे निकाले और उन्हें हम लोगों को दिखाया।

"ये रहे, बिल्कुल बाज से मालूम पड़ते हैं"—मिश्का ने गर्व-पूर्वक कहा।

हम लोगों ने उन को भी शेष दोनों के साथ वार्मिंग-पैन में रख दिया। अब हम लोगों के पास चार बच्चे थे। वे आपस में एक दूसरे के साथ चिपके हुए बैठे थे ताकि उन्हें गर्मी प्राप्त होती रहे।

मिश्का ने टूटे हुए अंडों के छिलकों को इन्क्यूबेटर के बाहर निकाला और उनमें नम्बर ढूँढ़ने लगा।

"नं० ४, नं० ८ और नं० १०," उसने कहा—"लेकिन कौनसा किस नम्बर का है?"

वास्तव में अब तो आप भी नहीं बता सकते थे कि कौनसा बच्चा, किस अंडे में से निकला है। लड़के हँसने लगे।

"सब नम्बर मिल गए हैं।"

"नं० ५ अब भी इन्क्यूबेटर में ही पड़ा हुआ है।" मैंने कहा।

"बात तो ऐसी ही है," चिल्लाकर मिश्का ने कहा—"आखिर

इसमें मामला क्या है ? कहीं ऐसा तो नहीं है कि यह मर गया हो ?"

हम लोगों ने नं० ५ को बाहर निकाला और छेद को थोड़ा सा और चौड़ा किया। बच्चा अन्दर शान्त पड़ा हुआ था। उसने अपना सिर हिलाया।

"हुर्रा ! ज़िन्दा है", हम लोगों ने शोर मचा कर कहा और उसे वापस इन्क्यूबेटर में रख दिया।

मिश्का ने शेष अंडों की परीक्षा की और नं० ३ में चिटकने का एक और निशान पाया। लड़के ताली बजाने लगे।

आखिरकार सब ओर भनभनाहट हो रही थी। थोड़ी देर में माया अन्दर आई। हम लोगों ने उसे भी बच्चे दिखाये।

"वह वाला मेरा है", उसने रोयेंदार बच्चे को पकड़ने का प्रयत्न करते हुए कहा।

"एक मिनट रुको", मैंने कहा—"पकड़ो मत। उसे थोड़ी देर के लिए वार्मिंग-पैन में बैठे रहना है, नहीं तो वह सर्दी खा जायगा।"

"ठीक है, मैं उसे बाद में ले लूँगी। लेकिन वह रोयें वाला मेरा ही रहेगा। मैं उस खाल वाले को नहीं चाहती।"

उस दिन इतवार था। स्कूल तो था ही नहीं इसलिये सब लड़कों ने पूरा दिन हमारे रसोईघर में ही बिताया। मिश्का और मैं इन्क्यूबेटर की बगल में सम्माननीय स्थान पर बैठे थे। दाहिनी ओर, स्टोव के पास, इन्क्यूबेटर रखा हुआ था जिसके अन्दर बच्चे थे। स्टोव के ऊपर गर्म पानी का बर्तन था और खिड़की की देहली पर बक्स रखे हुए थे जिनमें ओत्स थे जो चम-

कीले हरे रंग के थे। लड़के हँसते थे, मज़ाक करते थे और हर तरह की रोचक कहानियाँ कह रहे थे।

"क्या तुमने हिसाब लगाया कि वे अंडों में से उस दिन क्यों नहीं निकले जिस दिन की उम्मीद थी ?" लड़कों में से एक ने पूछा—"तुम्हें तो आशा थी कि वे शुक्रवार को निकल आयेंगे।"

"मैं नहीं बता सकता क्या हुआ," मिश्का ने जवाब दिया—"किताब तो बतलाती है कि उनके निकलने की आशा २१ वें दिन रहती है और आज तेईसवाँ दिन है। मुमकिन है कि जिन लोगों ने किताब लिखी है, वही ग़लती कर गये हों।"

"अगर ग़लती किसी ने की है तो तुमने," ल्योशा क्यूरोश्किन ने कहा—"तुमने अंडों को इन्क्यूबेटर में कब रखा था ?"

"तीन तारीख़ को। उस दिन शनिवार था। मुझे बिल्कुल ठीक याद है क्योंकि दूसरे दिन इतवार था।"

"मेरी बात सुनो," जेनिया स्क्वोर्त्सोव ने कहा—"थोड़ी सी ग़लती है। तुमने अंडों को शनिवार को अन्दर रक्खा और इक्कीसवाँ दिन पड़ता है शुक्रवार ?"

"उसकी बात ठीक है," वित्या स्मिरनोव ने कहा—"अगर तुमने शनिवार को प्रारम्भ किया था तो इक्कीसवां दिन शनिवार को होना चाहिए। हफ्ते में सात दिन होते हैं और इक्कीस दिन मिलाकर पूरे-पूरे तीन हफ्ते होते हैं।"

"तीन गुणा सात—इक्कीस होते हैं", सेन्या बाबरोव हँसा—"कम से कम इतना तो गुणा कहता ही है।"

"मैं गुणा के सम्वन्ध में नहीं जानता किन्तु हमने इसी प्रकार गणना की है," मिश्का ने रुष्ट होकर कहा।

"तुमने किस प्रकार गिना ?"

"मैं बताता हूँ," उँगलियों पर गणना करते हुए मिश्का बोला—"तीसरी को पहला दिन था, चौथी को दूसरा, पांचवीं को तीसरा...........।"

उसने हर प्रकार से शुक्रवार तक गिना और इक्कीस दिन जोड़े। सेन्या कुछ परेशान हुआ, "क्या मजाक है ? गुणा करने के हिसाव से इक्कीसवां दिन शनिवार होता है और जब तुम उँगलियों पर गिनते हो तब वह शुक्रवार होता है।"

"दुवारा दिखाओ, तुमने कैसे गिना"—सेन्या ने कहा।

"देखो", मिश्का बोला और अपनी उंगलियां झुकाता गया—शनिवार तीसरी को पहला दिन था। रविवार-चौथी को दूसरा दिन था।......"

"एक मिनट ! तुम ग़लत हो ? यदि तुमने तीसरी को प्रारम्भ किया तो तुमको वह दिन नहीं गिनना चाहिए।"

"क्यों ?"

"क्योंकि वह दिन पूरा नहीं हुआ था। चौथी तक वह समाप्त नहीं हुआ। इसका आशय है तुमको चौथी से गिनना चाहिए।"

अचानक मुझे व मिश्का दोनों को वह ध्यान आया। मिश्का ने नये तरीके से गिनना प्रारम्भ किया और वह ठीक हुआ।"

"निश्चित ही इक्कीसवां दिन कल था," उसने कहा।

"तब जैसा होना चाहिए, सब कुछ ठीक ही हुआ है," मैंने

कहा—"हमने अंडों को इन्क्यूबेटर में शनिवार की शाम को रक्खा था और पहली चटखन शनिवार की शाम को ही प्रकट हुई—ठीक इक्कीस दिन बाद।"

"यदि तुम ठीक से गिन पाते तो इतनी उलझन न होती?" वेन्या लोझकिन ने कहा।

प्रत्येक हंसने लगा।

"हाँ", मिश्का बोला, "अगर हमने यह ग़लती न की होती तो हमारी परेशानी और चिन्ता बहुत कुछ कम हो जाती।"

जन्म दिन

उस दिन के समाप्त होते-होते—दस बच्चे 'वार्मिङ्ग-पान' में रक्खे थे। बाहर निकलने वाला नं० ५ अन्तिम था। न जाने क्यों वह अपने अंडे से बाहर नहीं आना चाहता था अत: उसको सहायता देने के लिए हमने अंडे का ऊपरी भाग तोड़ा। अगर हमने वैसा न किया होता तो वह तब भी वहीं बैठा रहता। वह अन्य बच्चों की अपेक्षा छोटा व निर्बल था; सम्भवत: इस कारण कि वह अंडे में इतने अधिक समय तक रहा था।

संध्या तक इन्क्यूबेटर में केवल दो अंडे और रह गये थे। वे वहां रक्खे हुए बड़े उदास लग रहे थे और उनमें चटख़न का कोई चिह्न भी नहीं दिखाई पड़ता था। हमने इन्क्यूबेटर के नीचे लैम्प निरन्तर जलाये रक्खा किन्तु रात्रि व्यतीत होने पर भी वे बच्चे पैदा नहीं हुए। सभी नवजात बच्चों ने वार्मिग-पान में बड़े आराम से रात्रि व्यतीत की। प्रात:काल हमने उन्हें भूमि पर चलने के लिए छोड़ दिया। उस समय रूई के गालों के दस पीले गोले उनको

अपेक्षा कम मूल्यवान होंगे। उन्होंने अपनी नन्हीं-नन्हीं आँखें मूंद लीं और तीव्र प्रकाश से हट आये। कुछ अपने नन्हे पैरों पर स्थिर होकर खड़े रहे, कुछ अब भी चक्कर खा रहे थे, कुछ दौड़ने की निरर्थक चेष्टा कर रहे थे। कभी वे अपनी छोटी सी चोंच से फर्श के किसी स्थान पर चोट करते और कभी फर्श के तख्ते की चमकदार कीलों के माथे पर चोंच मारते थे।

"उनको देखो, वे भूखे हैं!" मिश्का चिल्लाया।

हमने तुरन्त एक अंडा उबाला, उसे अच्छी तरह भूना और तब ज़मीन पर फैलाया। किन्तु बच्चों को पता न था कि उसका वे क्या करें। तब हमने अपने हाथों से उन्हें खिलाने की चेष्टा की।

"खाओ, पगलो", हमने कहा। किन्तु बच्चों ने उसकी ओर देखा तक नहीं। तभी मिश्का की मां रसोई-घर में आई।

"वे अंडा नहीं खा रहे हैं, माँ," मिश्का ने कहा।

"उनको सिखाओ।"

"कैसे? हमने उनके खाने को कहा लेकिन वे सुनते ही नहीं हैं।"

"मुर्गी के बच्चों को सिखाने का यह ढंग नहीं है। धरती पर तुमको उँगली से टुक्—टुक् करना चाहिए।"

मिश्का बच्चों के निकट बैठ गया और अंडे के बिखरे हुए टुकड़ों के आगे, भूमि पर खुट—खुट करने लगा। बच्चों ने उँगली की खुट्—खुट् को भोजन के पास देखा और उन्होंने भी अपनी चोंच से वैसा ही करना प्रारम्भ किया। कुछ देर में उन्होंने सब अंडा खा लिया। तब हमने पानी की एक तश्तरी रक्खी जिसे वे पी

गये। हमको उन्हें यह सिखाना नहीं पड़ा। तब वे भीड़ से घबड़ा गये और हमने उन्हें बर्तन में गरम होने के लिए पुनः रख दिया।

जब मार्या पेत्रोवना क्लास में आईं तो हम लोग उनके पास दौड़े हुए गये और यह समाचार दिया कि अंडों ने बच्चे दे दिये हैं। वे बड़ी प्रसन्न हुईं।

"तो, आज तुम्हारे मुर्गी के बच्चों का जन्म दिन है।" उन्होंने कहा—"मैं तुम्हें बधाई देती हूँ।"

हम सब हँसे। तब वित्या स्मिरनोव ने कहा—"उनके लिये हमको जन्म-दिवस की दावत करनी चाहिए। हम लोग उसे आज ही क्यों न सम्पन्न करें।"

सभी ने उस सुझाव का स्वागत किया "हां, अवश्य अवश्य, मार्या पेत्रोवना ! क्या आप हमारे बच्चों के जन्म दिवस की दावत में आवेंगी ?"

"धन्यवाद। मैं खुशी से आऊँगी," मार्या पेत्रोवना ने मुस्कराते हुए कहा—"मैं उनके लिये एक उपहार भी लाऊँगी।"

"हम सब लोग उनके लिये उपहार लायेंगे।" लड़के चिल्लाये।

जब हम स्कूल से घर आये तो अधीरतापूर्वक अतिथियों के आगमन की प्रतीक्षा करते रहे। हम लोग यह देखने को मरे जा रहे थे कि हमारे मुर्गी के बच्चों को किस प्रकार के उपहार मिलेंगे।

सर्व प्रथम सेन्या बाबरोव एक फूलों का गुच्छा लेकर आया।

"वह किसलिये है ?" मिश्का ने प्रश्न किया।

"बच्चों के लिये यह मेरा उपहार है।"

"मुर्गी के बच्चों के लिए फूल लाते किसको सुना है ? वे फूल नहीं खा सकते; क्या खा सकते हैं ?"

"उन्हें खाना नहीं है। वे उन्हें देखेंगे और सूंघेंगे।"

"क्या विचार है ! जैसे उन्होंने इसके पहले कभी फूल देखे ही नहीं।"

"सचमुच, उन्होंने नहीं देखे हैं। उन्हें रखने के लिये एक बर्तन तो लाओ। तुम देखोगे कि वे कितने सुन्दर लगते हैं।"

हम एक कांच का बर्तन लाये और फूलों को उसमें रख दिया। दूसरे आने वालों में सेरयोझा और वादिक थे। वे दोनों भी स्नोड्राप फूल के गुलदस्ते लाये थे।

"सभी उनके लिये फूल क्यों ला रहे हैं ?" मिश्का ने त्यौरियां चढ़ा कर कहा।

"क्या तुमको हमारे उपहार पसन्द नहीं हैं ?" वादिक ने बिगड़ते हुए कहा—"उपहार किस प्रकार के हैं, इसका ख्याल करना अच्छा नहीं है।"

हमने उनके फूल भी पानी में रख दिये।

तब विन्या लोभकीन आया और थोड़ा सा ओटमील लाया। मिश्का ने संदिग्ध होकर देखते हुए कहा—"वे इसे खायेंगे ? इसमें मुझे शंका है।"

"तुम प्रयत्न कर सकते हो", वेन्या बोला।

"नहीं, हम मार्या पेत्रोवना के आने तक इसकी प्रतीक्षा करेंगे और उनसे पूछेंगे।"

तभी मार्या पेत्रोवना आयीं। वे अखबार में लपेट कर कोई

वस्तु लाई थीं। वह एक बोतल निकली जिसमें दूध की सी कोई वस्तु भरी हुई थी।

"दूध !" मिश्का चिल्लाया—"हमने उन्हें दूध देने के सम्बन्ध में तो कभी सोचा भी न था।"

"यह मक्खन का दूध है," मार्या पेत्रोवना ने कहा—"पहले कुछ दिनों उन्हें यही चाहिये। तुम देखोगे कि वे इसे कितना पसन्द करते हैं।"

तब हमने बच्चों को बर्तन से बाहर निकाला और एक तश्तरी में बटरमिल्क रख कर उन्हें दिया। उन्होंने उसे बड़े स्वाद से खाया।

"यही मुर्ग़ी के बच्चों के लिए उपयुक्त सौगात है," मिश्का प्रसन्न होता हुआ बोला—"मुर्ग़ी के बच्चों के जन्म-दिवस की दावत में क्या उपहार लावें यह तुम सबको जानना चाहिये।"

अतिथि एक के बाद एक आते रहे। वित्या और जेन्या बाजरा लाये। लूस्या कुरोचकिन बच्चों की एक खड़खड़िया ले आया।

"मैं सोच ही न सका कि क्या लाऊँ और तभी आते हुए मैंने एक दूकान पर इसको देखा और यह ले आया।"

"कमाल की सूझ है, मैं कहूँगा," मिश्का ने व्यंगपूर्वक कहा—"मुर्ग़ी के बच्चों के लिए उपयुक्त उपहार।"

"मुझे क्या मालूम था कि क्या ख़रीदना चाहिये ? और यह भी सम्भव है कि इसे वे पसन्द करें।"

वह बच्चों तक गया और उसको उनके सर पर बजाता रहा। उन्होंने बटरमिल्क में चोंच लगाना बन्द कर दिया और उसे अपने सिर उठा कर सुनते रहे।

"वह देखो ?" लूस्या प्रसन्नता से फूलते हुए चिल्लाया—"वे उसे पसन्द कर रहे हैं ।"

प्रत्येक हँसता रहा । "ठीक है," मिश्का बोला—"अब उन्हें शान्तिपूर्वक खाने दो ।"

मैंने मार्या पेत्रोवना से पूछा कि क्या हम उन्हें ओटमील खिला सकते हैं । उन्होंने कहा कि पका हुआ कुछ भी खाना वे खा सकते हैं ।

"आप उसे कैसे पकाती हैं," मिश्का ने जानना चाहा ।

"उसी प्रकार जिस प्रकार तुम कढ़ी पकाते हो," मार्या पेत्रोवना ने कहा ।

मिश्का व मैं तुरन्त लप्सी पकाना चाहते थे तभी एक अन्य अतिथि आ गया, कोस्त्या देव्यात्किन ।

"क्या तुम कोई उपहार लाये हो ?" लड़कों ने प्रश्न किया ।

"अवश्य, मैं लाया हूँ," कोस्त्या ने कहा और जेब से दो पकौड़ियाँ निकालीं ।

"कैसे मजे की सौगात है," लड़के हँसे ।

"तुम लोगों को जन्म-दिन की दावत में सदैव पकौड़ियाँ मिलती हैं, क्या नहीं मिलतीं ?" कोस्त्या बोला ।

"उनके अन्दर क्या है," मिश्का ने संदेह में प्रश्न किया ।

"चावल ।"

"चावल ?" मिश्का चिल्लाया ।

उसने कोस्त्या के हाथ से पकौड़ियाँ छीन लीं और उसमें से चावल बाहर निकालने लगा ।

"हः यह तुम क्या कर रहे हो ? क्या तुम मुझ पर विश्वास नहीं करते ?" कोस्त्या बोला।

किन्तु मिश्का ने उत्तर नहीं दिया। उसने सारे चावल एक तश्तरी में निकाले और बच्चों के सामने रख दिये। वे उसे चोंच से तुरन्त खाने लगे।

जब माया ने देखा कि मुर्गी के बच्चों के लिए हरेक कुछ न कुछ सौगात लाया है तो वह अपने कमरे में गयी और लाल रंग का रिबन ले आयी और उसको छोटे-छोटे टुकड़ों में काट कर प्रत्येक बच्चे की गर्दन में लाल रंग की टाई की तरह बाँध दिया। हमने फूलों के बर्तन बच्चों के निकट भूमि पर रख दिये और उन फूलों से, लाल रिबन से, बटरमिल्क की तश्तरी से, चावल व ताजे पानी

से वह एक सुन्दर जन्मदिवस की पार्टी प्रतीत होने लगी। कोस्त्या ने उन्हें घास खिलाने की चेष्टा की किन्तु मार्या पेत्रोवना ने कहा कि वे हरियाली के लिये अभी बहुत छोटे हैं और अच्छा हो हम कल तक प्रतीक्षा करें।

जब बच्चों ने भरपेट खा-पी लिया तब हमने उनके रिबन खोल दिये और पुनः बर्तन में रख दिया। मार्या पेत्रोवना ने सुझाया कि हम लोगों को रसोईघर का एक कोना अलग कर देना चाहिए और गरम पानी का एक बर्तन रख देना चाहिए जिससे वे गरम बने रहें।

"सबसे अच्छा हो कि उन्हें गाँव ले जाया जाय। यहाँ अन्दर रह कर वे बीमार हो जायंगे व मर जाँयगे! उन्हें खुली हवा चाहिए," मार्या पेत्रोवना ने कहा।

हमने उन्हें इन्क्यूबेटर दिखाया और उसमें अब तक पड़े हुए दो अंडे भी दिखाये।

"मुझे डर है कि अब वे दोनों पैदा नहीं होंगे।" मार्या पेत्रोवना ने कहा—"किन्तु इससे कुछ नहीं। तुमने जो कुछ किया है, बहुत सुन्दर है।"

"वह केवल इसलिये कि सभी लड़कों ने हमें सहयोग दिया," मिश्का ने कहा—"हम अकेले सब व्यवस्था नहीं कर सकते थे।"

"मैं डर रहा था कि अंडों में से कुछ भी नहीं निकलेगा क्योंकि मैं एक बार सोगया तथा तापक्रम नीचा होगया था," मैंने कहा।

"वे थोड़ा ठंडे होजाने से ही बरबाद नहीं हो सकते।" मार्या पेत्रोवना ने कहा—"कुछ भी हो, मुर्गी हर समय तो अंडों पर बैठी नहीं रहती। दिन में एक बार कम से कम, यों ही बच्चों क

बिना ढके छोड़कर वह खाना खाने बाहर तो जाती ही है। इन्क्यू-बेटर के अंडे भी दिन में कम से कम एक बार ठंडे किये जाते हैं जिससे भ्रूण अपने प्राकृतिक रूप में बढ़ सकें। उनको आवश्यकता से अधिक गरम करना भी हानिकारक है।"

"मैंने एक बार उन्हें अधिक गरम भी कर दिया था," मिश्का बोला—"तब तापमान १०४ डिग्री तक ऊपर चढ़ गया था।"

"सम्भव है कि कुछ भी भारी नुकसान हो जाता उसके पहले ही तुमने उसे देख लिया होगा," मार्या पेत्रोवना ने कहा—"किन्तु यदि अधिक समय तक उसी प्रकार तापक्रम ऊँचा बना रहता तो अंडे निश्चित ही नष्ट हो जाते।"

उस दिन संध्या को हमने उन दो बचे हुए अंडों को तोड़ा। उन दोनों में हमने अविकसित भ्रूण को देखा। उनमें जीवन समाप्त होगया था और पैदा होने के पहले ही बच्चे मर गये थे। सम्भवतः वह अधिक गरम करने का प्रतिफल हो।

हमने लैम्प बुझा दिया: वह ठीक तेईस दिन तक जला था। थर्मामीटर का पारा धीरे से नीचे चला गया। इन्क्यूबेटर ठंडा हो गया। किन्तु स्टोव के निकट उस बर्तन में रहता था हमारा सुखी परिवार—दस रोयेंदार नन्हे नन्हे मुर्ग़ी के बच्चे।

गाँव की ओर

हमारा छोटा परिवार संग-साथ मैं बहुत आनन्द से रह रहा था। जब तक वे सब एक साथ रहे, मुर्ग़ी के बच्चे ठीक से रहते थे। किन्तु उनमें से कोई यदि औरों से पृथक कर दिया जाता तो वह बड़ा उदास प्रतीत होता था। वह बराबर अन्य भाइयों की खोज

करता रहता था और जब तक उन्हें पा न लेता शान्त न होता था।

माया प्रारम्भ से ही अपने बच्चे को अलग ले जाना चाहती थी किन्तु हमने उसे इसकी अनुमति नहीं दी। तब एक दिन उसने कहा कि वह अब आगे प्रतीक्षा नहीं कर सकती और वह एक बच्चे को अपने कमरे में उठा ले गयी। आध घंटे बाद वह आँखों में आँसू भर कर लौटी—

"मैं वह सहन नहीं कर सकती। उसको चिल्लाते देखकर मेरा तो हृदय फटता है। मैंने सोचा था कि थोड़ी देर में वह अभ्यस्त हो जावेगा किन्तु वह इतनी दयनीयतापूर्वक चिल्लाता है कि मैं उसे सुन नहीं सकती।"

और ज्यों ही उसने अपने बच्चे को भूमि पर रक्खा उसने उस कोने की ओर भागना प्रारम्भ किया जहाँ अन्य बच्चे फर्श पर रक्खे हुये थे।

हमने उनके लिये रसोईघर का एक कोना सुरक्षित कर दिया था और मोमिया कपड़े का एक टुकड़ा वहाँ भूमि पर बिछा दिया था तथा उस पर गरम पानी से भर कर लोहे का एक बर्तन भी रख दिया था। हमने उस पर एक तकिया भी रख दिया जिससे पानी शीघ्र ठंडा न हो सके। बच्चे, गरम पानी के चारों ओर तकिये पर ऐसे इठलाते रहते जैसे अपनी माँ की गोद में खेलते हों।

गरम पानी का वह बर्तन बच्चे देने वाली मुर्ग़ी का स्थान ग्रहण किये रहा।

कभी कभी हम उन्हें बरामदे में ले आते थे किन्तु वह उनके लिए ख़तरनाक स्थान था क्योंकि वहाँ बहुत से बदमाश कुत्ते व

बिल्लियां इसर-उधर घूमती रहती थीं। अतः उनका अधिक समय अन्दर बंद रह कर ही व्यतीत होता था। हम बड़े परेशान थे कि उन्हें ताजी हवा नहीं मिल रही है विशेषतः एक बच्चा हमें अधिक चिन्तातुर बनाये रहा। वह औरों से छोटा व कम सुन्दर था। वह बहुधा औरों की भाँति साथ साथ न दौड़कर चुपचाप एक स्थान पर बैठ जाता था और बहुत कम खाता था। वह नं० ५ था जो सबसे बाद में पैदा हुआ था।

"हमें निश्चित ही उनको बाँधकर गाँव ले जाना चाहिये।" मिश्का ने कहा—"मुझे डर है कि वे बीमार न हो जाँय।"

हम उनसे विलग होने के दुःख को सहन नहीं करना चाहते थे अतः प्रतिदिन उस प्रसंग को टालते रहे।

सदैव की भाँति एक दिन सुबह, मैं व मिश्का बच्चों को खाना खिलाने आये। अब तक वे हमें पहचान गये थे और अपने गरम पानी के बर्तन से भाग कर हमारे पास मिलने आ जाते थे। हम उनके लिए बाजरे की एक प्लेट लाये थे जिसे वे बड़े स्वाद से खाते रहे। परस्पर धक्का मुक्की कर वे एक दूसरे के सिर पर चढ़ जाते थे तथा प्रत्येक दूसरे से आगे पहुँचने की चेष्टा करता था। उनमें से एक तो पैरों सहित प्लेट पर ही चढ़ गया।

"नम्बर ५ कहाँ है?" मिश्का ने प्रश्न किया।

सदैव ही नं० ५ औरों से पीछे रह जाता था। चूँकि वह औरों की अपेक्षा कमजोर था, अतः वह धक्का खाकर पीछे हट जाता था, तब हमें उसे अलग से खिलाना पड़ता था। कभी-कभी वह कुछ भी न खाता था किन्तु सब के साथ दौड़ जरूर आता था क्योंकि वह अलग नहीं रहना चाहता था। किन्तु इस बार उसका

कोई पता न था। हमने बच्चों को गिना और देखा कि एक कम है ।

"सम्भवत: वह बर्तन के पीछे छिपा होगा ?" मैंने कहा, और बर्तन के पीछे देखा तो वह पड़ा हुआ था। मैंने सोचा कि वह केवल आराम कर रहा होगा। मैंने अपना हाथ बढ़ा कर उसे उठा लिया। उसका नन्हा शरीर बिल्कुल ठंडा पड़ा था व उसकी वह पतली और निर्जीव गर्दन एक ओर को लटक गई थी। नं० ५ मर गया था।

हम उसकी ओर देर तक एकटक देखते रहे और इतने उदास होगये कि कुछ बोल ही न सके।

"यह हमारा दोष है।" मिश्का ने अन्त में कहा "हमें उसे गाँव ले जाना चाहिए था। वह वहाँ की ताजी हवा में अच्छा व बलवान हो सकता था।"

हमने उसे पीछे के मैदान में एक पेड़ के नीचे गाढ़ दिया। दूसरे ही दिन हमने सब बच्चों को एक डलिया में रक्खा और गाँव ले जाने की व्यवस्था की। सभी लड़के हमको विदा करने आये।

जब उसने अपने बच्चे का अन्तिम विदा का चुम्बन लिया तो माया जोर से रो पड़ी। उसकी बड़ी तीव्र इच्छा थी कि वह उसे अपने निकट रखे किन्तु डरती थी कि वह अपने अन्य भाइयों से विलग होकर अकेला हो जावेगा। अतएव उसने उसे गाँव ले जाने की अनुमति दे दी।

हमने डलिया को एक दुशाले से ढंका और स्टेशन की ओर लपके। डलिया में बच्चे गरम तथा आराम से थे। रास्ते भर वे चुप बैठे रहे, केवल कभी-कभी कोमलता से एक दूसरे को हिला-

डुला देते थे। साथ के यात्रियों ने जब यह देखा कि मुर्ग़ी के बच्चे एक-दूसरे से इठला रहे हैं तो वे विस्मय से हम लोगों को देखते रहे कि हमारी डलिया में क्या है ?

"हाँ, मेरे नौजवान मुर्ग़ी पालने वाले किसानो ! मेरा ख्याल है, तुम लोग और अंडे लेने आये हो ?" चची नताशा ने जब हम लोगों को देखा तो हँसते हुए कहा।

"नहीं," मिश्का ने उत्तर दिया—"इसके स्थान पर हम स्वयं कुछ बच्चे लाये हैं।"

चची नताशा ने डलिया में झांका।

"हे भगवान् !" वह चिल्लाई—"इस संसार में तुमने वे सब कहाँ से प्राप्त किये ?"

"हमने अपने ही इन्क्यूबेटर में उन्हें उत्पन्न किया है।"

"तुम हंसी कर रहे हो। तुम निश्चित ही उन्हें किसी चिड़िया बेचने वाले की दूकान से लाये हो।"

"नहीं, चची नताशा! याद करो उन अंडों को जो तुमने एक माह पूर्व हमें दिये थे? हाँ, हम उन्हें लौटा लाये हैं किन्तु अब वे मुर्गी के बच्चे हैं।"

"नहीं, मैंने कभी नहीं दिये!" चची नताशा चीखी—"मेरा ख्याल है बड़े होने पर या तो तुम अंडों के उत्पादक बनोगे या इसी प्रकार के कुछ और।"

"अभी हमें क्या पता।" मिश्का ने उत्तर में कहा।

"किन्तु मुर्गी के बच्चों से विलग होने में तुम्हें दुःख न होगा?"

"हमें भारी दुःख होगा," मिश्का ने उत्तर दिया—"किन्तु आप जानती हैं कस्बे में रहना उनके लिये अच्छा नहीं है। यहाँ उन्हें स्वच्छ व ताजी हवा मिलेगी व घूमने-फिरने के लिए अधिक खुला स्थान रहेगा। वे पुष्ट चिड़ियों के रूप में बढ़ेंगे। मुर्गियाँ आपके लिए अच्छे अंडे देंगी जबकि कौवे कांव-कांव करेंगे। इनमें से एक बच्चा मर गया है जिसे हमने एक पेड़ के नीचे दफना दिया है।"

"मेरे अच्छे बच्चो!" चची नताशा ने मिश्का व मुझ पर अपना हाथ फेरते हुये कहा—"किन्तु दुःख मत करो। इससे अधिक कुछ भी सम्भव न था। बाकी सब तो ठीक हैं और सुन्दर भी।"

हमने सब बच्चों को डलिया से निकाल दिया और देखते रहे कि वे धूप में क्या उछल-कूद करते हैं। चची नताशा ने कहा कि उसने अपनी मुर्गी को कुड़कुड़ाते सुना है। तब मिश्का व मैं उसको देखने सायबान में गये। वह एक डलिया में—अपने को पुआल से

चारों ओर ढक कर बैठी हुई थी। उसने हम दोनों को ऐसे ग़ौर से देखा जैसे हम उसके अंडे लेने आये हों।

"यह अच्छी है," मिश्का बोला—"अब हमारे बच्चों को खेलने को साथी मिल जायंगे तथा उनका बड़ा मनोरंजन होगा।"

हमने समूचा दिन गाँव में व्यतीत किया ? हम जंगल में घूमने गये और नदी में स्नान किया। पिछली बार जब हम वहाँ गये थे तब बसन्त ऋतु का प्रारम्भ था और खेत रिक्त पड़े हुए थे। उस समय जमीन जोतने के लिए ट्रैक्टर काम कर रहे थे। अब सर्वत्र हरियाली छायी हुई थी और जहाँ तक दृष्टि जाती थी लग रहा था जैसे खेतों में हरे कालीन बिछे हुए हों।

जंगल का दृश्य बड़ा मनोरम था। प्रत्येक प्रकार के कीड़े-मकोड़े घास में रेंग रहे थे। मक्खियाँ इधर-उधर उड़ रही थीं और हर पेड़ पर चिड़ियाँ गा रही थीं। वहाँ इतना सुन्दर लग रहा था कि हमें घर जाने की इच्छा ही नहीं होती थी। हमने निश्चय किया कि गर्मियों में वहां आवेंगे, नदी के किनारे एक खेमा लगायेंगे और रोबिन्सन क्रूसो की भाँति वहाँ रहेंगे।

अन्त में जाने का समय आ गया। हम चची नताशा के पास विदा लेने गये। उसने हमें ट्रेन में खाने के लिए प्रत्येक को रोटी का एक-एक टुकड़ा दिया और यह वचन लिया कि गर्मियों की छुट्टियां व्यतीत करने वे उनके पास आवेंगे। जाने के पूर्व, अन्तिम बार देखने के ख्याल से हम पीछे के मैदान में अपने बच्चों को देखने गये। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वे वहां घर की भांति सुखी थे; पेड़ों व झाड़ियों के बीच फुदक रहे थे और प्रसन्न होकर एक दूसरे से इठला रहे थे। किन्तु यह विचार कर कि यदि कोई

भी घास में बिछुड़ जाय तो सुगमता से ढूंढ़ा जा सकेगा अब भी वे एक दूसरे के साथ थे।

"विदा, मौजी परिवार!" मिश्का बोला—"ताज़ी हवा व धूप में सुख के दिन व्यतीत करो, बढ़ो और मजबूत बनो जिससे अच्छी व स्वस्थ चिड़ियाँ बन सको। सदैव साथ रहो ताकि एक दूसरे के लिये खड़े हो सको। याद रक्खो कि तुम सब भाई हो, एक ही माँ के बच्चे हो—अरे······मेरा मतलब एक ही इन्क्यूबेटर के, जहाँ तुम साथ-साथ और बराबर-बराबर रहे हो, जब तुम साधारण से अंडे थे और न बोल सकते थे न दौड़ सकते थे······ और······हल्के। मेरा मतलब है हमें मत भूलना क्योंकि हमने इन्क्यूबेटर बनाया था। हमने यदि वैसा न किया होता तो तुम लोग यहां न होते और न तुम्हें यही ज्ञात होता कि संसार में जीवन की भव्यता क्या है।"

कोल्या सिनित्सिन की डायरी

२८ मई

मेरे लिये वह एक महत्वपूर्ण दिन था। स्कूल में छुट्टी होगयी थी और मैं सबसे अधिक नम्बर प्राप्त करके पास हुआ था तथा आगे की कक्षा में चला गया था। कल से हम गर्मियों की छुट्टियाँ प्रारम्भ करेंगे। छुट्टियों में 'डायरी' लिखने का मैंने निश्चय किया है। यदि मैं अपनी डायरी में निरन्तर लिखने का वचन दूँ तो माँ ने कह दिया है कि वे मुझे एक फाउन्टेनपेन ला देंगी। अत: मैं लिखने का एक मोटा पैड ले आया हूँ जिसका कवर नीले रंग का है। अब मैं वह सब बातें लिखा करूँगा जो मुझे आकर्षक लगेंगी। मैं अपनी मानसिक गतिविधि को भी लिखूंगा। मैं हर प्रकार की बात सोचूंगा और जब मेरे मस्तिष्क में कोई सुन्दर विचार आवेगा तो उसे लिख लिया करूँगा। आज लिखने की कोई विशेष बात नहीं है। कोई विचार भी नहीं है।

२९ मई

आज भी कोई आकर्षक घटना नहीं हुई। वही बात विचारों की भी है। यह सम्भवत: इसलिये कि आज मैं समूचे दिन लड़कों के साथ पीछे के मैदान में खेलता रहा और मुझे सोचने का कोई समय ही न मिला। कोई चिन्ता नहीं, कल कुछ होगा।

३० मई

फिर कुछ नहीं हुआ। किसी कारण से कोई विचार भी नहीं आया। सत्यता यह है कि मैं जानता ही नहीं हूँ कि क्या लिखना चाहिए। सम्भवत: मुझे कुछ अनुसन्धान करना चाहिये। किन्तु वह डायरी तो न होगी। डायरी में सब सत्य लिखा जाना चाहिए।

३१ मई

हमारे यंग-पायनियर-ग्रुप की आज एक बैठक थी। यूरा कुस-कोव, जो हमारे ग्रुप का नेता है, उसमें बोला था।

"हाँ, लड़को!" उसने कहा—"गर्मियाँ आगयी हैं और छुट्टियां भी प्रारम्भ होगयी हैं। तुम में से कुछ यह सोचते होंगे कि उन्हें इन दिनों छुट्टियों में खेलने के अतिरिक्त कुछ नहीं करना चाहिए। किन्तु यह ग़लती है। सच्चे 'पायनियर' वर्ष भर कार्य करते रहते हैं। वे कभी समय नष्ट नहीं करते। अत: हमको कोई रुचिकर बात सोचनी चाहिए जिसे हम छुट्टियों में कर सकें—कोई ऐसा नया काम जिसे हम सब मिलकर पूरा करें।"

हम सोचते रहे—सोचते रहे, किन्तु कोई भी कुछ न बता सका। तब वित्या अलमज़ोव ने कहा—

"हम अपने सब्जी के खेत में कुछ कर सकते हैं।"

"बहुत देर होगयी," यूरा ने उत्तर दिया—"दूसरे दल ने तो

पहले ही यह काम सोच लिया है। उन्होंने पहले से ही बेलें, आलू और खीरे बो रक्खे हैं।"

"तब हमें स्कूल के मैदान में वृक्ष बोने चाहिए," जेन्या शेमयाकिन ने सुझाव दिया।

"कुछ महीनों की देर होगयी है," यूरा ने कहा "पौधे बसन्त-ऋतु से कुछ पूर्व ही लगा देने चाहिए। साथ ही, अब और पेड़ लगाने का स्थान भी नहीं बचा है।"

"तब हमको डाक के टिकट एकत्र करने चाहिये," फेद्या ओवस्यान्निकोव ने कहा—"मैं डाक के टिकट पसन्द करता हूँ।"

"वह समूचे दल का कोई काम नहीं हो सकता। हम में से प्रत्येक अपने-अपने लिए अलग टिकट एकत्र कर सकता है।"

"तब हम शकर पर लपेटने वाला कागज़ एकत्र कर सकते हैं।" ग्रीशा याकुश्कीन ने कहने का साहस किया।

"कैन्डी-रैपर्स ! (शकर पर लपेटने के कागज़)," पावलिक ग्राच्योव ने बिगड़ कर कहा—"तब तुम सुझाव दोगे कि आगे हम दियासलाइयाँ एकत्र करें। इस प्रकार की वस्तुयें बटोरने से क्या लाभ है ? हम चाहते हैं कि कोई लाभप्रद कार्य होना चाहिए।"

हम लोग अपने मस्तिष्क पर जोर देते रहे किन्तु कोई उपयुक्त बात न सोच पाये। यूरा ने कहा कि सब लोग घर जाकर सोचें। कुछ दिन बाद हम फिर एकत्र होंगे और तब अलग-अलग सुझावों पर विचार करेंगे।

सोचने के विचार से मैं घर गया किन्तु खाना खाने के पहले ही

लड़कों के साथ मैदान में खेलने चला गया और वहाँ सब कुछ भूल गया। खाने के पश्चात् मैं कुछ और खेला; तब मैंने शाम का खाना खाया और फिर बाहर चला गया। रात को मैं बैठकर डायरी लिखने लगा किन्तु मां ने कहा कि यह सोने का समय है। तब मुझे ध्यान आया कि मुझसे कहा गया था कि छुट्टियों में कोई काम करने के सम्बन्ध में मैं कुछ सोचूंगा। किन्तु तुम चाहे लेटे रहो या बैठे—सोच तो सकते ही हो। अतः मैंने विचार किया कि मैं बिस्तर पर ही सोचता रहूँगा।

१ जून

विगत रात्रि मैं बिस्तर पर गया और सोचता रहा। किन्तु गर्मियों में काम करने के सम्बन्ध में सोचने के स्थान पर मेरे मस्तिष्क में नाना प्रकार के अन्य विचार आते रहे। मैं समुद्रों और महासागरों की बातें सोचता रहा। शार्क और व्हेल मछलियों के सम्बन्ध में सोचता रहा, जो समुद्र में रहती हैं। मैं आश्चर्य करता रहा कि व्हेल मछलियाँ इतनी भारी क्यों होती हैं। और तब क्या हो यदि वे भूमि पर रहें व सड़कों पर चलें। और जहां हम रहते हैं यदि व्हेल उस मकान को धक्का दें तब ?

अरे भाई ! मैंने अपने मन में कहा, ये बातें नहीं हैं जिन्हें मुझे सोचना चाहिये। मैंने अधिक प्रयत्न किया कि मैं गर्मियों के काम के सम्बन्ध में सोचूं किन्तु जो कुछ भी मैं सोच सका वह केवल जानवरों के सम्बन्ध में था—घोड़े और गधों के सम्बन्ध में। मैं आश्चर्य करता रहा कि घोड़े बड़े और गधे छोटे क्यों होते हैं। ऐसा लगता है जैसे घोड़े--बड़े गधे ही हैं। और ऊँटों के कूबड़ क्यों होता है और हाथियों के सूंड़, और तब क्या हो यदि ऊँटों के सूंड़

भी हो और कूबड़ भी। तो क्या वे ऊँट ही रहेंगे या ऊँटों के बालों वाले हाथी ?

तब भी मैं उस सम्बन्ध में कुछ न सोच सका, कुछ भी नहीं। मैंने कितना ही प्रयत्न क्यों न किया हो मेरे विचार सर्वत्र चक्कर काटते रहे। मैंने सोचा कि मेरे ऐसे मस्तिष्क वाले को सोचने का प्रयत्न करना भी व्यर्थ है और मैं सो गया।

२ जून

हुर्रे ! मां ने मुझे एक फाउन्टेन-पेन दिया। अब मैं केवल अपने नये क़लम से ही लिखूंगा। दुःख यह था कि कुछ लिखने को था ही नहीं। मैं एक घंटे तक अपने मस्तिष्क को कष्ट देता रहा किन्तु लिखने को कुछ भी न सोच पाया। यदि कोई कौतुकपूर्ण बात नहीं हुई तो इसमें मेरा क्या दोष है, या है ?

३ जून

आज सुबह जब मैं बाहर गया तो मार्ग में आते हुये मुझे ग्रीशा याकुश्किन मिला।

"हः कहां से छूट कर आ रहे हो ?" मैंने उससे प्रश्न किया।

"मैं स्कूल के यंग-नेचरलिस्ट-सर्किल (बाल-प्रकृतिवादी-कक्ष) जा रहा हूँ।"

"क्या मैं भी तुम्हारे साथ चल सकता हूँ ?"

"क्यों नहीं, चलो।"

मार्ग में हम यूरा कुस्कोव से मिले। वह भी कक्षा में जा रहा था। जब सब एकत्र होगये तो हमारी अध्यापिका नीना सर्जेयेवना जो सर्किल का नेतृत्व करती हैं—हमें बगीचे में ले गईं और वहाँ

दिखाती रहीं कि फूल कैसे तैयार होते हैं। उन्होंने हमें पुष्प-पराग और पीली रज जो पोलन (पुष्परज) कहलाती है—जो एक पौधे से दूसरे पौधे पर मधु-मक्खियों तथा अन्य कीड़ों के द्वारा ले जायी जाती हैं, के सम्बन्ध में बताया। जब वे मधु-मक्खियां किसी फूल पर बैठती हैं तो पुष्परज उनके पैरों में चिपक जाती है और तब वे उसे साथ लेकर दूसरे फूल पर उड़ जाती हैं। यह पराग-फैलाना कहलाता है। वह फूल जिसमें पुष्प-रज फैली होती है अपने में बीज रखता है। यदि उसमें पराग-रज न गिरे तो फूल से फल कभी भी न उत्पन्न होंगे। इसी प्रकार ये कीड़े-मकोड़े पैदावार में वृद्धि करतें व सहायता पहुँचाते हैं। क्योंकि यदि वे पुष्प-रज नहीं फैलायेंगे तो बीज नहीं बनेगा।

मक्खियाँ किसी अन्य कीड़े-मकोड़े से पैदावार बढ़ाने में अधिक सहायक होती हैं क्योंकि वे समस्त दिन फूलों-फूलों उड़कर मधु और पराग एकत्र करती हैं। अत: जितनी अधिक मधु-मक्खियां हों उतना ही अच्छा रहता है।

क्लास समाप्त होने पर यूरा ने पायनियर-ग्रुप को एकत्र कर के पूछा कि गर्मियों में कार्य करने के लिए पृथक-पृथक क्या सुझाव प्रत्येक ने सोचे हैं? सुझाव देने के लिए किसी के पास कोई बात न थी। यूरा ने कहा कि हमें अपनी विचार शक्ति को भली प्रकार से उपयोग में लाना होगा अन्यथा गर्मियां यों ही निकल जावेंगी; और हम कुछ भी न सोच पावेंगे। वह बैठक समाप्त करने ही वाला था कि ग्रीशा यकुश्किन बोला—

"हमको मधु-मक्खियां पालने का एक छत्ता बनाना चाहिए और मक्खियां पालनी चाहिए।"

हमने सोचा कि यह तो बड़ा अच्छा सुझाव है।

"हाँ, यह ठीक रहेगा," यूरा ने कहा "मधु मक्खियां बहुत लाभ-दायक हैं। शहद बनाने के अतिरिक्त उपज के लिये भी वे बड़ी उपयोगी हैं।"

"हुर्रे।" पावलिक ग्रेच्योव चिल्लाया—"हम लोग स्कूल के बगीचे में मक्खियों का एक छत्ता बनायेंगे और मधुमक्खी पालने का पहला स्थान स्कूल से प्रारम्भ करेंगे। तब हमारा दल प्रसिद्ध हो जावेगा।"

"थोड़ा रुको," यूरा बोला "अभी हम यह भी नहीं जानते कि छत्ता कैसे बनावें।"

यूरा ठीक कहता था। हमको इसका किंचित भी ज्ञान नहीं था कि कैसे प्रारम्भ किया जाय।

"हमको नीना सर्जेयेवना के पास जाकर पूछना चाहिए। वे अवश्य जानती होंगी," यूरा बोला।

हम स्कूल भागे गये और मधु-मक्खियों के छत्तों के सम्बन्ध में नीना सर्जेयेवना से पूछा। हमने मधु-मक्खियों को पालने की अपनी योजना उन्हें बतायी।

"तुम मक्खियां कहाँ से प्राप्त करोगे?"

"हम उन्हें पकड़ेंगे," सरयोझा ने उत्तर दिया।

"उन्हें पकड़ोगे? कैसे?"

"अपने हाथों से, और क्या।"

नीना सर्जेयेवना खिलखिला कर हँस पड़ी—"यदि तुम एक एक करके उन्हें पकड़ोगे तो एक भी तुम्हारे पास नहीं रहेगी। मधु-

मक्खियां एक बड़े परिवार में रहती हैं। पहला अवसर पाते ही वे तुम्हारे छत्ते से भाग कर अपने समाज में जा मिलेंगी।"

"तब हमको क्या करना चाहिये ?"

"तुमको मक्खियों का एक पूरा परिवार जो मधुमक्खियों का छत्ता कहलाता है, लाना होगा।"

"वह हमें कहाँ मिलेगा ?"

"तुम उसको डाक से आर्डर कर मंगा सकते हो," नीना सर्जेयेवना ने उत्तर दिया।

"डाक से ?"

"हां, तुमको किसी बड़े मधु-मक्खी पालने के संस्थान को लिखना होगा कि वे तुम्हें मधु-मक्खियों का एक छत्ता भेज दें।"

"हमें पता नहीं किस स्थान को लिखना होगा।"

"मैं भी यों तो नहीं जानती किन्तु तुम्हारे लिये किसी एक की खोज करके बताऊँगी" नीना सर्जोवना ने उत्तर दिया।

उन्होंने बताया कि मधु-मक्खी पालने का स्थान कैसे बनाया जाता है। वह बड़ा सरल है। एक बड़ा सन्दूक चाहिए जिसमें स्थान-स्थान पर छेद बने हों। मक्खियों को तुम उसके अन्दर रख दो, वे अपना छत्ता मोम से अपने आप बना लेंगी और उसे शहद से भर देंगी। किन्तु वे अपने घरों को सन्दूक की दीवार के बराबर से ही बनाती हैं जिससे हमें शहद प्राप्त करने में कठिनाई होती है। अतः मक्खियां पालने वाले काठ के घेरे के अन्दर सन्दूक में मोम की पतली तह जमाते हैं। मक्खियां मोम पर अपने आप

मधुकोष बनाती हैं और जब शहद तैयार हो जाता है तो मक्खियां पालने वाले केवल लकड़ी का घेरा बाहर खींच लेते हैं।

हमने तुरन्त ही मक्खियों का छत्ता बनाने का निश्चय कर डाला। तोल्या पेसोत्स्की ने कहा कि हम उसके सायबान में कार्यारम्भ कर सकते हैं। यूरा ने हमसे कहा कि जो भी औज़ार उपलब्ध हों, ले आवें।

जब मैं घर गया तब मक्खियों के सम्बन्ध में ही सोचता रहा। कल्पना करो कि मक्खियां डाक से प्राप्त हो जाती हैं। क्या यह रोचक नहीं है ?

४ जून

आज सुबह हम सब तोल्या पेसोत्स्की के सायबान में मिले। वित्या अल्मभोव एक आरी ले आया। ग्रीशा यकुश्किन एक कुल्हाड़ी लाया। यूरा कुस्कोव एक बर्मा एक जोड़ा सन्डासी और एक हथौड़ा ले आया। पावलिक ग्रच्योव एक रुखानी ले आया और एक हथौड़ी भी। मेरे पास भी एक हथौड़ी थी, वे सब मिलाकर तीन होगईं।

"उसको बनाने के लिए हमें लकड़ी कहां से प्राप्त होगी ?" सरयोझा ने प्रश्न किया।

हमारे पास तख्ते नहीं थे, और हमें पता भी नहीं था कि लकड़ी कहां से प्राप्त होगी।

"यह अच्छा रहा !" यूरा ने कहा "बिना तख्तों के हम मक्खियों का छत्ता नहीं बना सकते।"

"ओह ! कहीं न कहीं पुराने तख्ते अवश्य मिलेंगे।"

तब तख्तों की खोज में हम लोग चल दिये। हमने प्रत्येक साय-बान और बरसाती छान डाली किन्तु एक भी तख्ता न मिला।

"हमको गल्या के पास जाना चाहिये। वह हमारी सहायता कर सकती है" यूरा बोला।

गल्या हमारी मुख्य पायनियर लीडर है। हम उसके पास गये और अपनी कठिनाई बतलायी।

"मैं हैडमास्टर से पूछूँगी। पिछली मरम्मत में से बचे कुछ तख्ते ले लेने के लिए हमें वे अनुमति दे देंगे।"

चार बड़े तख्ते लेने की हैड मास्टर ने स्वीकृति दे दी। हम उनको घसीट कर अपने सायबान में ले गये और तत्परता से कार्यारम्भ कर दिया। काटना छीलना, ठोकना—हम सब कर सकते थे।

तोल्या इधर-उधर घूम कर प्रत्येक को हल्ला मचा-मचा कर हुक्म

देता रहा। यह उसने इसलिये सोचा कि सायबान उसका था और वह सबका अधिकारी बन कर काम करा सकता था। मैं तो लगभग उससे झगड़ ही पड़ा। उसको एक हथौड़ी चाहिये थी। चुपचाप ढूंढ़ने के बजाय उसने चीखना प्रारम्भ किया—

"हथौड़ी कहाँ है ? एक मिनट पहले वह मेरे पास थी और अब ग़ायब होगयी।"

"वह यहीं कहीं होगी," यूरा ने कहा—"मैंने उससे अभी एक कील ठोकी थी।"

"तब तुमने उसको कहाँ छिपा दिया ?"

"मैंने उसको कहीं नहीं छिपाया।"

"तब तुम उसको ढूँढ़ो।"

"तुम अपने आप ढूँढ़ लो।"

उसने सब जगह छान मारी किन्तु वह कहीं नहीं मिली।

हथौड़ी ढूँढ़ने के लिए सब ने काम बन्द कर दिया। अन्त में वह मेरे हाथ में मिली।

"एक मुर्दे की भाँति वहाँ खड़े खड़े तुम क्या कर रहे थे ?" तोल्या मुझ पर गुर्राया "क्या तुम देख नहीं रहे कि हथौड़ी के लिये ऊपर-नीचे सब ओर हम तंग होकर ढूंढ़ रहे है ?"

"मैं कैसे जान सकता था कि तुम इसीकी तलाश कर रहे थे ? हमारे पास तीन हथौड़ियाँ हैं, क्या नहीं हैं ?"

"जब आवश्यकता पड़ने पर तुम्हारे हाथ में एक भी न आवे तो तीन रखने से लाभ क्या ?"

"ठीक है, तुमको हमारे साथ ऐसा झगड़ा नहीं करना चाहिए,"

मैंने कहा— "जैसे मुझे हथौड़ी काम में लाने का अधिकार है वैसे ही तुम्हें भी है। हम सब काम करना चाहते हैं।"

आज हम मक्खियों के छत्ते का सन्दूक पूरा न कर सके क्योंकि सूर्य ढल गया और अंधेरे सायवान में हम उसके पश्चात् कार्य न कर सकते थे।

५ जून

हुर्रे! छत्ते का सन्दूक तैयार होगया था। वह यह रहा। मैंने इधर किनारे पर उसका रेखाचित्र बना दिया है। ऊपर वाली वस्तु उसका ढक्कन है। सन्दूक के नीचे का खुलने वाला स्थान उसका मुख्य प्रवेश है। ऊपर का छेद एक और दरवाजा है—एक प्रकार का तुरन्त बाहर निकलने का द्वार! नीचे तले में किनारे-किनारे बढ़ी हुई थोड़ी जगह मक्खियों के बैठने का एक प्रकार का अड्डा है जहाँ वे उड़कर लौटने पर छत्ते में बैठ सकें। वह एक प्रकार से उतरने का स्थान है। ढक्कन अलग है जिससे जब सन्दूक अलग करना हो तो चौखटे को सुगमता से हटाया जा सके। हमने इस प्रकार के बारह चौखटे बनाये।

यूरा, नीना सर्जेयेवना के पास गया और मक्खियों के सम्बन्ध में पूछताछ की। किन्तु उनको अब तक समय नहीं मिला था कि वे छानबीन कर सकें। किन्तु किसी प्रकार यदि वे वैसी व्यवस्था न कर सकीं तो हम अपने छत्तों के सन्दूकों का क्या करेंगे?

६ जून

मैं सारे दिन इधर-उधर घूमता फिरा और लोगों से पूछता

रहा कि मक्खियाँ कहां से प्राप्त होंगी ? किन्तु कोई भी न बता पाया । मैं प्रातःकाल एक प्रकार से नीला सा पड़ा हुआ था । जब घर लौटा तो मैंने चाचा अलयोशा को घर पर देखा ।

"हाँ, बेटे," उन्होंने कहा—"इतने उदास क्यों हो ?"

"मुझे कुछ मधु-मक्खियाँ चाहिए; किन्तु मुझे पता नहीं कहाँ से प्राप्त होंगी ।"

"ये मक्खियाँ तुम्हें चाहिये क्यों ?"

मैंने चाचा अलयोशा को मक्खियाँ पालने की अपनी योजना बता दी—"किन्तु हमें मक्खियाँ कहाँ से प्राप्त होंगी ?"

"एक मिनट रुको । मैं उस मक्खी पालने वाले को जानता हूँ, जो कभी गाँव में आया था । यदि मुझे ठीक याद है तो वह मक्खियों को एक जाल से पकड़ता था," चाचा अलयोशा ने कहा ।

"जाल किस प्रकार का ।"

"वह एक प्लाईवुड का सन्दूक था जिसमें एक छेद था जैसे चिड़ियों का पिंजड़ा । वह उसमें कुछ शहद लगाकर उसे एक पेड़ पर जंगल में टाँग देता था । मक्खियां शहद की सुगन्धि पाकर उसमें आजाती थीं । कभी-कभी तो पूरा छत्ता ही सन्दूक में इकट्ठा हो जाता था । तब वह उस सन्दूक को घर ले आता था और वहां मक्खियाँ पालने वाले सन्दूक के रूप में उसे बदल देता था । तुम स्वयं उस जाल को बना सकते हो और जब कभी माँ के साथ गाँव जाओ तो उसको साथ ले जा सकते हो और तब उसे जंगल में टांग सकते हो ।"

मैंने माँ से पूछा कि हम लोग गाँव कब जायेंगे ।

"इतनी जल्दी नहीं," उन्होंने कहा—"जुलाई के अन्त में अथवा अगस्त के पहले मुझे छुट्टी नहीं मिलेगी।"

मैं सरयोझा के पास गया और जाल के सम्बन्ध में बताया।

"चलो वैसा एक बनावें। उसे हम अपने गांव ले चलेंगे। वहाँ एक अच्छा जंगल और नदी भी है," उसने कहा।

"वह कहाँ है ?"

"शिशिगनो में यहाँ से पाँच मील दूर।"

"क्या हम वहाँ रह भी सकते हैं ?"

"क्यों नहीं, चाची पोल्या के अतिरिक्त वहाँ कोई रहता ही नहीं है।"

मैं भाग कर घर गया और माँ से पूछा कि क्या वे सरयोझा के गाँव जाने की अनुमति दे देंगी ?

"पागल मत बनो। मैं कैसे तुम्हें अकेले किसी नयी जगह भेज सकती हूँ ?"

"किन्तु वह दूर तो नहीं है—केवल पाँच मील। हम वहाँ तक पैदल जा सकते हैं।"

"नहीं, तुम नहीं जा सकते," मां ने कहा—"तुम वहाँ अकेले कैसे रहोगे ?"

"हम अकेले नहीं रहेंगे। वहाँ चाची पोल्या भी तो है।"

"चाची पोल्या ? वह तुम्हें कभी नहीं सँभाल सकती।"

"किन्तु वहाँ हम लोग ठीक रहेंगे, सच।"

"नहीं, नहीं, जब मेरी छुट्टियाँ होंगी तब हम साथ चलेंगे।

यदि तुम अकेले जाओगे तो नदी में डूब जाओगे या जंगल में खो जाओगे या ऐसे ही कुछ। कुछ भी सम्भव है," माँ ने कहा।

मैंने कहा कि हम नदी में बिलकुल स्नान नहीं करेंगे। हम नदी के पास जायेंगे ही नहीं और जंगल में भी नहीं जाँयेंगे; किन्तु माँ ने कुछ न सुना। मैंने देर तक माँ की खुशामद की और समझाने की चेष्टा भी; किन्तु उन्होंने कहा कि यदि मैं नहीं सुनूँगा तो वे पिता जी से कह देंगी। अतः मैं शान्त हो गया। मैंने खाना नहीं खाया और अब भूखा ही सोने जा रहा हूँ, किन्तु मुझे परवाह नहीं।

७ जून

मैं और दिन से कुछ पहले उठा और प्रातःकाल से ही माँ से कहना प्रारम्भ किया। उसने मुझे कल जाने को कहा किन्तु मैं नहीं माना। जब तक वह काम पर नहीं गयी मैं कहता ही रहा। तब मैं सरयोझा के पास गया तो उसने बताया कि वह तथा पावलिक दोनों अगले दिन गाँव जा रहे हैं और यदि मुझे जाने की आज्ञा नहीं मिलेगी तो वे बिना मेरे ही चले जावेंगे। मैं समस्त दिन अत्यधिक दुःखी होकर घर पर बैठा रहा और जैसे ही माँ काम से लौटी मैं बहुत खिन्न होकर उसके पास गया। वह नाराज़ हो गयी और उसने पिता जी से कहने की धमकी दी किन्तु मैं शान्त नहीं हुआ क्योंकि मैंने इसकी चिन्ता नहीं की कि आगे और क्या होगा। अन्त में पिता जी घर आये।

"तब उसे क्यों नहीं जाने देतीं," पिता जी ने माँ के उत्तर में कहा—"मैं सोचता हूँ, यह अच्छा विचार है। अब वह बड़ा हो गया है। इस समय उसे थोड़ी स्वतन्त्रता होनी चाहिये।"

माँ ने कहा कि वे (पिता जी) सदैव हस्तक्षेप करते हैं और बच्चे को (मुझे) ठीक से नहीं रखने देते। पिता ने कहा कि माँ बिलकुल ठीक नहीं रखती है और उनमें झगड़ा तक हो गया। किन्तु उन्होंने शीघ्र ही समझौता कर लिया और तब मेरी माँ सरयोझा की माँ के पास गयी और सब कुछ ठीक ठाक किया। सरयोझा की माँ ने कहा कि हम लोग किसी के कार्य में बाधक नहीं होंगे। चाची पोल्या बच्चों के लिये खाना बना देगी। माँ शान्त हो गयी और बोली कि वह केवल तीन दिन के लिये मुझे जाने देगी और यदि मैं अच्छा लड़का सिद्ध हूँगा तो वह मुझे दुबारा भी जाने की अनुमति दे देगी। मैंने ठीक रहने का वायदा किया।

सब लड़के बहुत चकित हुए जब उन्होंने सुना कि हम लोग मधु-मक्खियां पकड़ने गाँव जा रहे हैं। यूरा ने हमें कम्पास दिया जिससे हम जंगल में रास्ता न भूल जाँय। तोल्या ने हमको एक चाकू दिया। फेद्या ने हमको एक मेस-टिन (सैनिकों के भोजन बनाने के बर्तनों का सन्दूक) लाकर दिया जिससे हम कैम्प में खाना बना सकें। हमने प्लाईवुड का एक सन्दूक लाकर उसमें छेद किये और उससे जाल बनाया। वह ठीक बन गया। हमने एक छेद आगे बनाया और बनाया एक छोटा सा दरवाजा जो मक्खियों के अन्दर आ जाने पर बन्द किया जा सकता था। हमने मक्खियों के छत्ते वाले सन्दूकों की भाँति उसमें एक ढक्कन भी बनाया जिससे हम मक्खियाँ पकड़ सकें।

माँ साथ ले जाने के लिये बहुत प्रकार की भोजन-सामग्री ले आयी—मसाले, आटा, घी, शकर, रोटी और डब्बों के खाने। मेरा थैला बहुत भारी हो गया क्योंकि उसमें वह सब सामान भरा

हुआ था। सरयोझा का झोला भी मेरी ही भाँति भारी था और पावलिक का तो और भी भारी क्योंकि वह उसमें बर्तन व पानी का फ्लास्क भी रक्खे हुए था। हाँ, अब सब सामग्री तैयार थी। मैं इतना उद्विग्न था कि अगले दिन शिशिगनो जाने की प्रतीक्षा भी कठिनाई से कर पा रहा था।

८ जून

हुर्रे! हम लोग आज शिशिगनो में थे! सरयोझा के गाँव का मकान एक लकड़ी का बंगला सा था, जो पेड़ों के बीच में था और जिसके चारों ओर चहार दीवारी या तार भी नहीं था। वहाँ मैदान में खम्भों की पंक्तियाँ अवश्य गढ़ी हुई थीं जिससे यह प्रतीत होता था कि तार फैलाया जा रहा था किन्तु समयाभाव के कारण न फैल सका। जब हम लोग पहुँचे तो मकान में ताला लटक रहा था और वहाँ कोई भी न था। चाची पोल्या कहीं गयी हुई थी। हम देर तक प्रतीक्षा करते रहे और तब अन्त में हमने समय व्यर्थ न जाने देकर यह उचित समझा कि जंगल में जाकर जाल को टांग आवें। हमने उसमें थोड़ा सा शहद रक्खा और उसे पेड़ पर टांग दिया। तब हम स्नान करने के लिए नदी पर गये। पानी बहुत ठंडा था। इधर-उधर व्यतीत करने के लिए हमारे पास बहुत समय था। अन्त में हम चले आये। हम लोग सर्दी में नीले पड़ रहे थे हमारे दाँत किटकिटा रहे थे और हम भेड़िये की तरह बहुत भूखे थे।

हमने नदी के किनारे आग जलायी और गोश्त का टीन खोला तथा आग पर उसे पकाया। उसमें बड़ा स्वाद था। जब सब लोग

खा पी चुके तो फिर मकान की ओर गये किन्तु चाची पोल्या तब तक नहीं आयी थीं।

"क्या यह चमत्कार न होगा कि हमें एक ऐसे पेड़ का खोखला दिखायी दे जहाँ मक्खियाँ भरी हों," पावलिक बोला "तब हमें मक्खियों का परिवार तुरन्त मिल जावेगा।"

"हाँ, किन्तु वह खोखला हमें मिलेगा कैसे ?"

"चलो हम किसी मक्खी को देखें कि वह कहाँ तक जाती है।" पावलिक बोला—"जब वह पराग बटोरती है तो छत्ते पर भी अवश्य लौटेगी। तब हम उसके पीछे भागेंगे और देखेंगे कि मक्खियों का परिवार कहाँ रहता है।"

हमने एक मक्खी को फूल पर देखा और खड़े हो गये। वह एक फूल से दूसरे पर बैठती रही और हम चारों दिशाओं में चक्कर काटते रहे किन्तु उसे दृष्टि से ओझल नहीं होने दिया।

उस चक्कर खाने से मुझे तो दर्द होने लगा। मेरे हाथ, पैर, कमर सब दर्द करने लगे किन्तु मक्खी केवल पराग का रस पीती रही। वह उड़कर लौटने का नाम ही न लेती थी।

अन्त में सरयोझा ने कहा—"हम सोचते हैं मक्खियाँ शाम को, देर से, अपने छत्तों पर जाती हैं। अब हम लोग चलें और नदी में दुबारा तैरें। मक्खियों का पीछा करने के लिये हमारे पास बहुत समय है।"

हम पुन: नदी में गये और दुबारा तैरते रहे। जब तक सूर्यास्त न हुआ, हम पानी में ही रहे। तब हमने कपड़े पहने और घर लौटे किन्तु चाची पोल्या अभी भी नहीं लौटी थी।

"सम्भवतः वह नगर गयी है और आज शाम तक नहीं लौटेगी।" मैंने कहा।

"पागल मत बनो, वह अवश्य लौटेगी," सरयोझा बोला—"वह होगी कहाँ!"

"किन्तु मान लो न लौटी, तो क्या हम घर लौट चलेंगे?"

"मैं कहीं नहीं जाऊँगा," पावलिक बोला—"मैं बहुत थक गया हूँ।"

"हम लोग सोवेंगे कहाँ?"

"हम पड़ोसियों से कहेंगे कि वे हमें एक रात रहने दें।" सरयोझा ने कहा।

"नहीं, हमें ऐसा नहीं करना चाहिये। हम लोग पेड़ की डालों का एक टेन्ट बनावें और बाहर मैदान में उसी में सोवें।"

"यह बहुत सुन्दर विचार है।" सरयोझा बोला—"टेन्ट में सोने में बड़ा अच्छा लगेगा। मैंने ऐसा कभी नहीं किया। किन्तु वह तुम बनाओगे कैसे?"

पावलिक यह जानता था और हमने कार्यारम्भ कर दिया। हमने कुछ डालें काटीं; पावलिक ने चार बड़ी डालें लेकर उन्हें पिरामिड की तरह टेढ़ा खड़ा किया। तब और सब डालें उनके चारों ओर लगादी गयीं। उसके बाद हमने बहुत सी सूखी घास-फूस इकट्ठा की और लेटने के लिये टेन्ट में भूमि पर बिछा दी। तकियों के स्थान पर अपने झोले लगा देने पर अन्दर बड़ा मुलायम हो गया था। वह एक छोटी और घिरी हुई जगह थी।

हम बुरी तरह थक गये थे इसलिये निश्चय किया कि अब कहीं नहीं जायेंगे। उसमें आश्चर्य ही क्या था? जरा सोचो
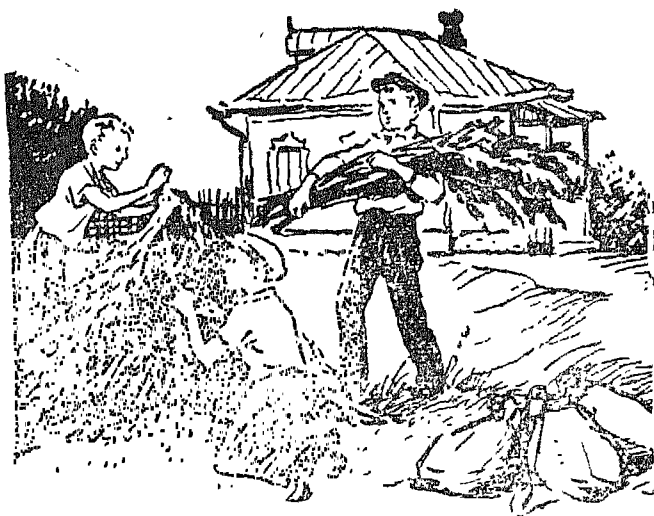
आज दिन में हम लोग कितना पैदल चले थे—हम शहर से आये, तब जंगल में घूमे, नदी तक गये, नदी से घर लौटे, फिर जंगल गये, फिर नदी और फिर घर। हमने उससे भी अधिक चलना-फिरना किया था जितना कि एक साधारण व्यक्ति एक महीने में करता है। इसके अतिरिक्त हमने टेन्ट भी बनाया था।

हम लोग अब मकान की सीढ़ियों पर बैठे आराम कर रहे हैं। मैं अपनी क़लम से डायरी लिख रहा हूँ और सरयोझा तथा पावलिक दृश्य का आनन्द ले रहे हैं। यह एक सुहानी व शान्त सन्ध्या है। हवा नहीं चल रही है। पेड़-पौधे शान्त हैं। केवल एस्पन (कांपने वाले) पेड़ों की पत्तियाँ हिल रही हैं। वे चाँदी जैसी लग रही हैं। आकाश स्वच्छ है और बड़ा सा लाल सूर्य जंगल के पीछे डूब रहा है। खेतों से पशुओं के झुण्ड-के-झुण्ड घर लौट रहे हैं। गायें धीरे-धीरे चल रही हैं। वे लगभग पचास

होंगी—काली, भूरी, लाल, चित्तीदार, रंगबिरंगी, काली और सफेद और कुछ गुलाबी सी भी हैं। अब सूर्य आधा छिप गया है। कुछ मिनटों में हम अपने टेन्टों में लोट लगायेंगे और सोवेंगे। अभी अन्धकार नहीं हुआ है किन्तु शीघ्र ही हो जावेगा। इसमें कोई समझदारी नहीं है कि जब हमारे पास एक सुन्दर आरामदेह सोने की जगह है तो हम व्यर्थ ही अँधेरे में बैठे रहें।

९ जून

विगत रात्रि हमको ठीक नींद नहीं आई। हुआ यह—पावलिक एक कपटी आदमी है अतः टेन्ट में पहले ही लेट गया; उसने बीच में ही एक स्थान ग्रहण कर लिया। मैं व सरयोझा बाहर ही खड़े रह गये। सरयोझा तो लेटते ही सो गया किन्तु मैं न सो सका। पहले तो मैंने बहुत आराम का अनुभव किया। मुझे इतना सुख मिला कि मैं सोचता रहा कि लोग क्यों बिस्तर-गद्दे-तकिये और वैसी ही अन्य वस्तुयें बनाने का कष्ट उठाते हैं जबकि बिना उनके भी आराम से काम चल सकता है। किन्तु थोड़ी देर में मेरे सिर का पिछला हिस्सा दर्द करने लगा। मैं सोचता रहा कि झोले में ऐसी क्या वस्तु है जो कड़ाई से मेरे गड़ रही है—खाने की कोई वस्तु होगी, सम्भवतः मैदा की बनी कोई वस्तु। मैंने झोले को अँधेरे में टटोला तो लगा कि मैं बर्तनों पर सर रक्खे हूँ।

"सम्भवतः गलती से मैंने पावलिक का झोला ले लिया है," मैंने सोचा और उसे दूसरी ओर लुढ़का दिया। किन्तु उस तरफ भी कोई अटकाव था। मैं झोले को इधर-उधर करता रहा और यह भी प्रयत्न करता रहा कि लेटने के लिये कोई कोमल वस्तु मिल जाय जैसे एक गोलाकार रौल।

"तुम क्या ढूंढ़ रहे हो ?" पावलिक ने प्रश्न किया।

"एक गोला या रौल।"

"क्या भूख लगी है ?"

"गधे मत बनो।"

"तब तुम रौल क्यों तलाश रहे हो ?"

"उस पर सोने के लिये। यह झोला कड़ा है।"

"ओ हो ! मुलायम !" पावलिक चिल्लाया।

"एक टीन के कनस्तर पर तुम लेटने का प्रयत्न करो और देखो कैसा लगता है ?" मैं गुर्राया।

मुझे कोई गोलाकार वस्तु तो नहीं मिली किन्तु अन्त में कुछ कागजों के खोके मिल गये–निश्चित ही उनमें शकर होगी। वह मेरे सिर के नीचे थी और मैं सोने की व्यवस्था कर ही रहा था कि मेरी पीठ दर्द करने लगी। मैंने सोचा—चित्त लेटने से ऐसा हुआ होगा; अतः मैं करवट लेकर लेट गया।

"कढ़ाही में पड़ी मछली की तरह मत छटपटाओ।" पावलिक बिगड़ा।

"क्यों, मैं चाहूँ तो घूम भी नहीं सकता ?"

"नहीं, क्योंकि तुम मुझे भींच रहे हो, इसलिये।"

"ओहो ! कोमल ! क्यों भिचना सहन नहीं कर सकते ?"

शीघ्र ही मेरी बग़ल भी दर्द करने लगी। मैंने देर तक सहन करने की चेष्टा की और सोना चाहा। किन्तु सब व्यर्थ गया। तब मैं पेट के बल लेट गया।

"चुप पड़े रहो, क्या नहीं रह सकते ?" पावलिक बोला—"जब तुम इस तरह उछल रहे हो तो तुम्हारे साथ कौन सो सकता है ?"

"श: तुम तो जैसे थोड़ी देर में सो ही जाओगे," मैंने कहा। मेरे शब्द कठिनाई से मुँह के बाहर आये होंगे कि सारा टेन्ट हम लोगों के ऊपर गिर पड़ा। मैंने किसी प्रकार एक खम्भा अचानक ही उसके स्थान से हटा दिया था।

"फूहड़, गधा !" पावलिक चिल्लाया—"तुम्हीं ने यह किया है।"

सरयोझा ने किसी प्रकार उन डालों से अपना सिर बाहर निकाला और अर्ध-निद्रावस्था में पलकें चलाता रहा।

"यह किस प्रकार का मज़ाक है ?" वह गुर्राया।

"वह फूहड़ हाथी यह रहा," पावलिक ने उससे कहा—"आओ, उठो, और इसे दुबारा ठीक से लगाओ।"

हम लोग उस ध्वंसावशेष से किसी प्रकार रेंग कर बाहर निकले और अपने शेल्टर को दुबारा बनाने लगे। अब भी पर्याप्त प्रकाश था अतः पूरी तरह अँधेरा होने के पूर्व ही हमने अपना कार्य समाप्त कर लिया। इस बार मैंने सतर्कतापूर्वक पहले ही डुबकी मारी और बीच का स्थान औरों से पहले स्वयं लिया।

"हः, वह मेरा स्थान है," पावलिक ने विरोध किया।

"यह थ्येटर नहीं है," मैंने कहा—"स्थानों पर नम्बर नहीं पड़े हैं।"

उसने मुझे धक्का देने की चेष्टा की किन्तु मैं हिला नहीं। अतः वह नाराज़ी में बड़बड़ाता हुआ किनारे लेटा रहा। मैंने देखा कि

वह भी आराम में नहीं है क्योंकि वह भी करवटें लेता रहा। देर तक तो मैं भी नहीं सो पाया किन्तु अन्त में सो गया। न तो मुझे यही ध्यान है कि मैं कितनी देर सोया, न यही कि आया मुझे कोई स्वप्न दिखाई दिये। किन्तु सिर पर एक भारी धमाके ने मुझे जगा दिया। पहले तो मेरी समझ में यही नहीं आया कि क्या हुआ या मैं कहाँ हूँ किन्तु तत्पश्चात् मैंने देखा कि टेन्ट पुन: धड़ाम होगया है और उसका एक खम्भा सीधे मेरे सिर पर पड़ा है। वहाँ बहुत अँधेरा था। आसमान काला पड़ा हुआ था, केवल उन टिमटिमाते तारों को छोड़कर जो दूर चमक रहे थे। हम प्राय: रेंग कर बाहर आये।

"फिर ठीक करके खड़ा करना चाहिये" सरयोझा बोला।

"अँधेरे में हम इसे कैसे खड़ा कर सकते हैं ?"

"ठीक है, हमको प्रयत्न करना चाहिए। यों खुले में भी तो हम ठीक से नहीं सो सकते !"

तब हमने उन टहनियों के बीच में खम्भों को ढूंढ़ना प्रारम्भ किया। हमने तीन तो तुरन्त पा लिये किन्तु चौथा ग़ायब था। हमने उसको सर्वत्र ढूंढ़ा। किन्तु जब वह मिला तो वे तीन ग़ायब होगये। हमने फिर खखोला और अन्त में सब को ढूंढ़ लिया। हम उनको ठीक से लगाने ही वाले थे कि पावलिक ने कहा—

"एक मिनट रुको। हमारा कैम्प कहाँ है ?"

"कैसा कैम्प ?"

"वह स्थान जहाँ हमने अपना सामान व झोले रक्खे थे।"

तब हम अँधेरे में अपने झोले ढूंढ़ते हुये चक्कर काटते रहे किन्तु वे सब ग़ायब थे। हमने उन्हें ढूंढ़ना बन्द कर दिया और

दूसरे स्थान पर सेन्टर बनाने का निश्चय किया। जब तक पावलिक खम्भे लगा रहा था तब तक मैं व सरयोभा टहनियों को इकट्ठा कर रहे थे !

"इधर, जल्दी आओ !" सरयोभा ने अचानक चीख कर कहा—"मैंने टहनियों का पूरा ढेर वहाँ भूमि पर एकत्र देखा था।" हम जितना उठाकर ले जा सके पावलिक के निकट लेगये। जब हम दूसरे गट्ठर लेने गये तो सरयोभा बोला—

"एक मिनट रुको, यहां कोई और भी वस्तु पड़ी है।"

"कहाँ ?"

"यहां टहनियों के बीच में। एक प्रकार का थैला था।"

मैं नीचे झुका तो मेरे हाथ ने एक थैले का अनुभव किया।

"तो, यह है," मैंने कहा—"यह भरा हुआ भी है। देखो, इसके निकट दूसरा भी है।"

"कल्पना करो !" सरयोभा बोला—"दो थैले।"

"ओह ! देखो, एक और भी।" मैंने कहा।

"तीन थैले, "सरयोभा चिल्लाया" इनको कौन यहाँ छोड़ गया होगा ?"

"तुम्हारा सिर" मैंने कहा—"वे हमारे हैं।"

"हमारे ?"

"और क्या ? वे हमारे थैले हैं।"

"वे हैं ! वे यहाँ मिलेंगे, यह कौन सोचता था ?"

हमने पावलिक को वहाँ बुलाया और अपनी खोज बतायी।

हमने अपने झोले उठा लिये और नये कैम्प तक लेगये। यह सोचकर मैं आगे बढ़ा कि पहले कूदूंगा। किन्तु वहाँ कहीं द्वार ही न था! मैं बराबर चक्कर लगाता रहा किन्तु वह सब ओर से बन्द था।

"हः, प्रवेश-द्वार किधर है?" मैंने प्रश्न किया।

"सब बेकार" पावलिक बोला—"मैं द्वार ही निकालना भूल गया।"

उसने सावधानीपूर्वक कुछ टहनियों को हटाया और जब उसको पर्याप्त स्थान मिल गया तो शीघ्र ही कूद कर बीच में जा लेटा। उससे बहस करने के लिये उस समय मैं अधिक थका हुआ था। अतः मैंने सरयोझा का अनुकरण किया और बिना एक शब्द बोले किनारे लेट गया। मेरे सिर के नीचे पुनः कोई कड़ी चीज़ लग रही थी—सामान का टीन या ऐसा ही कुछ और—किन्तु मैं इतना थका हुआ था कि तुरन्त सो गया। यही सब कथा है।

अब सबेरा होगया है। मैं औरों से कुछ पहले अपनी डायरी लिखने के लिये उठ गया हूँ। सूर्य ऊपर चढ़ आया है और काफी गरमी हो रही हैं। धुँधले सफेद बादल आकाश में उड़ रहे हैं और मैं गायों को रँभाते औरे कुत्तों को दूर गाँव में भोंकते हुये सुन रहा हूँ। सरयोझा व पावलिक अभी भी टेन्ट के अन्दर गहरी नींद में सो रहे हैं। मैं अभी उन्हें एक मिनट में जगाता हूँ तब हम लोग जलपान के लिये जावेंगे। मैं भूख से पीड़ित हो रहा हूँ।

उसी दिन की संध्या

जलपान के अनन्तर हम अपने जाल का निरीक्षण करने जंगल की ओर गये। वह रिक्त था अतः हमने निश्चय किया कि हमें

मक्खियों का पीछा करना चाहिए। हमने कुछ घंटे उनके पीछे चक्कर काटने में बिताये भी। अन्तत: पावलिक ने अपना धैर्य खो दिया। उसने मक्खी को डराना प्रारम्भ किया जिससे वह अपने छत्ते में भाग जाय। वह चिल्लाया और अपने हाथ पैर फटफटाने लगा। मक्खी नाराज़ होकर उसके सिर पर भनभनाती रही जिससे वह बड़ी जोर से चीखा। मक्खी ने उसे काट खाया जिससे उसका कान लाल होगया और तुरन्त सूजने लगा।

पावलिक गरम हो रहा था—"भाड़ में जाँय मक्खियाँ! मैंने बहुत पाल लीं। तुम उनका पीछा कर सकते हो। ओह! मेरा कान कितना कष्ट दे रहा है?"

"चिन्ता मत करो," हम दोनों ने कहा— "यह तुमको कष्ट देना शीघ्र ही बन्द कर देगा।"

"बात बनाना तुम्हारे लिये आसान है," वह चिल्लाया— "तुम्हें पता नहीं, क्या हो रहा है? हाय! मैं क्या करूँ?"

"अच्छा हो हम इस पर रूमाल की पट्टी बाँध दें?" मैंने सुझाव दिया।

"नहीं," पावलिक ने उत्तर दिया—"मैं नदी पर जाऊँगा और इसे धोऊँगा।"

वह अपना कान धोने नदी की ओर चला गया और मैं तथा सरयोझा मक्खियों के पीछे दौड़ते रहे। हमने निश्चय कर लिया था—जब एक देखता तो दूसरा आराम करता था। हम निरन्तर प्रतीक्षा करते रहे तब अनायास जिस मक्खी का हम पीछा कर रहे थे वह उठी और उड़ गई। हम उसके पीछे दौड़े किन्तु वह इतना ऊँचे उड़ गयी कि हमारी आँखों से ओझल हो गयी।

"कितनी लज्जा की बात है ?" सरयोझा बोला—"अब हमें सब फिर पुनः प्रारम्भ करना होगा।"

तभी पावलिक नदी की ओर से दौड़ा हुआ आया। वह अपनी टोपी में कुछ लिए हुए था।

"देखो ! मैं क्या लाया हूँ !" वह चिल्लाया। हम लोगों ने जाकर उसकी टोपी देखी। उसमें वह छोटी-छोटी कार्प नामक मछलियाँ लिये हुये था।

"तुमने ये कहाँ से पायीं ?"

"नदी के किनारे, दलदल में।"

"तुमने इन्हें विना किसी वस्तु की सहायता के कैसे पकड़ लिया ?"

उस स्थान पर पानी नहीं था। मैंने अपने खाली हाथों से ही उन्हें पकड़ लिया। चलो, हम कुछ मछली का शोरवा बनावें।

हम लोग दलदल की ओर भागे गये और कुछ और मछलियाँ पकड़ लाये। तब हमने बड़ा सुस्वाद शोरवा बनाया। हम फिर गये और भोजन के लिये भी और मछलियाँ पकड़ लाए।

"यहाँ तो ये बहुत हैं," पावलिक बोला—"हम भोजन के लिये मछलियाँ रोज़ पा सकते हैं।"

खाना खाने के बाद मक्खियों का पीछा करने के लिए हम पुनः जंगल गये।

"सोचो, हम उन पर थोड़ा पानी छिड़कें। वे समझेंगी कि पानी बरस रहा है और अपने छत्ते की ओर भागेंगी।"

हमने कनस्तर को पानी से भरा और जो पहली मक्खी

दिखाई दी उस पर छिड़का। वह एक फूल के तने में रेंग कर एक हरी पत्ती में छिप कर बैठ गयी। वह निश्चित ही पानी रुक जाने की प्रतीक्षा कर रही होगी क्योंकि अब वह निकल आयी है और धूप में अपने को सुखा रही है। जब वह सूख गयी तो उसने अपने पंख फैलाये और उड़ गई। हम ज्योंही उसके पीछे दौड़ने वाले थे वह एक फूल पर जा बैठी और पुनः पराग एकत्र करने लगी। सरयोझा ने मुँह में पूरा पानी भर कर मक्खी के ऊपर छिड़क दिया। किन्तु मक्खी घर नहीं भागी। अपने सूख जाने तक वह प्रतीक्षा करती रही और तब फूलों-फूलों उड़ती रही।

"कैसी जिद्दी मक्खी है।" सरयोझा बोला। उसने उस पर फिर पानी छिड़का। इस बार वह बेचारी भीग गई और उसके पंख भीग कर उसकी पीठ में चिपक गये।

अब मक्खी ने देखा कि वर्षा रुकने का कोई चिह्न नहीं है। जैसे ही उसके पंख सूखे वह फिर उड़ गई। हम फ़िर उसके पीछे दौड़े। पहले वह मैदान के बराबर-बराबर पेड़ों की टहनियों पर दौड़ती रही किन्तु तब वह ऊपर उड़ गयी और फिर हमसे ओझल हो गयी। तदनन्तर हमने अन्य मक्खियों पर पानी छिड़कना प्रारम्भ

किया किन्तु उन सबने उसी प्रकार किया—पहले एक पत्ती के अन्दर छिप गयीं, तब धूप में सूखने के लिए बाहर आयीं और उसके बाद

उड़ गयीं और हम एक के भी पीछे न भाग सके क्योंकि वे बहुत ऊँचे पर और बहुत तेज़ भाग रही थीं। जब तक सब मक्खियाँ नहीं उड़ गयीं और सूरज नहीं डूब गया हम उनके पीछे २ भागते रहे। अन्त में हम अपने कैम्प में लौटे और तब अपने लिए खाना पकाया।

किसी कारणवश चाची पोल्या अभी तक नहीं लौटी थी और हम लोगों ने दूसरी रात भी उसी प्रकार शेल्टर में व्यतीत करने का निश्चय किया। हमने सोचा कि हमें सचमुच घर लौट जाना चाहिए किन्तु सरयोझा और पावलिक ने कहा कि एक रात्रि से कुछ नहीं होता है क्योंकि अगले दिन हमको हर दशा में घर लौटना होगा। इस बार हमने अपने शेल्टर को ठोकने का विचार किया जिससे वह फिर रात्रि में हमारे ऊपर न गिरे।

सरयोझा व पावलिक खम्भों को ज़मीन में गहरा गाड़ रहे हैं और मैं अपनी खोज की बातें डायरी में लिख रहा हूँ। आकाश में गहरे भूरे बादल घिरे हुए हैं। इस समय हवा ठंडी व तेज़ चल रही है। यदि कहीं रात्रि में पानी बरसा? हमको टेन्ट अधिक टहनियों से ढंकना चाहिए जिससे पानी बाहर ही रहे। मुझे लिखना बन्द करके सरयोझा व पावलिक की सहायता करनी चाहिए।

१० जून

विगत रात्रि हमने कुछ नया अनुभव नहीं किया। क्योंकि हमने अपना शेल्टर, इस बार ठीक बनाया था। ठीक बनाने से सदैव आराम मिलता है और तब तुम इस भय से मुक्त होकर सो सकते हो कि कहीं छत तुम्हारे सिर पर न गिर पड़े। पानी भी

नहीं बरसा। मैं जल्दी उठ गया। चिड़ियों ने मुझे जगा दिया। अभी पूर्ण प्रकाश हुआ भी न था कि वे चहचहाने लगीं। मैं टेन्ट से रेंग कर बाहर आया और देखा कि अभी सूर्य नहीं उगा है। आसमान स्वच्छ व नीला था और कोमल व सफेद बादल—साबुन के झाग की तरह भूमि पर नीचे आकर उड़ रहे थे। धीरे-धीरे वे बड़े होगये और भाप की तरह तब तक ऊपर उठते रहे जब तक कि उन्होंने समस्त आकाश को घेर नहीं लिया। कुछ देर बाद वे स्ट्रा-बेरी-आइसक्रीम की भांति हलके गुलाबी रंग के होगये। मैं चकित होता रहा कि कहीं इतनी आइस-क्रीम मिल जावे तो क्या हम उतनी खा सकेंगे? हमारे जीवन भर के लिये तथा बच जाने के लिये भी वह बहुत थी। मैं नहीं सोच सकता कि संसार के समस्त लोग भी इतनी आइस-क्रीम खा सकते हैं। मैं इन विचारों में लीन ही था कि बड़ा लाल-सूर्य भूमि से उग आया। तुरन्त प्रत्येक वस्तु चमकने लगी और गरम होने लगी। हरी दूब अधिक हरी दिखाई देने लगी और घास का हर टुकड़ा—जिसमें ओस की नन्हीं बूंदें थीं—हीरे की भांति चमकने लगा। मैंने उस सुन्दर दृश्य को देखने के लिये सरयोझा व पावलिक को जगाया किन्तु जब तक वे अपनी आँखें मलना समाप्त करें ओस विलीन होगयी थी और देखने को कुछ विशेष न रह गया था।

"तुम सोने वालो," मैंने कहा—"गिलहरियों की तरह बिल में पड़े खर्राटे ले रहे हो। यदि तुम जल्दी नहीं उठोगे तो कुछ भी न देख पावोगे।"

पावलिक ने अँगड़ाई ली, वह सीधा होकर काम में लग गया और नाश्ते के लिये मछलियाँ साफ करने लगा। किन्तु सरयोझा

ने कहा कि पहले हमें स्वयं स्वच्छ हो लेना चाहिये। अत: हम लोग कदम मिलाकर नदी की ओर गये और डुबकी मारी। तब हम जलपान तयार करने के लिये लौटे। हमने मछलियाँ भूनीं। एक झोले में हमें कुछ आटा मिला और पावलिक ने पतली-पतली केक बनायीं। वे बहुत अच्छी नहीं थीं किन्तु उन्होंने मुझको एक नवीन विचार दिया।

"मक्खियों पर कुछ आटा छिड़कने की हमें चेष्टा करनी चाहिये।" मैंने सुझाव दिया—"वह उन्हें भारी बना देगा। जिससे वे इतनी तेज नहीं भाग पायेंगी।"

वे दोनों भी सहमत हो गये और जो भी पहली मक्खी हमें दीख पड़ी हमने उस पर आटा छिड़क दिया। मक्खी ने तुरन्त अपने पैरों से अपने को साफ करना प्रारम्भ किया। एक मिनट में उसने सारा आटा झाड़ लिया और पराग पीने में जुट गई।

"क्या हो, मैं जानता हूँ," सरयोझा बोला—"पहले हमें इन्हें थोड़ा गीला कर देना चाहिये। तब आटा छिड़कने से वह उनके चिपट जावेगा और मक्खी इतनी जल्दी उसे साफ नहीं कर सकेगी।"

हमने वह प्रयत्न भी किया। सरयोझा मुँह में पानी भर लाया और उसने सफाई से मक्खी पर छिड़क दिया और पावलिक ने उस पर आटा। पूरी तरह आटे से चिपकने के कारण मक्खी ने अपने को साफ करना प्रारम्भ किया। उसने अपना सिर व आँखें अपने आगे के पैरों से रगड़ीं और अपनी पूँछ व पर अपने पीछे के पैरों से साफ किये। उसने तब तक बड़ा परिश्रम किया जब तक वह पूरी तरह साफ नहीं हो गयी। आटे का केवल एक धब्बा उसकी

पीठ पर लगा रह गया। हम उसको दूसरी खूराक देने ही वाले थे कि उसने पंख फैलाये और उड़ गयी। हम भी उसके पीछे भागे। पहले वह धीमी उड़ी और तब शीघ्र ही तेज उड़कर जंगल के बाहर मैदान की ओर दौड़ी। हम पागलों की भाँति उसके पीछे भागे। हमने पेड़ों के ठूठों व ऊँचे-नीचे स्थानों को पार किया तथा खाइयों और गढ़ों को फ़ांदते गये। हमने एक गोभी के खेत तक उसका पीछा किया और बिखरे तारों में आकर अचानक फँस गये। मक्खी तारों के ऊपर से सीधे उड़कर विलीन हो गयी। हमने तारों को फांदा और एक बगीचे में पहुँच गये।

हमारे आश्चर्य की कल्पना करो कि हमने मधु-मक्खियों के छत्तों वाले वैसे ही सन्दूकों को वहाँ एक कतार देखी जैसे हमने बनाये थे। एक सन्दूक के छत्ते के निकट एक बूढ़ा आदमी खड़ा था जिसके सफेद दाढ़ी थी, और जो विस्मय से हमारी ओर देख रहा था।

"हां, तुम्हें अपने लिये क्या कहना है ?" उसने तीव्रतापूर्वक कहा। हम उसके सामने मूर्तिवत खड़े थे और हमारे नेत्र जल्दी-जल्दी घूम रहे थे।

"अ.........कुछ नहीं।" पावलिक ने लड़खड़ा कर कहा और तारों के ऊपर चढ़ गया।

"तुम तार के ऊपर क्यों चढ़े ? उधर एक दरवाज़ा भी तो है।" बूढ़े आदमी ने सर हिला कर बिगड़ते हुए कहा।

"......हमने दरवाजा नहीं देखा," पावलिक बोला और गायब हो गया।

मैं व सरयोझा बूढ़े के पास रह गये। मैं सोच ही रहा था कि किस प्रकार भागें कि बूढ़ा बोला—

"तुम बदमाश लड़को ! यहाँ क्या कर रहे हो ?

"हम......अरे......हाँ......हमने एक भूल की है।" मैंने कहा।

"हमारी मक्खी तुम्हारे बगीचे में उड़ आयी है। हम उसका पीछा कर रहे थे।" सरयोझा ने स्पष्ट किया।

"तुम्हारी मक्खी ?" बूढ़े ने आश्चर्य से कहा—"असम्भव ! वह मेरी मक्खी होगी।"

हमने देखा कि बगीचा मक्खियों से भरा हुआ था। वे सब तरफ उड़ रही थीं और बाग़ उनकी भनभनाहट से गूँज रहा था।

"तुम लोग मक्खी का पीछा क्यों कर रहे थे ?" बूढ़े आदमी ने प्रश्न किया।

हमने कहा—"हम समझ रहे थे कि वह हमको किसी पेड़ के ऐसे खोखले तक ले जावेगी जहाँ मक्खियाँ भरी हों।"

"किन्तु तुम मक्खियों का क्या करना चाहते हो ?"

हमने उसे समझाया कि हमारे पायनियर-ग्रुप ने मक्खियाँ पालने का निश्चय किया है। पावलिक ने, जो तार के पीछे से सुन रहा था, जब यह देखा कि बूढ़ा हम लोगों पर बिगड़ नहीं रहा है तो वह हमारे पास आ गया। हमने बूढ़े को बताया कि मक्खियों का एक जाल जंगल में एक पेड़ पर हमने टाँग रक्खा है। उसे इस बात से बड़ा आकर्षण हो रहा था।

"मक्खियों का पालना बड़ी सुन्दर बात है," उसने कहा—"एक बड़ा लाभदायक व्यापार भी। किन्तु बड़ी मक्खियों को पकड़ना सरल नहीं है। साथ ही इस स्थान में वे हैं भी नहीं। तुम अपने जाल में केवल उन्हीं मक्खियों को पकड़ सकते हो जो छत्ते से भटक जाँय।"

"तब हमें क्या करना चाहिये ?" हमने प्रश्न किया।

"प्रारम्भ करने के लिये मैं तुम्हें कुछ मक्खियाँ दे दूँगा। मैं देखता हूँ कि तुम वास्तव में मक्खियाँ पालना चाहते हो। मक्खियाँ पालने वालों को एक दूसरे की सहायता करनी चाहिये।" बूढ़े आदमी ने कहा।

प्रसन्नता से मेरा हृदय उछलने लगा। मैंने सोचा कि बूढ़ा अभी ही मक्खियाँ दे देगा किन्तु वह बोला—

"संध्या समय तुम लोग यहां आओ। मेरे पास एक परिवार है जो छत्ते को छोड़ने वाला है। मैं वह तुम्हें दे दूँगा। किन्तु उन्हें अन्दर रखने के लिये तुम्हें किसी प्रकार का सन्दूक लाना चाहिये।"

"हमारे जाल से काम चल जायगा ?" मैंने प्रश्न किया।

"हाँ, वह अच्छा रहेगा। दो तीन या चार घंटे बाद लौट कर आओ जबकि कुछ सर्दी हो जावे।"

हम भाग कर जंगल में आये और अपना जाल वाला सन्दूक उतारा। अब हमें उस बूढ़े आदमी के पास जाने की प्रतीक्षा थी। जब हम वहाँ जाने की प्रतीक्षा में थे, मैंने सोचा—मैं वह सब डायरी में लिख डालूँ। मैंने देखा है कि जब हम लिखते हैं समय शीघ्र बीत जाता है। अब हमें अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी है। मुझे आशा है कि मक्खियों का परिवार वहाँ होगा। अभी इतना ही है।

बाद में

अन्त में हमें मधु-मक्खियाँ मिल गयीं। बूढ़ा आदमी बड़ा सहृदय था। मैंने सोचा था कि प्रत्येक मधु-मक्खी पालने वाला झगड़ालू होता होगा क्योंकि उसको बहुधा मक्खियाँ काट लेती हैं किन्तु वह इस प्रकार का नहीं था। वह बहुत मधुर-भाषी और दोस्त जैसा था। उसने अपने वचन का निर्वाह किया। जब हम उसके बग़ीचे में पहुँचे तो उसने मक्खियों के समूह को एक गोल लकड़ी के संदूक के प्रकार की टोकरी में तैयार कर रक्खा था जो एक कपड़े से ढकी हुई थी। हे भगवान्! कितनी मक्खियाँ उसमें भरी हुई थीं। वह बक्स निश्चित ही उनसे भारी हो रहा था। उस बूढ़े ने कपड़ा हटा लिया और उनको हमारे लकड़ी के जाल में उँड़ेल दिया। जैसे वह मटर या उसी प्रकार की किसी चीज का थैला हो। हमने शीघ्र ही जाल को बन्द कर दिया और बूढ़े को धन्यवाद दिया।

हमारे आने के पूर्व उसने मक्खियों को रखने के हर प्रकार के निर्देश हमको दिये।

उसने हमें बताया कि हमें जाते ही उस मोम के घेरे के अन्दर छत्ते में मक्खियों को भर देना होगा। प्रारम्भ में हमको—जब तक कि मक्खियाँ पराग बटोरना प्रारम्भ न करें, उन्हें शर्बत देना होगा। शर्बत बनाने के लिये शकर को पानी के छोटे जार में घोल कर और उस पर कपड़ा बाँध कर छत्ते में उसे उलटा करके रख देना चाहिये। शर्बत धीरे-धीरे टपकेगा और मक्खियाँ उसे कपड़े के द्वारा धीरे-धीरे चूसेंगी। उस बूढ़े आदमी ने हमें यह भी बताया कि किस प्रकार झीने कपड़े का जाल बनाकर उस समय सिर पर ढक लेना चाहिये जब हम छत्ते को खोलें और किस प्रकार धुयें का बर्तन बनाना चाहिये जिससे मक्खियाँ पुनः छत्ते के अन्दर चली जावें। उसने हमको अपना धुयें का बर्तन दिखाया—वह एक लोहे का गोल प्याला सा था जिसमें एक धौंकनी व आग सुलगाने वाला यन्त्र लगा था। तुम उसमें थोड़ी सी लकड़ी भरो और उसे जला दो। अब तुम उस यन्त्र को चलाओ तो धौंकनी से धुआं निकलने लगेगा।

"मधु-मक्खियाँ तुम्हें आकर्षित करने वाले छोटे जीव हैं।" बूढ़े ने कहा—"जो भी मधु-मक्खियों को पालना प्रारम्भ करेगा, वह समस्त जीवन उन्हें स्नेह करता रहेगा और उन्हें कभी भी नहीं छोड़ेगा।"

"क्यों ?"

"उनके बिना उसे अकेलेपन का अनुभव होगा।"

अन्त में हमने उसे नमस्कार किया और घर की ओर बढ़े। जब हम कस्बे में पहुँचे तो बहुत देर हो गयी थी। सरयोझा

मक्खियों को अपने घर ले गया और पावलिक तथा मैं अपने लोगों को यह बताने घर भागे कि हम लोग आ गये हैं। थोड़ी देर में ही हम सरयोझा के यहां पहुँच गये।

सरयोझा की माँ ने पूछा कि हम लोग गांव में कैसे रहे। हम डर रहे थे कि वे हम से चाची पोल्या के सम्बन्ध में पूछेंगी और हमें यह पता नहीं था कि जब हम यह कहेंगे कि हम लोग पेड़ की डालों से बने शेल्टर में रहे—तब वे क्या कहेंगी? सरयोझा ने तुरन्त उस बूढ़े व्यक्ति के सम्बन्ध में बात प्रारम्भ कर दी जो मधु-मक्खियों को पालता था। उसकी मां एकाग्र होकर उस कहानी को सुनती रही।

"और चाची पोल्या कैसे हैं?" उसने पूछा।

इसके पहले कि हम कोई उत्तर दें किसी ने द्वार खटखटाया। वह पावलिक की माँ थी। वह खाने के लिये पावलिक को बुलाने आयी थी। हमने सन्तोष की साँस ली और उसको मक्खियाँ दिखाते रहे तथा मक्खी-पालने वाले बूढ़े के सम्बन्ध में नाना प्रकार की बातें बताते रहे। तब सरयोझा की माँ ने पुन: पूछा—

"किन्तु चाची पोल्या के सम्बन्ध में कुछ क्यों नहीं बताते हो?"

हमें पता ही नहीं था कि हम उसका क्या उत्तर दें कि उसी क्षण दैवात् मेरी माँ आ गयी। हमने उसे भी मक्खियाँ दिखायीं और उस आदमी के सम्बन्ध में बताते रहे जिसने हमें मक्खियाँ दी थीं। मेरी माँ ने भी पूछा कि हम लोग गाँव में कैसे रहे?

"ओह, बहुत अच्छी तरह।"

"मुझे आशा है कि तुम लोगों ने चाची पोल्या को अधिक तंग नहीं किया होगा।"

"हम तो ऐसा नहीं सोचते।" यह न समझते हुए, कि वह झूठ समझा जावेगा या नहीं, मैंने कहा।

"क्या चाची पोल्या हम लोगों के पास जल्दी ही आ रही हैं?" सरयोझा की माँ ने जानना चाहा।

"न नहीं, कम से कम मैं नहीं समझता।" सरयोझा ने उत्तर दिया।

"उसने इसके सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा?"

"नहीं, उसने नहीं कहा।"

किसी भी प्रकार यह सत्य था। मुझे पता नहीं था कि उस वार्तालाप का अन्त क्या होगा तभी द्वार पर एक और खुट्-खुट् हुई और हमने पुनः सन्तोष की साँस ली। किन्तु थोड़ी ही देर में द्वार खुला और कौन अन्दर आ सकता था सिवा चाची पोल्या के! हम केवल मुँह फाड़ कर रह गये।

"गुड-ईवनिंग!" चाची पोल्या ने कहा।

"गुड-ईवनिंग," सरयोझा की मां ने कहा—"हम लोग अभी-अभी तुम्हारी ही बात कर रहे थे कि तुम कब आ रही हो?"

"खेतों से एक लारी कस्बे को आ रही थी इसलिये मैंने उस अवसर को देखकर सोचा कि चलूँ और तुम लोगों से मिलूँ।"

तब वह सरयोझा की ओर घूमी और बोली।

"हल्लो···सरयोझा! मैंने तुम्हें बहुत दिनों से नहीं देखा।"

सरयोझा ऐसा लाल हो गया जैसी चुकन्दर की जड़।

"यह कैसे?" सरयोझा की मां ने कहा—"क्या तुमने इसे आज नहीं देखा?"

चाची पोल्या विस्मय से देखने लगीं।

"मैं उसे कहाँ देखती ?"

"क्यों, शिशिगनो में ही।"

"किन्तु वहाँ तो मैं तीन दिन से नहीं थी। मैं तारासोवका में खेतों में काम कर रही थी।"

अन्त में वह सब बात खुल गई।

"ओ, तभी ! तुम लोग कहाँ थे ?" सरयोझा की मां ने हमसे बिगड़ कर पूछा।

"शिशिगनो.........में," सरयोझा ने लड़खड़ाते हुये कहा।

"किन्तु मकान तो बन्द था।"

"हां, मैं जानता हूँ कि वह बन्द था।"

"तब तुम लोग कहाँ सोये ?"

"हमने पेड़ की शाखाओं का एक शेल्टर बनाया था।"

उसकी देर तक चर्चा होती रही। मेरी माँ, पावलिक की मां और सरयोझा की मां सब ने मिलकर बातचीत प्रारम्भ करदी। मुझे पता नहीं उसके बाद क्या हुआ; किन्तु मेरी माँ तुरन्त मुझे घर लेगयी। वह मुझसे बड़ी नाराज़ थी और घर जाते समय रास्ते भर मुझसे बिगड़ती गयी।

"तुम सब शैतान लड़के हो। मैं तुम्हें बताऊँगी कि कैसे मेरी अनुमति के बिना दो रात बाहर पेड़ों के नीचे सोया जाता है। यह अन्तिम अवसर है जब मैं तुम्हें बिना साथ लिये कभी बाहर जाने दूँ।"

मुझे घर पर ही रहना पड़ा और उस दिन सारी रात मुझे उसी प्रकार की बातें सुननी पड़ीं। मैं इसके लिये मरा जा रहा था कि जाऊँ और मक्खियों को देखूं।

११ जून

आज एक भयानक बात हुई।

प्रातःकाल मैं पावलिक के यहाँ गया और वहाँ से हम दोनों सरयोझा के यहाँ गये। वह अभी भी बिस्तर पर था। हमने उसे जगाया। वह हमें देखकर बिलकुल प्रसन्न नहीं हुआ। उसने कहा कि वह एक कौतूहलपूर्ण स्वप्न के बीच में था।

"कोई बात नहीं, शेष स्वप्न तुम आज रात्रि में देख लोगे। हमें मक्खियों को छत्तों वाले सन्दूक में रखना है," हमने कहा।

"तुम जाओ और औरों से भी मक्खियों के सम्बन्ध में कह आओ। तब तक मैं कपड़े पहनता हूँ।"

"जाल कहाँ है ?" हमने उससे प्रश्न किया।

"छज्जे पर। मैंने उसे छज्जे पर इसलिये रख दिया था कि मक्खियों को ताज़ी हवा मिले।"

हम छज्जे पर गये और देखा कि जाल तो वहाँ था किन्तु उसका छोटा दरवाज़ा पूरा खुला हुआ था और मक्खियाँ सब जगह फैली हुयी थीं।

"ओह तुम...मूर्ख ?" पावलिक उस पर बिगड़ा—"तुम सो रहे थे और यहाँ सब मक्खियां उड़ गयीं।"

करयोझा छज्जे पर भागा हुआ आया।

"वहाँ मुँह फाड़े मत खड़े रहो," वह चिल्लाया—"दरवाजा बन्द करलो।"

"तुम हम पर क्यों चिल्ला रहे हो ?" पावलिक ने कहा—"हमको क्यों दोष देते हो। वह तुम्हीं हो जिसने जाल खुला छोड़ दिया था।"

"मुझे पता नहीं मैं कैसे उसे बन्द करना भूल गया," वह बोला।

"मोटी बुद्धि !" मैंने नाराज़ होकर कहा।

"यह मेरा दोष नहीं है। वह चाची पोल्या के कारण हुआ है। मुझ पर इतनी फटकार पड़ी कि मैं मक्खियों के सम्बन्ध में सब कुछ भूल गया।"

"मैं शर्त बद सकता हूँ कि उसमें अब एक भी मक्खी नहीं बची है," पावलिक बोला—"जहाँ तक अनुमान है वे सब उड़ गयी होंगी !"

"सम्भवतः उसमें कुछ बची हों," सरयोझा ने कहा—"हम देखें तो।"

मैंने ढक्कन खोला और अन्दर देखा। वहाँ अब भी बहुत सी मक्खियाँ थीं। जैसे ही ढक्कन खुला वे ऊपर उड़ीं। पावलिक ने उन्हें अन्दर करने के लिये अपने हाथ चलाये और तब उनमें से एक उड़कर मेरे ऊपर बैठ गयी। मैंने डर कर ढक्कन फेंक दिया और मक्खी को झटकने का प्रयत्न करने लगा किन्तु उसने मुझे काट लिया। मैं बिगड़ा और मैंने उसे हाथ से पीट कर मार डाला। उस पर अन्य मक्खियाँ बुरी तरह भनभनाने लगीं। वे जाल के बाहर उड़

आयीं और सबने हम पर हमला बोल दिया। पावलिक भागकर कमरे में गया। सरयोझा उसके पीछे भागा। एक मक्खी ने मेरी नाक पर काट लिया था। दूसरी मेरे बालों में उलझ गयी। बालों को झटकते हुये मैं कमरे में गया कि मक्खी बाहर निकल जाय किन्तु उसने मेरे सिर पर डंक मार दिया। पावलिक की गर्दन और ओठ पर मक्खी ने डंक मारा था। सरयोझा की नाक व गर्दन के पीछे मक्खी ने काट लिया था।

हम अपने डंक लगे भाग को धोने के लिये रसोई में भागे गये। वे आग की तरह जल रहे थे। हमने एक दूसरे की सहायता की कि डंक निकल आवें किन्तु दर्द नहीं गया।

"यह सब तुम्हारा दोष है!" सरयोझा चिल्लाया—"तुमको अपने हाथ नहीं हिलाने चाहिए थे। जब आदमी हाथ हिलाते हैं तो मक्खियों को अच्छा नहीं लगता है।"
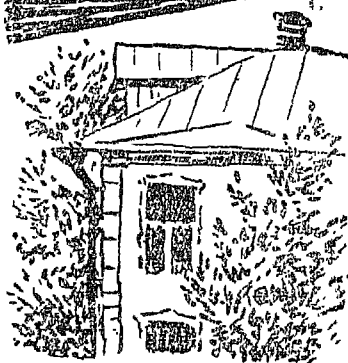
"तुम मुझ पर मत गुर्राओ।" पावलिक बोला—"तुम्हीं अकेले

नहीं हो जिसके डंक लगे हैं। यह देखो जो मेरे ओठ पर लगा है। यह मुझे बहुत कष्ट दे रहा है।"

"और मेरी नाक के लिये क्या कहते हो ? तुम्हारा ख्याल है वह दर्द नहीं कर रही है।"

"तुम तो नाक से कुछ भी नहीं करते। किन्तु मुझे तो मुंह से बोलना पड़ता है।"

"कुछ देर के परिवर्तन के लिये तुम चुप रह सकते हो।"

उन्होंने एक दूसरे को, रोष में, निर्वाक होकर देखा।

हम देर तक रसोई में बैठे रहे और अपने रूमाल पानी में भिगो-भिगो कर घावों पर रखते रहे।

अचानक सरयोझा अपने चेहरे पर भारी उलझन व्यक्त करते हुये उछल पड़ा।

"ओह दोस्तो! हमने जाल खुला छोड़ दिया।"

हम कमरे में भागे गये और छज्जे पर झांक कर देखा। जाल वहाँ रक्खा था और ढक्कन अलग था। दो एक मक्खियाँ वहाँ चक्कर काट रही थीं और शेष उड़ गयी थीं। हम छज्जे पर गये और जाल के अन्दर झाँके। वह खाली था।

"वे सब चली गयीं।" सरयोझा बोला।

"हो सकता है कि वे फिर लौट आवें," मैंने कहा।

"कम हो सम्भावना है?" पावलिक ने कहा।

तभी तोल्या और यूरा को हमने नीचे सड़क पर देखा। उन्होंने भी हमें देखा और वे ज़ोर से चिल्लाये—

"हे ! वहाँ हो ! तो तुम लोग लौट आये ।"

"हाँ, हम लौट आये ।"

"क्या तुम मक्खियाँ ले आये ?"

"हाँ ।"

थोड़ी ही देर में वे मकान के अन्दर आ गये ।

"तो, मक्खियाँ कहाँ हैं ?"

"वे चली गयीं," हमने कहा—"उड़ गयीं ।"

"कहाँ ?"

"कहाँ ?" पावलिक ने बिगड़ कर मजाक बनाया—"वे हमें यह बताना भूल गयीं ।"

"तुम इतने फूले क्यों हो ? तुम्हें हम पर बिगड़ने की क्या आवश्यकता है ?"

हमने उन्हें पूरी कहानी सुनायी । कैसे उस बूढ़े आदमी ने हमें मक्खियाँ दीं और कैसे वे उड़ गयीं ।

"सम्भव है वह बूढ़ा हमें मक्खियों का एक और झुण्ड दे दे ?" यूरा ने कहा ।

"ओह नहीं, हम उससे फिर नहीं मांग सकते । उसने सोचा था कि हम उनकी निगरानी करेंगे । यदि वह समझ जाय कि हम इतने लापरवाह हैं तो वह अब हमें कुछ नहीं देगा ।"

"अब हमें क्या करना है ?"

"हमें प्रतीक्षा करनी होगी । सम्भवतः वे लौट आवें ।"

अतः हम प्रतीक्षा करते रहे । यूरा और पोल्या थोड़ी देर तक

हमारे साथ रहे किन्तु वे ऊब गये; और 'क्या हुआ' यह औरों से बताने चले गये।

शीघ्र ही, एक के बाद एक सभी लोग आने लगे और हमको वह कहानी बार बार कहनी पड़ी। इस सबसे हम जल्दी ही ऊब गये। सरयोझा की नाक लाल हो गयी थी और एक ओर सूज गई थी। पावलिक का ओठ इतना फूल गया था कि उसे कठिनाई से ही पहचाना जाता था। मेरे सिर व गले में मोटा गोला फूल आया था।

हम भोजन के समय तक प्रतीक्षा करते रहे किन्तु एक भी मक्खी लौटकर नहीं आई।

"वे सब उड़ कर बूढ़े आदमी के बगीचे में लौट गयी होंगी," सरयोझा ने कहा।

"जाने दो, मैं चिन्ता नहीं करता। यदि वे लौट भी आवें तब भी मैं अब उनके पीछे न पड़ूँगा", पावलिक बोला।

"और न मैं, डंक लगाना मुझे पसन्द नहीं," सरयोझा ने कहा।

मैंने कहा—"मैं तो मधु-मक्खियों के पालने की बात भी अधिक नहीं सोचता हूँ। तुम तो उनके आराम के लिये इतना सिर दर्द करो और वे डंक मारें और उड़ जांय।"

तभी यूरा अन्दर आया। "आओ," उसने कहा—"हम लोग एक पत्र लिखें।"

"किसको ?"

"मक्खियों के पालने वालों को।" नीना सर्जेयेवना हमारे लिये एक पता ले आई हैं। हम पत्र लिखेंगे और उनसे कहेंगे कि वे कुछ मक्खियाँ हमें पार्सल से भेज दें।

"तुम अपने आप लिख सकते हो," पावलिक बोला—"हमें मक्खियों से आगे कोई रुचि नहीं है।"

"रुचि नहीं है ?"

"नहीं, हम उनके पीछे नहीं पड़ना चाहते। उस सब धन्धे को छोड़ देने का हमने निश्चय कर लिया है।"

"तुम ऐसा नहीं कर सकते," यूरा ने कहा—"वह पायनियर ग्रुप का निश्चय है।"

"करने के लिये हम कुछ और काम ढूँढ़ लेंगे। मक्खियों को पालना ही कोई एकमात्र काम संसार में नहीं है, या है ?"

यूरा ने हमें प्रोत्साहित करने की अथक चेष्टा की किन्तु हम अपने निश्चय पर दृढ़ थे। हम मक्खियों के मामले में आगे कुछ भी नहीं करना चाहते थे और यही हमारा अन्तिम निर्णय था।

"हमको काफी सबक़ मिल गया है। अब और किसी को मक्खियों के पीछे पड़ना चाहिये, हम कुछ कम कष्टप्रद कार्य ढूँढ़ेंगे।"

१२ जून

मैं उस दिन सुबह कठिनाई से उठ सका। मेरी पूरी गर्दन फ़ूली हुई थी और वह इतना दर्द कर रही थी कि मैं अपना सिर तक नहीं हिला सकता था। यदि मुझे दायें या बायें देखना हो तो पूरे शरीर को घुमाना पड़ता था। मेरे सिर के ऊपर का गुब्बारा भी दर्द कर रहा था। उसी प्रकार मेरा हाथ दर्द कर रहा था।

मैं पावलिक के यहाँ गया। वह घर पर ही था और नाक की तकलीफ से दुःखी था। हमने बुरी तरह मक्खियों को कोसा।

तब सरयोझा अपनी फूली नाक लेकर आया और उसने भी मक्खियों को कोसा।

कुछ देर बाद ग्रीशा याकुश्किन अन्दर आया।

"क्या तुम लोग मधु-मक्खी-पालन वाले सामान की देखभाल में हमारी सहायता नहीं कर रहे हो?"

"तुम क्या बना रहे हो?"

"एक धुँये का बर्तन और वे जाल जिनको हम अपने सिर पर पहन सकें, जिससे हम काम करें तो मक्खियाँ हमें काट न सकें।"

"वे तुम्हें काट सकती हैं। किन्तु वे अब हमें डंक नहीं मारेंगी; क्योंकि अब हमें उनसे कोई मतलब नहीं रखना है।"

ग्रीशा ने हमसे बहस करनी चाही।

"कुछ नहीं करना है," हमने कहा—"हमने मक्खियों को बहुत पाल लिया। हमने प्रयत्न भी किया। अब तुम्हारा नम्बर है।"

"वही तो हम लोग कर रहे हैं।"

"तुम उसे जल्दी ही बन्द करोगे।"

"नहीं, हम नहीं करेंगे। हम तुम्हारी तरह नहीं हैं।"

"ठीक है, हम लोग देखेंगे।"

ग्रीशा शेखी में चला गया।

अगर वह चाहता है तो जाय। जब तक उन सबके डंक लगें, तब तक हम प्रतीक्षा करेंगे; तब वे संगीत की दूसरी ही तान छेड़ेंगे।

१३ जून

आज मेरो गर्दन अधिक कष्ट नहीं दे रही। यदि मैं चाहूँ तो धीरे से अपना सिर भी घुमा सकता हूँ। जब मैं जल्दी गर्दन मोड़ता हूँ तब वह अभी भी दर्द करती है। पावलिक की गर्दन भी पहले से ठीक है किन्तु पूर्णतः नहीं।

ग्रीशा आया और उन्होंने जो धुएं का बर्तन बनाया था वह दिखाया। उसने पूरे कमरे में धुआँ भर दिया और चला गया। जैसे हमने कभी धुआँ देखा ही नहीं था।

१४ जून

मेरी गर्दन ने दर्द करना बन्द कर दिया है। मेरे सर का फूला भी चला गया है। अब बिना कष्ट के मैं अपना सर घुमा सकता हूँ और उसे उछाल भी सकता हूँ किन्तु तब भी दर्द नहीं है। लेकिन मैं घोड़ा नहीं हूं जो अपनी गर्दन उछालूं। अधिक आकर्षक और कुछ नहीं है जो लिखा जावे।

१५ जून

इस सुबह पावलिक और मैं सरयोझा के यहाँ गये और शतरंज खेले। मैं दो बाजी सरयोझा से और एक पावलिक से जीता। पावलिक तीन बाजी मुझ से जीता और सरयोझा से एक भी नहीं जोता। उसके बाद जेन्या और यूरा भागते हुये अन्दर आये।

"जल्दी आओ! मक्खियाँ आ गई हैं!"

"कैसी मक्खियाँ?"

"वे जिन्हें हमने मँगाया था। वे डाक-पार्सल से आयी हैं। उनका पूरा सन्दूक है। मक्खियों के ढेर के ढेर हैं। दो मोम जमाये हुये चौखटे भी हैं। हम उन्हें छत्ते वाले सन्दूक में रखने जा रहे हैं। आओ, साथ चलो।"

हम उनके साथ जाने के लिये उछल पड़े।

"आ हा ?" भूरा ने व्यंग्य किया "तुम लोगों ने तो कहा था कि अब मक्खियों में हमें कोई आकर्षण नहीं है।"

" न अभी ही है," हमने फिर से बैठते हुए कहा—"जैसे हमने कभी मक्खियाँ देखी ही नहीं हैं !"

"ये उनकी तरह नहीं हैं। ये बहुत अच्छी मक्खियाँ हैं।"

"ठीक है, यदि वे इतनी अच्छी हैं तो जाओ और उनको चूमो।"

"यही हम करेंगे और तुम भी करोगे, शर्त रही।" कहते हुए वे बाहर चले गये।

"उन मक्खियों को देखने में बड़ा आनन्द आयेगा।" मैंने कहा।

"हम नहीं जा सकते !" पावलिक बोला "वे लोग कहेंगे कि हमारी बात का कोई आधार ही नहीं है।"

"क्यों ?"

"वे कहेंगे कि हमने मक्खियाँ पालने का विचार इसलिये छोड़ दिया कि हम लोग कठिनाइयों से घबड़ाते हैं। किन्तु जब तक अन्य लोग कुछ काम करें–हमें उनके पास जाने में कोई उलझन नहीं है। नहीं, एक बार यदि हमने निर्णय कर लिया है तो हमको उस पर स्थिर रहना ही चाहिये।"

"यह ठीक है," सरयोझा ने कहा—"हम उन्हें दिखायेंगे कि हम कितने दृढ़ हैं।"

मैं सारी रात मक्खियों के सम्बन्ध में सोचता रहा कि जो भी हो, मक्खियां इतनी बुरी नहीं हैं। वे सुन्दर, तथा कठोर परिश्रम करने वाले कीड़े हैं और बहुत शान्तिपूर्वक रहती हैं। उदाहरणार्थ तुम दो मक्खियों को कभी लड़ते हुये नहीं देखोगे।"

१६ जून

आज सुबह हमने पावलिक के घर पर फिर शतरंज खेली। किन्तु कुछ देर बाद मैं शतरंज खेलने से ऊब गया और घर लौट आया। मैं मक्खियों के सम्बन्ध में निरन्तर सोचता रहा। वे डंक क्यों मारती हैं? क्या प्राकृतिक रूप से ही वे खराब हैं अथवा कोई दूसरा कारण है? मैं नहीं समझता कि वैसा इस कारण से है कि वे खराब हैं। वे अपने शत्रुओं से अपनी रक्षा करने के लिये डंक मारती हैं। मैंने सुना है कि यदि एक शेर भी उनका शहद चुराने आवे तो वे उसे भी काट खाती हैं। वे ठीक ही करती हैं। कुछ भी हो वे शहद एकत्र करने में कठिन परिश्रम अपने लिये करती हैं न कि शेरों के लिये। मैं सोचता हूँ कि वे आदमियों को गलती से काट लेती हैं। क्योंकि वे यह नहीं जानतीं कि मनुष्य उन्हें दु:ख नहीं देता है। यह सच है कि मनुष्य उनका शहद निकाल लेता है किन्तु सारा नहीं निकालता है। वह उतना ही निकालता है जितनी उसे आवश्यकता होती है और वह मक्खियों को देखभाल भी तो करता है। उनके लिये सन्दूक वाले छत्ते बनाता है और जाड़े के दिनों में उन्हें गरम व आराम से रखता है। यदि आदमी उनकी देखभाल न करे तो उनको बहुत कष्ट हो।

उन्हें या तो पेड़ों के खोखलों में रहना पड़े या किन्हीं दूसरे छेदों में। सुन्दर बने हुये सन्दूकों में जहां शहद न रहने पर उन्हें खाने को शर्बत मिलता है वहाँ वे नहीं रह पातीं।

यदि तुम यह नहीं चाहते कि मक्खियाँ डंक मारें तो सदा सिर पर जाल पहने रहो और मक्खियों को रोकने के लिए धुंये का व्यवहार करो। तब सब ठीक रहेगा।

बिना सिर पर जाल लगाये हमने बक्से में सीधे अपना सिर घुसाने की ग़लती की, तभी तो हमें सज़ा मिली।

१७ जून

आज पावलिक ने कागज की चिड़ियाँ बनायीं और उन्हे कमरे में उड़ाता रहा। एक सरयोझा ने भी बनाई और छज्जे से नीचे सड़क पर गिरा दी। उसने हवा में चक्कर लगाये, कलाबाजी की और सड़क के बीचोंबीच सीधी जा गिरी। उसके बाद हम सबने उन्हें छज्जे से सड़क पर गिराना प्रारम्भ किया। उनमें से मेरी एक चिड़िया उड़कर सड़क को पार कर गई और सामने के मकान में जा गिरी। सरयोझा की एक चिड़िया सड़क पर चलती कार में जा गिरी और उसके साथ ही चली गयी। कुछ देर बाद हम कागज की चिड़ियाँ उड़ाते-उड़ाते थक गये और घर चले गये। हम किसी अज्ञात कारण से उदास हो रहे थे। मैं तो अब भी उदास हो रहा हूँ और नहीं सोच पा रहा कि क्या करूँ।

१८ जून

आज हमने फिर कागज की चिड़ियाँ बनायीं और छज्जे के ऊपर उड़ाईं। हम उससे जल्दी ही थक गये अतः हमने शतरञ्ज

खेलना प्रारम्भ कर दिया किन्तु उससे भी ऊब गये। हमने अनेक प्रकार के अन्य खेल खेले किन्तु उनसे हमारा विशेष मनोरञ्जन नहीं हुआ।

तुरन्त ही सरयोभा ने कहा कि वह ऊब रहा है और वह घर चला गया। मैंने भी खेलना कुछ अधिक पसन्द नहीं किया और मैं भी घर चला गया। कल ही की भाँति मेरा चेहरा आज भी उदास था। मैं नहीं सोच पा रहा कि मैं वैसा अनुभव क्यों कर रहा हूँ। क्या इस कारण कि मैं ऊब रहा हूँ? मैं ऐसा तो नहीं सोचता। जब कभी भी तुम ऊबो तो खेलना अवश्य प्रारम्भ कर सकते हो और वह उदासी भी दूर हो सकती है किन्तु यदि तुम कुछ दुःखी हो तो खेलना भी पसन्द नहीं करोगे।

यदि तुम मुझसे पूछो तो वह उदासी कुछ काम न करने से होती है। यदि तुम कुछ कार्य करने में व्यस्त हो तो तुम वैसे मलिन नहीं रहोगे। किन्तु तुम केवल समय निकालने के लिए सारे दिन अपने शरीर को हिलाओ-डुलाओगे या सब प्रकार की ऊट-पटांग बातें करोगे तो तुम्हें अपना समय नष्ट करने के लिए अपने आप लज्जा का अनुभव होगा और तभी मन में निराशा आवेगी।

१९ जून

पावलिक प्रातःकाल से ही उलझन में था और कुछ भी नहीं खेलना चाहता था। खाना खाने के बाद वह कहीं चला गया। सरयोभा और मैंने उसे सब जगह ढूँढ़ा। हमने सब सायबान व कोने छान डाले किन्तु वह कहीं नहीं दीखा। हमने सोचा कि वह किसी लड़के से मिलने गया होगा—अतः हमने उसे ढूँढ़ना छोड़ दिया। हम भी कुछ विशेष प्रसन्न नहीं थे।

"यदि औरों के साथ हम भी मक्खियों की देखभाल में सम्मिलित होते तो हमें ऐसा न लगता," सरयोझा बोला।

"मैं कहता हूँ कि हम चलें और जब तक पावलिक बाहर है मक्खियों को देख आवें," मैंने सुझाव रक्खा।

सरयोझा खिल गया—"उसके आने के पहले हमको सीधे चलना चाहिये अन्यथा वह कहेगा कि हमारा कोई सिद्धान्त ही नहीं है।"

हमने स्कूल की ओर जाने में शीघ्रता की और जैसे ही बगीचे में पैर रक्खा और दूर से छत्ते को देखा तो कोई उसके पास बैठा मक्खियों को गौर से देख रहा था; वह पावलिक था।

"तो तुम यहाँ हो ?" हम चिल्लाये—"तुम्हारे उस प्रसिद्ध 'सिद्धान्त' का क्या हुआ ? तुमने कहा था कि हम मक्खियों में कोई आकर्षण न प्रकट करेंगे और यहाँ चोरी से चम्पत होकर अपने आप आ बैठे हो। क्या यह एक कामरेड के करने का काम है ?"

पावलिक अपराधी सा दिखाई दे रहा था।

"मैं......मैं अचानक इधर आ गया," उसने कहा—"मैं इधर से जा रहा था, तब मैंने सोचा कि जरा यहां हो लूँ।"

"चूहे !" हमने कहा—"तुम केवल मक्खियों को देखना चाहते थे।"

"सच, मैं ऐसा नहीं चाहता था। मैं उनको क्यों देखना चाहता ?"

"किन्तु अवश्य ही तुम उन्हें देखने आये, क्या नहीं आये ?"

"और तुम लोगों के लिये क्या कारण है ?"

"हम भी अचानक इधर आ गये। हम इधर से जा रहे थे और, तुमको यहाँ बैठा देखकर, तुम्हें देखने आ गये।"

"यह सच नहीं है ! तुममें किंचित भी दृढ़ता नहीं है, बस।"

"व्यर्थ बात मत करो। हमारे ऐसा करने के पहले तो तुम स्वयं आ गये।"

उस सम्बन्ध में हम देर तक बहस करते रहे। हम उसमें इतने लीन थे कि हमने यूरा को वहां आकर खड़े होते हुए नहीं देखा। उसने हमारी बातें सुन लीं और बोला—"तुम में किसी में कोई स्थिरता नहीं है।"

"क्यों ?"

"क्योंकि तुमने कार्य प्रारम्भ किया और छोड़ दिया। यदि तुम्हारा कोई भी सिद्धान्त होता तो तुम उसे कदापि न छोड़ते —बिना इसकी चिन्ता किये कि वह कितना कठिन है।"

"हमने कोई काम छोड़ा नहीं है," पावलिक बोला—"हम केवल थोड़ा विश्राम करना चाहते थे। पुनः कार्य प्रारम्भ करने के लिये हम बिलकुल तैयार हैं।"

"यह सुन्दर है।" यूरा बोला—"तुम घर जाओ और अपने लिए 'सिर के जाल' बनाओ और हममें सम्मिलित होजाओ। अच्छा, तो अब तुम यहाँ से भागो, नहीं तो फिर डंक लगेगा।"

"हम लोग थोड़ी देर यहाँ बैठेंगे तब जायेंगे," पावलिक ने कहा।

हम चुपचाप छत्ते के निकट बैठ गये और एक के बाद एक

करके मक्खियों को रेंगते और पराग लाने के लिये उड़ते देखने लगे। कुछ मक्खियाँ उड़कर लौटीं, अड्डे पर बैठीं और अन्दर रेंग गयीं। हर समय मक्खियाँ उस सन्दूक पर मँडराती रहीं।

मक्खियों से भरे अपने सजीव छत्ते को देखकर हमें बड़ा अच्छा लग रहा था। कुछ देर बाद हम घर गये, वहां हमने तार व झीने कपड़े से जाल बनाये। उसमें हम शाम तक व्यस्त रहे। हमारे जाल सचमुच बड़े अच्छे बन गए थे। और तब हम अपनी सब उदासी भूल गये।

२० जून

आज बड़ा कौतुकपूर्ण दिन था। पहली बात यह हुई कि हमारा पूरा 'ग्रुप' स्कूल के बगीचे में सुबह मिला। हरेक सदस्य जाल लाया था और यूरा धुंआ उत्पन्न करने वाला एक बर्तन। हमने सूखी लकड़ी के टुकड़े बीने और बर्तन में रक्खे। यूरा ने उसे जलाया और फूंका। उसने भली प्रकार कार्य किया।

तब हमने छत्ते का सन्दूक खोला और उसके अन्दर देखा। वह मक्खियों से उफन सा रहा था। उनसे घर काले हो रहे थे। कुछ ने, हमारे ढक्कन के खोलते ही, बाहर आने की चेष्टा की किन्तु यूरा ने कुछ धुँआ फूंक दिया और वे अन्दर रेंग गयीं। तब तोल्या ने एक घर को अलग निकाला और हमने सबसे पहले मधु-कोष को देखा। वह षट्कोण के रूप में पृथक-पृथक टुकड़ों में विभक्त था जो एक दूसरे से चिपके हुए बने थे और घर कहलाते थे। मक्खियाँ उसमें इतनी कार्यरत थीं कि हमने उन्हें तंग करना ठीक नहीं समझा और घेरे को फिर तुरन्त बन्द कर दिया।

मक्खियाँ विचित्र प्रकार के कीड़े हैं। जो मधुकोष वे बनाती

हैं वे इतने सुन्दर और स्वच्छ होते हैं कि सरलता से यह विश्वास नहीं किया जा सकता कि वे उन नन्हे कीड़ों के द्वारा बनाये गये हैं। पशु भी चालाक होते हैं। उदाहरण के लिये कुत्तों को लो, किन्तु चालाक से चालाक कुत्ता भी मधु-कोष नहीं बना सकता।

२१ जून

सन्दूक के छत्ते के पीछे पूरे दल को खड़ा करके गल्या ने, आज अपने लाये हुए कैमरे से, चित्र खींचा। लड़के पंक्ति बनाकर छत्ते के पीछे खड़े हो गये किन्तु सरयोझा, पावलिक और मेरे लिये कोई स्थान न था अतः हम लोग सामने बैठ गये। गल्या ने कहा कि सब लोग स्थिर खड़े हो जावें। तब उसने कैमरे का बटन दबाया और तस्वीर ले ली। फोटोग्राफी भी कितने आश्चर्य की वस्तु है। बटन दबाओ! और तुम फिल्म में उतर आये। मैंने एक फिल्म को धुलते देखा था। वे उसे थोड़े से तरल पदार्थ में रखते हैं और निरन्तर हिलाते जाते हैं। पहले थोड़ी देर तो कुछ नहीं होता परन्तु तब अपने आप अचानक तस्वीर प्रकट हो जाती है। प्रत्येक वस्तु घूम फिर कर वही है क्योंकि उसी प्रकार वह फिल्म में भी आ जाती है किन्तु जब तस्वीर छपती है तो वह फिर सीधे आ जाती है।

मैं विस्मय में था कि कैसे हमारी तस्वीर आ जावेगी। मैं डर रहा था कि मैं, उसमें अपनी बन्द आँखों में आऊँगा, क्योंकि ज्योंही गल्या ने कैमरे का बटन दबाया था तभी मैंने आँख बन्द करली थीं। वैसा मेरे साथ पहले भी हो चुका था। जब हमारे क्लास की तस्वीर ली जा रही थी तब मैंने ऐन अवसर पर आँख

बन्द कर लीं और मेरी तस्वीर बन्द नेत्रों सहित आ गयी थी जैसे मैं अपने पैरों पर खड़ा खड़ा ही सो रहा हूँ। लड़के मुझ पर कम नहीं बिगड़े। उन्होंने कहा कि मैंने पूरी तस्वीर बिगाड़ दी है, जैसे वह मेरा ही दोष था।

२२ जून

फोटो अभी तैयार भी नहीं हुआ है। बड़ी लज्जा की बात है! गल्या कहता है कि अभी फिल्म सूखा नहीं है। जब हमने पूछा कि क्या वह ठीक आयी है तो उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

"मैं उसे कल छापूंगी, तब तुम देखना।"

मैं बड़ा उतावला हो रहा था और शंका कर रहा था कि कहीं पिछली बार की तरह मैं इस बार भी बन्द आँखों सहित न दिखायी दूं। मुझे भी न जाने क्या हो जाता है कि मैं ठीक समय पर अपनी आँखें बन्द कर लेता हूँ।

"ओह! प्रिय! मैं कल तक बड़ी कठिनता से प्रतीक्षा कर सकूंगा।"

२३ जून

गल्या फोटो ले आयी। मुझे छोड़ कर सब बहुत अच्छे आये थे—मेरा मुंह पूरा खुला हुआ था। मैं नहीं सोच पा रहा कि यह कैसे हुआ। क्योंकि मुँह खोलने का तो मुझे किंचित् भी ध्यान नहीं। उसके अतिरिक्त सब कुछ ठीक था। मेरी आंखें जैसी होनी चाहिये, खुली हुई थीं, किन्तु वैसे ही मेरा मुँह भी जबकि उसे बन्द होना चाहिये था। ठीक ही था—मुझे फिर अपने साथियों से हर प्रकार के अंट-संट व्यंग्य सुनने ही चाहिये।

"तुमने किस लिये मँह फाड़ा ?"

"मेरा ऐसा ध्यान नहीं था।"

"जब तुम्हें वैसा करना हो तो अपनी जीभ को रोकना चाहिये।"

"यह तुम्हारा काम नहीं है कि मैं कैसा लगता हूँ। तुम स्वयँ तो ठीक आये हो, क्या नहीं आये हो ?"

"हाँ, हम सब ठीक हैं किन्तु अपने को देखो !"

"मुझे क्या हुआ है ?"

"मछली की तरह मुंह फाड़े बैठे हो।"

मैंने गल्या से पूछा कि क्या वह मेरा मुँह बन्द करने के लिये कुछ नहीं कर सकती।

"किन्तु क्यों ?" उसने कहा—"मैं सोचती हूँ कि तुम बहुत ठीक आये हो। यह तो बड़ी अच्छी दिखाई देती है।"

"तुम्हारा आशय है मैं वैसा ठीक लगता हूँ ? तो मैं सुन्दर दिखलाई पड़ता हूँ।"

"वह तो तुम हो ही।"

"हाँ, किन्तु फोटो ने तो मुझे मूर्खों जैसा बना दिया है।"

"ऐसा तो कुछ नहीं है। तुम्हारा मुंह थोड़ा सा खुला है क्योंकि तुम मुस्करा रहे हो, बस। यह कोई खराब बात नहीं है। तुम इसमें कुछ भी भद्दे नहीं लगते हो। इसके विपरीत, तुम बहुत समझदार लगते हो।"

मुझे निश्चय था कि वह केवल मुझे सन्तोष दे रही है। किन्तु

क्या वास्तव में मैं समझदार लगता हूँ ? मुझे पता नहीं। मैं केवल इतना जानता हूँ कि तस्वीरों में मैं मजाक सा लगता हूँ। मुझे पता नहीं कि यह कैसे होता है, क्योंकि, सचमुच में सुन्दर हूँ, किन्तु यदि तुम मेरी तस्वीर देखोगे तो वैसा नहीं लगेगा। उदाहरण के के लिए, यह फोटो लो। मैं अपने मुंह के सम्बन्ध में बहस नहीं करूँगा क्योंकि जो भी हो वह मेरा दोष था, किन्तु उस नाक को देखो। वह एक छोटी सीधी नाक है, मेरी नाक के समान बिलकुल भी नहीं। और कान ? क्या मेरे कान पानी गरम करने वाले नलीदार बर्तन (समोवार) के हैंडल की तरह लगते हैं। ठीक है, मान लो वह कोई विशेष बात नहीं है। उसमें कुछ वैसी समानता है। तुम कह सकते हो कि वह मैं हूँ किन्तु और कोई नहीं कह सकता, अतः इसमें कोई कारण अवश्य है। मुख्य बात थी वह मक्खियों का छत्ता जो मेरे, सरयोझा व पावलिक के साथ था क्योंकि हम उसके सामने बैठे हुए थे। वह बड़ा प्रभावपूर्ण है।

घर जाते समय सरयोझा ने कहा—

"किस प्रकार हम लोग उसके सामने आ गये ? कोई भी सोचेगा कि हम मक्खियों के पालने वालों में प्रमुख हैं।"

"हाँ," पावलिक बोला—"यह कोई बहुत अच्छा नहीं लग रहा है, विशेषतः जब हमने बीच ही में छोड़ दिया और अन्त में आये। हर कोई सोचेगा कि केवल हम ही सब महत्व लेना चाहते हैं। वे कहेंगे कि हम मिथ्याभिमानी हैं।"

जब मैं घर पहुँचा तो मिथ्याभिमान के सम्बन्ध में ही सोचता रहा। किस प्रकार मनुष्य मिथ्याभिमान करता है ? उदाहरण के लिए, कुछ लोग समझते हैं कि वे बड़े विचित्र है; वे सदैव अपने

सम्बन्ध में गप हांकते हैं। किन्तु, यदि तुम सचमुच अच्छे हो, तो तुमको उसके सम्बन्ध में कहने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि कोई भी देख सकता है कि तुम अच्छे हो; और यदि तुम नहीं हो तो चाहे जितनी शान दिखाओ, वह व्यर्थ होगी क्योंकि तुम पर कोई विश्वास नहीं करेगा। इसी प्रकार कुछ लोग कल्पना करते हैं कि वे बड़े सुन्दर हैं और वे उसका इधर-उधर प्रचार करते हैं। किन्तु प्रत्येक व्यक्ति यह देख सकता है कि कोई सुन्दर है अथवा नहीं, अतः उसके सम्बन्ध में शेखी मारने से क्या लाभ ? कुछ लोग समझते हैं कि वे बड़े चालाक हैं और वे उस सम्बन्ध में शेखी मारते हैं बजाय इसके कि वे यह बात औरों पर छोड़ें कि वे उसका निर्णय दें कि वे चालाक हैं अथवा नहीं। मेरे ध्यान में मिथ्याभिमान करना बड़ी भारी मूर्खता है। वे केवल मूर्ख लोग हैं जो यह समझते हैं कि वे औरों से अच्छे हैं क्योंकि समझदार लोग समझते हैं कि संसार में वे ही केवल समझदार नहीं हैं।

२४ जून

आज नीना सर्जेयेवना ने बताया कि मक्खियों को पानी कैसे देना चाहिए।

तुम एक बड़ा बर्तन लो, उसे पानी से भरो, एक लकड़ी का तख्ता टेढ़ा करके पाइप के नीचे रक्खो और पानी को धीरे-धीरे तख्ते से होकर नीचे बहने दो जिससे मक्खियाँ पानी पी सकें और बह न जावें।

हमें पता नहीं था कि हम बर्तन कहाँ से लायें। किन्तु ग्रीशा ने बताया कि उसके पास एक पानी का पुराना ढोल, एक कोने में

रक्खा है अतः हम उसके यहाँ गये । उसकी मां ने कह दिया कि हम लोग ढोल ले जा सकते हैं । वह बड़ा भारी था इसलिये हमें उसे कोने में से लुढ़का लाने में बहुत समय लगा । जब हम सड़क पर उसे लुढ़का रहे थे तब फेद्या मिला ।

"तुम शैतान लोगो ! इसे लेकर कहाँ जा रहे हो ? क्या शराबखाने ?"

"नहीं, मधु-मक्खियों के छत्ते में । इससे मक्खियों को पानी देना है ।"

"तुम लोग पागल हो गये हो । वे सब इतना पानी क्या करेंगी ?"

"यह ठीक है," यूरा ने कहा—"वे इसे पी लेंगी ।"

हम उस ढोल को स्कूल के बगीचे में लुढ़का लाये और उसे पानी से भरने में व्यस्त हो गये । किन्तु वह इतना पुराना था कि पानी उसमें से चलनी की तरह बाहर निकल गया । हमने सोचा कि उसे वापस लौटा ले जाना होगा किन्तु गल्या ने कहा कि जब उसमें पानी ठीक से भर जायगा तब तख्ते फूल जावेंगे और उसमें से पानी निकलना बन्द हो जावेगा ।

अतः हम पानी ढोने चल दिये । कम से कम हमने सैंकड़ों बाल्टी पानी उस ढोल में भरा होगा तब अन्त में उसका टपकना बन्द हुआ । धीरे-धीरे वह फूल गया और शाम तक हमने उसे आधा भर दिया ।

कल हम उसे पूरा भर देंगे ।

२५ जून

ढोल ने प्रातःकाल तक अपने में पानी सोख लिया था और

उसका टपकना बिलकुल बन्द हो गया था। जब हमने उसे ऊपर किनारे तक भरा तब ध्यान किया कि उसे भूमि से कुछ ऊपर उठा कर रखना चाहिये जिससे पानी तख्ते पर टपक सके। अतः हमने सब पानी खाली करके उसे (ढोल को) एक ऊँचे स्थान पर रक्खा और फिर भरा। उसके खुले हुए स्थान पर हमने कार्क लगा दी और एक छोटा सा छेद रहने दिया जिससे पानी टपकता रहे। अब वह तैयार हो गया था तभी एक मक्खी तख्ते पर आ बैठी और उसने तुरन्त ही उस गीले तख्ते पर

अपने मुंह के आगे बढ़े हुए भाग से पानी चूसना आरम्भ कर दिया। थोड़ी ही देर में और मक्खियाँ भा पानी पीने आयीं और तब हमने सोचा कि हमारा परिश्रम सफल हुआ।

तब हमारी पायनियर मीटिङ्ग हुई और गल्या ने अन्य लोगों से बताया कि हमारा ग्रुप क्या कर रहा है। प्रत्येक और अधिक आकर्षित हो रहा था तथा ग्रुप नं० २ के लड़कों ने चाहा कि वे खेतों में अपना काम बन्द करके हम में सम्मिलित हो जायँ।

"नहीं," गल्या ने कहा—"यह ठीक नहीं होगा। यदि तुम

सब मक्खियाँ पालने का काम प्रारम्भ कर दोगे तो उस शोध करने वाली भूमि पर कौन काम करेगा ?"

"हम अपना काम छोड़ेंगे नहीं। जब हमारे पास समय होगा हम केवल तभी यहाँ आवेंगे और मक्खियों को देखेंगे," उन लोगों ने कहा।

"वह दूसरी बात है," गल्या बोला—"तुम्हारा स्वागत है कि तुम जब चाहो आओ किन्तु तुम अपना स्वयं का काम न भूलो। तुम जानते हो बगीचा भी आवश्यक है।"

२६ जून

आज जब हमने यह देखा कि मक्खियाँ पराग लेने कहाँ जाती हैं तब हमने जाना कि वे कहीं दूर नहीं जाती अपितु हमारे ही निकटवर्ती नये खेत पर जाती हैं। कुकुम्बर्स, मेतो तथा पम्पकिन के फूल फूल रहे थे और सब कतारें छोटे-छोटे पीले फूलों से भरी हुई थीं। हमने मक्खियों को फूलों-फूलों पर जाते देखा तथा फूल के प्यालों में जो भूमि के निकट थे रेंगते देखा।

एक मक्खी पम्पकिन के फूल में रेंग गई और अपने चारों ओर पीली पुष्प-रज लेकर बाहर निकली। हमने ध्यान किया कि कुछ मक्खियाँ सड़क के पार उड़ गयी थीं किन्तु हम उनका पीछा न कर सके क्योंकि वे बहुत ऊँची उड़ गई थीं। सम्भव है वे पार्क की ओर गयी हों।

२७ जून

यूरा एक गिलास में मक्खियों को खाने के लिए थोड़ा शहद ले आया। उसने थोड़ा सा एक काँच के टुकड़े पर फैला दिया और

उसे सन्दूक से अधिक दूर नहीं रक्खा। हमने उनके लिये क्या व्यवस्था की है इसका बिना ध्यान किये, वे उस पर से सीधी उड़ी चली गयीं। जेन्या ने एक मक्खी पर पानी का जग रखते हुए रोका और उसे शहद में गिरा दिया। मक्खी ने तुरन्त शहद खाना प्रारम्भ कर दिया। हम खड़े-खड़े देखते रहे कि वह क्या करेगी। जब थोड़ी देर तक वह शहद खा चुकी उसके बाद उड़ी और सन्दूक में चली गयी। तुरन्त ही एक और मक्खी सन्दूक से बाहर निकली और शहद खाने लगी। तब वह भी चली गयी और उसके बाद एक और मक्खी उड़कर सीधे शहद पर आ बैठी इसी प्रकार जैसे वह जानती हो कि शहद वहाँ रक्खा है। हम बड़े चकित थे कि वे शहद के बारे में कैसे जान गयीं ?

"निश्चित ही जेन्या की मक्खी ने उन्हें बताया होगा," मैंने कहा।

और सब मुझ पर हँसे। "मक्खियाँ एक दूसरे से बात नहीं कर सकतीं," सबने कहा।

"किन्तु और मक्खियों ने कैसे जाना कि यहां शहद रक्खा है ?"

"सम्भव है ऐसा हुआ हो कि ऊपर से उड़कर जाते हुए उन्होंने इसे देखा हो।"

फेद्या बोला—"जब वे उड़ गयी हैं तो चलो हम शहद छिपा दें। तब देखें क्या होता है ?"

शहद लगे हुए काँच के गिलास को हम उठा ले गये। कुछ मिनटों में एक मक्खी सन्दूक से निकली और सीधे उस स्थान पर उड़कर आयी जहाँ शहद रक्खा था। वह क्रोधित होकर भनभनाते हुए वहाँ चक्कर काटती रही। यह भली प्रकार स्पष्ट था कि मक्खी जानती थी कि वहाँ शहद है। तब जरूर किसी ने उसे बताया है। वह

देर तक वहाँ चक्कर काटती रही। अतः हमने पुनः शहद रख दिया और वह सीधे उस पर उड़कर आ गयी। उसने कुछ खाया और उड़ गयी। हमने पहले स्थान से कुछ हटा कर शहद रखने की चेष्टा की। बहुत शीघ्र ही एक मक्खी सन्दूक से बाहर आयी और पूर्व स्थान पर चक्कर काटती रही। ऐसा लगा कि शहद के हट जाने से वह विस्मित थी और तब तक भनभन करती रही जब तक उसने नयी जगह देख ली। किन्तु अगली मक्खी नई जगह पर सीधी गयी।

मैं बहुत प्रसन्न था।

"तुम देखो!" मैंने कहा—"इसका आशय है कि उससे किसी ने कहा है कि शहद हटा दिया गया है।"

हम समस्त दिन मक्खियों पर निगाह करते रहे। प्रत्येक बार जब हमने शहद हटाया तो मक्खी उस स्थान पर गयी जहाँ शहद पहले रक्खा था और तब उसने उसे खोजना प्रारम्भ किया। यह देखना सरल था कि उनमें कोई न कोई वैसा माध्यम अवश्य है जिसके द्वारा वे एक दूसरे से बातचीत करती हैं।

किन्तु वे बात कैसे करती हैं? जब से मैं घर गया तभी से इस सम्बन्ध में सोचता रहा। यदि वे बात कर सकती हैं तो उनके जीभ अवश्य होगी। किन्तु इसका पता हमें कैसे चलेगा कि उनके सचमुच जीभ है? वे बहुत छोटी वस्तु हैं और यदि वे बात कर सकती हैं तो उनके कान भी अवश्य होंगे। कल मैं यह देखूंगा कि उनके कान हैं या नहीं।

२८ जून

मक्खियों के कान नहीं होते। मैंने एक को बहुत निकट से

देखा कि क्या उसके कान हैं किन्तु उनका कोई चिह्न मुझे नहीं दिखायी दिया। यह ठीक है कि मैं यह नहीं सोचता था कि वे सुनती हैं। मैंने उन पर बहुत जोर से चिल्लाना प्रारम्भ किया किन्तु उन्होंने किंचित भी ध्यान नहीं दिया।

आज नीना सर्जेयेवना हमारे छत्ते को देखने आयी और हमने उसको अपनी खोज बतायी। उसने कहा कि उसके लिये हम वैसा ही करके दिखायें। अतः हमने एक मक्खी पकड़ी और शहद पर डाल दी। मक्खी ने शहद खाया और सन्दूक में उड़ गयी। कुछ देर बाद दूसरी मक्खी सन्दूक से निकल कर आयी और सीधे शहद पर उड़ आयी।

"वह देखो!" हम चिल्लाये—"इसका अर्थ है कि पहली मक्खी ने शहद के सम्बन्ध में कुछ बताया होगा।"

"इस मक्खी पर चिह्न लगाकर हम देखें," नीना सर्जेयेवना ने कहा।

उसने बताया था कि थोड़ा सा रंग उसकी पीठ पर डाल कर मक्खी पर चिह्न लगाया जा सकता है। तोल्या घर गया और अपना रंग का डब्बा ले आया। तब ज्योंही मक्खी शहद पर बैठी उसने जल्दी से एक सफेद रंग का चिह्न उसकी पीठ पर लगा दिया। मक्खी शहद पीने में इतनी व्यस्त थी कि उसने कुछ देखा ही नहीं। जब तक उसने अपने को शहद से नहीं भर लिया वह उड़ी ही नहीं। हम कुछ मिनट रुके और हमने क्या देखा कि वही मक्खी सन्दूक से बाहर आ रही है और सीधे शहद पर जा रही है। हमने उसे और शहद खाते देखा और तब सन्दूक की ओर लौटते हुए। थोड़ी देर में वह फिर आयी। हमें आश्चर्य हो रहा था।

"कैसी लालची मक्खी है," मैंने कहा—"यदि वह अपना ध्यान न करेगी तो फूलकर फट जायगी।"

किन्तु नीना सर्जेयेवना ने बताया कि मक्खी तनिक भी नहीं खा रही है। उसने उतना शहद ले लिया है जितना वह मधु-कोष तक ले जा सकती है। सब मक्खियाँ यही करती हैं। जब कभी भी वे पराग पाती हैं तो तुरन्त छत्ते में जाती हैं।

सफेद रंग लगी मक्खी बार-बार आयी और हमने देखा कि जिनको हम बहुत सी मक्खियाँ समझते थे वह केवल एक मक्खी थी।

"तब निश्चय ही वे एक दूसरे से बात नहीं करती हैं?"

"वास्तव में वे मनुष्यों की भाँति बातें नहीं करती हैं," नीना सर्जेयेवना ने कहा—"किन्तु वे अवश्य ही एक दूसरे को संदेश देने की कोई व्यवस्था रखती हैं। उनकी अपनी भाषा है। यदि तुम उन पर गहराई से ध्यान दो तो तुम्हें ज्ञात होगा कि वे कैसे और क्या करती हैं?"

२९ जून

आज हमने दूसरा अनुसन्धान करना चाहा कि यदि मक्खी सन्दूक से दूर करदी जावे तो वह वहाँ तक पहुँच सकती है?

मैंने एक मक्खी पानी के जग की सहायता से पकड़ी और उसे घर ले गया जिससे वह भाग न सके। मैंने लड़कों को बताया कि मैं उस पर निशान लगा दूँगा और अपने छज्जे से उड़ा दूँगा। लड़के पीछे प्रतीक्षा करते रहे कि निशान लगी मक्खी लौटकर आती होगी। घर जाते समय मैंने काँच ऊपर कर दिया जिससे

मक्खी रास्ता देखती जावे कि हम कहाँ होकर जा रहे हैं किन्तु मैंने जग का मुँह बन्द कर दिया था ताकि वह उड़ न जाय।

इसके पूर्व कि मैं उस पर चिह्न लगाऊँ, इस बात का सन्तोष करने के लिये कि मक्खी मुड़ेगी या नहीं, मैंने शहद की एक तश्तरी छज्जे पर रख दी और उस पर मक्खी वाला जग ठीक करके रख दिया। जब मक्खी शहद पर चिपक गयी तब मैंने धीरे से जग हटा लिया और रंग की एक बूँद उसकी पीठ पर टपका दी। थोड़ी देर बाद वह उड़ गयी। तब मैं स्कूल की ओर भागा, जहाँ रास्ते में सरयोझा मिला।

"वह लौट गयी," वह चिल्लाया—"वह पहले से ही वहाँ है।"

हम बीच सड़क पर ही प्रसन्नता से उछल पड़े। कैसी चालाक मक्खी है। उस छोटी सी वस्तु की कल्पना करो कि उतनी दूर तक अपना मार्ग खोज कर पहुँच गयी।

"मुझे पानी का जग दो, हम दूसरी मक्खी को देखेंगे।"

किन्तु मैं बर्तन घर छोड़ आया था। हम घर दौड़े गये। मैं ज्योंही शहद की तश्तरी को छज्जे से उठाने के लिए गया कि एक मक्खी आयी और शहद पर बैठ कर उसे खाने लगी। हमने उसका निरीक्षण किया और देखा कि रंग का निशान उसकी पीठ पर लगा था।

"क्यों, यह वही मक्खी है। शहद के लिए यह लौट आई है।"

"वही मक्खी है।" सरयोझा ने कहा—"वह अपने घर तक पहुँच गयी और अब शहद लेने के लिए पुनः लौट आयी है।"

"हम जरा और प्रतीक्षा करें, सम्भव है वह फिर आवे," मैंने सुझाव दिया।

हम बैठे रहे और लगभग दस मिनट में वही मक्खी फिर लौटी। शाम तक वह बीस बार आयी। विचित्र कीड़ा है! यदि वह साधारण मक्खी होती तो अपने को शहद से भर लेती और उड़ जाती किन्तु मधु-मक्खी केवल अपने लिए ही नहीं सोचती। वह छत्ते में बैठी अन्य मक्खियों के लिए भी अपने घर शहद ले जाती है। कुछ लोगों को मधु-मक्खियों से प्रेरणा लेनी चाहिये।

३० जून

एक बात हमें उलझाये हुए थी। ऐसा क्यों होता है कि जब तुम किसी मक्खी को सन्दूक से अधिक दूर शहद पर रखते हो तब वह उस स्थान को याद रखती है और शहद लेने आती है। किन्तु यदि तुम कुछ शहद सन्दूक के पास ही रख दो तो मक्खियाँ बिना उसे देखे उस पर से उड़ जावेंगी।

नीना सर्जेयेवना ने कहा कि दूसरा अनुसन्धान करो।

"कांच के दो टुकड़े लो और दोनों पर शहद रख दो। एक टुकड़ा भूमि पर रक्खो और एक को एक रंगीन काग़ज के ऊपर रक्खो और देखो कि मक्खियाँ किस पर पहले बैठती हैं।

जैसा उसने कहा, हमने किया। हमने शहद लगा कर कांच का एक टुकड़ा यों ही घास पर रख दिया और दूसरा हलके नीले रंग के कागज के ऊपर रख दिया। पहले तो मक्खियाँ बिना उन दोनों को देखे ही सीधे उड़ी चली गयीं। किन्तु एक मक्खी कुछ देर बाद उस कांच के टुकड़े पर लगे शहद पर जा बैठी जो नीले

कागज पर रक्खा था। हमने उस मक्खी पर निशान लगा दिया और वह थोड़ी देर बाद फिर लौट कर आई। तुरन्त दूसरी बिना निशान लगी मक्खी भी आयी और उसी रंगीन कागज वाले शहद पर जा बैठी। हमने उस पर भी चिह्न लगा दिया। कुछ ही घंटों में पाँच मक्खियाँ उस रंगीन कागज़ पर रक्खे काँच के शहद पर आकर बैठ गईं और उस दूसरे काँच पर एक भी न आई।

"वह रंग है जो उन्हें आकर्षित करता है।" वित्या ने कहा।

"यह ठीक है।" नीना सर्जेयेवना बोली—"अब तुम समझे कि फूलों के ऐसे चमकदार रंग क्यों होते हैं? वे मधु-मक्खियों व अन्य कीड़ों को आकर्षित करने के लिए होते हैं।"

किन्तु फूल, मक्खियों को क्यों आकर्षित करना चाहते हैं?" मैंने प्रश्न किया।

"क्योंकि मधु-मक्खियाँ पराग-रज फैलाने में सहायता करती हैं। जितना ही अधिक मधु-मक्खियाँ या दूसरे कीड़े फूलों पर बैठेंगे उतना ही पराग-रज फैलेगा और उतना ही वे अधिक बीज उत्पन्न करेंगे।"

नीना सर्जेयेवना ने हमें बताया कि सभी पौधे कीड़ों के द्वारा पराग-रज से बीज नहीं उत्पन्न करते। उदाहरण के लिए कुछ पौधे, जैसे राई, बीज उत्पन्न करने के लिए केवल वायु पर निर्भर रहते हैं। राई के फूल इतने छोटे होते हैं कि मधु-मक्खियाँ अथवा दूसरे कीड़े उसे देख ही नहीं पाते।

प्रकृति कितनी आश्चर्यजनक है! मैं चकित हुआ करता था कि फूल इतने सुन्दर क्यों होते हैं और अब पता चल रहा है कि इसमें एक सुन्दर कारण निहित है। जो पौधे कीड़ों से बीज उत्पन्न करने

की क्रिया प्राप्त करते हैं उनके पेड़ और सुन्दर फूल होते हैं जिससे कीड़े उन्हें सरलता से ढूँढ़ लें और पराग-रज फैलाने में सहायता करें। इसका अर्थ है कि सुन्दर पुष्प केवल देखने के लिये ही नहीं होते अपितु उनका विशेष लाभ भी है।

१ जुलाई

हम लोग अभी भी मक्खियों के अनुसन्धान में लगे थे। आज हमने काग़ज के दो टुकड़े लिये—एक लाल और दूसरा नीला। कुछ शहद उस पर डाला और नीले कागज पर एक मधु-मक्खी को भी रक्खा। मक्खी ने नीले कागज से शहद ले जाना प्रारम्भ किया। वह नीले कागज़ पर निरन्तर आती रही किन्तु लाल काग़ज की ओर उसने देखा भी नहीं कि वह बराबर रक्खा है। उस पर शहद भी था। थोड़ी देर बाद हमने कागज हटा लिये। मक्खी उड़ गई और वहां पहुँची जहाँ नीला कागज रक्खा था किन्तु जब उसने लाल रंग का कागज देखा तो वह उस पर नहीं बैठी और जब तक उसे नीला कागज नहीं मिल गया इधर-उधर भनभनाती ही रही। जब हमने नीला कागज कुछ आगे हटा दिया तब वह उसे ढूँढ़ती रही और बाद में पा गई।

हमने अन्य रंगों से भी देखना चाहा और पाया कि मक्खी उस रंग पर जाती है जहाँ उसे शहद मिलता है। इससे ज्ञात होता है कि मक्खियाँ न केवल रंगों को अलग कर सकती हैं वरन् उन्हें याद भी रखती हैं। इसीलिए वे उन्हीं फूलों पर जाती हैं जो अधिक शहद देते हैं।

कल ग्रीसा और फेद्या एक पायनियर कैम्प में जा रहे हैं। उन्होंने हमसे विदा ली और कहा कि अब वे इसके उपरान्त मधु-

मक्खियों के छत्तों पर नहीं आ पावेंगे। "ग्रीष्म-दल के साथ जाने में भी मुझे मक्खियों से विदा लेने में दुःख हो रहा है।" फेद्या बोला। किन्तु हमने कहा कि चिन्ता न करो। हम उनकी भली प्रकार से देख भाल करेंगे।

२ जुलाई

जितनी ही हम मक्खियों की बातचीत करते थे उतनी ही वे अधिक चमत्कारिक लग रही थीं। मधु-मक्खियाँ देखने म साधारण मक्खियों से कुछ अधिक भिन्न नहीं लगती हैं किन्तु वे सचमुच एक-सी नहीं हैं। साधारण मक्खियाँ तो बेकार हैं। वे इधर-उधर केवल भनभनाती और रेंगती हैं; जहाँ उनका कोई भी नहीं चाहता है वहाँ जाती हैं; लोगों को नाराज करती हैं और साथ ही बहुत प्रकार की बीमारियां फैलाती हैं। किन्तु मधु-मक्खियाँ सदैव ही लाभ के कार्य करती हैं। वे अन्य मधु-मक्खियों से मिल-जुल कर कार्य करती हैं; प्रत्येक अपने लिये नहीं अपितु पूरे समाज के लिये परिश्रम करती है। और कैसी-कैसी विचित्र बातें वे करती हैं। आज हम छत्ते पर आये और तुम क्या सोचते हो! हमने क्या देखा? कुछ मधु-मक्खियाँ प्रवेश-द्वार पर बैठी हुई थीं और अपने पंख घड़घड़ा रही थीं जैसे इंजिन। पहले हमने सोचा वे तख्ते में चिपक गई हैं और उड़ नहीं पा रही हैं। हमने उन्हें उड़ाना चाहा किन्तु वे पीछे को उड़ीं और फिर अपने परों से घड़घड़ करती रहीं। हम नीना सर्जेयेवना के पास गये और उससे पूछा कि इसका क्या अभिप्राय है?

"वे छत्ते वाले सन्दूक में हवा पहुँचा रही हैं।" उसने कहा—"आज बहुत गरमी है और गर्मी के दिनों में सन्दूक गरम हो जाता है,

अतः वे उसे ठंडा कर रही हैं। क्या मैंने नहीं कहा था कि वे बड़ी विलक्षण है। हवा के रोशन दानों का उनका अपना अलग-अलग ढँग है।"

आज एक और कौतुकपूर्ण बात हुयी। मेरे माँ और पिता आये और उन्होंने हमारे मधु-मक्खियों के छत्ते वाले सन्दूक को देखा।

३ जुलाई

दूसरा गरम दिन। मक्खियों ने अधिक समय छत्ते को हवा देने तथा पानी के ढोल और छत्ते वाले सन्दूक के बीच दौड़ लगाने में व्यतीत किया। दो लम्बी पंक्तियां हवा में दिखायी दीं—एक सन्दूक से ढोल की ओर जाती हुई और दूसरी ढोल से सन्दूक तक आती हुई।

हम नहीं समझ पाये कि पानी पीने के पश्चात् वे सन्दूक की ओर क्यों गईं। नीना सर्जेयेवना ने कहा कि उन मक्खियों पर निशान डालो जो पानी पीने आती हैं। तोल्या ने उन पर निशान लगा दिये और हमने देखा कि हर बार वे ही पानी लेने आती थीं।

"वह एक प्रकार का पानी लाने वाला दल है," फेद्या चिल्लाया "वे निश्चित ही सन्दूक में पानो ले जा रही हैं।"

"नहीं," नीना सर्जेयेवना ने कहा—"गर्मी के दिनों में उन मक्खियों के लिये जो अन्दर कार्य कर रही हैं कुछ मधु-मक्खियाँ सदैव सन्दूक में पानी ले जाती हैं।"

"किन्तु क्या वे अपने आप पानी लेने नहीं आ सकतीं ?" मैंने प्रश्न किया।

नीना सर्जेयेवना ने समझाया कि मधु-मक्खियों के छत्ते में श्रम का

पूरी तरह विभाजन है। वे नयी छोटी मधु-मक्खियां जिन्होंने अभी पराग की खोज में बाहर उड़ कर जाना नहीं सीखा है—अन्दर ही कार्य करती हैं; मधु-कोष बनाना और छत्ते को स्वच्छ रखना, उसमें हवा भरना और नन्हे बच्चों को भोजन देना। वे बड़ी व अधिक अवस्था की मक्खियाँ होती हैं जो बाहर जाकर मधु एकत्र करती हैं और गर्मियों में छत्तों में पानी लाती हैं।

"कैसा दुःख है कि हम लोग उन्हें अन्दर काम करते नहीं देख सकते," जेन्या बोला।

नीना सर्जेयेवना ने कहा, "कुछ छत्ते शीशे के बने होते हैं जिनके द्वारा हम मधु-मक्खियों की अन्दर की व्यस्तता देख सकते हैं।"

किसी दिन हम वैसा छत्ता भी रक्खेंगे।

४ जुलाई

आज नीना सर्जेयेवना ने कहा कि नीबू के पेड़ में शीघ्र ही फूल फूलने वाले हैं और हमें मुख्य-कार्य के लिये तत्पर रहना चाहिये।

"वह क्या है?" हमने प्रश्न किया।

"वही समय है जबकि बहुत से फूल एक साथ फूलते हैं—क्लोवर, बकव्हीट, एकेसिया, मेपल अथवा विलोज—और तभी मधु-मक्खियाँ शहद एकत्र करने का मुख्य कार्य करती हैं।"

"किन्तु हमारे पास तो क्लोवर या बकव्हीट नहीं हैं।"

"किन्तु हमारे यहाँ नीबू के पेड़ तो हैं। हमारी मक्खियाँ मुख्य संचय उनसे ही करेंगी।"

नीना सर्जेयेवना ने हमें दिखाया कि छत्ते को हम कैसे बड़ा कर सकते हैं जो एक प्रकार का लकड़ी के अधिक घेरों सहित, शहद के वितरण के लिए भारी गोदाम होगा। तब उसने हमें बताया कि नीबू के पेड़ के फूलने पर हमें उसका निरीक्षण करना चाहिये और जैसे ही पहले फूल फूलें हम अधिक सन्दूक तैयार करलें।

५ जुलाई

नीबू का पेड़ अभी नहीं फूला है। इसका निश्चय करने के लिए मैं स्वयं पेड़ पर चढ़ा किन्तु कलियाँ अभी तक नहीं फूटी थीं।

गल्या ने मुझे पेड़ पर देख लिया।

"तुम वहाँ क्या कर रहे हो ? तुरन्त नीचे उतरो।"

"मैं फूलों को देखना चाहता था।"

"उसके लिये तुम्हें पेड़ पर चढ़ने की आवश्यकता नहीं है। जब वे खिलेंगे, तो फूल तुम्हें अपने आप दीख जावेंगे।"

किन्तु मैं प्रसन्न था कि मुझे निश्चय हो गया। यह अच्छा न होता यदि हम अवसर खो देते।

६ जुलाई

मैंने देखा है कि छत्ते वाले सन्दूक के प्रवेश-द्वार पर दो या तीन मधु-मक्खियाँ सदैव रहती हैं। दूसरी बाहर या अन्दर उड़कर आती जाती हैं। किन्तु वे मक्खियाँ अपने स्थान पर ही रहती हैं और इधर-उधर नहीं उड़तीं। मैं आश्चर्य कर रहा था कि वे वहाँ क्या करती होंगी ? आज मैंने समझा।

एक अवांछनीय मधु-मक्खी ने संदूक के अन्दर जाने की चेष्टा की। वह छत्ते के चारों ओर बराबर भन-भन करती रही और

अन्दर जाने का कोई मार्ग ढूंढ़ती रही जिससे शहद तक पहुँच जावे। जब उसे कोई छेद नहीं मिला तो वह प्रवेश-द्वार पर गयी कि घुस सके किन्तु जो मक्खियाँ वहाँ थीं उन्होंने उस पर आक्रमण किया और भगा दिया।

उसने अति शीघ्र भागने की चेष्टा की किन्तु उन मक्खियों ने उसे पकड़ लिया और काटा। शहद चुराने का उसे सुन्दर फल मिल गया। जैसे बेचारी मक्खियाँ शहद संचय करने में परि-श्रम ही नहीं करतीं कि कोई कातिल, पुरानी, ऊट-पटांग मक्खी आवे और उसे खा जाय। जो शहद नहीं इकट्ठा करती उसको कोई अधिकार नहीं कि वह उसे खाय।

मैंने अनुमान लगाया कि प्रवेश-द्वार वाली वे मक्खियाँ छत्ते वाले सन्दूक की पहरेदार हैं जो उस अवांछनीय मक्खी के प्रकार के चोरों की निगरानी करती हैं। मैंने नीना सर्जेयेवना से पूछा तो उसने उत्तर दिया कि मैंने ठीक सोचा है।

कुछ भी हो मैं कुन्द बुद्धि का नहीं हूँ।

नीना सर्जेयेवना ने बताया कि मधु-मक्खियाँ अपने छत्ते की प्रतिरक्षा में बहुत बार मर जाती हैं, यदि कोई बड़ा खूंख्वार जान-वर, उदाहरणार्थ जैसे शेर, छत्ते पर हमला करता है तो मधु-मक्खियों का पूरा समूह उस पर हमला करता है और डंक मारता है। किन्तु वे सब मर जाती हैं क्योंकि मक्खियाँ बिना डंक के जीवित नहीं रह सकतीं। अतः तुम देखते हो कि वे कितनी बहादुर होती हैं।

७ जुलाई

हमने विज्ञान को एक बड़ी देन दी है; आज जेन्या शेम्याकिन

ने सन्दूक के छत्ते के अन्दर देखने के एक मार्ग की ईजाद की है। उसने सूर्य की एक किरण को दर्पण के द्वारा छत्ते के अन्दर प्रविष्ट किया जिससे अन्दर का भाग चमक उठा। यह ठीक है, हममें से केवल एक ही एक बार में अन्दर देख सकता है, अतः हमने अपने टर्न बना लिये। मैंने सोचा कि मेरा टर्न कभी नहीं आवेगा। वित्या आलमज़ोव जो मेरे आगे था उसने इतना समय लिया कि मैं धैर्य खो बैठा। प्रत्येक बार जब मैंने उससे शीघ्रता करने के लिये कहा तभी उसने उत्तर दिया "एक मिनट रुको।" वह मुझे शीशा अन्तिम रूप से देता उसके पूर्व मैंने पूरे एक घंटे तक प्रतीक्षा की किन्तु तब तक सूर्य आगे बढ़ चुका था और मैं कुछ भी नहीं देख सका। मैं बहुत क्रोधित हुआ।

"जब धूप ही चली गयी तब तुमने मुझे दर्पण क्यों दिया ?"

"धूप चली गयी तो इसमें मेरा क्या दोष है ?"

"एक क्षुद्र स्वार्थी जानवर! कल मैं एक शीशा लूँगा और छत्ते पर जाकर औरों के आने से पहले ही जितना चाहूँगा देखूँगा।"

घर पर मैंने समाचार-पत्र में शहद के सम्बन्ध में एक लेख पढ़ा। उसमें लिखा था कि शहद औषधि के रूप में व्यवहार में आता है। पेट के कष्ट वाले लोग, निर्बल हृदय वाले, फेफड़े या ज्ञान-तंतुओं वाले रोगी या कुछ अन्य तकलीफ वालों को शहद लेना चाहिए। वे रोग से अति शीघ्र ठीक हो जावेंगे। यदि तुम्हारे कोई फोड़ा है या सूजन तो तुमको थोड़ा सा शहद उस पर मल कर एक कपड़े से उस स्थान को बांधना चाहिये और वह शीघ्र ही ठीक हो जावेगा।

८ जुलाई

मैं प्रातः जल्दी उठा और दर्पण लेकर छत्ते पर गया किन्तु तब वहाँ धूप नहीं थी। उस दिन, दिन भर बादल रहे। मेरा भाग्य !

हमारी पायनियर-मीटिंग फिर हुई और प्रत्येक सदस्य ने अपना-अपना कार्य बताया। हमने अपनी खोज की बातें बतायीं, और शूरा ने—जो उस ग्रुप नम्बर दो का नेतृत्व करता था, खोज वाले खेत में अपने कार्य के सम्बन्ध में बताया। उसने कहा कि वे भारी लौकी की उपज की आशा कर रहे हैं, जो पिछले वर्ष से बहुत बड़ी होगी। उसके लिये एक साधारण सा प्रत्युत्तर था; गत वर्ष हमने मक्खियाँ नहीं पाली थीं; इस वर्ष हमारी मक्खियों ने लौकी की खेती में बीज पड़ने में सहायता दी थी।

९ जुलाई

अन्त में सूर्य बाहर आया। मैंने अपना जाल पहना, एक जोड़ा दस्ताने पहने जिससे मक्खियाँ डंक न मार सकें और सन्दूक के बाहर अपना दर्पण लेकर बैठ गया। वह कैसा सनसनीखेज दृश्य था। मधु-कोष मक्खियों से भरे हुए थे। वे एक काले घेरे की भाँति कोष में आ जा रही थीं, घरों में जा रही थीं और बाहर निकल रही थीं। छत्ते के अन्दर अवश्य गरमी होगी क्योंकि मक्खियाँ अपने पर फैला रही थीं वैसे ही जैसे प्रवेश-द्वार वाली फैलाती थीं। प्रत्येक छोटी मक्खी एक नन्हा रोशनदान का पंखा सदृश दिखती थी। मैं बच्चा-मक्खी देखने के लिये मरा जा रहा था किन्तु मैंने उनका कोई चिह्न वहाँ नहीं देखा। बाद में मैंने नीना सर्जेयेवना से पूछा कि छत्ते के अन्दर कोई बच्चा-मक्खी क्यों नहीं है।

"तुम क्या सोचते हो ! बच्चा-मक्खी कैसी लगती होगी ?" उसने प्रश्न किया।

"मैं साचता हूँ जैसे छोटी मक्खी," मैंने कहा।

नीना सर्जेयेवना हँसी। "नहीं," उसने कहा—"वे उस तरह की नहीं होतीं। कल हम छत्ता खोलेंगे, तब मैं तुम्हें दिखाऊँगी कि वे कैसी लगती हैं।"

मैंने औरों से भी कह दिया कि वे निश्चय कर लें कि कल वे बच्चा-मक्खियाँ देखेंगे।

१० जुलाई

आज सुबह हमारा समस्त समूह छत्ते के पास एकत्र हुआ। शीघ्र ही नीना सर्जेयेवना आई। उसने बताया कि कैसे मधु-मक्खियाँ अपने नन्हे बच्चों को भोजन कराती हैं। यह ज्ञात हुआ कि मोम के बने सब घरों में शहद संचित नहीं किया जाता। उनमें से कुछ छोटे बच्चों को पालने के प्रयोग में आते हैं। प्रत्येक मक्खी-परिवार में एक रानी-मक्खी होती है जो और कुछ न करके केवल अंडे देती है। और मक्खियाँ अंडे नहीं दे सकतीं, वे केवल श्रम कर सकती हैं और इसी कारण वे श्रमिक कहलाती हैं। रानी मक्खी एक दिन में लगभग दो सौ अंडे देती है। वह उन्हें खाली मोम के घर में देती है जो छोटे जाल की तरह के होते हैं और खाने को एक अंडा देती है।

नीना सर्जेयेवना ने एक छत्ते को खोलकर एक चौखटे को निकालने के लिये कहा। पहले हमने सोचा कि मधु-कोष रिक्त होंगे किन्तु नीना सर्जेयेवना ने कहा कि यदि हम बहुत ध्यानपूर्वक

देखें तो हमें अंडे दिखायी देंगे। और निश्चय ही हमने वैसे ही एक नन्हे अंडे को देखा। वह एक पोस्त के दाने से बड़ा नहीं था और प्रत्येक खाने के बीच में रक्खा था। फर्क केवल इतना है कि पोस्त का दाना काला व अंडे सफेद होते है।

हम कल्पना नहीं कर सकते थे कि उन छोटे अंडों से मक्खियाँ कैसे पैदा हो सकती होंगी किन्तु नीना सर्जेयेवना ने कहा कि अंडों से मक्खियाँ नहीं उत्पन्न होती हैं अपितु लार्वा उत्पन्न होते हैं जो छोटे कीड़ों या नन्हीं तितलियों की भाँति होते हैं। नीना सर्जेयेवना ने मधु-कोष का निरीक्षण किया और कुछ अंडों को लार्वा सहित पाया। उनमें कुछ बहुत छोटे थे, कुछ उनसे बड़े। वे खानों की तह में चिपके पड़े थे।

"ये लार्वा ही मधु-मक्खियों के बच्चे हैं," नीना सर्जेयेवना ने कहा। यह सुनकर हम बड़े चकित हुए।

"किन्तु ये छोटे कीड़े कैसे मक्खियों में परिवर्तित हो जाते हैं? वे सब कीड़े होंगे या छोटी तितलियाँ, क्या नहीं?"

"नहीं, लार्वा पूपा बन जाते हैं और थोड़े दिनों में पूपा से पूरी मक्खी प्रकट हो जाती है।"

नीना सर्जेयेवना ने हमें यह भी बताया कि श्रमिकों के अतिरिक्त मक्खियाँ नयी-रानी-मक्खी व पुरुष-मक्खी को ऊँचा उठाते हैं। वे उनके लिए विशेष रूप से नई रानी-मक्खी के लिए बड़े घर बनाते हैं और पूपा से नयी-रानी-मक्खी प्रकट होने के तुरन्त पहले मक्खियों का एक समूह पुरानी-रानी-मक्खी को साथ लेकर उड़ जाता है और अपना पृथक समाज बना लेता है। यदि वह समूह किसी दूसरे छत्ते के सन्दूक में रक्खा जावे तो तुम देखोगे कि वह

एक नया-मधु-मक्खी-परिवार होगा। पुरुष-मधु-मक्खी श्रमिकों से थोड़ी बड़ी होती हैं। श्रमिक स्त्री-मक्खियाँ होती हैं और दूसरे पुरुष-वर्ग के होते हैं। ये पुरुष-वर्ग वाले शहद के संचय का कार्य नहीं करते। उनके बड़ा भारी पेट होता है। जब शीत ऋतु आ जाती है तो मक्खियाँ अपने पुरुष-वर्ग की मक्खियों को छत्ते से बाहर खदेड़ देती हैं ताकि वे उनका एकत्र किया हुआ समस्त शहद न खा जांय।

नीना सर्जेयेवना ने जो कुछ कहा था उस पर मैं बहुत कुछ सोचता रहा। पहले मैं सोचता था कि मधु-मक्खियाँ चिड़ियों की भाँति होती होंगी क्योंकि चिड़ियों के भी पर होते हैं और वे अंडे देती हैं। किन्तु तब मुझे याद आया कि जब कोई चिड़िया अपने अंडे पर बैठती है तो वह उड़ने वाला बच्चा उत्पन्न करती है। किन्तु मक्खियाँ अपने अंडों पर नहीं बैठतीं अपितु अंडे लार्वा में परिवर्तित हो जाते हैं। अतः मधु-मक्खियाँ चिड़ियों की भाँति नहीं होतीं। ये मक्खियाँ प्रायः तितलियों की भाँति होती हैं। तितलियों के भी पर होते हैं और वे अंडे देती हैं जो कीड़ों के रूप में परिवर्तित होते हैं और तब ये कीड़े क्रिसलीज़ (पंख लगने वाले) बनते हैं और तब उनसे तितलियाँ उत्पन्न होती हैं। मैं इसलिये जानता हूँ कि पिछली गर्मियों में एक परदार कीड़ा हमारे बक्स में था जो क्रिसलीज में परिवर्तित हो गया था। वह देर तक बक्स में पड़ा रहा और एक अच्छे दिन एक सुन्दर तितली बन गया। अतः मधु-मक्खियाँ सचमुच छोटी तितलियाँ ही हैं।

११ जुलाई

आज बड़ा सुहावना व प्रकाशवान दिन था। मैं प्रातःकाल छत्ते

के निकट आया और देखा कि तोल्या अपने दर्पण के सहित ऊपर के ढक्कन से सन्दूक के अन्दर झाँक रहा है और स्वयं जुगाली करता जाता है।

"क्या मजाक है ?" मैंने पूछा।

"वे नाच रही हैं।"

"कौन नाच रहा है !"

"मधु-मक्खियाँ"

"तुम पागल हो।"

"ठीक है, तुम स्वयं देखो।"

मैंने उसके हाथ से दर्पण ले लिया और अन्दर झांका।

मैंने एक मक्खी को मधु-कोष में नाचते देखा। मैंने उसे इधर से उधर फुदकते हुए देखा और जल्दी-जल्दी चक्कर काटते हुए पाया। अचानक दूसरी मक्खी उसके पास दौड़कर आई, अब वे दोनों जल्दी-जल्दी चक्कर काटने लगीं। तब तीसरी सम्मिलित हो गई। वे इतनी अच्छी लग रही थीं कि मैं बिना हँसे न रह सका।

"वे ऐसा बहुत देर से कर रही हैं।" तोल्या ने कहा—"मैं उन्हें देख रहा हूँ।"

मैंने नीचे के प्रवेश-द्वार में देखा और सन्दूक की तह में भी; मैंने मधु-मक्खियों की समस्त भीड़ को एक गोल घेरे में नृत्य करते हुए देखा। एक उस नृत्य का संचालन कर रही थी और उसकी प्रत्येक गति-विधि की ही भाँति शेष सब उसका अनुकरण। उस दल की लीडर निरन्तर घूमती जाती थी और अन्य सब भी वैसा ही कर रही थीं। तब लीडर दूसरी जगह उड़कर जा बैठी और वहाँ नृत्य प्रारंभ कर दिया

श्रौर तब धीरे-धीरे दूसरों ने भी वहाँ आकर साथ साथ नाचना प्रारम्भ कर दिया।

जब अन्य लड़के आये तो हमने दिखाया कि मधु-मक्खियाँ नृत्य कर रही हैं।

"इन शैतानों को इससे क्या प्रयोजन है ?" वित्या ने कहा—"ऐसा लगता है यह मक्खियों का किसी प्रकार का छुट्टियों का दिन है ?"

मधु-मक्खियाँ छुट्टियाँ मनाती हैं—इस विचार से हम हँसने लगे।

हम नीना सर्जेयेवना के पास भागे हुए गये और उससे पूछा कि मक्खियाँ क्यों नाच रही हैं ? उसने बताया कि जब मक्खियाँ कहीं एक स्थान पर बहुत से फूल देख लेती हैं तो वे अपने घर लौट आती हैं और नृत्य करने लगती हैं। यह उनका एक ढँग है जिसके द्वारा अन्य मक्खियाँ जान जाती हैं कि पराग लेने वहाँ जाया जावे। तब मधु-मक्खी-समुदाय की अन्य मक्खियाँ एकत्र हो जाती हैं और उसी सुगन्धि से यह ज्ञात कर लेती हैं कि कौन से और किस प्रकार के फूलों से पराग एकत्र किया गया है। उसके पश्चात् मक्खियाँ बाहर निकलती हैं और उसी ओर उड़ती हैं जहाँ उस प्रकार के फूल हों।

"तुम देखोगे कि मक्खियाँ उसी समय नृत्य करती हैं जब मुख्य संचय होता है।" नीना सर्जेयेवना ने कहा—"मेरा ध्यान है कि तुमको देखना चाहिए कि क्या नीबू के पेड़ पर बौर आ गये ?"

हम स्कूल की ओर लपके। वहाँ बगीचे में बहुत पुराने और

बड़े कुछ नीबू के पेड़ थे। हमने उन्हें देखा और पाया कि नन्हें-नन्हें पीले फूल उनमें विकसित हो गये हैं और मक्खियों के झुण्ड के झुण्ड उनमें पहले से ही भनाभना रहे हैं। हम अपने सन्दूक वाले छत्ते के निकट गये और उसमें कुछ और सन्दूक बढ़ा आये। हमारी मक्खियाँ सन्दूक में शाम तक नृत्य करती रहीं। एक मक्खी तो उतरने वाले अड्डे पर भी नाची और उड़ गयी।

जब मैं घर गया तो मक्खियों के सम्बन्ध में बहुत कुछ सोचता रहा। इस प्रकार मक्खियाँ एक दूसरे से बातचीत करती हैं। जब उन्हें यह बताना होता है कि पराग एकत्र करने के लिए कहाँ जाना चाहिए तब वे नृत्य करती हैं। वास्तव में वे एक दूसरे से वार्तालाप तो कर नहीं सकतीं किन्तु सुगन्धि से उन्होंने एक उपाय निकाल लिया है। इसके अर्थ हैं कि सुगन्धि प्राप्त करने की उनकी क्रिया बहुत अधिक, हमसे कहीं अधिक, विकसित है। इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है क्योंकि कुत्तों में भी मनुष्यों से अधिक सूंघने की ताक़त होती है। किन्तु कुत्ते तो मक्खियों से बहुत बड़े होते हैं!

तब मैं फूलों के सम्बन्ध में सोचता रहा। उनमें इतनी मधुर सुगन्धि कैसे होती है। केवल मनुष्यों को आनन्द प्रदान करने के लिये। नहीं, फूलों की सुगन्धि, उनके रंग की ही भांति, इसी अभिप्राय से रहती है कि वे मधु-मक्खियों को आकर्षित करें और उपज में सहायक हों। जितने अधिक कीड़े व मक्खियाँ पेड़ों पर बैठेंगे उतना ही पेड़ों को अच्छा होगा। किन्तु यहाँ दूसरी बात भी है; इन फूलों में पराग क्यों होता है? क्या वह भी कीड़ों को आकर्षित करने के लिये नहीं होता? मैं इसके लिये कल नीना सर्जेयेवना से पूछूँगा।

१२ जुलाई

मैंने नीना सर्जेयेवना से पूछा और उसने बताया कि मेरी बात ठीक है।

अब मैं समझदार होता जा रहा हूँ। यह विचार करते रहने से होता है। अबसे, मैं हर प्रकार की बातों पर विचार किया करूँगा। यह मस्तिष्क का विकास करता है।

हमारी मक्खियाँ आज दिन भर भयंकर रूप से व्यस्त रहीं। वे हवा को निरन्तर एक भन-भन के साथ भरती रहीं—वैसे ही जैसे एक कपड़े के मिल में फैली हुयी व्यस्तता की भनभनाहट जिसे गल्या हमें गत मास दिखाने ले गयी थी। मक्खियाँ सन्दूक के बाहर जाते और आते हुये भरी पड़ रही थीं। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि जब तक कि नीबू के पेड़ पुष्पित हैं, जितना अधिक से अधिक पराग एकत्र हो सके उसके लिये वे बड़ी शीघ्रता कर रही हैं। उतरने का अड्डा दिन भर भरा रहा जिससे मक्खियाँ वहाँ से पराग लाने शीघ्रता में उड़ती थीं और अपने बोझ के साथ जल्दी-जल्दी लौटती थीं। वृक्ष उनसे भरे पड़े थे। तुम मक्खियों के अतिरिक्त फूल देख ही नहीं सकते थे। वहाँ हजारों मक्खियाँ थीं। हमने कभी सोचा भी न था कि हमारे पास इतनी मक्खियाँ होंगीं।

नीना सर्जेयेवना ने बताया कि मुख्य-संचय के अवसर पर छत्ते में अस्सी हजार तक श्रमिक हो जाते हैं और कुछ बहुत बड़े परिवारों में एक लाख तक।

एक लाख ! कल्पना तो करो। एक नगर की आबादी। लेकिन यह भी तो सोचो मधु-मक्खियों का छत्ता भी तो उनका नगर है।

१३ जुलाई

कार्य ही व्यस्तता है। मक्खियाँ हवाई जहाज़ की गड़गड़ाहट की भाँति इधर-उधर जाकर भन-भन कर रही थीं। उतरने का अड्डा मक्खियों की भीड़ से भरा हुआ था। साथ ही सन्दूक के अन्दर आज भी नृत्य हो रहा था। वह सचमुच छुट्टी का सा दिन प्रतीत होता था। लगता था जैसे मधु-संचय का अवसर क्या है—मक्खियों के लिये छुट्टियाँ हैं ? जैसे भी हो, इतना अधिक पराग एकत्र करने के कारण वे बहुत प्रसन्न प्रतीत होती थीं। जाड़ों के लिये वे अधिक मधु अलग बचाकर रख देंगी।

१४ जुलाई

कितना उत्तेजक। हमने उसे समाचार-पत्र में देखा। जब हम अपने स्कूल के बगीचे में आये तब वित्या हाथ में एक समाचार-पत्र लिये, भागता हुआ आया।

"लड़को, यह देखो," वह चिल्लाया—"हम लोगों का नाम समाचार-पत्र में छपा है।"

हमने पत्र देखा। उसमें वह फोटो था जिसे गल्या ने खींचा था, जिसमें सन्दूक के पास हम सब थे; और उस सम्बन्ध में हमारे लिये एक लेख था जिसमें यह लिखा हुआ था कि हमने किस प्रकार अपना एक छत्ते का सन्दूक बनाया है और कैसे हमने मधु-मक्खी-पालन का कार्य प्रारम्भ किया है। उसमें हम सबके नाम थे और स्कूल का पता था।

हम निकटवर्ती समाचार-पत्र-विक्रेता के यहाँ लपके और पत्र खरीद लाये। पावलिक व मैंने दो-दो लिये। हम सोचते रहे कि कौन हो सकता है जिसने हमारे सम्बन्ध में यह लेख लिखा है।

"वह गल्या होगी" यूरा ने कहा—"उसी ने वह फोटो लिया था और उसी ने वह फोटो व लेख समाचार-पत्र में भेजा होगा।"

हम गल्या के पास दौड़े दौड़े गये और उससे पूछा कि क्या उसी ने वह लेख लिखा है और समाचार-पत्र में हमारा फोटो भेजा है ? उसने कहा "हाँ।" तब हमने उसे धन्यवाद दिया।

"तुमको मुझे धन्यवाद देने की आवश्यकता नहीं है," उसने कहा—"तुमने सन्दूक बनाया और अपने आप सब कार्य सम्पन्न किया। अतः तुमको अपने आपको ही धन्यवाद देना चाहिये।"

हम घर गये ताकि वह समाचार हम घर वालों को दिखावें। सरयोझा, पावलिक व मैं घर जा ही रहे थे कि मार्ग में पावलिक बोला—

"हमको अपने लिए धन्यवाद नहीं देना है।"

"हाँ, यदि यह कार्य हमारे लिये छोड़ दिया जाता तो आज कोई छत्ता न होता," सरयोझा ने माना—"हमको औरों को धन्यवाद देना चाहिये कि जब हमने काम छोड़ दिया तो उन्होंने उसे पूरा किया।"

"हम समाचार-पत्र में झूठ-मूठ आये हैं अतः हमें उसमें शान दिखाने की कोई आवश्यकता नहीं है।"

"हाँ," पावलिक बोला—"लोग हमारा नाम अखबार में पढ़ेंगे और कहेंगे 'कैसे अच्छे लड़के हैं!' काश वे वास्तविकता को जान पाते।"

"मैं समाचार-पत्र किसी को नहीं दिखाऊँगा," सरयोझा ने कहा।

"न मैं," पावलिक बोला।

मैं उनके सम्बन्ध में कुछ नहीं कह सकता किन्तु मैंने वह समाचार-पत्र सबको दिखाया। मैंने उसे अपने माता पिता को दिखाया। और दिखाया चाचा वस्या को, चाची नद्या को और सभी पड़ोसियों को। प्रत्येक ने मेरी प्रशंसा की और मेरी इतनी चर्चा हुई कि मैं तंग होगया। मेरी अन्तरात्मा ने मुझे सताना प्रारम्भ कर दिया और उससे मैंने अपनी अन्तरात्मा के सम्बन्ध में विचार करना प्रारम्भ कर दिया कि वह क्या है और क्यों तुम्हें कचोटती है। ऐसा क्यों है कि जब तुम ठीक हो तो वह अन्तरात्मा तुम्हें किंचित भी नहीं उलझाती है किन्तु यदि तुम कोई क्षुद्र या बुरा काम करो तो न जाने वह कितना कोंचती है।

मैं सोचता हूँ कि यह अन्तरात्मा एक नन्हा-आदमी है जो हमारे अन्दर रहता है, एक बहुत अच्छा नन्हा-आदमी जो चाहता है कि हम अच्छे रहें। वही हमें तब व्यथित करता है जब हम कोई गन्दा काम करते हैं। किन्तु मैं जानता हूँ कि वह केवल मेरा विश्वास है; और मेरे अतिरिक्त मेरे अन्दर अन्य कोई नहीं है। अतः वह, मैं ही हूँ जो मुझे नाराज करता है। मेरी अन्तरात्मा भी मेरी ही है। और अब मैं अपने आप पर क्यों दुःख कर रहा हूँ? इस कारण कि मैंने पड़ोसियों से गप्प हाँकी—उनसे यह

विचार कराने के लिए कि मैं कोई प्रशंसनीय व्यक्ति हूँ जबकि मैंने ऐसी कोई बात नहीं की जिसकी चर्चा की जावे। आगे यदि कुछ भी शान जताने को नहीं है तो मैं शान नहीं दिखाऊँगा।

१५ जुलाई

हमारे छत्ते का समाचार सारे स्कूल में फैल गया। आज छोटे क्लास के विद्यार्थी हमारे पास आये और कुछ हमसे आगे की कक्षाओं के भी आये। हमने उन्हें अपना छत्ता दिखाया और बताया कि मधु-मक्खी-पालन में हमने कितना सीखा है। उन्होंने कहा कि वे आवेंगे और हमसे मधु-मक्खी-पालन के सम्बन्ध में सीखेंगे।

तत्पश्चात् एक अजनबी आदमी आया।

"समाचार-पत्र में जिनके सम्बन्ध में छपा है वे लड़के तुम्हीं हो ?" उसने प्रश्न किया।

"हम ही हैं।"

"और यह है तुम्हारा छत्ता, मेरा ख्याल है ? क्या मैं इसे देख सकता हूँ ?"

"निश्चय ही।"

वह छत्ते वाले सन्दूक के निकट गया और वहाँ बैठकर देर तक मधु-मक्खियों को देखता रहा। अन्त में वह उठा और बोला—

"बहुत सुन्दर ! मैं तो इस पर कभी विश्वास ही नहीं कर सकता था।" और वह चला गया।

अब बड़े लोग भी हमारे उस कार्य के प्रति आकर्षित होने

लगे हैं, और यह केवल उसी समाचार-पत्र के लेख को देखकर। यदि वैसा न होता तो हमारे सम्बन्ध में कोई कुछ जानकारी ही न प्राप्त कर पाता।

१६ जुलाई

दूसरे स्कूल से, दो लड़के आज हमें देखने आये। उन्होंने भी हमारे सम्बन्ध में समाचार-पत्र में पढ़ा था। वे विशेष रूप से हमारा छत्ता देखने आये थे। वे भी एक बनाना चाहते थे। जब वे चले गये तब वह व्यक्ति, जो कल आया था, पुनः आया। वह देर तक वहाँ ठहरा और हमसे बातचीत करता रहा किन्तु तभी एक मक्खी ने उसके काट लिया और वह चला गया।

१७ जुलाई

अब हम निरन्तर प्रसिद्ध हो रहे थे। आज गल्या आई और उसने कहा कि हमारे नाम एक पत्र है।

हम बड़े चकित थे। हमको कौन लिख सकता है? हम अन्दर भागे गये और उससे पत्र ले आये। वह यह है। मैं अपनी डायरी में उसकी प्रतिलिपि करने के लिये उसे घर ले आया। यह एक लकड़ी का सामान बनाने वाले स्कूल के विद्यार्थियों के यहाँ से आया है।

"प्यारे नौजवान मधु-मक्खी-पालने वालो!

हमने आपके सम्बन्ध में समाचार-पत्र में पढ़ा और हम चाहते हैं कि आप लोगों से पत्र-व्यवहार करें। आप लोगों ने जो कुछ किया है, उससे हम अत्यधिक आकर्षित हुए हैं। अब हम आपके उदाहरण का अनुकरण करना चाहते हैं तथा

स्वयं भी मधु-मक्खी-पालन का कार्यारम्भ करना चाहते हैं। हमें बड़ी प्रसन्नता होगी यदि आप लोग उस सन्दूक की नाप हमें लिख भेजें। यदि सम्भव हो, तो उसका रेखा-चित्र भी भेज दें। हम लोग फर्नीचर बनाना सीख रहे हैं। अतः हम छत्ते का एक अच्छा सन्दूक बना सकते हैं। सम्भव है बाद में हम अन्य लड़कों के लिए भी छत्ते-के-सन्दूक बना सकें जो मधु-मक्खी पालना चाहें। कृपया हमें यह भी लिखिये कि हमें मधु-मक्खियाँ कहाँ से मिलेंगी। हम आपके उत्तर की प्रतीक्षा कर रहे हैं। हम आपको अपनी बधाई व आगे की सफलता के लिए शुभ-कामनायें भेजते हैं।"

हमारी आज पानियर मीटिंग हुई। उसमें गल्या ने वह पत्र पढ़कर सुनाया और तब हमने निश्चय किया कि हमें तुरन्त उत्तर भेजना चाहिये। हमने उन्हें एक लम्बा पत्र लिखा—उन्हें समस्त निर्देश देते हुए, छत्ते के सन्दूक की ड्राइङ्ग साथ रख कर, और उस मधु-मक्खी-पालन-स्थान का पता देते हुए जिसने हमें मधु-मक्खियाँ भेजी थीं।

१८ जुलाई

आज हमको एक पत्र और मिला। वह एक छोटे लड़के मित्या रोमास्किन का है। एक छोटे लड़के को देखते हुए बड़ा मोहक पत्र! हमने उसे बहुत सराहा। वह यह है :

"प्रिय मित्रो !

मैं भी एक मधु-मक्खी-पालक हूँ। गत वर्ष से ही मैं मधु-मक्खियों को एक सन्दूक में पालने का प्रयत्न कर रहा हूँ किन्तु मैं उन्हें उसमें रोक नहीं पाता। वे निरन्तर उड़

जाती हैं। मैं शहद व शकर सन्दूक में रख देता हूँ किन्तु वे शहद खा लेती हैं और उड़ जाती हैं। कल मैंने दस मक्खियाँ और पकड़ीं किन्तु वे भी उड़ गयीं। मैं बहुत सी मक्खियाँ एकत्र करना चाहता हूँ जिससे कि जब मैं बड़ा होऊँ तो एक या दो छत्ता रख सकूं, और एक मधु-मक्खी-पालक बन सकूँ। कृपा करके मुझे सूचित कीजिये कि मैं किस प्रकार मक्खियों को उड़ने से रोक सकता हूँ। क्योंकि मैं सब कुछ करता हूँ फिर भी वे मेरे पास नहीं रुकतीं। मुझे यह भी लिखिये कि क्या मक्खियाँ आपको डंक मारती हैं क्योंकि मुझे वे बड़ी भयानकता से काटती हैं फिर भी मैं वीरतापूर्वक उसको सहन करता हूँ जैसे मोर्चे पर का एक सिपाही। कृपया मुझे लिखिये और बताइये कि मैं क्या करूँ ?

आपका मित्र—मित्या रोमास्किन"

हम मित्या के पत्र पर तब तक बहुत हँसे जब तक हमने यह नहीं सोचा कि इसी प्रकार हम भी एक दिन एक-एक मक्खी पकड़ते थे। अतः हमने हँसना बन्द कर दिया और मित्या को एक लम्बा पत्र लिखा; और जो कुछ मधु-मक्खियों के सम्बन्ध में हम जानते थे, उसे सब बताया। उस पत्र को लिखने में बहुत समय लगा। उसके अनन्तर हम अपने छत्ते पर गये।

१९ जुलाई

अब हमें प्रतिदिन पत्र मिलते थे। आज एक पत्र केवल मुझे ही मेरे व्यक्तिगत नाम पर भेजा गया था :

"कोल्या सिनित्सिन, प्रसिद्ध मधु-मक्खी-पालक !"

यह लिफाफे पर लिखा हुआ था। उससे मैं स्तम्भित हो गया। मैंने जब उसे खोला तो उत्तेजना से मेरे हाथ काँपने लगे।

"प्रिय अपरिचित-मित्र, कोल्या सिनित्सिन" से वह प्रारम्भ हुआ—

"आपको आश्चर्य होगा, एक ऐसी लड़की का पत्र पाकर जिसको आपने पहले कभी नहीं देखा और सम्भवतः जिसका परिचय भी प्राप्त करना अब आपको रुचिकर न हो क्योंकि समाचार-पत्र में आपका नाम प्रकाशित होने के अनन्तर आप इतने प्रसिद्ध व्यक्ति हो गये हैं और सब कुछ बहुत अच्छा है। मैंने भी समाचार-पत्र में आपका नाम पढ़ा जिसमें आपका फोटो भी छपा है—आपके उस समस्त कार्य के परिचय सहित जो आपके पायनियर-ग्रुप ने किया है। हमने वह लेख एक पायनियर-मीटिंग में पढ़ कर सुनाया और निश्चय किया कि आपका अनुकरण करें और मधु-मक्खी-पालन का कार्य प्रारम्भ करें।

"आप इसको पढ़कर हँसेंगे क्योंकि कुछ लड़के, लड़कियों को हेय समझते हैं और कल्पना करते हैं कि वे किसी मतलब की नहीं होती हैं। किन्तु हमने यह सिद्ध करने का निश्चय किया है कि लड़कियाँ भी उतनी ही अच्छी हैं जितने लड़के ; हम लोग मधु-मक्खी-पालन का कार्य प्रारम्भ करने जा रही हैं। जब तक हम बड़ी होंगी तथा सामूहिक-उद्यान के मधु-मक्खी-पालन-स्थान में कार्य करना प्रारम्भ करेंगी तब तक हमें मधु-मक्खियों के सम्बन्ध में पर्याप्त ज्ञान प्राप्त हो जावेगा।

"पायनियर-ग्रुप ने मुझे चुना है कि मैं आपको लिखूँ और पूछूँ कि आपने अपना छत्ता किस प्रकार बनाया और मधु-मक्खियों

की क्या देखभाल करनी चाहिए। किन्तु मैंने सोचा कि मुझे आपको एक व्यक्तिगत-पत्र लिखना चाहिए क्योंकि मुझे आपका नाम बहुत भला लगा है। मैं विश्वास करती हूँ कि आप एक बड़े मोहक लड़के होंगे और हमें सहायता देने को मना न करेंगे। इस समय के लिये यही पर्याप्त है। एक पायनियर की शुभ कामनाओं सहित—लूस्या एवानोवा।"

मुझे पहले इस लड़की लूस्या को पत्र का उत्तर लिखने का विचार भला नहीं लगा किन्तु औरों ने कहा कि मुझे अवश्य लिखना चाहिये। गल्या ने कहा कि मुझे तुरन्त पत्र लिखकर वह सब बताना चाहिये जो वह लड़की व उसकी साथिनें जानना चाहती हैं। यदि लड़कियाँ मक्खियाँ पालना चाहती हैं, तो हमारा कर्तव्य है कि हम उनकी सहायता करें।

अतः मैं घर गया और उत्तर लिखने बैठ गया। मैंने पूरे एक घन्टे तक उस पर परिश्रम किया और अत्यधिक प्रयत्न भी कि स्वच्छ लिखूं और कोई अशुद्धियाँ न करूँ जिससे लड़की को उसमें कोई त्रुटि न मिले। जब मैंने उसे समाप्त कर लिया तो उसे पुनः पढ़ा। वह बहुत अच्छा लिखा गया था। सच, वह बहुत सुन्दर था। मैंने वह पढ़कर लड़कों को सुनाया तब उन्होंने कहा कि वैसा पत्र भेजने पर किसी लड़के को लज्जा का अनुभव नहीं हो सकता।

२० जुलाई

आज और भी आगन्तुक आये, विशेषकर लड़के और वह आदमी भी जो पहले आया था और पिछली बार जिसे मक्खी ने डंक मार दिया था। हम डर रहे थे कि कहीं दुबारा उसे मक्खी न काट खावे; अतः हमने उसे सिर में लगाने को एक जाल दिया। जब

नीना सर्जेयेवना आयी तो उसने उससे नाना-प्रकार के प्रश्न किये।

"क्षमा कीजियेगा," वह बोला, "यह छत्ते वाला सन्दूक केवल ज्ञान-वर्द्धन के लिए है अथवा इसका कोई क्रियात्मक महत्व भी है ?"

"दोनों," नीना सर्जेयेवना ने उत्तर दिया।

"तो, इससे क्रियात्मक-लाभ क्या है ? क्या यह सम्भव है कि मक्खियों को नगर में भी पाला जा सके ?"

"निश्चित वैसा है। मधु-मक्खियाँ; जितना चाहें, वह सब पराग पा सकती हैं मेपल्स, लाइम-ट्रीज, एकेसिया, विलोज़, बर्ड-चेरीज़ के फूलों से तथा अन्य बहुत से भिन्न-भिन्न वृक्षों से और झाड़ियों से जो पार्कों में, बगीचों में और चौड़े मार्गों में होती हैं। इसके अतिरिक्त, मक्खियाँ पराग के लिए दूर भी जाती हैं और वे ग्राम्य-स्थानों तक जाकर तथा नगरों के बाहर खेतों में भी जाकर पराग संचित कर लाती हैं। यह एक दकियानूसी विचार है कि मधु-मक्खियाँ केवल ग्राम में ही रक्खी जा सकती हैं। मास्को की भाँति आज के आधुनिक नगरों में भी मक्खियाँ पाली जा सकती हैं।"

"उस दशा में मैं तुरन्त प्रारम्भ कर दूँगा," उस व्यक्ति ने कहा "कठिनाई यह है कि मुझे यह पता नहीं है कि छत्ते का सन्दूक कहाँ रखना चाहिए।"

"ओह ! मक्खियाँ कोई ऐसी कठिन वस्तु नहीं जैसा आप सोचते हैं," नीना सर्जेयेवना ने कहा—"आप उसे पीछे आंगन में रख सकते हैं, किसी कोने में या किसी सायबान में ही।"

"मधु-मक्खियां, छज्जे पर, हः हः यह एक विचित्र बात है।" उस व्यक्ति ने कहा—"वैसा कौन सोच सकता है? विज्ञान कितनी उन्नति कर रहा है।"

उसने नीना सर्जेयेवना को धन्यवाद दिया, उससे हाथ मिलाया, दुबारा आकर मक्खियों के सम्बन्ध में, यदि उन्हें कोई आपत्ति न हो, तो जानने का वचन दिया और हमारे जाल को सिर में लगाये हुए ही चला गया। उसको लेने के लिये हमें भाग कर जाना पड़ा।

२१ जुलाई

आज बहुत गरमी थी अतः मक्खियाँ अधिक कार्य न कर सकीं। वे मिलकर प्रवेश-द्वार के निकट ही टंगी रहीं—उतरने के अड्डे पर काली दाढ़ी के समान इकट्ठा होकर। वह 'दाढ़ी' वहाँ देर तक लटकी रही और तब धीरे-धीरे मक्खियाँ सन्दूक में रेंग गयीं। कुछ देर बाद वे फिर बाहर निकल आयीं। वे आपस में अब भी चिपकी हुई थीं और थोड़ी देर उसी प्रकार लटकी रहीं। अन्ततः वे सन्दूक में फिर चली गईं और वहीं बनी रहीं।

२२ जुलाई

प्रातःकाल जब सरयोभा और पावलिक तथा मैं छत्ते पर आये तो हमने प्रवेश-द्वार पर पुनः मक्खियों को घिरा पाया। हमने सोचा कि वे फिर 'दाढ़ी' बनने जा रही हैं किन्तु अचानक वे सब एक साथ उड़ गयीं और सन्दूक के चारों ओर उच्च स्वर में भन-भन करते हुये गोलाकार रूप में चक्कर काटने लगीं। तुरन्त ही अन्य मक्खियाँ भी सम्मिलित होगयीं और वह एक व्यवस्थित भाग-दौड़

बन गयीं। हम डर गये और एक पेड़ के पीछे छिप गये और मक्खियों को सारे बगीचे में चारों ओर चक्कर काटते देखते रहे। उन्होंने इतना शोर किया कि कोई भी एक मील से सुन सकता था।

"उन्हें क्या हुआ ?" पावलिक बोला।

"मैं जानता हूँ।" सरयोझा चिल्लाया "यह पूरा समूह है।"

"वह तो है। तब हम इसे कहाँ रखने जा रहे हैं ?"

"हमें एक बाल्टी या बर्तन की आवश्यकता है," मैंने सुझाया।

"हाँ, तुम दोनों घर भागो और मैं यहाँ रुक कर देखता हूँ कि क्या होता है," पावलिक ने कहा।

सरयोझा व मैंने सड़क पर दौड़ लगायी। मैंने सारे घर में एक बाल्टी को ढूँढ़ा किन्तु एक भी फालतू नहीं पायी अतः मैंने एक बड़े कार्डबोर्ड के बक्स को बाहर निकाला जिसमें रेडियो बन्द होकर आया था और मैं उस ओर भागा। जब मैं स्कूल के आँगन में भाग रहा था तब मैंने सरयोझा को दौड़कर एक बाल्टी लाते हुए बगीचे में देखा किन्तु पावलिक का वहाँ कहीं पता ही न था।

"पावलिक कहाँ है ?" मैंने पूछा।

"पता नहीं। मैंने सब जगह ढूँढ़ लिया किन्तु उसका कहीं पता ही नहीं है।"

"वह मक्खियों का समूह कहाँ है ?"

"वह समूह भी चला गया ?"

हम रुके और हमने अपने चारों ओर देखा। तभी पावलिक का सिर तारों के पीछे चमका।

"तुम वहाँ खड़े क्या कर रहे हो ? इधर जल्दी आओ न।"

दूसरे मैदान में हम तारों पर चढ़ गये। उसको फांदने में सरयोझा का पैर तारों में अटक गया और उसने बाल्टी गिरा दी। वह एक बड़ी भड़भड़ाहट के साथ दूसरी ओर जा गिरी।

"चुप रहो, क्या नहीं रह सकते !" पावलिक बोला—"तुम लोग मक्खियों के समूह को डरा दोगे।"

"वह है कहाँ ?"

"देखो।" उसने तार के निकट के एक पेड़ को दिखाया। एक बँधे हुए झुंड के रूप में केवल कुछेक मक्खियों को छोड़कर, जो समूह के चारों ओर भनभना रही थीं, समूह पेड़ की एक डाल पर लटक रहा था जैसे उसमें मिल जाने को कोई स्थान ढूंढ़ रहा हो।

"मुझे बाल्टी दो," पावलिक बोला।

"सम्भवतः यह बक्स अच्छा रहेगा ?" मैंने सुझाया।

"ठीक है, लाओ।"

मैं अपने पैर के पंजों के बल खड़ा होगया और बक्स

को उसके सामने खड़ा कर दिया। पावलिक ने डाल को हिलाया और समस्त समूह उसमें टपक पड़ा। मैंने तुरन्त ढक्कन बन्द कर दिया।

"ठीक है," मैंने कहा—"अब वे उड़ कर नहीं जा सकतीं।"

हम तारों के ऊपर से फिर चढ़ गये। अन्य लड़कों को हमने छत्ते के चारों ओर खड़े देखा।

"आओ और देखो!" मैं चिल्लाया—"हमें एक मक्खियों का समूह और मिल गया है।"

"कहाँ ?"

"यहाँ, इस बक्स में है।"

"तुम्हें वह कहाँ मिला ?"

"वह सन्दूक के बाहर उड़ गया था।"

मैंने ढक्कन को थोड़ा हटाकर उनको उसके अन्दर की मक्खियों को दिखाया।

"यह कितना कौतुकपूर्ण है?" वे बोले—"अब हमारे पास मधु-मक्खियों का एक पूर्णतः नवीन परिवार हो जावेगा। अब हमें लग कर एक नये सन्दूक का निर्माण करना चाहिये।"

हम अपने औजार ले आये और कार्य में लग गये। नोना सर्जेयेवना आयी और तब हमने उसे सन्दूक में के उस समूह को दिखाया।

"छत्ता छोड़ने का उन्होंने अनुचित समय सोचा," उसने कहा।

"क्यों ?"

"क्योंकि यह शहद का मौसम है और जब मधु-मक्खियाँ अपना बनाती हैं तो बहुत कम शहद संचित कर पाती हैं।"

"वह ठीक है," हमने कहा—"हमें अधिक शहद नहीं चाहिये। हमको अधिक मक्खियाँ चाहिए।"

संध्या तक सन्दूक तैयार होगया। हमने उसके लिये नये चौखटे बनाये और एक चौखटा लार्वा के लिये तथा दूसरा शहद के लिये पुराने छत्ते से लाये जिससे नये परिवार को नये छत्ते में घर का सा अनुभव हो। तब हमने उस समूह को बक्स से नये छत्ते वाले सन्दूक में हिला कर गिराया, उसे ढक दिया और घर चले गये।

सरयोझा, पावलिक व मैं अब बड़े प्रसन्न थे कि यदि हम लोग न होते तो समूह उड़ गया होता। अतः हम लोग पूरी तरह व्यर्थ नहीं थे।

२३ जुलाई

कल नीना सर्जेयेवना ने बताया कि उस समूह पर गहरी दृष्टि रखनी चाहिए कि कहीं मक्खियाँ उड़ न जावें। मक्खियाँ बहुधा अपने नये निवास को पसन्द नहीं करतीं और किसी अन्य निवास की खोज में उड़ जाती हैं। यह ध्यान करने के लिये हम विशेष रूप से सुबह आये। बहुत देर तक कुछ नहीं हुआ तब अन्त में एक मक्खी नये छत्ते से बाहर निकल कर आयी और प्रवेश-द्वार की ओर घूमी जैसे नये स्थान का निरीक्षण कर रही हो और तब सन्दूक के चारों ओर घूमी और उड़ गयी। तत्पश्चात् तुरन्त ही अन्य मक्खियाँ प्रकट हुईं; वे भी, उड़ने के पहले, बहुत बार, छत्ते वाले सन्दूक के चारों ओर चक्कर काटती रहीं। हम डर रहे थे कि वे अपने नये सन्दूक का मार्ग नहीं पावेंगी और गलती से पुराने छत्ते में चली जावेंगी किन्तु थोड़ी देर बाद वे लौटीं और सीधे नये

छत्ते में घुस गयीं। हम प्रसन्नता से उछल पड़े—हम बहुत खुश थे कि उन्होंने हमारे बनाये नये घर को पसन्द कर लिया है।

२४ जुलाई

हम, प्रातःकाल, सारे समय मक्खियों को देखने में व्यतीत करते रहे। दोनों छत्ते कठिन कार्यों में संलग्न थे किन्तु नये छत्ते की मक्खियाँ अधिक तत्पर दिखायी देती थीं। वे एक क्षण भी व्यर्थ नहीं करती थीं—जब वे सन्दूक से बाहर आतीं तब अपने नन्हे पर फैलातीं और पराग लेने उड़ जातीं। नीना सर्जेयेवना ने कहा कि मधु-मक्खियों का समूह नये छत्ते में अधिक परिश्रम से कार्य करता है क्योंकि मक्खियों के पास कम समय रह जाता है कि वे सर्दियों के लिये शहद का संचय कर सकें।

२५ जुलाई

आज बहुत तेज हवा चल रही है और आकाश धुँधला हो रहा है। सूर्य थोड़ी-थोड़ी देर में झाँकता है और फिर बादलों में छिप जाता है। कई बार पानी बरसा; पुराने छत्ते की मक्खियाँ अन्दर ही रहीं किन्तु नये छत्ते की मक्खियों का कार्य यथावत् चलता रहा। ज्यों ही सूर्य चमकता, मक्खियाँ तुरन्त उड़ जातीं। उनको देखना बड़ा आनन्ददायक है।

फेद्या तथा ग्रीशा ग्रीष्म-शिविर से लौट आये हैं। कितनी जल्दी समय व्यतीत होगया। तुम कल्पना कर सकते हो कि वे एक के स्थान पर दो छत्तों को देखकर कितने विस्मित हुए। उन्होंने सोचा कि हमने दूसरे समूह को मँगवाया है और तब वे और भी चकित हुये जब उन्होंने सुना कि मधु-मक्खियों का यह समूह पुराने छत्ते

से ही निकला है। तब हमने वह लेख उन्हें दिखाया और अपनी वह तस्वीर तथा सब पत्र भी जो हमने प्राप्त किये थे। वे बड़े प्रभावित हुए।

"जब हम लोग बाहर थे तब तुम लोगों ने यहाँ बड़े आश्चर्य के काम किये," उन दोनों ने कहा।

२६ जुलाई

आज मौसम बहुत बुरा है। आज समस्त दिन पानी बरसता रहा और दोनों छत्ते शान्त रहे। बिना मक्खियों के हम इतने उदास थे कि गल्या ने सुझाया कि हम लोग सिनेमा जांय। तब भोजन के पश्चात वह सारे ग्रुप के लिए टिकट ले आयी और हमने जाकर एक सुन्दर तस्वीर देखी।

२७ जुलाई

शहद का मुख्य-काल व्यतीत हो गया है। नीबू के पेड़ पर फूल मुरझा गये हैं। अब मक्खियों को पराग के लिए कहीं अन्यत्र खोज करनी होगी। हम डर रहे थे कि हमारी मक्खियों का नया परिवार सर्दी में बिना शहद के ही रह जावेगा किन्तु नीना सर्जेयेवना ने कहा कि दूसरे छत्ते से कुछ उसके लिए निकाला जा सकता है। तब हमने अपने शहद के संचय का अनुमान लगाया और पाया कि वह दोनों समूहों के लिये पर्याप्त होगा।

"किन्तु इस वर्ष तुम लोगों के लिए शहद नहीं मिलेगा," उसने कहा।

"हमें शहद बिल्कुल नहीं चाहिये।" हमने कहा—"हम प्रसन्न होंगे यदि उसे मक्खियाँ ही लें। जैसे भी हो, उन्होंने उसके लिये परिश्रम किया है अतः वह उन्हीं का है।"

"यह ठीक है," नीना सर्जेयेवना ने कहा। "वह दोनों समूहों के लिए जाड़े में पूरा हो जावेगा और अगले वर्ष वे इतना संचित करेंगी कि तुम लोगों को देने के लिये बहुत हो जावे।"

"अपने शहद को चखने में कितना स्वाद आवेगा!" पावलिक बोला।

"किन्तु हमारी मक्खियाँ सर्दियों में कहाँ रहेंगी? क्या हमको उनके लिए एक विन्टर-हाइव (सर्दियों का सन्दूक) बनाना होगा?" यूरा ने प्रश्न किया।

"एक या दो छत्तों के सन्दूक तो किसी भी मकान की कोठरी में रह सकते हैं किन्तु वे गरम होनी चाहिये या फिर खोदी हुई खाई में रहने चाहिये।"

हमने खोदी हुई खाई के सम्बन्ध में निश्चय किया और कल ही से कार्यारम्भ करना भी तय किया जिससे हम अपनी मक्खियों को अच्छा व गरम-स्थान, समय रहते, दे सकें।

२८ जुलाई

हम सब, सबसे पहले, सुबह मिले और बगीचे के किनारे एक बड़ा छेद खोदना प्रारम्भ किया। हमको उस छेद को तख्तों से ढकना था और सर्दी बचाने के लिये उसके ऊपर मिट्टी की एक तह लगानी थी।

भूमि बड़ी कड़ी थी और खोदना भी बड़ा परिश्रम का काम है। किन्तु हम सारे दिन खोदते रहे तथा एक बड़ा और अच्छा गड्ढा खोद डाला। यूरा ने सुझाया कि हमें नीचे आग जला देनी चाहिये जिससे दीवारें सूख जांय और नमी चली जाय। हम सूखी

घास-फूस ले आये, एक बड़ी होली जला दी और इधर-उधर से हमें जो कुछ भी मिला आग जलाये रखने को हम लकड़ी समझ उसमें लगाते रहे। जब हमने आग जलायी थी तब संध्या हो गयी थी और जल्दी ही अँधेरा हो गया। जब आग अपने आप जल निकली तब हमने राख साफ़ की और दिन भर का काम कर लेने के पश्चात् वहीं बैठ कर विश्राम करने लगे। छेद के नीचे बड़ा गुदगुदा था; ऊपर गहरे आकाश में तारों को टिमटिमाते देखना और वृक्षों से बुदबुदाती हुई वायु को सुनना बड़ा सुहावना लग रहा था।

"जाड़ों में हम लोगों से मक्खियाँ छूट जावेंगी," ग्रीशा बोला—"मैं तो उनसे हिल गया था। वे कितनी छोटी व प्रिय हैं तथा कितनी चालाक व परिश्रमी हैं।"

"मुझसे भी वे छूट जावेंगी," फेद्या ने कहा।

"ठीक है, अभी तो सर्दियों के आने में बहुत समय है," तोल्या ने उन्हें सान्त्वना दी—"इसके अतिरिक्त मक्खियों के सम्बन्ध में सोचने की अपेक्षा तब हम स्कूल में अधिक व्यस्त होंगे।"

"वह बूढ़ा मधु-मक्खी पालने वाला ठीक कहता था," पावलिक बोला—"उसने कहा था कि यदि एक बार तुम मक्खियों को पालना प्रारम्भ कर दो तब उसे कभी छोड़ना नहीं चाहोगे। मैंने भी निश्चय कर लिया है कि बड़े होने पर मैं एक मधु-मक्खी-पालक बनूंगा। सामूहिक-खेतों में मैं एक मधु-मक्खी-पालक बन जाऊँगा। मैं बहुत से छत्ते रखूंगा, सौ या दो सौ। जहाँ तक है दो सौ रखूंगा।"

"तुम्हारे लिये वह ठीक है," फेद्या बोला–"किन्तु मेरे लिये?

मैं तो एक इंजीनियर होने जा रहा हूँ; तब पुल, गुफायें व नहरें बनाऊँगा……।"

"उससे क्या हुआ," मैंने कहा—"तुम एक इंजीनियर हो सकते हो और मक्खियाँ भी रख सकते हो। पुल बनाने से वे तुम्हें रोकेंगी नहीं।"

"कदापि नहीं," वित्या बोला—"मैं तो एक पेन्टर होने जा रहा हूँ किन्तु मैं मक्खियाँ भी पालूंगा। क्या एक व्यक्ति दो विशेषतायें नहीं प्राप्त कर सकता?"

"यदि वह एक कलाकार है तो शौक से हो सकता है," जेन्या बोला—"किन्तु मैं तो एक उड़ने वाला बन रहा हूँ।"

"ठीक है, तो उससे क्या? तुम सब समय तो उड़ते नहीं रहोगे," मैंने कहा।

"किन्तु मान लो कि मुझको दूर की उड़ान पर जाना पड़ा, तब?"

"तब मक्खियाँ बिना तुम्हारे रहेंगी। उन्हें किसी नर्स की आवश्यकता नहीं है। वे अपनी देखभाल अपने आप कर सकती हैं।"

"हाँ, उड़ने वाले के लिये भी वह कुछ बुरा नहीं है," यूरा बोला—"किन्तु मैं तो एक नाविक या कैप्टेन होने वाला हूँ। और सामुद्रिक यात्रायें तो कभी-कभी पूरा वर्ष ले लेती हैं? तब मेरी मक्खियों का क्या होगा?"

"तुम अपनी मक्खियों को जहाज में ले जा सकते हो," मैंने कहा "तुम जब तक समुद्र में हो तुम्हें केवल प्रवेश-द्वार बन्द करना

होगा और जब तुम किसी बन्दरगाह पर उतरो तब किनारे पर मक्खियों को भोजन करने के लिये खोल सकते हो और तब वे फिर लौट आवेंगी। मैं सोचता हूँ यह तो बड़ा मज़ा रहेगा कि मक्खियों का एक छत्ता जहाज पर रहे।"

मैंने प्रत्येक व्यक्ति पर यह सिद्ध कर दिया कि यदि कोई भी चाहे तो मक्खियाँ पाल सकता है—उड़ने वाले, इंजिन-ड्राइवर खान, खोदने वाले, मकान बनाने वाले, कोई भी। जब मैं घर गया तब सोचता रहा कि मैं मधु-मक्खी-पालन कैसे करूँगा क्योंकि मैंने तो बड़े होने पर आर्कटिक (ध्रुव-प्रदेश) में कार्य करने का निश्चय किया है और मैं नहीं सोच सकता कि आया ध्रुव-प्रदेश में मक्खियाँ आराम से रह भी सकेंगी। वहाँ न कोई वृक्ष हैं, न फूल; केवल बरफ और ध्रुव-प्रदेश के शेर हैं। तब मैंने सोचा कि जब तक मैं बड़ा होऊँगा, लोग ध्रुव-प्रदेश में भी वृक्ष व फूल उत्पन्न करना प्रारम्भ कर देंगे और तब मैं वहाँ भी मधु-मक्खियाँ पालूँगा जैसे कहीं अन्य दूसरी जगह। और यदि ऐसा न हुआ तो मैं स्वयं ही वहाँ वैसा करूँगा और तब तक मैं मक्खियों को शर्बत खिलाऊँगा।

अत: यह निश्चित होगया, कि मैं मक्खियों को ध्रुव-प्रदेश में रक्खूँगा।

२९ जुलाई

हमने नहीं सोचा था कि हमको आगे कोई पत्र प्राप्त होगा किन्तु आज एक और मिला। हम सब प्रात:काल अपनी एपेरी (मधु-पालन-स्थान) पर गये थे, तब यूरा कुस्कोव एक पत्र हिलाते हुये दौड़ा दौड़ा आया। वह 'एपेरी' आते समय स्कूल के दफ्तर में रुक गया था। हमारी प्रतीक्षा करने वाले इस पत्र को उसने वहां पाया।

हमने लिफाफे को फाड़ा और उच्च-स्वर में पढ़ने लगे—
"प्रिय मित्रो !

हम, लेनिनपाथ सामूहिक-खेतों के पायनियर्स, ने समाचार-पत्रों में आपके सम्बन्ध में सब कुछ पढ़ा और निश्चय किया कि आपको लिखा जाये तथा बताया जावे कि इस बात पर विचार करके हम कितने लज्जित हैं कि हम सामूहिक–खेतों के पायनियर्स ने अभी तक अपनी एक एपेरी भी नहीं बनायी है जबकि आप, नगर के लड़कों की, वह-अपनी है। हमने अपनी गलती को तुरन्त सुधारने का निश्चय किया है और उस प्रसंग को अपने बोर्ड के सामने प्रस्तुत कर दिया है। प्रारम्भ करने के लिये हमने दो छत्ते भी प्राप्त कर लिये हैं। अतः अब हम भी एक एपेरी बनावेंगे।

"किन्तु, प्रिय मित्रो, आप लोग यह मत सोचना कि इस सारे समय हम लोग बेकार रहे होंगे। हमारा खेत बिना जोती-बोयी भूमि में है जो निकटवर्ती नगर से बहुत दूर है। यहां का जलवायु बड़ा विषम है—शीत ऋतु में यहाँ बड़ी भयानक बर्फ गिरती है और आँधी जैसी हवा चलती है। कभी-कभी इतनी बर्फ होती है कि हमको स्कूल जाने के लिये पटरों का प्रयोग करना पड़ता है। गर्मियों में यहाँ अधिक गर्मी रहती है। चमकता सूर्य और गरम व सूखी हवा प्रत्येक वस्तु को सुखा देती है और भूमि सूखकर चटक जाती है। पानी की बाढ़ आने पर किसानों को बचाव के बांध बनाने पड़ते हैं। हम पायनियर्स ने उन्हें सहायता देने का निश्चय किया है। हमारे स्कूल में भी बगीचा है और है खोज करने के लिये एक खेत जहां हम सब बाँट कर काम करते हैं और भारी उपज का प्रयत्न करते हैं।

"प्रिय मित्रो ! हम जानते हैं आप लोग नगरों में भी वृक्ष लगाते हैं और फल पैदा करते हैं तथा पार्क व बगीचे बनाने में सहायक होते हैं। अब आप लोगों ने मधु-मक्खी पालने का भी कार्यारम्भ किया है। बधाइयाँ ! आप लोगों को नगरों में तथा हमें यहाँ गावों में अच्छा काम करने की प्रतिज्ञा करनी चाहिए, जिससे हम अपने देश को सुन्दर व सम्पन्न बनाने में हाथ बंटा सकें।

"प्रत्येक सफलता की आपको शुभ-कामनायें। आप से उत्तर पाने की पूर्ण आशा में हम अपना यह पत्र पायनियर्स के मोटो के साथ समाप्त करते हैं : लेनिन-स्टालिन के नाम पर तैयार रहो।"

"सदैव तैयार।" हम पत्र समाप्त कर एक साथ चिल्ला उठे।

जब मैं घर गया तो उस पत्र के सम्बन्ध में ही सोचता रहा। मैंने सोचा कि हम नगरों के पायनियर्स ने उन सामूहिक-खेतों के पायनियर्स की तुलना में कुछ भी काम नहीं किया है और उनसे आगे बढ़ने के पूर्व हमें बहुत कार्य करना होगा। मैंने उस पत्र को बहुत पसन्द किया और इसी कारण मैंने उसे अपनी डायरी में लिख लिया है। अब मैंने उसकी प्रतिलिपि करना समाप्त कर लिया है और देखता हूँ कि मैं अपनी डायरी के अन्तिम स्थान तक पहुँच गया हूँ। अब डायरी में लिखने को स्थान नहीं है।

आगे मैं कभी एक डायरी और लूंगा और तब उसमें लिखता रहूँगा। किन्तु इस समय इतना ही पर्याप्त है।
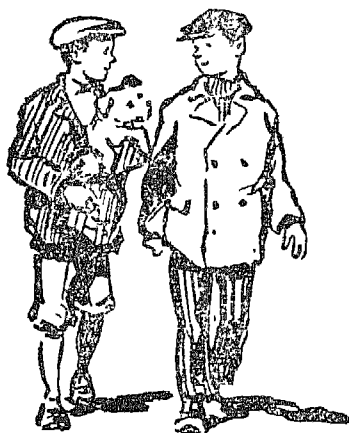
मिश्का की लप्सी

तथा

अन्य कहानियाँ

मिश्का की लप्सी

पिछली गर्मियों में, जब मैं अपनी मां के साथ गाँव में रह रहा था, मिश्का मेरे पास ठहरने आया। मैं उसको देखकर अत्यधिक प्रसन्न हुआ क्योंकि उसके बिना मैं अपने को बहुत अकेला अनुभव करता था। मां भी उसे देखकर प्रसन्न हुई।

"तुम आ गये; मैं बहुत प्रसन्न हूँ," उसने कहा। "तुम दोनों लड़के एक दूसरे के साथ समय व्यतीत कर सकते हो। मुझे कल जल्दी ही शहर जाना है और यह ज्ञात नहीं कि मैं कब लौटूंगी? क्या तुम लोग अपने आप यहाँ रहने की व्यवस्था कर सकोगे?"

"हम अवश्य कर सकते हैं।" मैंने कहा—"हम नन्हे बच्चे नहीं हैं।"

"तुमको अपना जलपान अपने आप तैयार करना होगा। क्या तुम जानते हो कि लप्सी कैसे बनाई जाती है?"

"मैं जानता हूँ," मिश्का बोला—"वह बहुत सरल है।"

"मिश्का," मैंने कहा। "तुम्हें पूर्णतया विश्वास है कि तुम जानते हो? तुमने लप्सी कब पकाई थी?"

"घबड़ाओ मत, मैंने माँ को पकाते देखा है। वह तुम मुझ पर छोड़ो। मैं तुम्हें भूखा नहीं रहने दूंगा। मैं तुम्हारे लिए बहुत बढ़िया लप्सी बना दूंगा जैसी तुमने कभी न खायी हो।"

सुबह माँ हमारे लिए एक रोटी और कुछ मुरब्बा हमारी चाय के लिए छोड़ गयी और बता गयी कि ओटमील कहाँ रक्खा है। उसने यह भी बता दिया कि वह कैसे पकाया जाता है, किन्तु मैंने सुनने की विशेष चिन्ता नहीं की। मैंने सोचा कि जब मिश्का जानता है तो मुझे चिन्ता करने की क्या आवश्यकता है!

इसके बाद माँ चली गयी और मिश्का तथा मैंने निश्चय किया कि हम लोग नदी पर जावें और मछलियाँ पकड़ें। हमने अपना मछली पकड़ने का काँटा निकाला और कुछ कीड़े खोद लाये।

"एक मिनट," मैंने कहा। "यदि हम लोग नदी पर जावेंगे तो लप्सी कौन पकावेगा?"

"पकाने के सम्बन्ध में कौन उलझन करना चाहेगा?" मिश्का बोला। "वह बड़ा कठिन कार्य है। उसके स्थान पर हम रोटी और मुरब्बा खा लेंगे। बहुत रोटियाँ हैं। जब हमें भूख लगेगी तो बाद में लप्सी पका लेंगे।"

हमने मुरब्बे की बहुत सी सैन्डविच बनाईं और नदी पर गये। हम तैरते रहे तथा निकलने के बाद अपने को सुखाने के लिये बीच की बालू में गये और वहाँ सैन्डविच खाते रहे, तब हमने मछलियाँ पकड़ीं। हम बड़ी देर तक बैठे रहे पर एक भी मछली ने काँटे को नहीं पकड़ा। हमको जो कुछ मिला वे थीं लगभग एक दर्जन बहुत नन्हीं-नन्हीं मछलियाँ। हमने बहुत सा समय नदी के पास बिताया। दोपहर के बाद हमें बहुत तेज भूख का अनुभव हुआ तब हम शीघ्रता से, कुछ खाने के लिए, घर भागे।

"तो मिश्का," मैंने कहा—"तुम तो बहुत कुशल हो। अब क्या बनना चाहिए।"

"हमको कुछ लप्सी बनानी चाहिये," मिश्का बोला। "वह सबसे सरल है।"

"ठीक है," मैंने कहा।

मैंने स्टोव जलाया। मिश्का मील (एक अनाज) और बर्तन लाया।

"देखो, जब तुम लप्सी बना ही रहे हो तो जरा अधिक बनाना। मैं बहुत भूखा हूँ।"

उसने लगभग ऊपर तक मील से बर्तन भर लिया और फिर किनाठे तक पानी भर दिया।

"क्या यह पानी अधिक नहीं होगा?" मैंने कहा।

"नहीं, माँ उसी प्रकार बनाती हैं। तुम केवल स्टोव देखो और लप्सी मुझ पर छोड़ दो।"

अतः मैं आग जलाता रहा जबकि मिश्का ने लप्सी पका दी,

जिसका अर्थ था वह बैठा हुआ बर्तन को देखता रहा क्योंकि लप्सी अपने आप पक रही थी।

थोड़ी देर बाद ही अँधेरा हो गया और हमको लैम्प जलाना पड़ा। लप्सी पकती रही। अचानक मैंने देखा कि बर्तन का ढक्कन उठ रहा था और लप्सी किनारे से बह रही थी।

"ऐ, मिश्का," मैंने कहा। "यह लप्सी का क्या हो रहा है?"

"क्यों? उसमें क्या गड़बड़ी है?"

"वह बर्तन में ऊपर चढ़ रही है।"

मिश्का ने उसमें एक चम्मच डाली और लप्सी को बर्तन के अन्दर दबाता रहा। वह दबाता रहा, दबाता रहा, किन्तु वह उफन-उफन कर किनारे से बहती ही रही।

"मुझे पता नहीं इसको क्या हुआ है। सम्भवत: यह तैयार है?"

मैंने चम्मच ली और थोड़ी चखी, किन्तु 'मील' तब भी कड़ा और सूखा था।

"सब पानी कहाँ चला गया?"

"मुझे पता नहीं" मिश्का ने कहा। "मैंने तो उसमें बहुत डाला था। लगता है कि बर्तन में नीचे कोई छेद है।"

हमने बर्तन को सब ओर से देखा किन्तु वहाँ छेद का कोई चिन्ह न था।

"अवश्य वाष्प बनकर उड़ गया," उसने कहा। "हमको पानी कुछ और डालना चाहिये।"

उसने कुछ लप्सी उस बर्तन से निकाल कर एक तश्तरी में रक्खी। पानी की जगह बनाने के लिए उसे वह अधिक मात्रा में

निकालनी पड़ी। तब हमने बर्तन को पुनः स्टोव पर रख दिया और उसे और पकने दिया। वह पकती रही, पकती रही पर थोड़ी देर बाद फिर किनारे से बहने लगी।

"ऐ, क्या शैतानी है!" मिश्का चिल्लाया। "वह बर्तन में क्यों नहीं ठहरती?"

उसने अपनी चम्मच से कुछ और लप्सी निकाली तथा पानी का दूसरा कप भर दिया।

"यह देखो," उसने कहा। "तुमने सोचा था, उसमें बहुत पानी है।"

लप्सी पकती रही, और तुम विश्वास करो कि थोड़ी ही देर में उसने ढक्कन हटा दिया और फिर बाहर रेंगने लगी।

मैंने कहा, "तुमने अवश्य इसमें अधिक 'मील' भर दिया है। इसी कारण ऐसा हो रहा है। जब वह पकता है तो उफनता है और इस बर्तन में उसके लिये इतना स्थान नहीं है।"

"हाँ, ऐसा ही होगा," मिश्का ने कहा। "यह सब तुम्हारा दोष है। याद करो, तुम्हीं ने कहा था न कि उसमें अधिक डालो क्योंकि तुम भूखे हो?"

"मुझे क्या पता था कि उसमें कितना डालना चाहिये? तुम्हारे बारे में यह विश्वास किया जा रहा था कि तुम एक ऐसे व्यक्ति हो जो पकाना जानते हो।"

"वही मैं कर रहा हूँ। यदि तुमने उसमें टांग न अड़ायी होती तो मैंने अब तक उसे पका लिया होता।"

"ठीक है, पकाओ; मैं आगे एक शब्द भी न कहूँगा।"

मैं अभिमान में चला गया और मिश्का लप्सी पकाता रहा। वह फालतू लप्सी निकालता रहा और बार-बार पानी भरता रहा। शीघ्र ही पूरी मेज आधी पकी लप्सी की तश्तरियों से भर गयी। और प्रत्येक बार अधिकाधिक पानी मिलता रहा।

अन्त में मेरा धैर्य टूट गया।

"तुम इसे ठीक नहीं बना रहे हो। इस तरह तो लप्सी कल सुबह तक भी तैयार न होगी।"

"ठीक है, किन्तु बड़े-बड़े जलपानगृहों में भी लप्सी इसी प्रकार बनायी जाती है। क्या तुम नहीं जानते कि वे भोजन एक रात पहले ही बना लेते है अतः यह कल सुबह तक बन जानी चाहिये।

"जलपान गृहों के लिये यह ठीक है। उनको शीघ्रता की कोई आवश्यकता नहीं होती क्योंकि उनके पास दूसरे भोजन बहुत रहते हैं।"

"हमको भी जल्दी की कोई आवश्यकता नहीं है।"

"हमें नहीं है ? और मैं भूख में तड़प रहा हूँ। और साथ ही अब तो बिस्तर पर जाने का समय भी हो आया है। देखो ! कितनी देर होगयी है।"

"सोने के लिये तुम्हें बहुत समय मिलेगा," उसने कहा और पानी का एक और गिलास लप्सी में डाल दिया। अचानक ही मुझे यह ध्यान आया कि भूल कहाँ थी।

"और जब तक तुम इसमें ठंडा पानी मिलाते जाओगे तब तक यह पकेगी ही नहीं," मैंने कहा।

"तुम समझते हो कि तुम लप्सी बिना पानी के पका सकते हो ?"

"नहीं, मैं सोचता हूँ कि तुम्हारे उस बर्तन में अभी भी 'मील' बहुत है।"

मैंने बर्तन लिया, आधा 'मील' बाहर निकाल दिया और उससे कहा कि अब इसे पानी से भरो।

उसने एक गिलास लिया और घड़े की ओर चला।

"भाड़ में जाय," उसने कहा। "पानी समाप्त हो गया।"

"हमें अब क्या करना चाहिये ? इस समय कितना अंधेरा है, हमें इस समय कुँआ कहाँ मिलेगा ?"

"बुद्धू, मैं अभी एक मिनट में लाता हूँ।"

उसने दियासलाई ली, बाल्टी के हैंडिल पर एक रस्सी बांधी और कुंये पर गया। कुछ ही मिनटों में वह लौट आया।

"पानी कहाँ है ?" मैंने प्रश्न किया।

"पानी ? बाहर कुंये में।"

"पागल मत बनो। तुमने बाल्टी का क्या किया ?"

"बाल्टी ? वह भी अब कुँये में है।"

"कुंये में ?"

"वहीं।"

"तुम कहना चाहते हो कि तुमने गिरा दी ?"

"हाँ।"

"ओह ! तुम मूर्ख, गधे ? इस प्रकार हम भूखों मर जायंगे। अब हमें पानी कैसे मिलेगा ?"

"हम बटलोयी काम में ला सकते हैं।"

मैंने बटलोयी ली। "रस्सी लाओ," मैंने कहा।

"मेरे पास नहीं है।"

"वह कहाँ है ?"

"वहीं नीचे।"

"नीचे कहाँ ?"

"कुँये में।"

"तो तुमने रस्सी सहित बाल्टी डाल दो।"

"हाँ।"

हम रस्सी के दूसरे टुकड़े की खोज करते घूमते फिरे किन्तु कोई नहीं मिला।

"मैं जाता हूँ और पड़ोसियों से माँगता हूँ," मिश्का बोला।

"तुम, कभी नहीं," मैंने कहा। "घड़ी देखो, देर हो गयी है सब बिस्तर पर चले गये होंगे।"

भाग्य की बात, मुझे बहुत भूख लग रही थी। मैं केवल पानी पीने के लिये ही मरा जा रहा था।

मिश्का बोला—"ऐसा ही होता है। जब पानी नहीं होता तभो तुम्हें प्यास लगती है। यही कारण है कि रेगिस्तान में लोगों को प्यास लगती है—क्योंकि रेगिस्तान में पानी नहीं होता।"

"रेगिस्तान की चिन्ता मत करो," मैंने कहा। "तुम जाओ और रस्सी ढूँढ़ो।"

"मुझे वह कहाँ मिलेगी ? मैंने सब जगह देख डाला। हमको मछली के काँटे वाली रस्सी प्रयोग में लानी चाहिये।"

"क्या वह मजबूत है ?"

"हाँ, मैं सोचता हूँ।"

"क्या होगा यदि वह वैसी न हुई, तो ?"

"यदि वह नहीं होगी तो टूट जायगी।"

हमने काँटे की रस्सी खोली, बटलोयी में बाँधी और कुँये पर गये। मैंने बटलोयी को कुँये में लटका दिया और पानी से भर लिया। वायलिन के तार की तरह रस्सी कड़ी थी।

"वह टूटने जा रही है," मैंने कहा। "तुम देखो।"

"यदि हम बहुत-बहुत सावधानी से खींचें तो वह ऊपर आ जावेगी," मिश्का बोला।

जितनी भी सावधानी से हो सकता था, मैंने उसे ऊपर खींचा। मैंने उसे पानी से ऊपर किया ही था कि एक झटका लगा और बटलोयी गड़ाम।

"क्या वह टूट गयी ?" मिश्का ने पूछा।

"निश्चित, वह टूट गयी। अब हमें पानी कैसे मिलेगा ?"

"चलो समावार टटोलें," मिश्का बोला।

"नहीं। हम समावार को भी सीधे कुँये में गिरा देंगे। परेशान मत हो। फिर, हमारे पास और रस्से नहीं हैं।"

"ठीक है, तब पाट का प्रयोग करो।"

"हमारे पास बहुत से पाट भी फेंकने को नहीं हैं।"

"तब पानी के डिब्बे से प्रयत्न करो।"

"क्या तुम अब शेष रात्रि डिब्बे से पानी भरने-निकालने में व्यतीत करना चाहते हो ?"

"लेकिन अब हम करेंगे क्या ? हमें लप्सी पकाना समाप्त करना है। साथ ही, मुझे बहुत प्यास भी लगी है।"

"तो हमें टीन के मग्घे को व्यवहार में लाना चाहिये," मैंने कहा। "टम्बलर से तो, कुछ भी हो, वह बड़ा ही है।"

हम फिर घर लौटकर गये, मछली के काँटे वाली रस्सी को मग्घे में बाँधा जिससे वह उलट न जाय और कुँये पर लौटे। जब हमने भरपेट पानी पी लिया तब मिश्का बोला—

"यही सदैव होता है—जब तुम प्यासे होते हो तो लगता है पूरा समुद्र सोख लोगे, किन्तु जब पानी पीना प्रारम्भ करते हो तो एक मग्घा भी बहुत होगा। यही कारण है कि मनुष्य लोभी होता है।"

"ठीक है अब बकवास बन्द करो और बर्तन यहाँ ले आओ। हम उसे सीधे कुँये में डाल कर पानी से भर सकते हैं। वह हमें बीस बार जाने आने की भाग दौड़ से बचा देगा।"

मिश्का बर्तन ले आया और कुँये की जगह पर उसे लेकर सीधा खड़ा हो गया। मेरी कोहनी से वह कुँये में गिरते-गिरते बचा।

"मूर्ख गधा," मैंने कहा। "उसको मेरी कोहनी के निकट सीधा रखने में क्या बुद्धिमानी थी ? उसे पकड़े रहो और जितनी दूर रख सको कुंये से दूर रखो नहीं तो उसे उछालते हुए तुम पानी में फेंक दोगे।"

मिश्का बर्तन लिये रहा और कुँये के सामने से हट आया। मैंने उसे भरा और हम घर लौटे। इस समय तक हमारी लप्सी बिल्कुल ठंडी पड़ गयी थी और आग समाप्त हो चुकी थी। हमने उसे फिर स्टोव पर पकने रख दिया। बड़ी देर बाद उसने पकना प्रारम्भ

किया, धीरे-धीरे लप्सी गाढ़ो होती गयी और उसमें से फद्-फद् का शब्द आने लगा।

"सुनो ?" मिश्का बोला। "बहुत जल्दी ही हमें विलक्षण लप्सी खाने को मिलेगी।"

मैंने थोड़ी सी चम्मच में ली और उसे चखा। वह बहुत भद्दी थी। उसमें जलने का सा बहुत बुरा स्वाद आ रहा था; साथ ही उसमें हम नमक डालना भूल गये थे। मिश्का ने भी उसे चखा और तुरन्त थूक दिया।

"नहीं," उसने कहा। "ऐसी वस्तु से तो मैं भूखों मर जाऊँ, यह अधिक उत्तम होगा।"

"यदि तुम इसे खाओगे तो सचमुच मर जाओगे," मैंने कहा।

"किन्तु अब हम करें क्या ?"

"मुझ नहीं पता।"

"गधो !" मिश्का चिल्लाया। "हम मछलियाँ भूल गये।"

"अब हम मछलियों के लिए इस समय रात्रि में उलझन नहीं करेंगे। शीघ्र ही सुबह होने को है।"

"हम उन्हें पकावेंगे नहीं, वरन् भून लेंगे। तुम देखना कि वे एक मिनट में तैयार हो जावेंगी।"

"ओह, ठीक है," मैंने कहा। "किन्तु यदि उसमें इतना समय लगने को हो जितना लप्सी में तो मुझे इससे से अलग रक्खो।"

"तुम देखना कि वे पाँच मिनट में तैयार हो जावेंगी।"

मिश्का बनस्पति घी का बर्तन ले आया और उसमें से कुछ कड़ाही में डाल दिया और कुछ अँगीठी के कोयलों पर जिससे जल्दी आग

जले। घी उफन गया और तुरन्त ही उसमें आग लग गयी। मिश्का ने कड़ाही घसीटी और मैंने पानी डालना चाहा किन्तु घर में एक बूंद पानी नहीं था। अतः जब तक सब घी नहीं जल गया वह बराबर लपट देता रहा। सारा कमरा धुँये से भर गया।

तदनन्तर मिश्का बोला—"अब हमें क्या पकाना है?"

"कुछ नहीं पकाना। खाना तो क्या ठीक बनेगा तुम मकान को भी जलाओगे। दिन भर में तुमने बहुत खाना पका लिया है।"

"किन्तु हम खायेंगे क्या?"

हमने कच्चा आटा फांकने की चेष्टा की किन्तु वह कोई सरल काम नहीं था। हमने कच्चा प्याज खाया किन्तु वह बड़ा तीखा था। हमने बनस्पति घी खाने की चेष्टा की और अपने को लगभग बीमार ही कर लिया। अन्त में हमको मुरब्बे का बर्तन मिला। उसे खाली देखकर हम चुपचाप बिस्तर पर जा लेटे। तब तक बहुत देर हो चुकी थी।

सुबह, हम भूखे भेड़ियों की भाँति जागे। मिश्का ने कुछ लप्सी फिर पकाना चाहा। जब मैंने उसे कुछ मील निकालते देखा तो मैं बहुत बिगड़ा—

"देखो, अब कुछ मत करना," मैंने कहा। "मैं अपनी मकान मालकिन—चाची नताशा के यहाँ जाता हूँ। उससे अपने लिये कुछ लप्सी पकाने को कहूँगा।"

हम चाची नताशा के यहाँ गये और उससे सब वाका कह सुनायी। साथ ही हमने उसके बगीचे में पानी देने का वचन दिया यदि वह हम लोगों के लिये थोड़ी सी लप्सी पकादें। वह हम पर

दयार्द्र हो गयी और हमें थोड़ा सा दूध तथा बन्दगोभी के समोसे दिये। उसने हमारी लप्सी भी पकायी। और हम बिना रुके खाते ही गये—खाते ही गये। चाची नताशा का छोटा लड़का वोवका आँखें फाड़-फाड़कर हमें देखता रहा।

अन्त में हमने जब बहुत खा लिया तब चाची नताशा ने हमें एक काँटा व रस्सी दिया और तब हम बाल्टी व बटलोयी निकालने कुँये पर गये। बहुत देर में हम वे दोनों बर्तन कुंये के बाहर निकाल पाये। किन्तु सौभाग्यवश कुछ भी हानि नहीं हुई थी। उसके अनन्तर मिश्का, छोटे वोवका और मैंने चाची नताशा के बगीचे को सींचा।

मिश्का बोला—"पानी सींचना कुछ कठिन नहीं है। कोई भी कर सकता है। वह सरल है, कुछ भी हो, लप्पी पकाने से बहुत सरल।"

लड्डी

इन गर्मियों में मैंने व मिश्का ने गाँव में बड़ा अच्छा समय व्यतीत किया। मुझे गाँव बहुत पसन्द है। तुम वहाँ हर प्रकार की कौतूहल-पूर्ण बातें कर सकते हो जैसे जंगल में घूमते हुए 'कुम्भी' और 'बेरी' (फल) इकट्ठा करना, नदी में नहाना, धूप में सोना और जब नहाते-नहाते थक जाओ तो मछ-लियाँ पकड़ना। जब माँ की छुट्टियाँ समाप्त हो गयीं और उसके नगर जाने का समय आया तो मैं व

मिश्का बहुत खिन्न हुए। हम इधर-उधर इतने व्यथित हो घूमते फिरते रहे थे कि चाची नताशा को हम पर दया आगयी और उसने माँ को प्रोत्साहित किया कि वह हमें थोड़े दिन को वहीं छोड़ जाय। उसने कहा, मां को चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है, वह उनको भली प्रकार देखभाल करेगी। अत: आखिर में माँ तैयार होगयी और हमारे बिना ही नगर चली गयी। तब मैं तथा मिश्का चाची नताशा के यहाँ ही बने रहे।

चाची नताशा के यहां एक कुतिया थी जिसका नाम दियाना था। जिस दिन माँ गयी उसी दिन उसके बच्चे पैदा होगये। उन छै बच्चों में पांच काले थे—भूरे चिन्हों सहित; और एक भूरा था, केवल उसके कान के पास एक काला सा दाग़ था। जब चाची नताशा ने बच्चों को देखा तो वह बोली—

"हे भगवान्! यह कुतिया तो एक सिरदर्द है। उसके हमेशा बच्चे होते रहते हैं। किन्तु अब मैं उनका क्या करूँगी? मुझे उनको डुबा देना पड़ेगा।"

"ओह! कृपा करके उनको डुबाओ, मत।" हमने प्रार्थना की। "वे भी जिन्दा रहना चाहते हैं। अच्छा हो उनको पड़ोसियों को बाँट दो।"

"पड़ौसियों के पास उनके अपने कुत्ते हैं" चाची नताशा ने कहा "मैं इतने कुत्ते नहीं रख सकती।"

मिश्का और मैं उससे प्रार्थना करते रहे और बहस भी। हमने उससे वायदा किया कि पिल्ले जरा भी बड़े हो जावेंगे तो हम अपने आप उनका स्थान ठीक कर देंगे। अन्त में चाची नताशा ने स्वीकार कर लिया और कहा कि हम उन्हें रख सकते हैं।

शीघ्र ही वे बड़े हो गये और बगीचे में इधर-उधर दौड़ लगाने

लगे तथा बड़े कुत्तों की तरह भोंकने लगे। मिश्का और मुझे उनके साथ खेलने में बड़ा आनन्द मिलता था।

चाची नताशा निरन्तर हमारे उस वायदे का ध्यान दिलाती रहतीं कि हम उन्हें दे आवेंगे किन्तु हमें दियाना का ध्यान कर दुःख होता था। अपने बच्चों के बिना वह बहुत व्यथित होगी।

"मुझे तुम्हारी बात माननी ही नहीं चाहिए थी," चाची नताशा ने कहा। "अब ये सब कुत्ते मेरे पास रह जावेंगे। इतनों को खिलाऊँगी कैसे ?'

अतः मिश्का व मैं पिल्लों के लिये स्थान खोजने में व्यस्त हो गये। यह कैसा दुर्भाग्य था कि उन्हें कोई नहीं चाहता था। हम घर-घर, न जाने कितने दिन, घूमते फिरे और कितना कष्ट सहा तब किसी प्रकार तीन को ठिकाने लगा सके। तब और दो को कुछ लोगों ने, निकटवर्ती गाँव में, ले लिया। अब जो बचा—वह पिल्ला वह था जिसके कान ‹‹ काला चिन्ह था। वह हमें सर्वाधिक प्रिय था। उसका ऐसा अच्छा चेहरा था और ऐसी सुन्दर आँखें—बड़ी-बड़ी और गोल जैसे वह सदैव किसी विस्मय में रहता हो। मिश्का उससे पृथक हाना सहन नहीं कर सकता था अतः उसने अपनी माँ को एक पत्र लिखा—

"प्यारी माँ," उसने लिखा। "कृपा करके मुझे एक नन्हा सा पिल्ला रखने की अनुमति दे दो। वह बड़ा प्यारा है। वह एकदम भूरा है, केवल–एक कान को छोड़कर जिसमें काला निशान है। मैं उसे बहुत प्यार करता हूँ। यदि तुम उसे मुझे रखने दोगी तो मैं वचन देता हूँ कि मैं बहुत भला मानूंगा और स्कूल में अच्छे नम्बर लाऊँगा और मैं उसे सिखाऊँगा जिससे वह एक अच्छा बड़ा कुत्ता बनेगा।"

हमने उसका नाम 'लड्डी' रक्खा। मिश्का ने कहा कि वह एक ऐसी किताब लावेगा जिसके द्वारा वह कुत्तों को ठीक प्रकार से पालना सीखेगा।

× × × ×

बड़े दिन बीत गये किन्तु मिश्का की माँ के यहाँ से कोई भी पत्र नहीं आया। अन्त में जब उसका पत्र आया भी तो उसमें लड्डी के सम्बन्ध में कुछ नहीं लिखा था। उसमें केवल यह लिखा था कि हम लोग तुरंत घर आ जावें क्योंकि हम लोगों के कारण वह चिन्तित है। मिश्का और मैं उसी दिन जाने को तत्पर हो गये। स्वीकृति की प्रतीक्षा न करते हुए, उसने लड्डी को साथ ले जाने का निश्चय किया; क्योंकि वह कहता था कि इसमें माँ का दोष है, न कि उसका। उसने उसके पत्र का उत्तर क्यों नहीं दिया।

"तुम उसको अपने साथ नहीं ले जा सकते," चाची नताशा ने कहा। "कुत्तों को रेलगाड़ी में साथ लेजाने की अनुमति नहीं है। यदि कन्डक्टर तुमको पकड़ेगा तो तुम्हें जुर्माना देना पड़ेगा।"

"कन्डक्टर उसे देख ही नहीं पावेगा," मिश्का ने उत्तर दिया। "हम उसको अपने सूटकेस में छिपा लेंगे।"

मैंने मिश्का की सब वस्तुयें अपने चमड़े के झोले में भर लीं; लड्डी के साँस लेने के लिये हमने सूटकेस में अनेक छेद कर लिये; उसमें रोटी का टुकड़ा व खाने का अन्य सामान रख दिया ताकि यदि उसे भूख लगे तो वह खाले। इस प्रकार तैयार होकर हम स्टेशन चल दिये। चाची नताशा हम लोगों को विदा करने आयीं।

स्टेशन तक, मार्ग भर लड्डी ऐसा बना रहा जैसे चूहा। जब चाची नताशा हम लोगों का टिकट मोल लेने गयीं तो हमने सूटकेस खोला

ओर देखना चाहा कि वह क्या कर रहा है। वहाँ वह चुपचाप बैठा था और हमारी ओर आँखें मटका रहा था।

"अच्छे कुत्ते!" मिश्का चिल्लाया। "चालाक बच्चे! कैसे रहना चाहिये, यह वह जानता है।"

हमने उसे थोड़ा थपथपाया और सूटकेस बन्द कर दिया। ट्रेन आयी; जब चाची नताशा ने देखा कि हम लोग ठीक से अन्दर बैठ गये तब उसने हमसे नमस्ते किया। डब्बे के शान्त कोने में हमने एक खाली सीट ले ली। डिब्बे में एक ही यात्री—एक वृद्ध महिला थी जो हमारे सामने की सीट पर पड़ी सो रही थी। मिश्का ने सूटकेस सीट के नीचे सरका दिया। ट्रेन ने फक् फक् की और हम लोग चल दिये।

× × × ×

प्रारम्भ में तो सब ठीक रहा किन्तु अगले स्टेशन पर यात्रियों की एक भीड़ घुस आयी। एक लम्बे पैरों वाली लड़की जिसके बालों की चोटियाँ थीं हमारे डिब्बे के उस एकान्त कोने में अपनी शक्ति भर आवाज से चीखती चली आई।

"चाची नद्या! चाचा फेद्या! यहाँ एकान्त स्थान है, जल्दी आ जाओ।"

चाची नद्या और चाचा फेद्या—गाड़ी में बीच के रास्ते से होकर हमारी सीट पर आ गये।

"जल्दी करो! जल्दी करो!" वह चिल्लाती रही। "जल्दी बैठो। मैं चाची नद्या के इधर बैठ जाऊँगी और चाचा फेद्या लड़कों के बराबर बैठ जायेंगे।"

"हुश ! लेनोचका, इतना शोर मत करो।" चाची नद्या ने कहा और वे दोनों सामने की सीट पर उस वृद्धा-स्त्री के बराबर बैठ गयीं। चाचा फेद्या ने अपना सन्दूक सीट के अन्दर सरका दिया और हमारे बराबर बैठ गये।

लेनोचका ने ताली बजायी और बोली—"देखो, अब यह अच्छा है न—तीन पुरुष एक ओर; और तीन स्त्रियाँ दूसरी ओर।"

मिश्का और मैं घूम गये और खिड़की के बाहर देखने लगे। थोड़ी देर तक केवल ट्रेन के पहियों की घरघराहट और आगे के इंजिन की भक-भक की आवाज आती रही। तभी अचानक सीट के नीचे चीं चीं की आवाज आनी प्रारम्भ हो गयी और साथ ही चूहे की तरह की खुटर-खुटर।

"यह लड्डी है," मिश्का बुदबुदाया। "क्यों, यदि कन्डक्टर इस समय आ जाय ?"

"सम्भवत: वह एक मिनट में शान्त हो जायगा।"

"किन्तु मानलो, वह, भोंकना प्रारम्भ करदे।"

वह चींचीं निरन्तर होती रही। निश्चित ही सूटकेस में खंरोंच-खंरोंच कर वह एक छेद बना रहा होगा।

"ओह ! चाची ! चाची ! कोई चूहा !" उस शैतान लड़की ने अपने पैर उठाते हुये चिल्लाकर कहा।

"मूर्ख," उसकी चाची ने कहा। "ट्रेन में किसी ने चूहा सुना भी है, कभी ?"

"ओह ! लेकिन यहाँ है। तुम सुन नहीं रही हो ?'

मिश्का, जितनी जोर से खाँस सकता था, खाँसा और उसने अपने पैरों से सूटकेस को ठोकर दी। एक-दो मिनट तक लड़की चुप रहा। और फिर धीरे-धीरे भन-भन करता रहा। प्रत्येक व्यक्ति आश्चर्य से उधर देख रहा था। किन्तु मिश्का—खिड़की के शीशे पर उंगली चलाता रहा और शीशे पर खड़-खड़ की आवाज करता रहा। चाचा फेद्या घूमा और मिश्का को घूर कर देखने लगा।

"लड़के ! उस खड़ खड़ को बन्द कर दो।"

तभी आगे की गाड़ी में किसी ने एकार्डियन (एक वाजा) बजाना प्रारम्भ कर दिया; किन्तु थोड़ी देर में ही उसका बजना बन्द हो गया।

"मैं कहता हूँ," मिश्का ने मुझसे धीरे से कहा— "हम लोग गाना गाना प्रारम्भ करें।"

"ओह ! लेकिन ये लोग हमारे सम्बन्ध में क्या सोचेंगे ?" मैंने विरोध करते हुए कहा।

"तब ठीक है। हमको कविता कहनी चाहिए मानो हम लोग उसे याद कर रहे हों।"

"ठीक है, तुम प्रारम्भ करो।"

सीट के अन्दर फिर कोई खटरपटर हुई। मिश्का ने जोर से खाँस कर शीघ्र ही प्रारम्भ कर दिया :

चरागाह में हरियाली छाई है।
चमक रहा सूरज होकर अति उज्ज्वल
स्वागत बसन्त के अबाबील,
हो रहा सभी का मन प्रफुल्ल

यात्री हँस दिये और किसी ने कहा—"कहाँ तो शीघ्र ही शरद्-ऋतु प्रारम्भ होने को है और इसमें हम सुन रहे हैं बसन्त।"

लेनोचका मूर्खों की भांति दाँत निपोर कर हंस दी।

"क्या ये लड़के मसखरे नहीं हैं।" वह बोली। "अब जब कि ये चूहे की नकल नहीं कर रहे और खट्-पट् नहीं कर रहे हैं, तो कविता पढ़ रहे हैं।"

किन्तु मिश्का ने कुछ भी नहीं सुना। ज्यों ही वह एक कविता समाप्त करता, तुरन्त दूसरी प्रारम्भ कर देता और पैरों से थाप देता जाता :

हरा भरा मेरा ताजा उपवन,
भीनी सुगन्ध उड़ रही 'लिलक' फूलों की
कोनों में जिसके ठंडी ठंडी छाया
'चेरी' औ सुन्दर नीबू के झाड़ों से शोभित।

"लो, अब गर्मियाँ आगयीं," यात्री ने उपहास किया। "'लिलक' के फूल खिल रहे हैं।"

अगले मिनट ही मिश्का शीत-ऋतु में पहुँच गया :

आया शीत, कृषक मन फूला,
दीख रहा फिर निज स्लेज पर,
खच्चर भी उसका प्रसन्नता से भर
है मुड़क रहा फ़िर ढके बर्फ के पथ पर।

उसके बाद उसने फिर सब मिला दिया और शरद्-ऋतु तुरन्त शीत के पश्चात आगयी :

छाई कितनी घोर उदासी,
दिखते हैं बादल ही बादल।

अति प्रातः से मेंह बरस कर
जमा रहा दरवाज़े पर जल ।

तभी लड्डी ने एक दयनीय कराह का शब्द प्रकट किया और मिश्का ने अपनी पूरी आवाज़ भर कर जल्दी-जल्दी कहना प्रारम्भ किया :

इतनी जल्दी क्यों है पतझड़ ।
लाये चुभती हवा साथ में,
अरे अभी तो सब व्याकुल हैं
प्रकाश और ताप की चाह में ।

वह वृद्ध महिला जो सामने की सीट पर अब तक सो रही थी, उठ बैठी और अपना सिर झुकाते हुए बोली—"सच ! लड़के, सच ! शरद-ऋतु बहुत पहले आगयी है । छोटे बच्चे धूप में अधिक देर तक खेलना चाहेंगे । किन्तु गर्मियां समाप्त होगयी हैं । तुम बहुत अच्छी तरह कहते हो, लड़के ! सचमुच बहुत अच्छी तरह ।"

वह आगे आकर झुकी और उसने मिश्का का सिर थपथपाया । सीट के अन्दर मिश्का ने मेरे पैर पर ठोकर दी—यह कहने के लिए कि उसके बाद अब मैं प्रारम्भ करूँ । किन्तु मैंने जीवन में कभी कविता कहने के बारे में सोचा भी न था । जो कुछ मेरे मस्तिष्क में उस समय आया वह एक गीत था जिसको मैं अपनी पूरी आवाज़ में चीखता रहा :—

कितनी सुखदायक मेरी छोटी कुटिया,
ऊपर से नीचे तक है बिलकुल नई बनी,
'मैपिल' पत्तों के फर्शों पर 'पाइन' की दीवारों तक,
देखो तख्तों की छत तक यह............।

चाचा फेद्या गुर्राया—"हे भगवान् ! यह आया दूसरा बकने वाला।"

लेनोचका ने घृणा से ओंठ फुलाते हुए कहा—"उफ् ! ऐसे भद्दे गाने की कल्पना तो करो !"

मैंने उस गीत को दो बार दोहराया और तब दूसरा प्रारम्भ किया :

जेल में अपनी अँधेरी कोठरी में,
इस तरह बैठा हुआ मैं;
जन्म ले स्वच्छन्दता से लार्क के सम,
मानों फँसी कोई चील आकर पींजड़े में।

"लड़के ! जिस तरह तुम लोगों को तंग कर रहे हो, उससे तुम्हें निश्चित ही जेल में बन्द कर देना चाहिये।" चाचा फेद्या बड़बड़ाया।

"लेकिन फेद्या," चाची नाद्या ने कहा—"मैं कोई कारण नहीं समझती कि यदि लड़के चाहते हैं तो उन्हें कवितायें क्यों न पढ़ने दी जावें ?"

किन्तु चाचा फेद्या ने बेचैनी दिखाते हुए अपने मस्तक को दबाया, जैसे उसके सिर में दर्द हो रहा हो। मैं सांस लेने को रुका और तब मिश्का ने प्रारम्भ कर दिया। इस बार थोड़ा धीरे-धीरे और भावों को व्यक्त करते हुए :

रजनी यूक्रेनियन की कितनी निस्पन्द है,
झिलमिलाते तारे, औ आकाश स्वच्छन्द है।

यात्री हँसी में चिल्ला उठे—"ठीक है, ठीक है, अब हम यूक्रेटाइन में हैं। देखें, आगे यह हमें कहाँ ले जाता है ?"

आगे गाड़ी के रुकने पर और यात्री आ गये। "उस लड़के को

गाते हुए सुनो।" उन्होंने एक दूसरे से कहा। "यात्रा उदास नहीं रहेगी।"

अब तक मिश्का काकेशस में था—

चरण चूमता काकेशस तब मेरे,
जब होता खड़ा गर्त्त के तट पर गहरे;

वह इस प्रकार समस्त विश्व का चक्कर लगा आया। जब वह दूर उत्तर दिशा में था तभी बेसुरा हो गया और अब मेरा अवसर आया। मैं किसी कविता को याद ही न कर पाया; आखीर मैंने दूसरा गीत प्रारम्भ किया—

घूमा मैंने जगत जहाँ तक सारा,
पाया नहीं कहीं भी प्रेम सहारा;

लेनोचका हँसी में फूट पड़ी। "वह केवल गीत जानता है।" उसने चिल्ला कर कहा।

"मैं क्या करूँ यदि मिश्का ने सब कवितायें पढ़ डाली हैं तो," मैंने कहा और दूसरा गाना प्रारम्भ कर दिया:

देखो मेरा छोटा सा सिर,
है प्रसन्न मेरे कंधों पर कैसा;
किन्तु बड़े असमंजस में हूँ,
कब तक यह रह सकता ऐसा।

"तुम, कभी नहीं," चाचा फेद्या ने कहा—"यदि तुम इस प्रकार लोगों को रुष्ट कर दोगे तो कभी नहीं।" उसने अपना मस्तक, एक उछ्वास के साथ दाबा, अपने सूटकेस को सीट के नीचे से निकाला और चला गया।

× × ×

ट्रेन नगर के पास पहुँच रही थी। यात्री उठे और अपने सामान को संभालते हुए दरवाजे की ओर बढ़े। हमने भी अपना सूटकेस और थैला निकाला और औरों के पीछे हो लिये तथा प्लेटफार्म पर उतर गये। उस समय हमारे सूटकेस से कोई आवाज़ नहीं आ रही थी।

"अब देखा न," मिश्का बोला, "जब कोई भय नहीं है तब यह चुप है; किन्तु जब इसे शान्त रहना चाहिए था तब इसने वह सब हल्ला मचाया।"

"सम्भवतः उसका दम घुट रहा होगा। अच्छा हो कि हम उसे देखें" मैंने कहा। मिश्का ने सूटकेस नीचे रखकर उसे खोला। लड्डी वहाँ नहीं था। उसमें कुछ किताबें थीं, पेंड, एक तौलिया, एक साबुन, एक सींग का बना गोल चश्मा, बुनाई की सलाइयाँ; किन्तु कोई कुत्ता नहीं।

"लड्डी कहाँ है ?" मिश्का चिल्लाया।

"हम गलत सूटकेस ले आये।"

मिश्का ने उसका निरीक्षण किया। "हाँ, हमारे में छेद थे; इसके अतिरिक्त वह गहरा भूरा था और यह पीला है। मैं भी क्या गधा हूँ कि किसी दूसरे का सूटकेस ले आया।"

"हमको भागकर स्टेशन जाना चाहिये, सम्भव है हमारा बैग अभी भी सीट के नीचे हो। ट्रेन अभी भी खड़ी थी किन्तु हम यह भूल गये कि किस गाड़ी में हमने यात्रा की थी, अतः हम पूरी गाड़ी भर नीचे की सीटें देख गये। किन्तु हमारे सूटकेस का कहीं कोई चिह्न न था।

"कोई उसे अवश्य ही ले गया," मैंने कहा।

"एक बार गाड़ी को फिर देख लूं," मिश्का ने सुझाया।

हमने एक बार फिर सारी गाड़ी की तलाशी ली किन्तु हमारे सूटकेस का वहाँ कोई चिह्न तक नहीं मिला। हम ताज्जुब में ही थे कि क्या करें, इतने में ही एक कन्डक्टर आया और हमें बाहर खदेड़ गया।

हम घर गये। मैं अपना झोला लेने मिश्का के घर गया। मिश्का की माँ ने देखा कि कोई वस्तु खो गयी है।

"क्या उलझन है ?" उसने प्रश्न किया।

"हमारा लड्डी खो गया।"

"लड्डी कौन ?"

"वह पिल्ला जिसे हम गाँव से लाये थे। क्या तुमको हमारा पत्र नहीं मिला ?"

"नहीं।"

"ठीक, मैंने तो उसके सम्बन्ध में तुमको सब कुछ लिखा था।" तब मिश्का ने अपनी माँ को सब कहानी सुना दी। कैसा अच्छा पिल्ला था, कैसे हमने एक सूटकेस में उसे पैक किया और फिर कैसे वह सूटकेस खो गया। उस कथा को समाप्त करते-करते उसके आँसू छलछला आये। मुझे पता नहीं कि उसके अनन्तर क्या हुआ क्योंकि तत्पश्चात् मैं घर चला गया।

× × ×

दूसरे दिन मिश्का मेरे घर आया और बोला :

"तुम जानते हो ? इससे अब हम चोर सिद्ध हुए।"

"यह कैसे ?"

"क्योंकि मैं किसी का सामान ले आया ।"

"किन्तु वह तो तुम गलती से लाये ।"

"वह मैं जानता हूँ। किन्तु कोई यह भी सोच सकता है कि वैसा हमने जान-बूझ कर किया हो। इसके अतिरिक्त, इसका मालिक इसकी खोज में होगा। किसी भी तरह इसे हमें उसे लौटाना चाहिये ।"

"उसे तुम कैसे ढूँढ़ोगे ?"

"मैं सारे नगर में नोटिस लगाऊँगा। उसका स्वामी आवेगा और अपने सूटकेस को ले जावेगा ।"

"यह ठीक है," मैंने कहा। "हमको अब नोटिस लिखने चाहिये ।"

हमने कागज़ के टुकड़े काटे और उन पर स्वच्छतापूर्वक लिखा :

"मिला है, एक सूटकेस, ट्रेन में—मिशा कोज़लोव, पेश्चानया स्ट्रीट नं० ८, एपार्टमेंट नं० ३, को मिलो ।"

जब हमने बीस नोटिस लिख लिये, तो मैंने कहा :

"अब हमको एक नोटिस लड्डो के लिए भी लिखना चाहिए। ऐसे ही गलती से कोई हमारा सूटकेस भी ले गया होगा।

"निश्चित, वह वही व्यक्ति होगा जो हमारे बराबर बैठा था," मिश्का ने कहा।

हमने कागज़ के कुछ और टुकड़े काटे और उनके ऊपर दूसरा नोटिस लिखा—

"खोया है, सूटकेस में एक पिल्ला—कृपा करके मिशा कोज़लोव

को लौटा दीजिये या पेश्चानया स्ट्रीट, नं० ८, एपार्टमेंट नं० ३ को लिखिये।"

हमने इस प्रकार के भी लगभग बीस नोटिस लिखे और उन्हें चिपकाने बाहर गये। हमने उन्हें बिजली के खम्भों व दीवालों में चिपकाया। बहुत जल्दी हमारे वे सब समाप्त हो गये तब हम और लिखने घर लौटे। हम उन्हें लिखने में व्यस्त थे कि तभी घंटी बजी। मिश्का दरवाजा खोलने को भागा। एक अजनबी महिला अन्दर आयी।

"क्या मैं मिशा कोज़लोव से बात कर सकती हूँ," उसने कहा।

"मैं ही मिशा कोज़लोव हूँ," विस्मय में मिश्का ने उत्तर दिया। एक अपरिचित स्त्री उसका नाम कैसे जान सकती है?

"मैंने तुम्हारा नोटिस पढ़ा," उसने कहा। "मेरा एक सूटकेस ट्रेन में खोगया है।"

"एक सूटकेस?" मिश्का ने प्रसन्न होकर कहा। "एक क्षण रुकिये, मैं जाकर अभी लाता हूँ।" वह दूसरे कमरे में भागा २ गया और सूटकेस लेकर लौटा।

"यह है।"

उस महिला ने उसे देखा और सिर हिला दिया। "नहीं" उसने कहा—"यह मेरा नहीं है।"

"तुम्हारा नहीं है," मिश्का चिल्लाया।

"मेरा बड़ा था। इसके अतिरिक्त, वह काला था; यह तो हलका भूरा है।"

"तब मुझे खेद है, हमें आपका नहीं मिला। केवल यही है जो हमें मिला था। किन्तु यदि हमें आपका मिल जावेगा तो हम प्रसन्नता पूर्वक उसे लौटा देंगे।"

वह महिला हंसी।

"तुम लोग बड़े मसखरे जोड़े हो। पायी हुई वस्तु को लौटाने का यह ढंग नहीं है। जो भी तुमसे मांगे उसे तुम्हें सूटकेस दिखाना नहीं चाहिए। तुमको उस व्यक्ति से प्रश्न करना चाहिए कि उसने किस प्रकार का सूटकेस खोया है और उसमें क्या था। यदि वह ठीक उत्तर देता है तब तुमको सूटकेस लौटाना चाहिए। अन्यथा कोई बेईमान आदमी उस वस्तु को ले जावेगा जो उसकी नहीं है। संसार में, तुम जानते हो, हर प्रकार के लोग हैं।"

"हमने तो ऐसा कभी सोचा भी न था," मिश्का बोला।

"देखो ? हमारे नोटिसों ने कितनी जल्दी अपना काम किया।" जब वह महिला चली गयी तो मिश्का मुझसे बोला। "हमने उनका चिपकाना पूरी तरह समाप्त भी नहीं किया था कि लोगों

का आना प्रारम्भ होगया। इस प्रकार तो हमको लड्डी शीघ्र ही मिल जावेगा।"

उस दिन और कोई नहीं आया किन्तु दूसरे दिन घंटी बहुत बार बजती रही। मिश्का व मुझे आश्चर्य हो रहा था। हम कभी सोच भी नहीं रहे थे कि इतने लोग ट्रेन में सूटकेस भूल आये। किन्तु सही मालिक अभी तक नहीं आया। हर प्रकार के व्यक्ति आये। एक आदमी आया जो अपना बैग ट्राम में भूल आया था और दूसरा 'कीलों का एक बक्स' बस में छोड़ आया था, और एक वृद्ध महिला जिसका एक ट्रंक चोरी चला गया था—वे सब अपनी वस्तुयें मिश्का के यहाँ पाने की आशा में आये। उनको सोचना चाहिए था कि हमको एक सूटकेस मिला था तो क्या हमको उनकी वे सब वस्तुयें भी मिल जानी चाहिए थीं।

"मैं सोचता हूँ कि किसी को हमारा बैग भी मिलेगा," मिश्का बोला।

"हाँ, वे कम से कम एक सूचना तो भेजेंगे, क्यों नहीं? उसके लिये हम अपने आप चले जावेंगे।"

× × × ×

एक दिन मैं व मिश्का घर पर बैठे थे तभी किसी ने द्वार खट-खटाया। मिश्का दौड़ा और एक पत्र लेकर लौटा। वह बड़ा उद्विग्न हो रहा था।

"सम्भवतः यह लड्डी की कोई सूचना है," उसने कहा, उस पते को देखकर जो लिफाफे पर लिखा हुआ था और जो बहुत तरह के टिकट व पोस्ट की मुहरों से भरा हुआ था।

"यह हमारे लिये कदापि नहीं है," उसने अन्त में कहा। "यह माँ का है। किसी बड़े तेज पढ़ने वाले ने इसे लिखा होगा, पता लिखने के ढंग व अशुद्धियों को देखकर। 'पेश्चनाया स्ट्रीट' में दो अशुद्धियाँ। उसने लिखा है--पेश्चनाया के स्थान पर पेच्नाया स्ट्रीट। यहाँ हम तक पहुँचने के पूर्व पत्र ने निश्चित सारे नगर की यात्रा की होगी। माँ, यह एक पत्र है जिसको किसी व्याकरण जानने वाले ने लिखा है।"

"मैं किसी व्याकरण जानने वाले को नहीं जानती।"

"ठीक है, पढ़ो।"

मिश्का की माँ ने वह लिफाफा खोला और पत्र अपने आप पढ़ने लगी :

"प्यारी माँ, कृपा करके मुझे एक नन्हा सा पिल्ला रखने की अनुमति दे दो ! वह बड़ा प्यारा है। वह पूरी तरह भूरा है, केवल, एक कान को छोड़कर जिसमें काला निशान है और मैं उसे बहुत प्यार करता हूँ।"

"क्यों," मिश्का की माँ ने कहा। "यह तो तुम्हारा अपना ही पत्र है।"

मैं ठहाका मार कर हँस दिया और मिश्का की ओर देखता रहा। वह चुकन्दर की जड़ की भाँति लाल होगया और कमरे के बाहर चला गया।

मिश्का और मैंने लड्डी को पाने की समस्त आशायें छोड़ दी थीं किन्तु मिश्का उसे नहीं भूल पाता था। वह बहुधा उसके सम्बन्ध में बातें करता।

"मैं आश्चर्य में हूँ कि वह इस समय कहाँ होगा।" वह कहता। "वह कैसा आदमी होगा जिसे वह मिला होगा? मेरा विश्वास है कि वह ऐसा आदमी न होगा जो कुत्तों को मारता हो। यह भी हो सकता है कि लड्डी को किसी ने सूटकेस से न निकाला हो और वह, भूख ही से, उसमें मर गया हो? मुझे यह ज्ञात होजाय कि वह जीवित है और प्रसन्न, तो वह मुझे न भी मिले तब भी मैं उसकी चिन्ता नहीं करूँगा।"

शीघ्र ही छुट्टियाँ समाप्त होगयीं और स्कूल खुल गया। हम प्रसन्न थे क्योंकि हमें वह अच्छा लगता था; साथ ही कुछ काम न करने के कारण हम ऊब भी रहे थे।

स्कूल प्रारम्भ होने के पहले ही दिन मैं बहुत सवेरे उठा, नये-नये कपड़े पहने और मिश्का के यहाँ भागा भागा गया कि उसे जगाऊँ। मैं उसे सीढ़ियों पर मिला। वह, मुझे जगाने आ रहा था।

हम सोच रहे थे कि हमें वे ही अध्यापक मिलेंगे जो पिछली बार थे किन्तु जब हम स्कूल पहुँचे तो हमें लगा कि हम वहाँ नये हैं। 'वेरा एलेक्जेन्ड्रोवना'—हमारी पुरानी अध्यापिका दूसरे स्कूल को स्थानान्तरित कर दी गयी थीं। हमारी नयी अध्यापिका का नाम 'नदेज़दा विक्टोरोवना' था।

नदेजदा विक्टोरोवना ने हमें टाइम-टेबुल लिखाया और बताया कि हमें किन-किन पुस्तकों की आवश्यकता होगी और तब परिचय प्राप्त करने के लिये वह प्रत्येक के पास आयीं। तब उसने हमसे पूछा कि क्या हमको पिछली कक्षा की पुश्किन की कविता—'विन्टर' (शीतऋतु) याद है। हमने कहा—"हाँ"

"तुमको अभी भी याद है?" उसने प्रश्न किया।

पूरी कक्षा चुप थी। मैंने मिश्का को कोंचा और कहा—"तुम्हें याद है, क्या नहीं ?"

"हाँ।"

"तब हाथ उठाओ।"

मिश्का ने अपना हाथ उठा दिया।

"बहुत अच्छा, इधर आओ और सुनाओ," अध्यापिका ने कहा।

मिश्का गया और उसकी डेस्क के निकट खड़े होकर भावपूर्ण ढंग में कविता पढ़ने लगा—

आया शीत कृषक मन फूला,
दीख रहा फिर निज स्लेज पर।
खच्चर भी उसका प्रसन्नता से भर कर,
मुड़क रहा है ढके बर्फ से पथ पर॥

मैंने देखा कि अध्यापिका जी उसको गम्भीरतापूर्वक देख रही थीं। उनके मस्तक पर सिकुड़न पड़ रही थी जैसे वे कुछ बात याद कर रही हों। अचानक उन्होंने उसे रोक दिया और कहा :

"एक मिनट, अब मुझे याद आया। क्या तुम वही लड़के ता नहीं हो जिसने इस गर्मी में ट्रेन में कवितायें पढ़ी थीं ?"

मिश्का लाल पड़ गया। "हाँ, वह मैं ही था," उसने कहा।

"हूँ। ठीक है, इतना पर्याप्त है। क्लास समाप्त होने के बाद कामन-रूम में आओ। मैं तुमसे कुछ बातें करना चाहती हूँ।"

"क्या मैं कविता समाप्त कर लूँ ?" मिश्का ने प्रश्न किया।

"नहीं। मैं समझ गई कि तुम उसे भली प्रकार जानते हो।"

मिश्का बैठ गया और उसने सीट के नीचे मेरे पैर में ठोकर लगायी।

"यह वह है। वह उस लड़की लेनोचका के साथ थी और उस व्यक्ति के साथ जो हमारे प्रति ऊट-पटाँग व्यंग कह रहा था। चाचा फेद्या, वे उसे पुकारती थीं। याद है?"

"हाँ," मैंने कहा। "मैंने तो उसी मिनट, जब तुमने कविता कहना प्रारम्भ किया था, उसे पहचान लिया था।"

"अब मुझे क्या करना होगा?" मिश्का ने उलझन में कहा। "उसने मुझे पीछे रुकने को क्यों कहा है? मेरा विश्वास है कि रेल में उद्दण्डता करने के सम्बन्ध में वह मुझसे कुछ कहेगी।"

हम इतनी उलझन में थे कि हमने यह भी नहीं देखा कि पाठ कैसे समाप्त हो गया। कक्षा छोड़ने में हम अन्तिम थे। मिश्का कामन-रूम में गया और मैं बाहर बरामदे में खड़ा रहा। अन्त में वह बाहर आया।

"हाँ, उसने क्या कहा?"

"हुआ यह कि जिसे हम लाये हैं वह उसका सूटकेस है; हाँ, उसका नहीं तो उसके साथ के उस व्यक्ति का, वह तो एक ही बात है। यह ठीक है कि वह उनका है क्योंकि उसने ठीक वे ही वस्तुयें बतायी हैं जो उसमें हैं। उसने मुझसे कहा है कि मैं उसे संध्या को उसके यहाँ ले आऊँ। यह उसका पता है।"

उसने एक कागज़ का टुकड़ा दिखाया जिसमें पता लिखा हुआ था। हम घर लपके और सूटकेस लेकर बाहर निकल आये।

बिना कठिनाई के हमें मकान मिल गया और हमने घंटी

बजायी। जिस लड़की को हमने ट्रेन में देखा था, उसी लेनोचका के द्वारा द्वार खोला गया।

उसने हमसे पूछा कि हम किसे चाहते हैं किन्तु हम अपनी नयी अध्यापिका का नाम भूल गये थे अतः हम नहीं सोच पा रहे थे कि किसको पूछें।

"आधे मिनट......।" मिश्का बोला। "वह, इस पते पर लिखा होगा। यह है—नदेजदा विक्टोरोवना।"

"ओह," लड़की ने कहा, "तुम हमारा सूटकेस ले आये हो! अन्दर आओ।" उसने हमको एक कमरा बताया और पुकारने लगी :

"चाची नाद्या, चाचा फेद्या; सूटकेस लेकर लड़के आ गये हैं।"

नदेजदा विक्टोरोवना एवं चाचा फेद्या अन्दर आये। चाचा फेद्या ने सूटकेस खोला, अपना चश्मा खींचा और नाक पर चढ़ा लिया।

"अन्त में, मेरा प्यारा चश्मा," वह चिल्लाया और हर ओर झांकता रहा। "मैं बहुत प्रसन्न हूँ, मैंने उसे पा लिया। मुझे नये चश्मों से आराम नहीं मिलता है।"

"जैसे ही यह हमको मिला हमने समस्त नगर में नोटिस चिपका दिये कि हम गलती से गलत सूटकेस ले आये हैं," मिश्का ने समझाया।

"ओह, हमने नोटिस नहीं पढ़े," चाचा फेद्या ने कहा—"ऐसा ज्ञात होता है। भविष्य में यदि कभी मैं कोई वस्तु भूलूँगा तो सब नोटिस अवश्य पढ़ूँगा।"

तभी लेनोचका के पीछे से एक कुत्ता भागता हुआ आया। वह सब भूरा था केवल उसके एक कान में काला निशान था।

"देखो !" मिश्का बुदबुदाया ।

पिल्ले ने अपने कान फड़फड़ा दिये । एक ओर अपना सिर झुकाकर वह हमें देखता रहा ।

"लड्डी," हम चिल्लाये ।

लड्डी ने प्रसन्नता की एक कराह भरी और हमारी ओर लपका । वह हम पर कूदा और उछलते हुआ सा भौंकता रहा । मिश्का ने उसे उठा लिया और थपथपाया ।

"लड्डी ! हमारे प्यारे लड्डी ! कुछ भी हो, तुम हमें भूले नहीं ।"

लड्डी ने अपना मुँह आगे बढ़ा दिया और मिश्का ने उसकी नाक को चूमा । लेनोचका—ताली पीट कर हँसती रही ।

"जिस सूटकेस को हम गाड़ी से लाये, यह उसमें था । निश्चित ही, गलती से हम, तुम्हारा ले आये होंगे । यह सब चाचा फेद्या का दोष है ।"

"हाँ," चाचा फेद्या ने कहा । "वह सब मेरा दोष है । मैंने तुम्हारा सूटकेस लिया और पहले बाहर निकल आया । और तुम मेरा ले गए, यह सोचकर कि यह तुम्हारा है ।"

उन्होंने हमारा सूटकेस दिया जिसमें लड्डी ने यात्रा की थी । मैं देख रहा था कि लेनोचका लड्डी को नहीं छोड़ना चाहती थी । ऐसा लग रहा था कि वह चिल्लाना चाहती थी किन्तु मिश्का ने वचन दिया कि अगले साल जब दयाना पिल्ले देगी तो हम उनमें से एक सर्वाधिक सुन्दर छाँट कर उसे ला देंगे ।

"सच ? तुम भूलोगे नहीं, कि भूल जाओगे ?" उसने प्रार्थना की ।

हमने कहा कि हम नहीं भूलेंगे । तब हमने विदा ली और चले

आये। मिश्का लड्डी को ले चला और इधर-उधर घुमा-घुमा कर उसकी प्रत्येक वस्तु देखता रहा। यह दिखाई देता था कि वह भाग न जावे इस भय से, लेनोचका ने उसे हर समय, घर पर ही रक्खा था।

जब हम घर आये तो, हमने बहुत से लोगों को हमारी प्रतीक्षा करते देखा।

"तुम्हीं वे लड़के हो जिनको सूटकेस मिला है ?" उन्होंने प्रश्न किया।

"हाँ," हमने कहा—"किन्तु अब हमारे पास कोई सूटकेस नहीं है। उसको हमने उसके मालिक को लौटा दिया है।"

"किन्तु तब तुमने नोटिस क्यों नहीं हटाये ? तुम लोगों का यों ही व्यर्थ समय नष्ट करते हो।"

वे कुछ बड़बड़ाये और चले गए। उसी दिन मिश्का व मैं बाहर टहलने गए और हमने सब नोटिस फाड़ डाले।

टेलीफोन

एक दिन मैंने व मिश्का ने एक दूकान में एक विचित्र प्रकार का खिलौना देखा। वह एक टेलीफोन का सेट था जो असली टेलीफोन की भाँति ही काम करता था। उसमें दो टेलीफोन और तार की एक लच्छी थी। यह सब भली प्रकार से एक लकड़ी के सन्दूक में बन्द थे। दूकान पर बेचने वाली लड़की ने समझाया कि तुम उसे एक ही मकान के दो हिस्सों में काम में ला सकते हो। तुम एक रिसीवर एक फ्लैट में व दूसरा दूसरे फ्लैट में रक्खो और उसको तार से जोड़ दो।

अब मिश्का व मैं एक ही मकान में रहते थे।

मेरा फ्लैट उससे एक मंजिल ऊपर था। हमने सोचा था कि यह बड़ा आनन्द रहेगा कि हम जब चाहें टेलीफोन पर एक दूसरे को पा सकेंगे।

"इसके अतिरिक्त," मिश्का बोला, "यह कोई साधारण खिलौना नहीं है कि टूटा और बाहर फेंक दिया। यह एक लाभप्रद खिलौना है।"

"हाँ," मैंने कहा। "तुम अपने पड़ोसी से बिना ऊपर-नीचे भागे बात कर सकते हो।"

"बड़ी सुगमता से," मिश्का उत्तेजित होते हुए बोला। "तुम घर में बैठे रह कर जितनी चाहो बातें कर सकते हो।"

हमने टेलीफोन खरीदने के लिये पैसे जोड़ना प्रारम्भ किये। दो हफ्ते तक हमने आइस-क्रीम नहीं खायी और न हम सिनेमा ही गये। इन दो हफ्तों के अन्त में हमारे पास इतना धन एकत्र हो गया कि हम टेलीफोन खरीद सकें।

हम उस सन्दूक को लेकर घर की ओर लपके और एक टेली-फोन अपने व एक मिश्का के फ्लैट में लगा दिया और अपनी खिड़की से मिश्का की खिड़की तक तार से उनमें सम्बन्ध जोड़ दिया।

"तो अब," मिश्का बोला, "हमें इसे जाँच लेना चाहिये। तुम ऊपर जाओ और मेरी पुकार की प्रतीक्षा करो।"

मैं अपने घर भागा, रिसीवर को उठाया और वहाँ मिश्का की आवाज पहले से ही चिल्ला रही थी :

"हल्लो ! हल्लो !"

मैंने उसी प्रकार अपनी शक्ति भर तेज आवाज में कहा—"हल्लो।"

"क्या तुम मुझे सुन सकते हो ?" मिश्का चिल्लाया।

"हाँ, मैं तुम्हें सुन सकता हूँ। क्या तुम मुझे सुन सकते हो ?"

"हाँ, मैं तुम्हें सुन रहा हूँ। क्या यह विलक्षण नहीं है! तुम मुझे ठीक सुन रहे हो ?"

"बहुत ठीक। और तुम ?"

"मैं भी। हा! हा! तुम मेरी हँसी सुन रहे हो ?"

"हाँ। अच्छा सुनो मैं अब तुम्हारे पास सीधे आ रहा हूँ।"

वह सीधा मेरे पास आया और हम लोग देर तक, प्रसन्नता में, एक दूसरे को गुदगुदाते रहे।

"क्या तुम प्रसन्न नहीं हो कि हमारे पास टेलीफोन है? क्या यह सुन्दर नहीं है ?"

"हाँ," मैंने कहा।

"अब मैं फिर लौट जाता हूँ और तुम्हें बुलाऊँगा।"

वह लौट गया और टेलोफोन फिर बजा। मैंने रिसीवर उठाया।

"हल्लो !"

"तुम मुझे सुन रहे हो ?"

"मैं तुम्हें ठीक सुन रहा हूँ।"

"तुम भी ?"

"हाँ, मैं भी।"

"मैं भी। आओ, अब कुछ बातें करं।'

"हाँ, करें। हम क्या बातें करें ?"

"ओह, हर प्रकार की बातें। हम टेलीफोन लाये हैं इससे तुम प्रसन्न हो।"

"बहुत प्रसन्न।"

"यह बड़ा बुरा होता यदि हम उसे न खरीदते, होता न ?"

"बहुत ही बुरा।"

"ठीक ?"

"ठीक क्या ?"

"तुम कुछ कहते क्यों नहीं ?"

"तुम क्यों नहीं कहते ?"

"मैं नहीं जानता कि मैं क्या कहूँ," मिश्का बोला। "सदा ऐसा होता है। जब तुम्हें बात करने की आवश्यकता होती है तब तुम्हें पता ही नहीं रहता कि क्या कहें, किन्तु जब तुम समझते हो कि बातें नहीं करनी चाहिये तब तुम अपने को रोक नहीं सकते।"

मैंने कहा—"मैं क्या जानता हूँ, मैं इसे रख दूँगा और थोड़ी देर सोचूँगा और जब मैं कुछ सोच लूँगा तब मैं तुम्हें बुलाऊँगा।"

"ठीक है।"

मैंने उसे रख दिया और सोचना प्रारम्भ किया। अचानक टेलीफोन की घन्टी बजी। मैंने रिसीवर उठाया।

"हाँ, तुमने कुछ सोचा ?" मिश्का ने प्रश्न किया।

"अभी नहीं, और तुमने ?"

"नहीं, मैंने भी नहीं।"

"तब, तुमने क्यों पुकारा।"

"मैंने सोचा कि तुमने कुछ सोचा होगा।"

"यदि मैंने सोचा होता तो मैं टेलीफोन करता।"

"मैंने सोचा कि तुम ऐसा नहीं सोचोगे।"

"तुम सोचते हो कि मैं गधा हूँ या और क्या ?"

"क्या मैंने कहा कि तुम गधे हो ?"

"तब तुम क्या कहते थे ?"

"कुछ नहीं। मैंने कहा कि तुम गधे नहीं हो।"

"ओह ! ठीक है, गधों के लिये पर्यटन होगया। अब हमको मूर्ख बनना समाप्त करके पढ़ना चाहिये।"

"हाँ, अवश्य।"

मैंने उसे टाँग दिया और पढ़ने बैठ गया। मैंने किताब खोली ही थी कि फोन की घंटी बजी।

"सुनो ! मैं टेलीफोन पर गाने तथा पियानो बजाने जा रहा हूँ।

"प्रारम्भ करो !"

"तब मैंने एक करकराने का स्वर सुना, तब पियानो की भड़भड़ और अचानक तभी एक आवाज जो मिश्का की किंचित. भी नहीं थी, सुनाई पड़ी।

'तुम कहाँ उड़ गये, मेरे यौवन के सुनहले दिन !'

यह क्या ? मैं आश्चर्य करता रहा इस प्रकार गाना, मिश्का, कहाँ सोख सकता है ?

तभी मिश्का अन्दर आया और कानों में फुसफुसाता रहा।

"क्या तुमने समझा कि मैं गाना गा रहा था ? वह ग्रामोफोन था । मुझे भी सुनने दो ।"

मैंने उसे रिसीवर दे दिया । उसने थोड़ी देर सुना और तब शीघ्रता में टेलीफोन पटक कर नीचे भागा । मैंने रिसीवर कान में लगाया और भड़भड़ की आवाज सुनी । रिकार्ड पूरा हो चुका होगा ।

मैं पुनः पढ़ने बैठ गया । टेलीफोन बजा । मैंने रसीवर उठाया ।

"भों ! भों," मेरे कान में स्वर गूंजा ।

"तुम क्यों भोंक रहे हो ?"

"वह मैं नहीं हूँ, यह लड्डी है । क्या तुम उसको रिसीवर पर काटते हुए सुन रहे हो ?"

"हाँ ।"

"मैं रिसीवर को उसकी नाक में लगा रहा हूं और वह उस पर दाँत मार रहा है ।"

"यदि तुम सतर्क नहीं रहोगे तो वह तुम्हारा टेलीफोन चबा डालेगा ।"

"ओह ! इसका कुछ नहीं बिगड़ सकता । यह लोहे का बना हुआ है । हुश ! इसने मुझे काट लिया । ए बुरे कुत्ते, नीचे, उतरो ! तुमने मुझे कैसे काटा ? अलग हटो । (भों ! भों !) तुम शैतान ! उसने मुझे काट लिया, क्या तुमने सुना ?"

"हाँ, मैंने सुना ।" मैंने उत्तर दिया ।

मैं पुनः पढ़ने बैठ गया । दूसरे ही मिनट टेलीफोन फिर बोला । इस बार टेलीफोन पर एक बड़ी घड़घड़ाहट थी ।

"वह क्या है ?"

"एक मक्खी ।"

"वह कहाँ है ?"

"मैं उसको रिसीवर के सामने पकड़े हूँ और वह फर फर कर रही है और पर फड़फड़ा रही है ।"

मिश्का और मैं दिन भर एक दूसरे को टेलीफोन करते रहे। हमने भाँति-भाँति की तरकीबें निकालीं ! हमने गाना गाया, हम चिल्लाये, और जोर से चिल्लाये, 'म्याऊँ-म्याऊँ' करते रहे, फुस-फुस करते रहे—और आप चाहते तो सब कुछ सुन सकते थे। जब मैंने अपना पाठ समाप्त किया तब बहुत देर हो चुकी थी। सोने को जाने से पहले मैंने निश्चय किया कि मैं मिश्का को बुलाऊँ।

मैंने टेलीफोन मिलाया किन्तु उधर से कोई उत्तर नहीं आया।

क्या हुआ, मैंने आश्चर्य किया। क्या उसके टेलीफोन ने काम करना बन्द कर दिया है ?

मैंने फिर पुकारा किन्तु कोई उत्तर नहीं आया। मैं भागा हुआ नीचे गया, और तुम विश्वास करो, वहाँ मिश्का था जो टेलीफोन के टुकड़े टुकड़े कर रहा था। उसने बैटरी निकाल ली थी, घंटी अलग कर दी थी और रिसीवर के पेंच खोलने जा रहा था।

"अरे !" मैंने कहा "तुम टेलीफोन को तोड़ रहे हो ?"

"मैं तोड़ नहीं रहा हूँ। मैं केवल इसे यह देखने को अलग-अलग कर रहा हूँ कि यह कैसे बना। मैं इसे फिर वैसे ही लगा दूंगा।"

"तुम वैसा नहीं कर पाओगे। तुम उसको नहीं जानते।"

"कौन कहता है कि मैं नहीं जानता ? यह बड़ा सरल है ।"

उसने रिसीवर के पेंच निकाल डाले । कुछ धातु के टुकड़े निकाले और अन्दर की एक प्लेट को घुमा कर निकालने लगा । प्लेट अलग गिर पड़ी और कुछ काला पाउडर बाहर निकल पड़ा । मिश्का डर गया और उसने पाउडर को रिसीवर के अन्दर भरने का प्रयत्न किया ।

"अब तुम मारे गये । तुमने इसे ऐसा कर दिया है ।" मैं बोला ।

"यह कुछ नहीं । मैं इस सब को फिर मिलाकर अभी रखता हूँ"

वह जुटा रहा, जुटा रहा किन्तु जैसा उसने सोचा था वह इतना सरल न था क्योंकि पेंच बहुत छोटे थे और उनको ठीक जगह लगाना बड़ा कठिन था । अन्त में उसने सब कुछ ठीक लगा दिया —केवल धातु के एक टुकड़े व दो पेंचों को छोड़कर ।

"वेकिसलिए हैं ?" मैंने प्रश्न किया ।

"ओह, मित्र, मैं इन्हें अन्दर लगाना भूल गया ।" मिश्का कहता गया—"मैं भी कितना मूर्ख हूँ । इसको अन्दर लगाना चाहिये था । अब मुझे वह सब फिर निकालना पड़ेगा ।"

"ठीक है," मैंने कहा । "मैं घर जा रहा हूँ । जब तुम इसे बना लो तो मुझे पुकार लेना ।"

मैं घर गया और प्रतीक्षा करता रहा । मैं निरन्तर प्रतीक्षा करता रहा किन्तु कोई घंटी नहीं बजी और तब मैं सो गया ।

अगली सुबह टेलीफोन की घंटी इतनी जोर से बजी कि मैंने समझा घर में आग लग गयी है । मैं बिस्तर से उछला, रिसीवर घसीटा और चिल्लाया—

"हलो !"

"तुम इस प्रकार क्यों गुर्रा रहे हो ?" मिश्का बोला।

"मैं तो नहीं गुर्रा रहा।"

"गुर्राना बन्द करो और ठीक से बात करो ?" मिश्का चीखा मानो वह बिगड़ रहा हो।

"मैं ठीक से बात कर रहा हूँ। मैं गुर्राऊँगा क्यों ?"

"गँवार मत बनो। मैं नहीं समझता कि किसी प्रकार तुमने वहाँ सुअर रख छोड़ा है।"

"किन्तु यहाँ कोई सुअर नहीं है, मैं तुझसे कह रहा हूँ ?" मैं भी बिगड़ कर चिल्लाया।

मिश्का ने कुछ नहीं कहा।

एक मिनट बाद ही वह मेरे कमरे में आ टपका।

"सूअर की सी बोली टेलीफोन पर बोलने का क्या मत-लब है ?"

"मैं वैसा तो कुछ भी नहीं कर रहा था।"

"परन्तु मैं वैसा पूर्णतः स्पष्ट सुन रहा था।"

"मैं सुअर की आवाज़ क्यों करूँगा ?"

"मुझे कैसे पता लगे ? केवल मुझे इतना पता लग रहा था कि कोई वस्तु मेरे कान में गुर्रा रही है। तुम नीचे जाओ और अपने आप सुनो।"

मैं उसके यहाँ गया टेलीफोन मिलाया और चिल्लाया;

"हलो ?"

"गुर्र, गुर्र, गुर्र, गुर्र ?" उत्तर में मैंने केवल वही सुना।

क्या हुआ यह मैंने देखा और मिश्का के पास भाग कर गया।

"वह सब तुम्हारी कृपा है," मैंने कहा। "तुम गये और टेली-फोन तोड़ डाला।"

"ऐसा कैसे ?"

"जब तुमने उसे अलग-अलग किया तो रिसीवर का कोई पूर्जा बिगाड़ दिया।

"मैंने उसे गलत ढंग से लगा दिया होगा," मिश्का बोला। "मुझे उसे ठीक करना होगा।"

"मैं तुम्हारा टेलीफोन अलग करूँगा और देखूँगा कि वह कैसे बना है।"

"ओह, नहीं, तुम वैसा नहीं कर सकते। मैं, तुम्हें उसी प्रकार अपने टेलीफोन का सत्यानाश नहीं करने दूँगा।"

"तुम डरो नहीं। मैं बहुत सतर्क रहूँगा। यदि मैं नहीं बना पाऊँगा तो आगे के लिए टेलीफोन ही काम में नहीं आ सकेगा।"

मुझे मानना पड़ा और वह तुरन्त काम में लग गया। वह बहुत देर तक उससे सिर मारता रहा और जब उसने उसको लगाना समाप्त कर दिया तो टेलीफोन ने पूरी तरह काम करना बन्द कर दिया। अब आगे उसमें गुर्र-गुर्र भी बन्द हो गयी।

"अब हम क्या करने जा रहे हैं," मैंने पूछा।

"मैं क्या बताऊँ ?" मिश्का बोला। "हम दूकान पर जायंगे और उनसे कहेंगे कि वे उसे ठीक करदें।"

हम दूकान पर गये किन्तु उन्होंने कहा कि वे टेलीफोन की

मरम्मत नहीं करते न वे यही बता सकते हैं कि हमारा टेलीफोन कहाँ ठीक हो सकता है। हम उस दिन बड़े व्यथित रहे। तब मिश्का को एक बात सूझी :

"हम गधे हैं ! हम एक दूसरे को तार कर सकते हैं।"

"कैसे ?"

"तुम जानते हो—'डाट और डैश'—घंटी अभी भी बजती है। हम उसे व्यवहार में ला सकते हैं। एक छोटी घन्टी डाट रहेगी और लम्बी घन्टी डैश। हम मोर्स-कोड* पढ़ सकते हैं और एक दूसरे को सूचना भेज सकते हैं।"

हमने 'मोर्स कोड' लिया और उसका अध्ययन प्रारम्भ किया। एक डाट और एक डैश बराबर A के। एक डाट और तीन डैश बराबर B, एक डाट और दो डैश बराबर C और उसी प्रकार। हमने इस प्रकार सम्पूर्ण वर्णमाला सीख ली और सूचनायें भेजते रहे। पहले तो उसने धीमा काम किया किन्तु बाद में हम अपनी उँगलियों को उस पर उसी प्रकार टिपटिपाते रहे जैसे असली तार वाले। वह टेलीफोन से भी अधिक आकर्षक था। किन्तु वह बहुत दिन नहीं चला। एक दिन मैंने मिश्का को पुकारा किन्तु कोई उत्तर न आया। वह सो रहा होगा, मैंने सोचा। तब मैंने देर में पुकारा, तब भी कोई उत्तर नहीं था। मैं नीचे गया और द्वार खटखटाया। मिश्का ने द्वार मेरे लिये खोला।

"अब तुमको द्वार खटखटाने की आगे आवश्यकता नहीं है। तुम घंटी बजा सकते हो।"

---

* सांकेतिक भाषा की पुस्तक।

उसने द्वार पर एक बटन लगा हुआ दिखलाया।

"वह क्या है ?"

"घंटी।"

"बजायें।"

"हाँ, एक बिजली की पुकारने की घंटी। अब इसे तुम खटखट के स्थान पर बजा सकते हो।"

"तुमने इसे कहाँ से प्राप्त किया ?"

"मैंने अपने आप बनायी।"

"कैसे ?"

"मैंने इसे टेलोफोन से बनाया है।"

"क्या ?"

"हाँ, मैंने घंटी को टेलीफोन से निकाला और बटन भी। और मैंने बैटरी भी बाहर निकाली। केवल एक खिलौना रखने से क्या लाभ जब तुम उससे कोई लाभप्रद वस्तु बना सकते हो।"

"किन्तु तुम्हें टेलोफोन अलग करने का कोई अधिकार नहीं था" मैंने कहा।

"क्यों नहीं ? मैंने ही तो अपना अलग किया है, तुम्हारा तो नहीं ?"

"हाँ, किन्तु टेलीफोन दोनों का था। यदि मुझे पता होता कि तुम उसके टुकड़े-टुकड़े कर दोगे तो मैं तुम्हारे साथ न साझा करता, न उसे खरीदता। मुझे ऐसे टेलीफ़ोन की आवश्यकता नहीं है जो काम न करता हो।"

।'तुमको टेलीफोन की किंचित् भी आवश्यकता नहीं है। हम

एक दूसरे से इतने दूर नहीं रहते। यदि तुम मुझसे बात करना चाहो तो मेरे पास नीचे चले आओ।"

"मैं अब आगे तुमसे बात नहीं करना चाहता।" मैंने कहा और मैं बाहर निकल आया।

मैं इतना नाराज था कि उससे पूरे तीन दिन नहीं बोला। अपने आप मैं बहुत अकेला हो गया, अतः मैंने भी अपना टेलीफोन लिया और उससे पुकारने की घंटी बनाई। किन्तु मैंने वैसा न किया जैसा मिश्का ने किया था। मैंने अपनी घंटी ठीक से बनायी। मैंने द्वार के निकट एक खाने में बैटरी रक्खी और उससे दीवाल पर एक तार फैलाया—घंटी और बटन तक। मैंने पुश-बटन (दबाने वाला बटन) को ठीक से पेंचों के द्वारा कसा, अतः वह मिश्का की भाँति एक कील पर नहीं लटका रहा। मां और डैडी ने भी मेरे उस बढ़िया कार्य की प्रशंसा की।

मैं मिश्का से अपनी घंटी की बात कहने नीचे गया।

मैंने उसके द्वार पर बटन दबाया किन्तु किसी ने उत्तर न दिया। मैंने उसे कई बार दबाया किन्तु उसे कभी बजते हुए नहीं सुना। तब मैंने खटखटाया। मिश्का ने द्वार खोला।

"तुम्हारी घंटी में क्या गड़बड़ी हो गयी? क्या यह काम नहीं करती?"

"नहीं, यह बिगड़ गई है।"

"क्या गड़बड़ी है?"

"मैंने इसकी बैटरी निकाल ली है।"

"तुमने, क्यों?"

"हाँ, मैं देखना चाहता था कि वह किस प्रकार बनी है।"

"ठीक, अब तुम बना टेलीफोन, बिना घंटी के क्या करने जा रहे हो ?" मैंने प्रश्न किया।

"ओह, मैं किसी प्रकार इसका इन्तजाम करूँगा," उसने एक उदास सांस खींच कर कहा।

मैं उलझा हुआ घर लौटा। क्यों मिश्का ऐसा करता है ? क्यों वह सब चीजें तोड़ डालता है ? मैं उसके प्रति अत्यधिक दयार्द्र था।

उस रात्रि मैं देर तक नहीं सो पाया और अपने टेलीफोन व उससे बनी हुई घंटी की बात सोचता रहा, तब मैं बिजली की बात सोचता रहा और कैसे बिजली बैटरी में काम करती है। मेरे अतिरिक्त सब लोग गहरी नींद में सो रहे थे और मैं जमा हुआ उन सब बातों पर मनन कर रहा था। थोड़ी देर बाद मैं उठा, बत्ती जलायी आलमारी से अपनी बैटरी ली और उसे तोड़ कर खोल डाला। उसमें अन्दर एक प्रकार का तरल पदार्थ और एक काली लकड़ी थी। जो एक कपड़े में लिपटी हुई थी और तरल पदार्थ में डूबी हुई थी। तो वह यह है। बिजली तरल पदार्थ से आती है। मैंने सतर्कतापूर्वक बैटरी को आलमारी में रख दिया और बिस्तर पर चला गया। मैं तुरन्त सो गया।
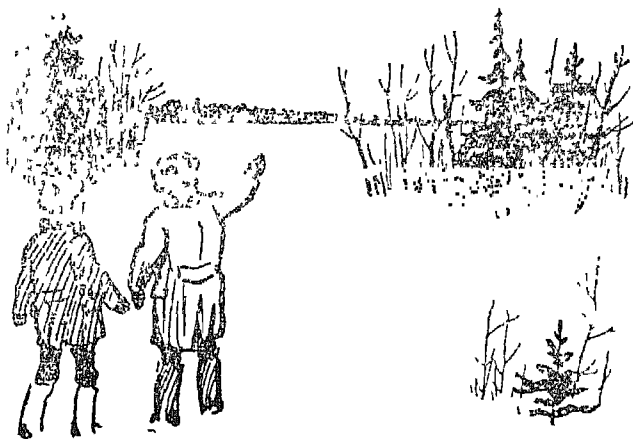
हमारी देवदार-वृक्ष की पार्टी

नव-वर्ष की छुट्टियों में मुझे व मिश्का को विलक्षण अनुभव हुआ। हमने पहले से ही छुट्टियों की तैयारियाँ की हुई थीं! हमने कागज की झालरें बनायीं और झंडे तथा देवदार-वृक्ष के लिये प्रत्येक प्रकार का सजावट का सामान भी। सब काम ठीक हो जाता यदि मिश्का को एक पुस्तक न मिल गयी होती जिसका नाम—'पापुलर केमिस्ट्री' था जिसमें उसने पढ़ा कि 'बंगाल की बत्तियाँ' कैसे बनायी जाती है। यहीं से विपत्ति प्रारम्भ

हुई। इसके बाद बाकी दिनों तक केवल अपनी 'बंगाल-बत्तियाँ' बनाने के प्रयोगों के सिवाय उसने कुछ नहीं किया। गन्धक और शकर को घोलना, एलमुनियम के टुकड़े बनाना, सबको साथ मिलाना और उन्हें जलाना। किन्तु केवल धुंये और दुर्गन्धि के अतिरिक्त उसमें से कुछ भी न बना। पड़ोसियों ने उस पर बहुत आपत्ति की किन्तु मिश्का ने कोई परवाह नहीं की। उसने अपनी नव-वर्ष की दावत में स्कूल के बहुत से लड़कों को आमन्त्रित किया और घोषित किया कि वह आतिशबाजी के खेल दिखावेगा।

"मेरे पास आतिशबाजी के कुछ बहुत बढ़िया काम होंगे" उसने उनसे कहा। "वे हीरे की तरह चमकते हैं और फुलझड़ियों की फुहार सब ओर फेंकते हैं।"

"यदि मैं होता तो तुम्हारी तरह इतनी गप्प न हाँकता," मैंने उससे कहा। "तुमने अभी तक एक भी तो चीज नहीं बनायी है। क्या तुम मूर्ख नहीं लगोगे जब लड़के तुम्हारी दावत में आवेंगे और वहाँ कोई भी आतिशबाजी नहीं होगी।"

"ओह, लेकिन होगी। तुम देखोगे। अभी तो बहुत समय है।"

नव-वर्ष के पूर्व, एक दिन पहले वह मेरे घर आया और बोला :

"हमको अपने देवदार के पेड़ों को लाना चाहिये अन्यथा हमारे पास एक भी न रहेगा।"

"आज बहुत देर हो गयी है," मैंने कहा, "हम कल चलेंगे।"

"कल हमें उन्हें सजाना होगा।"

"वह हम संध्या को कर लेंगे। हम, स्कूल के बाद सीधे ही पेड़ों के लिए चले जायेंगे।"

मिश्का राजी हो गया। हम उन्हें नगर से खरीदने वाले नहीं थे। हमने निश्चय किया था कि हम उन्हें सीधे जंगल से लायेंगे। हम गोरेलकिनों जा रहे थे जहाँ हमने गर्मियों की छुट्टियां व्यतीत की थीं। हमारी चाची नताशा, पूरे वर्ष यहीं रहती थी। उसका पति एक जंगल का रखवाला है और उसने हमको नव-वर्ष पर देवदार के पेड़ लेने को आमन्त्रित किया था।

मैंने वह सब अपनी माँ से कह दिया था और उसने स्वीकृति दे दी थी। अगले दिन, भोजनोपरान्त मैं मिश्का के यहाँ गया। जब अन्दर पहुँचा तो वह एक खरल पर अपनी बंगाल-बत्तियों में जूझा हुआ था।

"यह देखो," मैंने कहा। "हमें अब जाना है और तुम अपने उस मूर्खतापूर्ण आतिशबाजी के कामों में जूझे हुए हो। तुम्हें वह पहले ही बना लेना था।

"मैंने एक भाग बना लिया है, किन्तु उसमें मुझे थोड़ा गन्धक भी डालना है। वे जलते नहीं हैं। केवल फस्स् करके रह जाते हैं।"

"ठीक है, किसी तरह वे अभी तो जलेंगे नहीं, अतः तुम हमारे साथ चलो।"

"नहीं, मुझे विश्वास है कि इस बार वे जल जावेंगे। केवल थोड़ा गन्धक उसमें और मिलाना है। मुझे वह एलमुनियम का बर्तन तो दो, दोगे न—वह जो खिड़की की चौखट पर रक्खा है।"

"यहाँ कोई बर्तन नहीं है। यहाँ एक कढ़ाई तो है।"

"वह कढ़ाई नहीं है। वही वह बर्तन है जिसे मैं एलमुनियम के टुकड़े के स्थान पर काम में ला रहा हूँ। मुझे यही दो।"

मैंने वह उसे दे दिया और उसने उस पर काम प्रारम्भ किया। अपने चाक़ू की धार से टुकड़े छीलने लगा।

"तो इसी तरह यह बर्तन—फ्राइंग-पान बन गया है।"

"हां," मिश्का बोला। "किन्तु वह ठीक है। फ्राइंग-पान (कढ़ाई) भी तो काम की चीज है।"

"क्या तुम्हारी मां भी यही सोचती है?"

"उसने इसे अभी देखा नहीं है।"

"ठीक है, कभी तो देखेगी।"

"उससे क्या? जब मैं बड़ा होऊंगा तो उसके लिए एक नया खरीद दूँगा।"

"उसको बहुत लम्बी प्रतीक्षा करनी होगी।"

"हाँ, वह सब ठीक है। जो भी हो, वह एक पुराना बर्तन था। और, उसका हेंडल भी टूटा हुआ था।"

उसने उस एलमुनियम की कतरन व गन्धक को गोंद में देर तक घोला और तब वह एक प्रकार की खूब गाड़ी लेही सा बन गया, जिसको उसने गोल टुकड़ों में बेला, तारों पर लपेटा और एक लकड़ी पर सूखने के लिए रख दिया।

"वह," उसने कहा, "ये जैसे ही सूख जायँगे, वे तैयार हो जायेंगे। किन्तु मैं लड्डी को ऊपर नहीं चढ़ने दूँगा, नहीं तो वह सब खा जायगा।"

"चलो! क्या बंगाल-बत्तियों को भी कुत्ते खाते हैं?"

"मुझे और कुत्तों के सम्बन्ध में तो पता नहीं किन्तु लड्डी खाता है। एक बार मैंने स्टोव के किनारे कुछ सामान सूखने को

रक्खा और वह चबा गया। उसने अवश्य सोचा होगा—मिठाई या और कुछ है।"

"ठीक है! उनको भट्टी पर रख दो। वह गरम है और लड्डी उसे पायेगा भी नहीं।"

"नहीं, वह भी ठीक नहीं है। कल मैंने उन्हें भट्टी में छिपा दिया और मां अभी आयी और उसने उसे जलाया, वे सब जल कर राख हो गये। मैं उनको खाने की आलमारी के ऊपर रख दूँगा।"

वह एक कुर्सी पर चढ़ा और उस ट्रे को जिसमें आतिशबाजी का सामान था—खाने की आलमारी के ऊपर रख दिया।

"तुम लड्डी को जानते हो," उसने कहा, "वह सदा मेरी चीजों को झपटता है। वह याद है जब उसने मेरा बाँया जूता छिपा दिया था? हम उसे कहीं भी न ढूँढ़ पाये थे। तब तक मुझे अपना 'वलेन्की' पहनना पड़ा था और मां को नया जूता लाना पड़ा। बस बहुत गरमी थी और मुझे अपना वह भारी वलेन्की जूता पहनना पड़ा मानो मेरे पैर बरफ के बने हों। जब मुझे मेरे नये जूते मिल गए, तब मैंने वे भद्दे जूते फेंक दिए क्योंकि वैसे जूते कौन पसन्द करता? किन्तु जब मैंने उन्हें फेंक दिया तब वह दूसरा मिला। लड्डी ने रसोई के स्टॉक में उसे छिपा दिया था। अतः हमको वह भी फेंकना पड़ा क्योंकि हम पहले ही एक फेंक चुके थे। देखा! यदि मैंने उसे न फेंका होता तो मेरे पास एक जोड़ी जूता और होता।"

"अच्छा, अब चबर-चबर बन्द करो," मैंने कहा, "हमें चलना चाहिए। हम वैसे ही लेट हो गए हैं।"

मिश्का ने अपना कोट लटकाया, एक कुल्हाड़ी ली और हम स्टेशन की ओर लपके। गोरेलकिनो को हमने पहली ट्रेन पकड़ी। जब हम वहाँ पहुँचे तो सीधे जंगल की ओर भागे।

वह जंगल बड़ा घना था। और हमें छाँटने के लिए बहुत से वृक्ष थे। किन्तु मिश्का को कोई भी पसन्द नहीं आए।

"जब हम एक बार यहाँ आ गये तो हम सब से बढ़िया देवदार का पेड़ लेंगे।" उसने कहा, "अन्यथा इतनी दूर यहाँ आने का कोई महत्व ही नहीं होगा।"

अतः हम जंगल में बहुत दूर तक निकल गये।

"हमको अब जल्दी करनी चाहिए और पेड़ काटने चाहिए," मैंने कहा। "अंधेरा हो जायगा।"

"किन्तु यहाँ तो कुछ अच्छे पेड़ नहीं हैं," मिश्का बोला।

"वह देखो, यह एक अच्छा है," मैंने कहा।

मिश्का ने सब ओर से उसका निरीक्षण किया, "बुरा नहीं, बुरा नहीं, किन्तु मैंने उससे अच्छा देखा है। नहीं, मुझे यह पसन्द नहीं है। यह......यह भद्दा है।"

"इसमें भद्दा क्या है?"

"यह काटने के लिए लम्बा कम है। मैं इस प्रकार का छोटा पेड़ कभी नहीं ले चलूंगा।"

हमने दूसरा वृक्ष ढूँढ़ा।

"यह असंतुलित है," मिश्का बोला।

"असंतुलित क्या है?"

"नहीं देख रहे हो कि नीचे इसका तना झुका हुआ है।"

"तब क्या ?"

"ठीक है, और डालियाँ ?"

तब हमने दूसरे पेड़ की परीक्षा की, मिश्का ने किसी को भी पसन्द नहीं किया। उसने कहा कि वह गंजा है।

"तुम स्वयं गंजे हो। एक देवदार का पेड़ गंजा कैसे हो सकता है ?"

"हाँ, यह गंजा है। देखो यह कितना पतला है। कहीं भी हरियाली नहीं है, एक डंठल मात्र जिस पर कुछ सुइयाँ लगी हुई हैं।"

और वह चल दिया। अन्त में मेरा धैर्य छूटने लगा।

"इधर देखो," मैंने कहा, "यदि तुम इसी प्रकार चलते जाओगे तो पेड़ मिलते-मिलते आधी रात हो जायगी।" मैंने अपने लिए एक पेड़ चुना, काटा और कुल्हाड़ी मिश्का को दे दी।

"अब, एक अपने लिये काटो और चलो चलें, अन्यथा हम घर ही नहीं पहुँच पावेंगे।"

किन्तु जैसे मिश्का ने समूचे जंगल को खोजने का निश्चय कर लिया था। मैंने उससे बहस की किन्तु कोई अर्थ न निकला। अन्त में उसने एक पेड़ अपनी पसन्द का खोज निकाला; उसे काटा और हम स्टेशन चल दिये। हम चलते गये और चलते गये किन्तु उतने ही गहरे जंगल में घुसते गये।

"सम्भवत: हम गलत दिशा की ओर जा रहे हैं," मिश्का बोला।

हम घूमे और दूसरी ओर चले। हम चलते गये—चलते गये, किन्तु जंगल भी बढ़ता गया। अब तक अँधेरा होना प्रारम्भ हो

चला था । हम कभी इधर लौटे और कभी उधर और अन्त में हमने देखा कि हम बुरी तरह से फँस गये हैं ।

"यह सब तुम्हारा दोष है," मैंने कहा ।

"क्यों, मेरा दोष क्यों है ? मुझे क्या पता था कि इतनी जल्दी अँधेरा हो जावेगा ?"

यदि तुमने इधर उधर वृक्ष खोजने तथा अपने आतिशबाजी के झमेले में समय न नष्ट किया होता तो हम लोग बहुत पहले घर पहुँच गये होते । और अब, केवल तुम्हारे कारण, रात्रि इस जंगल में ही व्यतीत करनी होगी ।

"ओह, नहीं ?" मिश्का बोला । "हमें अवश्य, आज रात्रि में पहुँचना चाहिये । लड़के आ रहे हैं ।"

शीघ्र ही अंधेरा होगया । चन्द्रमा निकल आया और वृक्षों की काली-काली डालें भयावने व विलक्षण राक्षस की सी प्रतीत होने लगीं । हमें ऐसा लगने लगा मानो हरेक पेड़ के पीछे भेड़िया छिपा हो । हम लोग इतना डर गये थे कि एक पग भी आगे बढ़ने में डरते हुए निश्चल से खड़े रह गये ।

"हमको चिल्लाना चाहिये," मिश्का ने सुझाया ।

"हल्लो !" हम साथ-साथ चीखे ।

"हल्लो !" जंगल ने प्रत्युत्तर दिया ।

"यह क्या है ?" मिश्का ने डर कर फुसफुसाते हुये कहा ।

"प्रतिध्वनि," मैंने उत्तर दिया और फिर चिल्लाया

"हाल्लू ।"

"हाल्लू ।" प्रतिध्वनि हुई ।

"अच्छा हो कि हम न चिल्लायें," मिश्का ने कहा :

"क्यों ?"

"भेड़िये सुन लेंगे और हमारे पास आजावेंगे।"

"मैं शर्त लगा सकता हूँ कि यहाँ एक भी भेड़िया नहीं है।"

"किन्तु, कल्पना करो, यदि हों। हमको यहाँ से भाग चलना चाहिए।"

मैंने कहा—"हमको चलते ही रहना चाहिये, अन्यथा हमको कभी सड़क मिलेगी ही नहीं।"

हम फिर चल दिये। मिश्का निरन्तर अपनी सीध में दूर तक देखता जाता था।

"यदि भेड़िया हमला कर देता है तो लोग क्या करते हैं," उसने पूछा।

"वे उस पर गोली दाग देते हैं, मैं सोचता हूँ।"

"किन्तु सोचो यदि, उनके पास राइफल न हो ?"

"वे उन पर जलती लकड़ियां फेंकते हैं।"

"तुमको वह कहाँ से मिलेंगी ?"

"आग जलाओ।"

"दियासलाई है ?"

"नहीं।"

"क्या वे पेड़ पर चढ़ सकते हैं ?"

"कौन ?"

"भेड़िये।"

"ओह, भेड़िये। नहीं, वे पेड़ पर नहीं चढ़ सकते।"

"ठीक, तब यदि वे हम पर आक्रमण करेंगे तो हम निकट के पेड़ पर चढ़ जायेंगे और सुबह तक वहीं ठहरेंगे।"

"सोचो, तुम समूची रात पेड़ पर रह सकते हो!"

"अवश्य, मैं रह सकता हूँ।"

"तुम जम कर पत्थर हो जाओगे और नीचे लुढ़क पड़ोगे।"

"वह इतना ठंडा नहीं है।"

"तुम केवल इसलिये ऐसा समझ रहे हो कि हम लोग चल रहे हैं, किन्तु तुम एक पेड़ पर बैठ कर देखो, बहुत देर तक बिना हिले-डुले, तुम निश्चित जम जाओगे।"

"गरम रहने के लिये तुम अपने पैरों को हिला सकते हो।"

"समूची रात, एक पेड़ पर बैठकर मैं तुम्हें पैरों को हिलाते, अभी देख सकता हूँ।"

हम गहरी झाड़ियों में तब तक अन्धकार में वृक्षों की शाखाओं से ठोकर खाते हुए और बरफ में घुटनों तक डूबते हुये बढ़ते गये जब तक कि थक कर गिर न पड़ें।

"हमको अपने पेड़ फेंक देने चाहिये," मैंने सुझाया।

"मैं नहीं फेंकूँगा," मिश्का बोला। "आज रात को ही लड़के आ रहे हैं। बिना पेड़ के हम देवदार के वृक्ष की पार्टी कैसे कर सकते हैं?"

"हम बड़े भाग्यवान होंगे यदि सही-सलामत घर पहुँच जाँय, पेड़ों की चिन्ता कौन करे?"

मिश्का ने कहा—"हमको क-एक करके चलना चाहिये। इस प्रकार हम अदल-बदल कर चल सकते हैं।"

हम रुके और थोड़ी देर सुस्ताते रहे। तब मिश्का, आगे-आगे चला और मैं उसके पीछे। हम थोड़ी दूर गये होंगे तभी मैं एक मिनट रुका—अपने पेड़ को एक कन्धे से बदल कर दूसरे पर रखने के लिये। जब मैंने फिर देखा तो मिश्का आगे बढ़ गया था। वह विलीन हो गया जैसे भूमि उसे निगल गयी हो।

"मिश्का ! मिश्का !" मैंने पुकारा।

वहाँ कोई उत्तर नहीं था।

"हे ! मिश्का ! तुम कहाँ हो ?"

सन्नाटा।

मैं सतर्क होकर आगे बढ़ा और एक गहरे जलाशय के किनारे रुक गया। एक पग और बढ़ जाता तो मैं पूरी तरह किनारे पर होता। मैंने नीचे देखा, तब बरफ में कुछ काली-काली वस्तु दिखायी दी।

"हे, मिश्का, क्या तुम हो ?"

"हाँ, निश्चित मैं लुढ़क गया हूँ।"

"जब मैं चिल्लाया तो तुमने उत्तर क्यों नहीं दिया ?"

"मैंने अपना पैर तोड़ लिया है।"

मैं, धीरे से उस जलाशय में किनारे से उतरा और देखा कि मिश्का वहाँ एक मार्ग के बीच में, नीचे बैठा अपना घुटना रगड़ रहा है।

"क्या गड़बड़ हुई ?"

"मैंने अपना घुटना फोड़ लिया।"

"क्या वह दर्द कर रहा है ?"

"शैतान की तरह। मैं सोचता हूँ, मैं यहाँ थोड़ी देर बैठूँगा।"

"ठीक है, हम लोग विश्राम करें।"

हम साथ-साथ बरफ पर बैठ गये। थोड़ी देर में हमें सर्दी लगने लगी।

"इस भाँति तो हम जम कर मर जायेंगे," मैंने कहा। "अच्छा तो यह है कि हमको चलते रहना चाहिए। यह मार्ग हमें निश्चित ही या तो स्टेशन या किसी गाँव को ले जावेगा।"

मिश्का ने उठने की चेष्टा की किन्तु चिल्लाया और बैठ गया।

"मैं हिल नहीं सकता," वह बोला।

"ओह डियर, हमें क्या करना चाहिये ? तुम मेरी पीठ पर लदो और मैं ले चलने की चेष्टा करूँगा।"

"मैं बहुत भारी हूँ।"

"हम चेष्टा करें।"

मिश्का उठा और बहुत चीखते-चिल्लाते अन्त में मेरी पीठ पर चढ़ा। ओह ! वह भारी था। मैं झुक कर दोहरा हो गया।

"ठीक है, हमें चलना चाहिये," मिश्का बोला।

मैं कुछ पग ले चला, फिसला और बाद में लुढ़कता चला गया।

मिश्का ने एक चीख मारी। "ओह! मेरा पैर! क्या तुम और अधिक सतर्क नहीं हो सकते ?"

"मैंने वह कोई जान-बूझ कर तो किया नहीं है।"

"यदि तुम कर नहीं सकते तो मुझे लाद कर चलने की चेष्टा नहीं करनी चाहिये।"

मैं बहुत क्रोधित हुआ। "तुम मुझे गुस्सा दिला रहे हो," मैंने कहा। "पहले तुमने अपनी आतिशबाजी के चक्कर में समय नष्ट किया। फिर एक पेड़ खोजने में घण्टों बिता दिए और अब गये और चोट लगा ली। केवल तुम्हारे कारण हम दोनों यहां जम कर ठंढे हो जायेंगे।"

"तुमको मेरे साथ रुकने की आवश्यकता नहीं है। तुम अकेले जा सकते हो। मैं जानता हूँ, यह सब मेरा दोष है।"

"मैं तुमको यहाँ अकेले कैसे छोड़ सकता हूँ? हम साथ आये थे और साथ ही लौट कर जायेंगे। हमको कोई उपाय सोचना चाहिए। बस।"

"मैं नहीं सोचता कि हम क्या करें ?"

"यदि हम एक बरफ में चलने वाली गाड़ी बनायें? हमारे पास कुल्हाड़ी है।"

"कुल्हाड़ी से तुम गाड़ी कैसे बना सकते हो ?"

"कुल्हाड़ी से नहीं, मूर्ख। हम एक पेड़ काट सकते हैं और उससे स्लेज (बर्फ की गाड़ी) बना सकते हैं।"

"हमारे पास कीलें नहीं हैं।"

"रुको। मुझे सोचने दो," मैंने कहा।

मैं सोचता रहा, सोचता रहा और मिश्का मेरे बराबर, बरफ पर बैठा रहा। मैंने देवदार का पेड़ उसके निकट सरका दिया।

"अच्छा हो तुम इस पर बैठो। बरफ पर बैठने से तुम्हें सर्दी लग जावेगी।"

वह पेड़ पर सरक गया। तभी मेरे मस्तिष्क में एक सुन्दर विचार आया।

"मिश्का," मैंने कहा। "पेड़ गाड़ी का काम दे देगा।"

"कैसे ?"

"तुम डालियों पर बैठो और मैं तने को लेकर घसीटूँगा। हमें प्रयत्न करना चाहिए। पकड़ो।"

मैंने तना पकड़ा और खींचा। उसने बढ़िया काम किया! सड़क पर पत्थर कड़ा और चिकना था और पेड़ उस पर सुगमता से सरक गया; मिश्का उस पर चढ़ा हुआ था जैसे बरफ की गाड़ी पर हो।

"बढ़िया!" मैंने कहा। "अब तुम कुल्हाड़ी ले सकते हो।" मैंने कुल्हाड़ी फेंक दी। मिश्का और आराम से बैठ गया और मैं उसे सड़क पर घसीट ले चला। शीघ्र ही हम जंगल के बाहर आ गये और बत्तियाँ देखीं जो बहुत दूर न थीं

"मिश्का," मैं चिल्लाया। "यह स्टेशन है।"

तभी हमने एक ट्रेन के आने की आवाज सुनी।

"जल्दी करो, अन्यथा वह छूट जायगी," मिश्का चिल्लाया।

मैं जितनी जल्दी भाग सकता था भागा—मिश्का को, पीछे चिल्लाते हुये, लेकर :

"तेज, जल्दी। हम गाड़ी छोड़ देंगे !"

ज्यों ही ट्रेन अन्दर आई हम स्टेशन पहुँच गये। मैंने मिश्का को पुलन्दे की तरफ अन्दर किया और जैसे ही ट्रेन चली मैं कूद कर बोर्ड पर चढ़ गया और पेड़ों को अपने पीछे घसीट लिया। पहले यात्रियों ने एक काँटेदार पेड़ को रेल के डब्बे में ले चलने में आपत्ति की।"

"तुम लोगों ने इन घसीटे गये और गन्दे पेड़ों को कहाँ पाया ?" किसी ने प्रश्न किया।

किन्तु जब हमने, जंगल में अपनी विपत्ति की कथा कही तो सभी ने खेद व्यक्त किया। एक महिला ने मिश्का को अपने पास बैठा लिया। उसने जूते उतारे और उसके सूजे हुए घुटने की परीक्षा की।

"कुछ गम्भीर बात नहीं है," उसने कहा। "केवल एक खरोंच मात्र।"

"यह इतना दर्द कर रहा था कि मैं समझा जैसे मैंने अपना पैर तोड़ लिया है," मिश्का ने कहा।

"कोई चिन्ता नहीं, तुम्हारी शादी होने के पहले यह बन जायगा।" किसी ने कहा। और सभी हँस दिये। एक बूढ़ी महिला ने हमें खाने को एक-एक कचौड़ी दी और किसी दूसरे ने मिठाइ। हम अब तक बहुत भूखे थे अतः बहुत प्रसन्न हुए।

"हमारे बीच में एक पेड़ है, इसका हम क्या करेंगे ?" मैंने प्रश्न किया।

"आज रात इसे मेरे पास रहने दो," मिश्का ने कहा।

"मुझे वह अच्छा लग रहा है। समूचे रास्ते में जंगल से उसे लाद कर लाया हूँ, साथ ही उस पर तुम्हें घसीट कर भी, अब मैं बिना पेड़ के ही रहूँगा।"
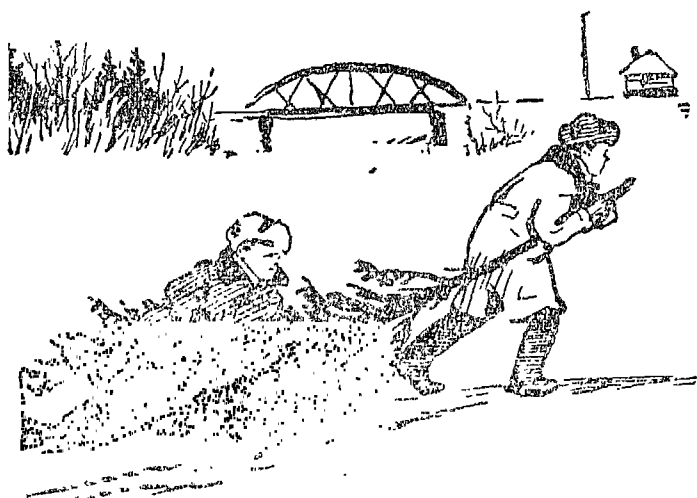
"मैं केवल आज रात भर के लिये चाहता हूँ। तुम उसे कल ले सकते हो।"

"नहीं, मुझे एक पेड़ आज रात को चाहिये। केवल मुझे छोड़ कर सबके पास एक-एक होगा।"

"किन्तु क्या तुम समझ नहीं सकते? लड़के आज रात को आ रहे हैं। एक देवदार का पेड़ मेरे पास अवश्य होना चाहिये।"

"तुम्हारे पास बंगाल की बत्तियाँ रहेंगी। लड़के पेड़ थोड़े ही छोड़ेंगे।"

"मुझे पता नहीं कि बंगाल की बत्तियाँ काम करेंगी या नहीं। मैंने बीस बार उन्हें बनाने का प्रयत्न किया किन्तु कुछ नहीं हुआ। कुछ नहीं, केवल धुआँ और बदबू।"

"किन्तु इस बार वे काम करेंगी।"

"नहीं, मैं उनके बारे में बताऊँगा भी नहीं। सम्भव है अब तक लड़के भूल गये हों।"

"मुझे निश्चय है कि वे नहीं भूले होंगे। तुमने आवश्यकता से अधिक गप्प हाँकी है।"

"सुनो, यदि मेरे पास एक पेड़ होगा तो बंगाल-बत्तियाँ न होने का मैं कोई बहाना ढूँढ़ लूंगा और किसी प्रकार मुक्ति पाजाऊँगा, किन्तु मैं नहीं सोच पा रहा हूँ कि अब, इस समय क्या करूँ।"

"नहीं," मैंने कहा। "मैं तुम्हें पेड़ नहीं दे सकता। बिना पेड़ के वह नव-वर्ष सा लगेगा ही नहीं।"

"ओह, एक दोस्त बनो। तुमने अनेक बार मुझे कठिनाइयों से उबारा है, इस बार मेरी रक्षा करो।"

"मैं, सदैव, क्यों तुम्हें उलझनों से बचाऊँ ?"

"निश्चित ही यह अन्तिम अवसर होगा। इसके बदले में तुम जो वस्तु माँगो मैं दूँगा। तुम मेरी स्किस या स्केट्स ले सकते हो। मैं तुम्हें अपनी जादू की लैम्प दे सकता हूँ या अपना टिकटों का एलबम। तुम मेरी वस्तुयें जानते हो। अपनी रुचि की वस्तु ले लो।"

"ठीक है," मैंने कहा। "मुझे लट्टू दे दो और तुम पेड़ ले लो।"

मिश्का ने कुछ नहीं कहा। वह घूम गया और खिड़की के बाहर देखने लगा। तब उसने मेरी ओर देखा। उसके नेत्र बड़े उदास हो रहे थे।

"नहीं," उसने कहा। "मैं तुम्हें लड्डी नहीं दे सकता।"

"किन्तु तुमने कहा है कि मैं तुम्हारी कोई भी वस्तु ले सकता हूँ।"

"मैं लड्डी के सम्बन्ध में भूल गया था। मैंने कहा था कोई भी वस्तु, किन्तु लड्डी कोई वस्तु नहीं है, वह जीवित पदार्थ है।"

"किन्तु वह एक साधारण दोगला कुत्ता है। वह कोई विशेष नस्ल का भी तो नहीं है।"

"यह उसका दोष तो नहीं है। वह मुझे उसी प्रकार प्यार करता है। जब मैं घर में नहीं होता हूँ तो वह मेरी प्रतीक्षा करता है और जब मैं घर आता हूँ तो अपनी दुम हिलाने लगता है और प्रसन्नता से भोंकने लगता है। नहीं, मुझे चिन्ता नहीं कि क्या होगा। लड़के, जितना चाहें मुझ पर हँस लें, किन्तु मैं लड्डी को पृथक नहीं कर सकता—सोने के एक ढेर के बदले भी नहीं।"

"ठीक है," मैंने कहा। "तुम बिना किसी वस्तु के पेड़ ले सकते हो।"

"मैं बिना किसी वस्तु को दिये उसे नहीं ले सकता। मैंने कहा तुम मेरी कोई वस्तु ले सकते हो और यह मेरी इच्छा है। तुम मेरी जादू की लैम्प व उसके साथ के सब स्लाइड ले सकते हो। तुम जानते हो कि तुम सदैव उन्हें चाहते थे।"

"नहीं, मुझे जादू की लैम्प नहीं चाहिये। मैं कहता हूँ," तुम पेड़ ले सकते हो।"

"उस पेड़ को पाने के लिये तुमको बहुत कष्ट उठाना पड़ा है।"

"इससे क्या ? मैं उसके लिये कोई वस्तु नही चाहता।"

"किन्तु मैं यों बिना किसी वस्तु के नहीं लेना चाहता।"

"किन्तु वह बिना किसी वस्तु के नहीं है," मैंने कहा। "हम लोग मित्र है, और वह किसी जादू की लैम्प से कहीं अधिक महत्व-पूर्ण बात है। पेड़ हम दोनों का है।"

तभी ट्रेन 'टर्मिनस' पहुँच गयी। हम आ पहुँचे थे। मिश्का के पैर ने दर्द करना बन्द कर दिया था, किन्तु जब हम ट्रेन से उतरे तो वह थोड़ा लँगड़ा रहा था।

मैं घर भागा गया—मां को बताने कि मैं लौट आया हूँ और तब शीघ्र ही मिश्का के यहाँ गया।

पेड़ पहले से ही कमरे के बीचोबीच खड़ा था और मिश्का उसके रिक्त स्थानों में हरियाली पोतने में व्यस्त था।

हमने उसे पेन्ट करना समाप्त भी नहीं किया था कि लड़के आना प्रारम्भ होगये। वे यह देखकर बड़े हैरान हो रहे थे कि देवदार का पेड़ अभी तक तैयार नहीं हुआ था।

"कल्पना तो करो, लोगों को देवदार-वृक्ष की पार्टी के लिए आमन्त्रित करना और समय से वृक्ष को सजाना तक नहीं," उन लोगों ने कहा।

तब हमने जो कुछ उस दिन हुआ उनसे बताया। मिश्का ने और भी बात जमाने के लिए कहा कि भेड़ियों ने जंगल में हम पर हमला कर दिया और तब उनसे छिपने के लिये हम एक पेड़ पर चढ़ गये। किन्तु लड़कों ने हमारे एक शब्द पर भी विश्वास नहीं

किया, उल्टा वे हम पर हँसते रहे। मिश्का पहले तो बहुत रुष्ट हुआ किन्तु तब उसने उस हंसी को समझा और स्वयं भी हंसना प्रारम्भ किया।

वह सब स्थान हमारे लिये ही था क्योंकि मिश्का की माँ व पिता नव-वर्ष की दावत में पड़ोस के मकान में गये हुए थे। उन्होंने हमारे लिए एक बड़ा गोल केक दे दिया था जिसमें मुरब्बा भरा हुआ था और खाने को और बहुत सी सामग्री जिससे हम लोग भी नव-वर्ष-दावत को उसी भाँति आनन्द से मनाया करें। लड़कों के पास कोई बड़ा व्यक्ति न होने से वे बहुत उद्दण्ड हो गये। तुमने इतना हल्ला कभी नहीं सुना होगा। सब लोगों के एक साथ मिलने से भी अधिक हल्ला, मिश्का अकेला कर रहा था। और, मैं जानता था कि वह यह सब क्यों कर रहा था। उसने तरह-तरह के खेल और चालाकियाँ ईजाद करना प्रारम्भ कर दिया था जिससे लड़के बंगाल की बत्तियों का ध्यान न कर सकें।

थोड़ी देर में हमने पेड़ पर की रंगीन बत्तियों को जला दिया। तभी बारह का घंटा बोला।

"हुर्रे!" मिश्का चिल्लाया। "आनन्दप्रद नव-वर्ष।"

"हुर्रे!" लड़के चिल्लाये। "नव-वर्ष शुभ हो! हुर्रे।'

मिश्का ने अब घबड़ाना बन्द कर दिया था और स्वयं भी प्रसन्न हो रहा था। "अब सब लोग, बैठो," उसने कहा, "अब हम कुछ चाय और केक लेंगे।"

"बंगाल की बत्तियाँ क्या हुईं?" किसी ने प्रश्न किया।

"बंगाल की बत्तियाँ?" मिश्का लड़खड़ाया। "वे तैयार नहीं हैं।"

लड़कों ने हल्ला-गुल्ला मचाया। वे बड़े निराश हुए। "तैयार नहीं हैं ? किन्तु तुमने बंगाल की बत्तियाँ दिखाने का वचन दिया था तुमने हमें उल्लू बनाया।"

"नहीं मित्रो, सच, मैंने नहीं बनाया। मैंने कुछ बनाई थीं, किन्तु वे अभी भी गीली हैं।"

"ठीक है, यदि तुम्हारे पास वे सचमुच हैं तो दिखाओ। वे अब तक सूख गये होंगे।"

मिश्का अनिच्छा से कुर्सी पर चढ़ा और ट्रे को भोजन की अल्मारी से उतार कर लाया। वह अपने आतिशबाजी के सामान के साथ कुर्सी से गिरते-गिरते बचा। उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, वे तब तक सूख गये थे।

"वह देखो।" लड़के चिल्लाये। "वे पूरी तरह सूख गये है। तुम केवल हमें भगाना चाह रहे थे।"

"वे केवल सूखे दिखायी दे रहे हैं।" मिश्का ने कहा। "वे अन्दर से पूरी तरह गीले होंगे। वे जलेंगे नहीं, मैं कह रहा हूँ।"

"वह हम देखेंगे।"

उन लोगों ने छोटे टुकड़े छीने और देवदार के पेड़ पर उन्हें लगा दिया।

"रुको, पहले हमें एक जलाने दो," मिश्का ने अनुरोध किया।

किन्तु उन्होंने उसकी बात नहीं सुनी। वे दियासलाइयाँ ले आये और जब तक वह उन्हें रोके उन लोगों ने सब आतिशबाजी जला दी।

वहाँ एक भयानक फस-फस और हल्ला गुल्ला हुआ जैसे समूचा

कमरा साँपों से भर गया हो। हम सब आकर पीछे कूदे। और तब बंगाल की बत्तियाँ एक तीव्र प्रकाश के साथ जल उठीं, चमकती हुईं और फुलझड़ियाँ छोड़ती हुईं और ऊपर को चमकती फुलझड़ियों के पहाड़ उड़ाती हुईं। वह बड़ा सुन्दर आतिशबाजी का तमाशा था। नहीं, वह उससे भी अच्छा था—वे 'अरोरा प्रकाश' जैसी थीं। वह जैसे ज्वालामुखी की सी चिनगारियाँ थीं। वह दृश्य बहुत सुन्दर था। वृक्ष चमक उठा और जगमगाहट में अपने चारों ओर चाँदी उगलने लगा। और मिश्का वहाँ खड़ा-खड़ा निहारता रहा जैसे नया तैयार पालिश किया हुआ बर्तन। अन्त में प्रकाश समाप्त होगया और वहाँ दम घोटने वाला धुँआ भर गया। लड़कों ने छींकना, खाँसना व आँखें मलना प्रारम्भ कर दिया। हम सब रास्ते की ओर भागे किन्तु धुँआ वहाँ भी हमारे पीछे भर आया। कोट और टोपियों के लिये वहाँ हल्ला मच गया।

"तुम लोग कहाँ जा रहे हो" मिश्का चिल्लाया "चाय और केक का क्या होगा ?"

किन्तु लड़के इतना खाँसे कि बोल ही न पाये। उन्होंने जल्दी-जल्दी अपना सामान लिया और घर भाग गये। मैं भी घर जाना चाहता था किन्तु मिश्का ने नहीं जाने दिया।

"कम से कम तुम मत जाओ। मेरे साथी बनो और रुको। हम लोग चाय पियेंगे और केक खायेंगे "

अतः मैं रुक गया थोड़ी देर बाद, रास्ते का धुआँ स्वच्छ हो गया किन्तु कमरा अभी भी उससे काला हो रहा था। मिश्का ने अपना रूमाल भिगोया और मुँह व नथुनों में लपेट लिया तथा कमरे में घुसा, केक घसीट लाया और रसोई में ले गया।

बर्तन का पानी तभी उबलना शुरू हुआ था और हम शीघ्र ही चाय-केक खाने बैठ गये। वह बहुत अच्छा केक था—अन्दर मुरब्बे से भरा हुआ। ठीक है कि उसमें कुछ धुँये का सा स्वाद आ रहा था किन्तु मैने व मिश्का ने उसकी चिन्ता नहीं की। हमने लगभग आधा खा लिया और शेष लड्डी को खिला दिया।
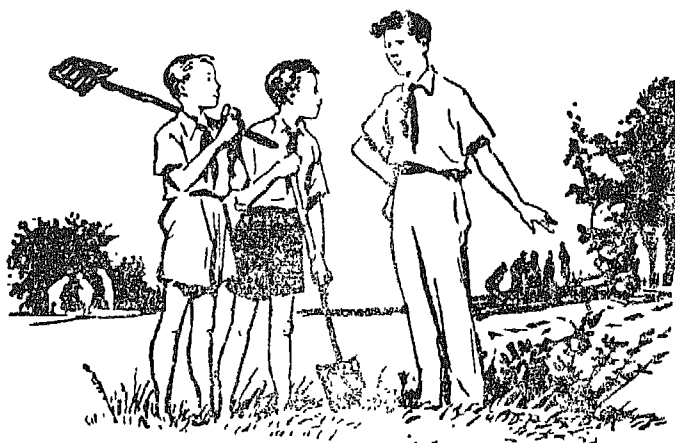
माली

पिछली गर्मियों में हमारे 'पायनियर कैम्प' पहुँचने के एक या दो दिन पश्चात् वित्या—हमारे पायनियर नेता, ने घोषणा की कि हम लोग अपना सब्जियों का बगीचा स्वयं लगायेंगे। हमने आपस में विचार किया कि हमको कैसे कार्य की व्यवस्था करनी चाहिए और किन-किन सब्जियों को लगाना चाहिए। यह निश्चय हुआ कि बगीचे को छोटे-छोटे टुकड़ों में विभक्त कर लेना चाहिए। और प्रत्येक प्लाट पर दो पायनियरों के दल

जुटा देने चाहिए। प्रत्येक खेत के लिए एक प्रतियोगिता होगी और जीतने वाले को इनाम मिलेगा। आगे बढ़ने वाले दलों को पिछड़ने वालों की सहायता करनी होगी जिससे भूमि ठीक से जोती जा सके और अच्छी उपज उत्पन्न हो।

मिश्का और मैंने एक ही दल में रहने को कहा। कैम्प में आने के पहले हमने निश्चय किया था कि हम लोग साथ-साथ काम करेंगे—साथ-साथ ही मछलियाँ पकड़ने और सब काम करने जायेंगे।

वादिक जेतसेव ने प्रस्ताव किया कि एक चैलेंज-बैनर (प्रति-योगिता-ध्वज) होना चाहिए और वह उस दल को मिलना चाहिए जो सब से पहले जुताई समाप्त कर दे। इस पर प्रत्येक सहमत हो गया और यह निश्चय हुआ कि वह झण्डा फिर सर्वोत्तम पौधे लगाने वाले को और तदनन्तर सर्वोत्तम स्वच्छता रखने वाले को दिया जाय। और जो दल सबसे अच्छी उपज दिखावेगा वही उसे लेकर नगर में जायगा।

मिश्का और मैंने संकल्प किया कि उस झण्डे को हम लोग जीतेंगे।

"हम उसको प्रारम्भ में ही जीतेंगे और उसको समूची गर्मियाँ अपने पास से नहीं जाने देंगे और तब वह हमारे ही साथ नगर लौट कर जावेगा," मिश्का बोला।

हमको नदी के निकट भूमि का एक टुकड़ा दिया गया। हमने उसे नापा, टुकड़ों की सीमायें बाँधीं और लकड़ी के चिह्न गाड़े और उन पर नम्बर डाले। मिश्का और मुझे १२ नम्बर का प्लाट मिला। मिश्का सन्तुष्ट न था। वह वित्या के पास शिकायत करने भागा गया कि हमको सब से रद्दी प्लाट मिला है।

"वह रही क्यों है ?" वित्या ने प्रश्न किया।

"उसके बीच में एक गड्ढा है।"

"उससे क्या," वित्या हँसा, "साथ ही वह गड्ढा नहीं है अपितु पशुओं के चलने का निशान है।"

"वहाँ एक लकड़ी का ठूँठ भी है," मिश्का गुर्राया।

"और खेतों में भी ठूँठ हैं।"

किन्तु मिश्का को सन्तोष नहीं हुआ।

"उसको उखाड़ना होगा," वह चिल्लाया।

"ठीक है, काम प्रारम्भ करो और उसे उखाड़ फेंको। यदि तुम्हें सहायता की आवश्यकता होगी तो दूसरे हाथ बटावेंगे।"

"धन्यवाद, हम वह अपने आप कर लेंगे," मिश्का ने अहंकार दिखलाते हुए कहा। "हम और दूसरों की भी सहायता कर सकते हैं।"

"यही तो भावना होनी चाहिये ?" वित्या बोला।

प्रत्येक ने खोदना प्रारम्भ किया, मिश्का व मैंने भी। किन्तु थोड़ी-थोड़ी देर बाद मिश्का खोदना रोक देता और अन्य लोगों को देखने जाता कि औरों ने कितना किया है।

"यदि तुम काम नहीं करोगे तो हम शीघ्र ही औरों से पीछे रह जायेंगे," मैंने उसे समझा दिया।

"वह ठीक है। मैं उन्हें पकड़ लूँगा," वह बोला।

उसने काम करना प्रारम्भ किया किन्तु थोड़ी ही देर में वह फिर भाग गया।

हम लोग उस दिन अधिक न कर सके क्योंकि शीघ्र ही खाने की घंटी बज गई। मिश्का और हमने भोजनोपरान्त भाग कर खेत पर आने का निश्चय किया। किन्तु मिश्का ने हमें रोक दिया।

"एक दिन के लिए उतना बहुत होगा। हम लोग केवल प्रातः काल ही काम करेंगे। भोजन के पश्चात् हम विश्राम करेंगे। अन्यथा आप में से कुछ लड़कों ने यदि पहले दिन ही उसे अधिक कर डाला तो शेष दिनों में कुछ न कर पायेंगे।"

दूसरे दिन सुबह मिश्का व मैं औरों के पहुँचने के पहले ही खेत पर आ गये और खुदाई प्रारम्भ कर दी। थोड़ी देर में ही मिश्का ने वित्या से फीता माँगा और नापना प्रारम्भ किया कि कितना खुद चुका है और कितना रह गया है। उसके अनन्तर उसने थोड़ी खुदाई और की और फिर नापा। और हर बार जब उसने नापा तो लगा कि अभी कुछ नहीं हुआ है।

"और क्या, हमने अभी कुछ नहीं किया है," मैंने कहा। "क्योंकि मैं खोदने का काम कर रहा हूँ और तुम जो कुछ कर रहे हो वह है नाप-तोल।"

उसने नापने का फीता फेंक दिया और खोदना प्रारम्भ किया। किन्तु उसने थोड़ा ही किया था कि उसके फावड़े में एक जड़ अटक गयी। उसने खोदना बन्द कर दिया और जड़ निकालने के लिए खोदने लगा। वह खींचता रहा, खींचता रहा किन्तु वह बाहर आयी ही नहीं। उसने अपना पूरा खेत उलट डाला और बराबर वाला भी ताकि उसे निकाल दे।

"उसे यों ही छोड़ दो," मैंने कहा। "तुम उसके साथ क्यों जूझ रहे हो?"

"मुझे क्या पता था कि वह आधे मील लम्बी होगी ?'

"ठीक है, होगी।"

"किन्तु उसका कहीं तो अन्त होगा ही, कि नहीं होगा ?"

"किन्तु उससे तुम्हें क्या अन्तर पड़ता है ?"

"मैं इसी प्रकार का व्यक्ति हूँ कि यदि मैं कोई कार्य प्रारम्भ करता हूँ तो उसको पूरा भी करता हूँ।"

और उसने दोनों हाथों से जड़ घसीटी। मैं बिगड़ा, जड़ के पास गया और अपने फावड़े से काट कर उसे नीचे फेंक दिया। मिश्का ने फीते से उसे नापा।

"इसे देखो," उसने कहा। "साढ़े छः मीटर।* अब यदि तुमने इसे न काटा होता तो यह बीस मीटर होती।"

मैंने कहा : "यदि मुझे पता होता कि तुम काम करने के स्थान पर मटरगश्ती करोगे तो मैं तुम्हें कभी साथ न लेता।"

"ठीक है, यदि तुम चाहो तो अपने आप काम करने जाओ। मैं तुम पर दबाब नहीं देता कि तुम मेरे साथ ही काम करो।"

"उसके बाद, जब मैंने बहुत सा खेत खोद लिया है ? अब कुछ करना नहीं। किन्तु निश्चित ही समाप्त करने वालों में हम प्रथम नहीं होंगे।"

"कौन कहता है कि नहीं होंगे ? वन्या लोज़किन और सेन्या बावरोव को देखो ! जितना हमने खोदा है उससे उन्होंने कम ही खोदा है।"

---

*मीटर=लगभग ४० इंच

वह वन्या लोज़किन के खेत पर गया और उनकी खिल्ली उड़ाता रहा :

"ए थोड़ा खोदने वालो ! हमें जल्दी ही तुम लोगों की सहायता करनी पड़ेगी ।"

किन्तु उन्होंने उसे भगा दिया । "जाओ, अपना काम करो, अन्यथा हमको तुम्हारी सहायता करनी पड़ेगी ।"

मैंने कहा : "तुम बड़े अच्छे हो ! केवल दूसरों की हँसी करना जब कि तुमने कठिनाई से अपने आप कोई कार्य किया होगा । मुझे खेद हो रहा है कि मैंने तुम्हें साथ लिया ।"

"घबड़ाओ मत," उसने कहा । "मैंने बड़ी अच्छी युक्ति सोची है । कल झण्डा हमारे खेत पर लहरायेगा, तुम देखोगे ।"

"तुम सनकी हो," मैंने कहा । "अभी इस खेत पर पूरा दो दिन का काम शेष है और तुमने ऐसे ही किया तो चार दिन ।"

"तुम देखोगे । मैं अपनी योजना तुम्हें बाद में बताऊँगा ।"

"ठीक है । किन्तु, अब काम करो । भूमि अपने आप नहीं खुद जायगी ।"

उसने अपना फावड़ा लेकर खोदना प्रारम्भ किया किन्तु तभी वित्या ने कहा कि खाने का समय हो गया अतः उसने अपना फावड़ा अपने कन्धे पर रक्खा और भोजन के कमरे की ओर बढ़ गया ।

भोजन के पश्चात् हम सबने वित्या को झण्डा बनाने में सहायता की । हमने एक लकड़ी का टुकड़ा उसके डंडे के लिए खोजा और कपड़े को काटा–सिया और डन्डे को सुनहले रंग से

रंगा। वित्या ने 'सर्वोत्तम माली' श्वेत चमकीले रंग से झण्डे पर लिखा। वह बड़ा सुन्दर लग रहा था।

"तुमको 'कौए भगाने वाला पुतला' भी बना लेना चाहिए," मिश्का बोला, "जिससे कौये हमारे बगीचे के बाहर ही रहें।"

प्रत्येक ने उस सुझाव को बहुत पसन्द किया। हम एक खम्भा लाए। हाथों के लिये उस पर टेढ़ी करके एक लकड़ी बाँधी; कमीज के लिए एक पुरानी कमीज का चीथड़ा ले आये और उस पर एक बर्तन रख दिया जो सिर का काम करे। मिश्का ने तारकोल से बर्तन पर आँखें, नाक और मुंह बना दिया और हमारा 'कौए भगाने वाला पुतला' बन गया। उसको देख कर डर लगता था! उसे हमने बगीचे के बीचोंबीच गाड़ दिया। सभी उसे देखकर बहुत हँसे।

मिश्का मुझे किनारे ले गया और कान में फुसफुसाया: "यह है मेरी योजना। आज रात को जब सब सो जायेंगे तब हम जायेंगे और अपने पूरे खेत को खोद डालेंगे, थोड़ा सा छोड़ कर जिसे हम कल सरलता से समाप्त कर देंगे। तब झण्डा जीतने में हम निश्चिन्त हो जावेंगे।"

"केवल तभी न जब तुम काम करोगे," मैंने कहा, "किन्तु तुम तो सब तरह की मूर्खतापूर्ण बातों में समय गंवा रहे हो।"

"इस बार मैं आग की भाँति काम करूँगा, तुम देखोगे।"

"ठीक है। किन्तु यदि तुम नहीं करोगे तब फिर मैं भी नहीं करूँगा।"

उस रात्रि मैं व मिश्का बिस्तर पर सब के साथ गए किन्तु

हमने केवल सोने का बहाना किया। जब सब लोग सो गए तब मिश्का ने मेरे पुट्ठे पर एक झटका दिया। मैं तभी सोया था। "उठो।" उसने ऊँची फुसफुसाहट में कहा। "अच्छा होता हम लोग कार्य प्रारम्भ करते अन्यथा झण्डे से विदा का चुम्बन लेते हुए नमस्कार करना पड़ेगा।"

हम उस शयनागार से रेंग कर निकले और अपने फावड़े लिए बगीचे की ओर लपके। यह एक चमकनी चांदनी रात थी और प्रत्येक वस्तु स्पष्ट दिख रही थी।

थोड़ी देर में ही हम अपने खेत पर पहुँच गये।

"हम आ गये," मिश्का बोला। "यह हमारा खेत है। बीच में जो ठूँठ खड़ा है हम उसके आधार पर कह सकते हैं।"

हमने कार्य प्रारम्भ किया। इस बार मिश्का ने सचमुच काम किया और शीघ्र ही हम लोग ठूँठ तक किनारे-किनारे सब खोद गये। हमने उसे उखाड़ना चाहा। हमने आस-पास की भूमि को खोद कर ढीला किया और अपनी शक्ति भर उसे खींचा किन्तु वह हिला तक नहीं। हमें उसको जड़ों को फावड़ों से काटना पड़ी। यह एक कठिन कार्य था किन्तु अन्त में हमने उसे निकाल लिया। तब हमने भूमि को समतल किया और मिश्का ने वह ठूँठ दूसरे खेत पर फेंक दिया।

"यह कोई अच्छी बात नहीं है," मैंने कहा।

"तब उसे हम कहाँ रक्खेंगे ?"

"किसी भी तरह, कम से कम अपने पड़ौसी के खेत पर तो नहीं!"

"ठीक है, उसे हमें नदी में फेंक देना चाहिए।"

हमने उसे उठाया और नदी तक घसीट ले गये। वह बड़ा

भारी था और हमारा बहुत समय उसमें नष्ट हुआ। किन्तु अन्त में उसे हम किनारे ले आये और उसे उछाल कर पानी में फेंक दिया। वह एक कछुए की भांति पानी में तैर गया। उसकी जड़ें उसके चारों ओर निकली हुई थीं। जब तक वह ओझल नहीं हो गया हम उसे देखते रहे और तब घर गये। उस रात्रि और अधिक खोदने के लिए हम बहुत थक गये थे। साथ ही, खोदने का काम भी थोड़ा ही रह गया था।

अगले दिन हम औरों से देर में उठे। ओह, प्रिय, हम कितने दर्द का अनुभव कर रहे थे! हमारे हाथ पैर दर्द कर रहे थे, और हमारी पीठ, जैसे टूटी जा रही हो।

"हम लोगों को क्या हुआ ?" मिश्का बोला।

"एक साथ अधिक खुदाई," मैंने कहा।

जब हम लोग थोड़ा हिले-डुले तो कुछ ठीक हुए। नहाने के समय मिश्का ने गप्प हांकना प्रारम्भ किया कि हम लोग निःसन्देह झण्डा जीतेंगे।

नाश्ते के पश्चात हम सब खेतों पर गये। हमने और मिश्का ने जल्दी नहीं की। हमारे पास बहुत समय था।

जब हम खेत पर पहुँचे तो सब लोग ऊदबिलाव की तरह खोदने में जुटे हुए थे। जब हम चल रहे थे तब उन पर हँसते जाते थे।

"तुमको इतना कठोर परिश्रम करने की चेष्टा नहीं करनी चाहिए क्योंकि तुम किसी प्रकार झण्डा नहीं जीत सकते," हमने उनसे कहा।

"अच्छा हो यदि तुम लोग काम में जुटो, दोनों," उन्होंने उत्तर में चिल्ला कर कहा।

तभी मिश्का ने कहा : "इस खेत को देखो। मुझे आश्चर्य है कि यह किसका है। उन्होंने कठिनाई से ही कुछ खोद पाया है। वे घर पर ही गहरी नींद में पड़े सो रहे होंगे।"

मैंने अपने निशान पर देखा—नं० १२, "क्यों, यह हमारा खेत है?"

"यह नहीं हो सकता," मिश्का ने कहा। "हमने इससे कहीं अधिक कर डाला है।"

मैंने भी वही सोचा।

"लगता है किसी ने शैतानी करके हमारा नम्बर बदल लिया है।"

"नहीं और सब नम्बर ठीक हैं। इधर नं० ११ है और उधर दूसरी ओर नम्बर १३।"

हमने फिर देखा और सामने बीच में एक पेड़ का ठूंठ दिखाई दिया। हम अपनी आँखों पर विश्वास नहीं कर रहे थे।

"सुनो," मैंने कहा, "यदि यह हमारा ही प्लाट है तो वह ठूँठ वहाँ बीच में खड़ा क्या कर रहा है? हमने उसे उखाड़ फेंका था, कि नहीं?"

"निश्चय, हमने वैसा किया था," मिश्का ने कहा। "एक रात में ही उसमें एक नया ठूँठ पैदा नहीं हो सकता।"

तभी, हमने बन्या लोजकिन को हमारे बराबर वाले खेत में कहते सुना :

"देखो, भाइयो! एक सच्चा आश्चर्य! कल यहाँ एक बड़ा ठूंठ था और वह आज गायब हो गया। ऐसा कैसे हो सकता है?"

प्रत्येक उस आश्चर्य को देखने गया। मिश्का और मैं भी गये।

क्या हुआ है ? कल उनका आधे से भी कम खेत खुदा हुआ था और आज केवल एक छोटा सा कोना रह गया है।

"मिश्का," मैंने कहा। तुम जानते हो ? वह उनका खेत था जिसको हमने कल रात्रि में खोद डाला ! और जिस ठूँठ को हमने निकाल फेंका, वह उनका था।"

"ऐसा नहीं हो सकता।"

"ऐसा ही हुआ है।"

"ओह, हम कैसे गधे हैं !" मिश्का गुर्राया। "अब हम क्या करेंगे ? अधिकार रूप में उन्हें अपना खेत हमें देना चाहिए और हमारा लेना चाहिए—वह सब करा धरा कार्य।"

"चुप रहो—शट अप," मैंने कहा। "तुम समूचे कैम्प को हँसी का पिटारा तो नहीं बनना चाहते, या चाहते हो ?"

"किन्तु अब हम क्या करेंगे ?"

"खोदो," मैंने कहा। "तेजी से खोदो।"

हमने अपने फावड़े उठाये। किन्तु जब हमने खोदना प्रारम्भ किया तो हमारे गरीब हाथ, पैर और पीठ इतना दर्द कर रहे थे कि हमें काम बन्द करना पड़ा। हमने अपने पड़ोसी के खेत पर इतना कठोर परिश्रम किया था कि हममें अपना कार्य समाप्त करने की शक्ति शेष न थी।

बहुत शीघ्र ही बन्या लोजकिन और सेन्या बाबरोव ने अपना खेत समाप्त कर दिया। वित्या ने उन्हें बधाई दी और उन्हें

झण्डा दे दिया। उसको उन्होंने अपने खेत के बीच में गाड़ दिया। और सब लोग आस पास इकट्ठे हुए और तालियाँ बजायीं। मिश्का उसे नहीं देख सका।

"यह उचित नहीं है!" उसने कहा।

"क्यों, यह उचित क्यों नहीं है?" वित्या ने कहा!

"किसी ने उनका ठूँठ निकाल कर फेंक दिया। वे स्वयं कहते हैं।"

"इसमें हमारा दोष नहीं है।" वन्या ने कहा। "सम्भव है कोई जलाने की लकड़ी के रूप में चाहता हो। यह उनके ध्यान करने की बात है, हमारी नहीं।"

"यह भी हो सकता है किसी ने उसे गलती से खोद डाला हो।" मिश्का ने कहा।

"यदि उन्होंने ऐसा किया होगा तो वह यहीं कहीं आस-पास पड़ा होगा।"

"यह भी हो सकता है कि किसी ने उसे नदी में फेंक दिया हो," मिश्का कहता गया।

"यह भी हो सकता है—वह भी हो सकता है—तुम क्या कहना चाहते हो?" किन्तु मिश्का चुप न रह सका।

"किसी ने तुम्हारे लिए कल रात में खुदायी की है," उसने कहा!

मैं उसको चुप रहने के लिए रोकता रहा। वन्या ने कहा—

"सम्भव है, उन्होंने किया हो। हमने अपना खेत तो नापा नहीं था।"

हम अपने खेत पर लौट गये और खोदना प्रारम्भ किया। वन्या और सेन्या वहाँ खड़े होकर देखते रहे और व्यंग्य करते रहे।

"इनको देखो," सेन्या बोला। "ये जंगली कछुए की तरह सुस्त हैं।"

"हमको इनकी सहायता करनी होगी," वन्या ने कहा। "खोदने में बेचारे ये सबसे पीछे हैं।"

अतः उन्होंने हमारा हाथ बँटाया। उन्होंने खोदने में हमारी सहायता की और ठूंठ निकालने में किन्तु जैसे-तैसे ही हमने सबसे अन्त में काम समाप्त किया।

किसी ने सुझाव दिया कि कौए उड़ाने वाला पुतला, हमारे खेत पर लगना चाहिये क्योंकि हमही ने सबसे अन्त में खुदायी समाप्त की थी। प्रत्येक ने सोचा कि यह बहुत सुन्दर विचार है अतः वह 'कौए उड़ाने वाला पुतला' हमारे खेत पर आगया। मिश्का और मुझे बहुत बुरा लग रहा था।

"खुश रहो" लड़कों ने कहा, "यदि तुम पौधे लगाने और सफाई रखने का काम ठीक करोगे तो हम लोग यह "कौए उड़ाने वाला पुतला" तुम्हारे खेत से ले जायँगे।"

यूरा कोजलोव ने एक प्रस्ताव किया—"यह हमें उसे इनाम में देना चाहिये जो शेष कार्य को सबसे खराब करे।"

"हाँ, ठीक है!" सब चिल्लाये।

"और शरद-ऋतु में उस दल को हम इसे उपहार में देंगे जो सबसे रद्दी उपज उत्पन्न करेगा," सेन्या बाबरोव ने कहा।

मिश्का और मैंने संकल्प किया कि हमको कठोर परिश्रम करके इस मनहूस "कौवे उड़ाने वाले पुतले" से मुक्ति पानी चाहिए। हमने परिश्रम किया किन्तु वह समूची गर्मियों हमारे खेत पर खड़ा रहा। जब बीज बोने का समय आया तो मिश्का ने सब चीजें मिला दीं और गाजर के बीज पर चुकन्दर की जड़ें बो दीं। और जब हमने बगीचे की सफाई प्रारम्भ की तो उसने घास-फूस के स्थान पर सब अजवायन खोद डाली और उसके स्थान पर हमें मूली बोनी पड़ी। मैंने बहुत बार वहाँ से हटना चाहा किन्तु मुझे बीच में ही छोड़ भागने का मन नहीं हुआ और मैं अपने दोस्त को मंझधार में छोड़ना भी नहीं चाहता था।

अतः अन्त तक मैं उसके साथ रहा।

और तुम विश्वास करोगे, जैसे भी हो, मुझे व मिश्का को झंडा मिला। सब को आश्चर्य हुआ—हमको ककड़ियों और टमाटर की सबसे भारी उपज प्राप्त हुई।

तब एक चर्चा होती रही।

"यह ठीक नहीं है," औरों ने कहा। "वे सदा ही, हर काम में सबसे पीछे रहते थे और उनको सबसे भारी उपज मिली। ऐसा कैसे हुआ?"

किन्तु वित्या ने कहा—"यह पूर्णतः उचित है। सम्भव है वे और सबों से पीछे रहे हों किन्तु उन्होंने मिट्टी में ठीक से काम किया और कठिन प्रयत्न भी।"

वन्या लोजकिन बोला—"उनको भूमि का अच्छा टुकड़ा मिला, जैसा वह है। मुझे और सेन्या को खराब खेत मिला। यही कारण है कि हमारी उपज कम रही, यों हमने भी कठिन परिश्रम किया था।

और वे अपना पुराना "कौवे उड़ाने वाला पुतला", चाहें तो फिर रख सकते हैं क्योंकि उसे वे समूची गर्मियों रक्खे रहे हैं।"

"हमको कोई चिन्ता नहीं। हम उसे सहर्ष स्वीकार करेंगे," मिश्का ने कहा।

प्रत्येक हँसा। मिश्का बोला—"यदि हमारे पास वह कौवे उड़ाने वाला पुतला न होता तो मैं झंडा कदापि न जीतता।"

"वह कैसे ?" प्रत्येक ने प्रश्न किया।

"क्योंकि उसने हमारे खेत से कौओं को दूर रक्खा इसी से हमको सबसे अधिक उपज प्राप्त हुई। साथ ही, यह हमको हर समय ध्यान दिलाता रहा कि हमें कठिन परिश्रम करना चाहिए।"

"मैंने मिश्का से कहा, "अब हम इस मनहूस पुराने "कौवे उड़ाने वाले पुतले" का क्या करेंगे ?"

"हमें इसे नदी में फेंक देना चाहिए," मिश्का ने कहा।

हम उसे नदी में ले गये और पानी में फेंक दिया। हमने उसको पानी में हाथ फैलाये हुये बहते देखा और तब वह जल्दी बहे इसके लिए हम पत्थर फेंकते रहे। जब वह चला गया तब हम कैम्प लौट आये।

उसी दिन ल्योशा कुरोचकिन ने मुझे व मिश्का को, हमारे खेत पर खड़ा करके तथा प्रतिद्वन्द्विता का झंडा बराबर में लगाकर हमारी एक तस्वीर खींची। यदि तुम हम लोगों की एक तस्वीर अपने पास रखना चाहो तो हम उसे भेजने में बहुत प्रसन्न होंगे।

ककड़ियाँ

एक बार पावलिक, कोतका को मछली पकड़ने के लिये साथ ले गया। किन्तु उस दिन उनका भाग्य अच्छा नहीं था, कोई मछली नहीं मिली और वे घर लौट आये। मार्ग में वे, सामूहिक-खेतों के सब्जी के बगीचे के तारों पर चढ़ गये और अपनी जेबों को उन्होंने ककड़ियों से भर लिया। चौकीदार ने उन्हें देखा और सीटी बजायी किन्तु वे भाग गये। पावलिक डर रहा था कि सामूहिक-खेतों के बग़ीचे से सब्जी चुराने के कारण वह कठिनाई में पड़ जावेगा अत: उसने अपनी सब ककड़ियाँ कोतका को दे दीं।

कोतका प्रसन्न होता हुआ घर भागा। "माँ, देखो हम तुम्हारे लिये कितनी ककड़ियाँ लाये हैं।"

उसकी जेबें ककड़ियों से भर रही थीं और कुछ ककड़ियाँ उसकी कमोज के अन्दर थीं और एक-एक बड़ी ककड़ी दोनों हाथों में।

"तुमने इन्हें कहाँ से पाया?" उसकी माँ ने तीव्रतापूर्वक प्रश्न किया।

"सब्जी के बगीचे से।"

"सब्जी का बगीचा कैसा?"

"नदी के किनारे, सामूहिक खेतों के बगीचे से।"

"तुमको वह लेने की अनुमति किसने दी?"

"किसी ने नहीं। मैंने वह स्वयं तोड़ लीं।"

"तुम्हारा मतलब है, तुमने चोरी की।"

"मैंने उन्हें चुराया नहीं, केवल उन्हें लिया। पावलिक ने कुछ लीं और तभी मैंने भी कुछ ले लीं।"

कोतका ने ककड़ियों को जेब से निकालना प्रारम्भ किया।

"एक मिनट रुको," उसकी माँ ने कहा। "अभी अपनी जेबें खाली मत करो।"

"किन्तु क्यों?"

"क्योंकि तुम्हें वे तुरन्त लौटा ले जानी हैं।"

"ओह, किन्तु मैं लौटाने नहीं जा सकता। वे सब्जी की बेलों

पर उगीं और मैं ले आया। वे इस प्रकार फिर तो उन पर उत्पन्न नहीं हो सकती।"

"कोई बात नहीं, तुमको वे लेजानी होंगी और जहाँ से लाये हो वहाँ जाकर लौटानी होगी।"

"मैं उन्हें फेंक दूँगा।"

"नहीं, तुम ऐसा नहीं कर सकते। तुमने न उन्हें उत्पन्न किया है न उनकी देखभाल की है अतः तुम्हें उन्हें फेंकने का कोई अधिकार नहीं है।"

"कोतका चिल्लाने लगा। वहाँ एक बूढ़ा आदमी है—एक चौकीदार। उसने हम पर सीटी बजाई और हम भागे……।"

"अब, तुम देखो, तुम कितने शैतान हो। मान लो वह तुम्हें पकड़ लेता?"

"वह हमें नहीं पकड़ पाया। वह बूढ़ा आदमी था।"

"तुम्हें स्वयं लज्जा आनी चाहिये," माँ ने कहा, "वह बूढ़ा आदमी ककड़ियों का उत्तरदायी है। और जब वे लोग देखेंगे कि सब ककड़ियाँ चली गयी हैं तो वे उस पर दोष लगायेंगे। क्या यह अच्छी बात है?"

मां ने सब ककड़ियाँ कोतका की जेब में भर दीं और कोतका उग्र रूप से चिल्लाता और विरोध करता रहा।

"मैं नहीं जाऊँगा। उस बूढ़े आदमी के पास एक बन्दूक है। वह मुझे गोली मार देगा।"

"यदि वह ऐसा करेगा तो तुम्हारे साथ बहुत ठीक करेगा। मुझे ऐसा लड़का नहीं चाहिये जो चोरी करे।"

कोतका केवल बुरी तरह चिल्लाया, "माँ कृपा करके मेरे साथ चलो। बाहर अँधेरा है। मुझे डर लगता है।"

"ककड़ियाँ लेने में तुम्हें डर नहीं लगा, कि लगा था।"

माँ ने कोतका को दो बड़ी ककड़ियाँ दीं जो उसकी जेब में ठीक नहीं आ रही थीं और उसको बाहर निकाल आई।

"यदि तुम इन ककड़ियों को वापस न लौटा सको तो घर मत आना।"

वह घर के अन्दर चली गई और द्वार बन्द कर लिया। कोतका धीरे-धीरे सड़क की ओर चला।

उस समय बहुत अँधेरा था।

"मैं इन्हें एक नाली में फेंक दूँगा और कह दूँगा कि लौटा आया," कोतका ने अपने चारों ओर देख कर, मन ही मन कहा। "नहीं, मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए। मुझे कोई देख सकता है, तथा इसके अतिरिक्त, वह बूढ़ा आदमी केवल मेरे कारण कठिनाई में पड़ेगा।"

वह सिसकता हुआ सड़क पर चला जा रहा था। वह बहुत डर रहा था।

"पावलिक के लिए, यह बहुत ठीक हुआ," उसने सोचा। "उसने अपनी ककड़ियाँ मुझे दे दीं और अब वह निश्चिन्त व सुरक्षित घर में बैठा है। उसको कोई दुःख नहीं होगा।"

वह गाँव के अन्त तक आया और खेतों को जाने वाले मार्ग पर चलने लगा। वहां एक भी प्राणी दिखायी नहीं दे रहा था। वह इतना डर गया कि सब्जी के खेत तक शेष मार्ग में वह दौड़ता

हुआ गया। जब वह यहाँ पहुँचा तो रुका और चौकीदार की झोंपड़ी के सामने खड़े होकर चिल्लाने लगा। चौकीदार ने सुना और बाहर आया।

"छोटे लड़के ! तुम क्यों चिल्ला रहे हो ?"

"बड़े दादा ! मैं सब ककड़ियाँ लौटा कर लाया हूँ।"

"कैसी ककड़ियाँ ?"

"वे, जिन्हें मैं व पावलिक तोड़ ले गये थे। माँ ने हमें लौटा आने को कहा है।"

"ओह, मैं समझा। तो वह तुम थे जिसको आज दोपहर में मैंने सीटी दी थी। तो तुम, जैसे भी हो, ककड़ियाँ ले गये। तुम छोटे शैतानो !"

"पावलिक ने कुछ लीं और कुछ मैंने। उसने अपनी भी मुझे दे दीं।"

"चिन्ता मत करो, पावलिक क्या करता है, सब्जी के बगीचे से चोरी करने से अच्छी बात तुम्हें सीखनी चाहिए। देखो, अब तुम आगे ऐसा कभी मत करना। अब लाओ, मुझे ककड़ियां दे दो और घर भाग जाओ।"

कोतका ने ककड़ियाँ निकालीं और भूमि पर रख दीं।

"ये सब हैं ?" बूढ़े ने पूछा।

"हाँ......नहीं......सब नहीं। केवल एक कम," कोतका ने कहा और पुनः चिल्लाना प्रारम्भ कर दिया।

"वह कहाँ है ?"

"बड़े दादा? वह मैंने खाली......मुझे दुःख है। मेरी ऐसी इच्छा नहीं थी।"

"क्या तुमने सचमुच खा ली? ठीक, तब वह बड़ा अच्छा हुआ, मेरा विश्वास है।"

"किन्तु......किन्तु, बड़े दादा! मेरे कारण तुम पर कोई विपत्ति तो न आवेगी?"

"तभी, तभी तुमको इस बात से उलझन हो रही है, यही न?" बूढ़ा हँसा। "नहीं, एक ककड़ी के लिए मुझ पर कुछ विपत्ति नहीं आवेगी। किन्तु यदि तुम सब न लाते तो मुझ पर वह आती।"

कोतका ने विदा ली और मार्ग पर भाग चला। अचानक वह रुका और लौट कर बोला: "बड़े दादा! बड़े दादा।"

"अब क्या मुसीबत है?"

"बड़े दादा, उस ककड़ी को मैंने खा लिया, क्या लोग कहेंगे कि मैंने उसे चुराया था?"

"उतनी बात अब मैं नहीं जानता," बूढ़े ने कहा। तब उसने आगे कहा: "कोई बात नहीं, हम लोग कह देंगे कि तुमने नहीं चुराया।"

"किन्तु............"

"हमें कहना होगा कि मैंने वह तुम्हें भेंट की थी।"

"धन्यवाद, बड़े दादा, गुड-नाइट।"

"लड़के, गुडनाइट।"

कोतका अपनी शक्ति भर खेतों को पार करता हुआ भागा। वह गड्ढों और पुलों को पार करता हुआ गाँव के निकट पहुँचा और चलने के लिए धीमा हो गया।

उसने बहुत प्रसन्नता का अनुभव किया।

थप-थप

मिश्का, कोस्त्या और मैं—पायनियर ग्रुप के जाने के एक दिन पूर्व, गर्मियों के अवकाश में गाँव गये। हम लोग पहले ही इस कारण भेज दिये गये थे कि वहाँ जाकर स्थान को औरों के आने के पूर्व ठीक करें। अपने पायनियर-नेता वित्या से हम लोगों ने अनुरोध किया कि वह हम लोगों को जाने दे क्योंकि हम लोग जल्दी से जल्दी गाँव पहुँचना चाहते थे।

वित्या हमारे साथ आया। हम लोग जब पहुँचे तो वे लोग सफाई-कार्य समाप्त कर रहे थे और

हम भी तुरन्त कार्य में व्यस्त हो गये; तस्वीरें और रंगीन-पोस्टर दीवाल पर टाँगना, कागज की झंडियाँ बनाना जिन्हें हमने डोरे में चिपका कर लड़ियाँ बनायीं और छत में टाँग दीं। तब हमने बहुत से फूलों के गुच्छे एकत्र किये और उनके गुलदस्ते बनाकर खिड़कियों की चौखटों पर रक्खे। जब हमने कार्य समाप्त किया तो वह स्थान बहुत सुन्दर प्रतीत हो रहा था।

संध्या को वित्या शहर लौट गया। इमारतों की देखभाल करने वाली मार्या मैक्सीमोव्ना, जो हमारे मकान के आगे के द्वार पर ही एक छोटी कुटी में रहती थी, हमारे पास आई और उसने हमें उस रात्रि को अपने यहाँ रहने का निमन्त्रण दिया। उसने सोचा कि अकेले मकान में रात्रि में सोने में हम डरेंगे! किन्तु मिश्का ने उसे बताया कि हम किसी बात से नहीं डरते हैं।

जब मार्या मैक्सीमोव्ना चली गयी, तब हम समोवार के निकट बैठ गये तथा द्वार पर आराम करते रहे और वह उबलता रहा।

गाँव के बाहर कितना मनोहर दृश्य होता है। मकान से आगे ही लम्बे रोवन के वृक्ष और बड़े-बड़े नीबू के पेड़ों की पंक्तियाँ थीं—बड़ी लम्बी-ऊँची और बहुत पुरानी, तार के किनारे-किनारे। नीबू के पेड़ों की टहनियों में स्थान-स्थान पर कौओं के घोंसले बने हुए थे और कौए वहाँ घेरा बनाकर बैठते तथा हर समय काँव-काँव करते रहते थे। पत्तियों के उड़ने की फरफराहट हवा में भरी हुई थी। वे सब ओर उड़कर शब्द करती थीं। कुछ उड़कर दीवाल से टकरातीं और भूमि पर गिर जातीं। मिश्का ने कुछ सूखी हुई पत्तियाँ उठा लीं और बक्स में रख लीं।

सूर्य जंगल में छिप गया था और बादल लाल हो रहे थे जैसे

आग जल रही हो। वहाँ इतना मनोरम दृश्य था कि यदि मेरे पास रंगों का डब्बा होता तो मैं वहीं तत्काल एक चित्र खींचता; ऊपर गुलाबी बादल, उसके नीचे हमारा समोवार और उसकी चिमनी से उठ कर गोले बनाता हुआ धुंआँ—जैसे किसी जहाज की चिमनी से उठ रहा हो।

थोड़ी देर में, बादलों की लाल चमक विलीन हो गई और बादल भूरे से दिखाई देने लगे। प्रत्येक वस्तु ऐसी उदास दिखने लगी जैसे हम लोग जादू के द्वारा किसी अपरिचित देश में उतर गये हैं।

जब समोवार उबल गया, तो उसको हम अन्दर ले गये। लैम्प जलाया और चाय पीने बैठ गये। खुली खिड़की से कीड़े आ-आकर लैम्प के चारों ओर नृत्य करने लगे। उस एकान्त स्थान में यों बैठकर हम लोगों का चाय पीना एक विशेष आकर्षण व विचित्रता उत्पन्न कर रहा था। हम उस रिक्त मकान में, मेज पर रक्खे समोवार की हलकी सी-सी सुनते रहे।

चाय के बाद हमने सोने की तैयारी की। मिश्का ने द्वार बन्द कर दिया और हैंडल को एक तार से बाँध दिया।

"वह तार क्यों है ?" हमने प्रश्न किया।

"जिससे लुटेरे अन्दर न आ सकें।"

हम उस पर हँसे— 'डरो मत, यहाँ आस पास कोई डाकू नहीं हैं," हमने उसे बताया।

"मैं डरता नहीं हूँ," उसने कहा। "किन्तु तुम जानते नहीं कब क्या हो जाय। अच्छा है हम लोग खिड़कियाँ भी बन्द करलें।"

हम उस पर हँसे किन्तु सुरक्षा के लिए हमने खिड़कियां बन्द

कर लीं। हमने अपने बिस्तर पास-पास सरका लिये जिससे हम कमरे में बिना जोर से बोले बातें कर सकें।

मिश्का ने कहा कि वह दीवाल के पास सोवेगा।

"तुम चाहते हो कि लुटेरे पहले हमें जान से मारें, यही ?" कोस्त्या बोला। "ठीक है, हम डरते नहीं हैं।"

किन्तु उससे भी उसको सन्तोष नहीं हुआ। बिस्तर पर जाने से पहले वह चौके से एक छुरी ले आया और तकिये के नीचे छिपा कर रख ली। कोस्त्या और मैं अपनी-अपनी ओर से अट्टहास करते रहे।

"देखो, कहीं गलती से हम लोगों के सर न उड़ा देना।" हमने उससे कहा। "अँधेरे में तुम हम लोगों को ही कहीं डाकू न समझ जाओ ?"

"तुमको डरने की आवश्यकता नहीं है," मिश्का ने कहा। "मैं कोई गलती नहीं करूंगा।"

हमने लैम्प बुझा दिया और कम्बलों में गोल होगये तथा अंधेरे में एक दूसरे को कहानियाँ सुनाते रहे। मिश्का ने पहले सुनाई, मैं दूसरा था—और तब कोस्त्या ने अपने मौके पर ऐसी लम्बी व डरावनी कहानी सुनायी कि मारे डर के मिश्का ने अपना सिर कम्बल में छिपा लिया। कोस्त्या ने मिश्का को और डराने के लिये दीवाल में खुट्-खुट् करना प्रारम्भ कर दिया और कहा कि द्वार पर कोई है। वह इतनी देर तक खुट्-खुट् करता रहा कि थोड़ा मैं भी डरा और उससे उसको बन्द कर देने को कहा।

अन्त में कोस्त्या ने मूर्ख बनाना बन्द कर दिया।

मिश्का शान्त होकर सोगया। किन्तु किसी कारणवश कोस्त्या और मैं न सो सके। उस समय ऐसा सुनसान था कि मिश्का के पत्तियों के सन्दूक में खरखराने का स्वर सुनाई दे रहा था। कमरे में इतना अंधेरा था जितना किसी अँधेरी से अँधेरी गुफा में हो क्योंकि चारों ओर की खिड़कियाँ भी बन्द थीं। हम लोग बहुत देर तक, उस नीरवता को सुनते और अन्धकार में एक दूसरे से फुसफुसाहट करते, लेटे रहे। अन्त में एक खिड़की से प्रकाश की क्षीण रेखा प्रकट हुई। दिन निकल रहा था। मैं निश्चिय ही सो गया था क्योंकि जब मैं उठा तो कोई खट्-खट् कर रहा था!

थप-थप ! खटखट !

मैंने कोस्त्या को जगाया।

"द्वार पर कोई है ?"

"वह कौन हो सकता है ?"

"श् श् सुनो !"

एक मिनट तक सब शान्त रहा। तव वह पुनः सुनाई दिया—थप-थप।

"हाँ, कोई खटखटा रहा है," कोस्त्या बोला। "वह कौन हो सकता है।"

साँस रोक कर हम प्रतीक्षा करते रहे। अब कोई खट्खट् नहीं थी अतः हमने सोचा कि हम सम्भवतः स्वप्न देख रहे थे।

और तब हमने फिर सुना : थप-थप खट्-खट्।

"शिः शिः" कोस्त्या फुसफुसाया। "हमको ऐसा बहाना करना चाहिये जैसे हम सुन ही नहीं रहे हैं। सम्भवतः तब वे चले जायेंगे।"

हम कुछ देर प्रतीक्षा करते रहे और तब थप-थप फिर अन्दर आई : थप-थप ।

"ओह, दोस्त ! वे अभी भी वहाँ हैं ।" कोस्त्या बोला ।

"हो न हो, कोई शहर से आया है ?" मैंने कहा ।

"इस समय कौन आवेगा ? नहीं, हमको अभी भी लेटा रहना चाहिए और सुनना चाहिए । यदि अब वे खट्खटायेंगे तो हम पूछेंगे कि वे कौन हैं ।"

हमने प्रतीक्षा की किन्तु किसी ने नहीं खटखटाया ।

"अवश्य चला गया होगा," कोस्त्या बोला ।

हम लोग ज्यों ही कुछ ठीक हो रहे थे कि फिर थप...अ···थप-थप ।

मैं तत्पर हुआ और बिस्तर पर बैठ गया । "चलो," मैंने कहा । "हम चलें और पूछें कि वह कौन है ।"

हम द्वार तक सरकते-सरकते गये ।

" वहाँ कौन है ?" कोस्त्या ने प्रश्न किया ।

परन्तु कोई उत्तर न आया ।

"कौन है ?" कोस्त्या ने दोहराया—इस बार कुछ ऊँचे स्वर से ।

मौन ।

"कौन है ?"

कोई उत्तर नहीं ।

"अवश्य लौट गया होगा," मैंने कहा ।

हम लौट आये और बिस्तर पर पहुँचे ही होंगे कि—

खट्-खट्, खट्-खट् खट्-खट ।

हम द्वार की ओर लपके—"वहाँ कौन है ?"

सन्नाटा ।

"क्या वह बहरा है, या क्या बात है ?" कोस्त्या ने कहा । हम खड़े-खड़े सुनते रहे । हमने सोचा कोई वस्तु बाहर खड़खड़ कर रही है ।

"वह कौन है ?"

किसी ने कोई उत्तर नहीं दिया ।

हम फिर बिस्तरों पर लौट गये और सांस थामे हुए बैठे रहे ।

तभी अचानक, अपने सिर के ऊपर, छत पर से खड़खड़ाहट का स्वर आया और कोई वस्तु चरचराई—टीन की छत पर विस्फोट ।

"वे लोग छत पर चढ़ गये हैं ।" कोस्त्या बोला ।

धक्का ! चरचराहट ! धक्का ! इस बार स्वर छत से दूर स्थान से आया ।

"स्वर ऐसे हैं जैसे वे लोग दो हैं," मैंने कहा । "मुझे आश्चर्य है कि वे लोग छत पर क्या कर रहे हैं ?"

हम बिस्तर के बाहर कूदे, अगले कमरे का द्वार बन्द किया जो बरसाती में खुलता था । हमने एक खाने की मेज द्वार से सटाकर लगा दी और उसके बाद एक छोटी मेज़ और तब बिस्तरा । किन्तु छत पर धक्के की आवाज़ बराबर होती रही—कभी एक ओर, कभी दूसरी ओर और कभी दोनों साथ-साथ । ऐसा प्रतीत हुआ कि ऊपर वे तीन थे । और तभी किसी ने द्वार पर भी खटखटाना प्रारम्भ कर दिया ।

"ऐसा प्रतीत होता है कि कोई हमें डराने के लिए वैसा कर रहा है," मैंने कहा ।

"हमको जाना चाहिये और उन पर झपटना चाहिए और

हमको जगाये रखने का अच्छा सबक देना चाहिए," कोस्त्या बोला।

"लग रहा है कि कहीं वे ही हमें अच्छा सबक न दें। सम्भव है वे वहाँ बीस हों।"

इस समय तक मिश्का गहरी नींद में सो रहा था। उसने कुछ भी नहीं सुना था।

"अच्छा हो हम उसे जगायें," मैंने सुझाया।

"नहीं! उसे सोने दो," कोस्त्या ने कहा। "तुम जानते हो कि वह कितना डरपोक है। वह अपनी ही ठिठोली से डर जायगा।"

जहाँ तक हमारा सम्बन्ध था, हम नींद छोड़ने को तत्पर थे। अन्त में कोस्त्या वह सहन न कर सका। वह बिस्तर पर चढ़ा और बोला :

"मैं इस सब शैतानी से तो तंग आ गया। वे गधे छत पर अपनी गर्दन काट डालें, हम से मतलब। मैं तो सोने जा रहा हूँ।"

मैंने मिश्का के तकिये के नीचे से छुरी निकाल ली और अपने बराबर रख ली और चेष्टा करके लेटने का प्रयत्न करने लगा। सिर के ऊपर के स्वर धीरे-धीरे मन्द पड़ गये, केवल इतना शेष रहा जैसे पानी की बूँदें टीन को छत पर टप-टप पड़ रही हों। मैं सो गया।

तब द्वार पर एक तीव्र धमाका हुआ और हम जग गये। उस समय सब तरफ धूप फैल चुकी थी और बाहर अच्छी चहल-पहल थी। मैंने चाकू निकाला और द्वार की ओर लपका।

"वहाँ कौन है?" मैं चिल्लाया।

"ऐ लड़को ! द्वार खोलो। क्या बात है ? हम लोग आध घंटे से खटखटा रहे हैं !" वह वित्या था, हमारा पायनियर नेता।

मैंने द्वार खोला और सब लड़के कमरे में भर गये। वित्या ने छुरी देखी।

"वह किस कारण से है ?" उसने प्रश्न किया—"और इस सब बन्दोवस्त का यहाँ क्या मतलब है ?"

कोस्त्या और मैंने रात्रि में जो कुछ हुआ सब कह सुनाया। किन्तु लड़कों ने हमारा विश्वास नहीं किया। वे हम पर हँसते रहे और कहने लगे कि तुम लोगों ने केवल भय के कारण वह सब सोच लिया होगा। कोस्त्या और मैं इतने रोष में थे कि चिल्लाने को जी चाह रहा था।

तत्काल ही सिर पर एक खड़-खड़ सुनायी दी।

"हुश !" अपनी उँगलियाँ उठाते हुये वित्या ने कहा।

लड़के शान्त हो गये। खट्-खट् ! चहल पहल की आवाज स्पष्ट आ रही थी। लड़कों ने एक दूसरे को देखा। कोस्त्या और मैंने द्वार खोला और बाहर गये। और सब भी पीछे आये। हम मकान से थोड़ी दूर तक गये और छत पर झाँका। वहाँ एक साधारण-सा कौआ बैठा था। वह किसी वस्तु पर चोंच मार रहा था और उसकी चोंच से टीन की छत पर टप-टप-टप का स्वर निकल रहा था।

जब लड़कों ने कौए को देखा तो हँसी में फूट पड़े और कौआ भय से पंख फैला कर उड़ गया।

कुछ लड़कों ने एक सीढ़ी पकड़ी और छत पर चढ़ गये।

"छत पिछले साल के 'रोवन' फलों से ढकी है!" उन लोगों ने हमसे चिल्ला कर कहा। "उसी पर कौआ चोंच मार रहा था।"

हमने आश्चर्य किया कि वे वहाँ कैसे पहुँच गये। तब हमने देखा कि 'रोवन' के वृक्ष की टहनियाँ मकान पर फैली हुई हैं। शरद् ऋतु में जब रोवन पके होंगे तव सीधे छत पर आ गिरे होंगे।

"किन्तु, तब द्वार किसने खटखटाया ?" मैंने प्रश्न किया।

"हाँ," कोस्त्या ने कहा। "कौए हमारे द्वार पर टप-टप क्यों कर रहे थे ? मैं सोचता हूँ कि तुम कहोगे कि वे अन्दर आना चाहते थे और हमारे साथ रात्रि व्यतीत करना चाहते थे।"

उसका किसी ने कोई उत्तर नहीं दिया। वे सब दौड़ कर द्वार का निरीक्षण करने गये। वित्या द्वार की सीढ़ी से एक रोवन-फल उठा लाया।

"उन्होंने द्वार को कदापि नहीं खटखटाया। वे द्वार की चौखट से 'रोवन' उठा रहे थे और तुमने सोचा कि वे द्वार पर थाप दे रहे हैं।"

हमने देखा, निश्चित ही वहाँ कुछ 'रोवन' के फल पड़े हुये थे।

लड़के हम पर बहुत हँसे। "क्या ये लोग वहादुर नहीं हैं! एक कौए से तीन-तीन घबड़ा गए।"

"हम लोग केवल दो थे," मैंने कहा। "मिश्का बराबर सोता रहा।"

"तुम ठीक हो, मिश्का!" लड़के चिल्लाए। "तो केवल तुम्हीं अकेले थे जो कौए से नहीं डरे ?"

"मैं कदापि नहीं डरा।" मिश्का बोला—"मैं सोया फिर मैंने कुछ नहीं सुना।"

तब से मिश्का को बहादुर समझा जाने लगा और कोस्त्या व मुझको डरपोक।
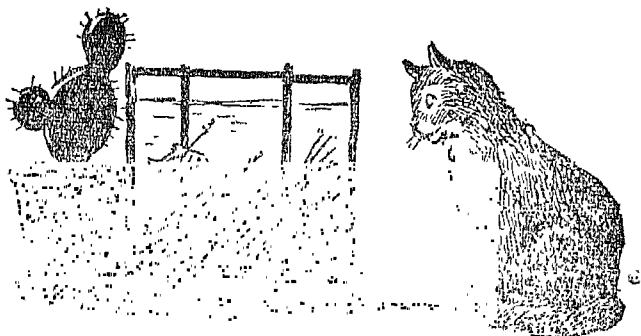
कौआ-मछली

वितालिक की मां ने उसको एक कौआ-मछली का उपहार दिया और उसके रहने के लिये एक जल-पात्र। वह एक सुन्दर छोटी मछली थी। पहले तो वितालिक उसके लिये बड़ा उत्तेजित रहता—वह उसे खाना खिलाता और बर्तन में पानी बराबर बदलता; किन्तु कुछ समय बाद वह उसके प्रति उदासीन हो गया; कभी-कभी तो वह उसको खाना खिलाना ही भूल जाता।

वितालिक के पास एक बिल्ली का बच्चा भी था जिसका नाम मुरजिक था। उस भूरी रोंयेदार बिल्ली के बड़ी-बड़ी हरी आँखें थीं। मछली को अपने तैरने के बर्तन में देखना मुरजिक को बहुत

प्रिय था। वह उस बर्तन के पास अपनी आँखें उस मछली पर गढ़ाये घन्टों बैठी रहती।

"तुम अपनी मुरजिक का ध्यान रखना," वितालिक की माँ ने उसे चेतावनी दी। "वह किसी भी दिन तुम्हारी मछली को खा जायगी।"

"नहीं, वह नहीं खायगी," वितालिक बोला। "मैं देखूँगा कि वह नहीं खा सकती।"

एक दिन जब उसकी माँ बाहर थी, वितालिक का मित्र सरयोभा उसे देखने आया। जब उसने मछली देखी तो बोला :

"यह तो बड़ी अच्छी मछली है। यदि तुम चाहो तो इसके लिये मैं तुम्हें एक सीटी दे सकता हूँ।"

"मुझे सीटी क्या करनी है?" वितालिक ने उत्तर दिया। "मेरा ख्याल है, एक मछली सीटी से कहीं अच्छी है।"

"नहीं, ऐसा नहीं है। तुम सीटी बजा सकते हो किन्तु मछली का क्या करोगे?"

"तुम उसको अपने बर्तन में तैरते देख सकते हो। और सीटी बजाने से वह अधिक मनोरञ्जक है।"

"मूर्ख," सरयोभा ने कहा। "बिल्ली कभी भी तुम्हारी मछली को चबा सकती है और तब न तुम्हारे पास मछली रहेगी न सीटी। किन्तु बिल्ली सीटी नहीं खा सकती क्योंकि वह लोहे की बनी होती है।"

"माँ मुझे चीजों के लिये तंग नहीं करती है। यदि मैं चाहूँगा तो वह मुझे एक सीटी खरीद देगी।"

"तुमको ऐसी कभी नहीं मिलेगी," सरयोझा ने कहा। "तुम ऐसी सीटी दूकानों से नहीं खरीद सकते। यह एक पुलिस के सिपाही वाली असली सीटी है। जब मैं अपने आंगन में जाता हूँ और इसे बजाता हूँ तो प्रत्येक सोचता है कि वहाँ पुलिस है।"

सरयोझा ने अपनी जेब से सीटी निकाली और बजाई जिससे बड़ी तेज आवाज निकली।

"मुझे भी बजाने दो," वितालिक ने अनुरोध किया।

उसने सीटी ली और उस पर फूँक लगाई। उसमें से बड़ी तेज आवाज निकली। वितालिक बहुत प्रसन्न हुआ। वह सीटी लेना चाहता था किन्तु साथ ही मछली को भी नहीं देना चाहता था।

"यदि मैं बदल लूं तो तुम मछली कहाँ रक्खोगे? तुम्हारे पास जल-पात्र तो है नहीं।"

"मैं उसे मुरब्बे के बर्तन में रक्खूंगा। मेरे पास घर पर एक बहुत बड़ा बर्तन है।"

"अच्छा, ले लो," अन्त में वितालिक ने बात मानकर कहा।

बर्तन से मछली निकालने में बहुत कठिनाई हुई। वह बार-

बार उनके हाथ से फिसल जाती। अन्त में, सब पानी को भूमि पर गिरा देने के अनन्तर ही सरयोझा उसे पकड़ सका, और उस कार्य में उसने कोहनी तक अपनी बांह भिगो ली।

"मैंने पकड़ ली!" वह चिल्लाया। "जल्दी एक गिलास पानी लाओ।"

वितालिक पानी का एक मग्घा भर लाया और सरयोझा ने मछली उसमें डाल दी। तब दोनों मित्र, सरयोझा के घर गये। मुरब्बे का वर्तन उतना बड़ा नहीं था जितना सरयोझा ने बताया था, और बर्तन की अपेक्षा मछली के लिए उसमें कम स्थान था। लड़कों ने खड़े होकर मछली को वर्तन में इधर-उधर लेटते देखा। सरयोझा बहुत प्रसन्न था किन्तु वितालिक उदास हो रहा था। वह खिन्न था क्योंकि उसने अपनी मछली दे दी थी और इससे अधिक महत्वपूर्ण था यह कि वह माँ से यह कहने में डर रहा था कि उसने एक सीटी से मछली बदल ली है।

"सम्भवतः वह उस पर न ध्यान दे," सोचते हुए वह घर गया।

किन्तु जैसे ही वह घर पहुँचा उसकी माँ ने पूछा: "तुम्हारी मछली कहाँ है?"

वितालिक नहीं समझ पा रहा था कि क्या उत्तर दे।

"क्या मुरजिक ने उसे खा लिया?"

"मुझे पता नहीं," वितालिक अपने मुंह में ही बुदबुदा गया।

"यह बात," उसकी माँ ने कहा। "वह उस समय की प्रतीक्षा करती रही जब सब लोग बाहर जाँय, उसको बर्तन में पकड़ा और खा गयी। देखो, सब पानी फैला पड़ा है। कपटी-बिल्ली! वह कहाँ है? उसे तुरन्त ढूँढ़ो।"

"मुरज़िक ! मुरज़िक !" वितालिक ने पुकारा, किन्तु मुरज़िक का कहीं पता न था।

"वह खिड़की से बाहर कूद गयी होगी," उसकी माँ ने कहा। "बाहर जाकर देखो।"

वितालिक ने अपना कोट पहना और बाहर गया।

"ओह प्रिय ! अब मैं क्या करूँ ? अब मेरे कारण मुरज़िक छिपी रहेगी," वह बहुत दुःखी होकर सोच रहा था।

वह लौट कर जाने ही को था तभी मुरजिक स्वतः एक खुले स्थान से निकल कर आयी और द्वार की ओर भाग कर तहखाने की ओर बढ़ी।

"मुरजिक, डार्लिङ्ग ! घर मत जाना," वितालिक बोला। "ममी तुझे पीटेंगी।"

मुरज़िक ने वितालिक के पैरों पर अपने शरीर को फड़फड़ाया और रगड़ा और बड़ी कोमलता से म्याऊँ कहा।

"तू, मूर्ख बिल्ली, समझती नहीं, अन्दर मत जाना," वितालिक बोला।

किन्तु मुरज़िक ने नहीं सुना। वह वितालिक को प्रसन्नतापूर्वक देख रही थी और अपने आप को उसके पैर से रगड़ रही थी और अपने सिर से बड़ी कोमलता से उसे हिला रही थी जैसे कह रही हो जल्दी से द्वार खोल दो। वितालिक ने उसको वहाँ से घसीटने का प्रयत्न किया किन्तु वह अड़ी रही। वितालिक ने तुरन्त द्वार खोला और मुरजिक को इतना समय मिले कि वह अन्दर जाय, इसके पूर्व ही वितालिक ने अन्दर से द्वार बन्द कर लिया।

"म्याऊँ।" मुरज़िक वहाँ से चिल्लाई।

वितालिक ने सिर बाहर निकाल कर कहा—"चुप रह, तू मूर्ख। माँ सुन लेंगी तो तू पिटेगी।"

उसने बिल्ली को पकड़ लिया और मकान के अन्दर के एक छेद में उसे घुसेड़ता रहा। मुरज़िक अपने चारों पंजों से विरोध करती रही। वह तहखाने में लौट कर नहीं जाना चाहती थी।

"अन्दर घुस, मूर्ख," वितालिक बिगड़ा "और वहीं रुकना।"

अन्त में वह उठा और बिल्ली के बच्चे को छेद के अन्दर घुसेड़ दिया—केवल पूँछ को छोड़कर जो अब भी बाहर लटक रही थी। थोड़ी देर तो वह रोष में पूँछ हिलाती रही, तदनन्तर विलीन हो गयी। वितालिक प्रसन्न था। वह सोच रहा था कि मुरज़िक ने यह जान लिया है कि उसे तहखाने में चुप बैठना चाहिये। किन्तु दूसरे ही मिनट मुरज़िक ने अपना सिर बाहर निकाला।

"तू शैतान, कहाँ जा रही है" उस छेद को अपने हाथ से बन्द करते हुए वितालिक फुसफुसाया "क्या मैंने यह नहीं कहा था कि तू इस समय घर नहीं जा सकती।"

"म्याऊँ!" मुरज़िक चिल्लाई।

"अपने आप म्याऊँ-म्याऊँ कर," वितालिक बोला, "ओह प्यारी मुरज़िक! मैं तेरे लिये क्या करूँ?"

उस छेद को बन्द करने के लिए उसने कोई वस्तु अपने चारों ओर देखी। वहाँ एक ईंट पड़ी हुई थी। वितालिक ने उसे उठा लिया और तहखाने के बाहर के छेद पर लगादी।

"देखो," उसने कहा। "अब तुम बाहर नहीं जा सकतीं। तुम कुछ देर वहाँ रुको। कल माँ मछली के सम्बन्ध में भूल जायँगी और तब मैं तुम्हें जाने दूँगा"

वितालिक घर गया और अपनी माँ से बताया कि उसको मुरज़िक कहीं नहीं मिली।

"कोई बात नहीं," मम्मी ने कहा, "वह आवेगी ही। इसके लिये मैं उसे छोड़ूँगी नहीं।"

भोजन के समय वितालिक बड़ा दुःखी था। वह कुछ भी नहीं खाना चाहता था।

"यहाँ मैं खाना खा रहा हूँ और वहाँ तहखाने में ग़रीब मुर-ज़िक बैठी होगी," उसने सोचा।

जब उसकी माँ खाने की मेज से उठ गई तब उसने अपने भोजन का कुछ भाग लिया, अपनी जेब में छिपाया और तहखाने की ओर भागा। उसने ईट को एक ओर सरकाया और धीरे-धीरे बोला "मुरज़िक ! मुरज़िक !!"

किन्तु मुरज़िक ने उत्तर नहीं दिया। वितालिक झुका और छेद से अन्दर झाँका किन्तु वहाँ बहुत अँधेरा था और कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था।

"मुरज़िक ! मुरज़िक !!" वितालिक चिल्लाया। "अब बाहर आ जाओ। मैं तुम्हारे लिए बहुत अच्छा खाना लाया हूँ।"

किन्तु मुरज़िक नहीं आई।

"तुम नहीं आओगी ? ठीक है, भूखी ही अन्दर रहो।" विता-लिक बोला और अहंकारपूर्वक घर लौट गया।

बिना मुरज़िक के घर में वह बहुत अकेलापन अनुभव कर रहा था। साथ ही उसका हृदय भारी-भारी हो रहा था क्योंकि उसने अपनी माँ को धोखा दिया था।

उसकी माँ ने देखा कि वह उदास है।

"प्रसन्न हो ओ, मैं तुम्हारे लिए दूसरी मछली ला दूँगी," उसने कहा।

"मुझे मछली नहीं चाहिए," उसने उत्तर दिया।

वह चाह रहा था कि माँ से सब कुछ कह दे किन्तु साहस नहीं हो रहा था और उसने कुछ नहीं कहा। तभी बाहर खरोचने की सी धीमी आवाज आ रही थी और तब तीव्र—"म्याऊँ।"

वितालिक झाँका और देखा कि मुरज़िक खिड़की की चौखट पर बैठी है। वह तहखाने से बाहर कैसे आ गयी ?

"आहा !" वितालिक की माँ चिल्लायी। "वह है बदमाश ! इधर आ, गन्दी बिल्ली !"

उसने खिड़की खोल दी और मुरज़िक अन्दर आ गयी। उसने उसे पकड़ना चाहा किन्तु वह समझ गयी कि कुछ गड़बड़ है अतः मेज के नीचे दुबक गयी।

"ओह ! चालाक जानवर," वितालिक की माँ ने कहा। "वह जानता है कि वह दोषी है। वितालिक उसे पकड़ने में सहायता करो।"

वितालिक मेज के अन्दर रेंग गया। जब मुरज़िक ने उसे देखा तो वह सोफे के नीचे छिप गई। वितालिक प्रसन्न था। यों कर्तव्य-रूप में वह उसके पीछे रेंग रहा था किन्तु मुरज़िक को भागने का अवसर देने के लिए हल्ला मचाता रहा। मुरज़िक सोफे से बाहर निकल आयी और वितालिक उसके पीछे समूचे कमरे का चक्कर लगाता रहा।

"इतनी आवाज मत करो। इस तरह तुम उसे नहीं पकड़ सकते।" उसकी माँ ने कहा।

जहाँ मछली वाला खाली बर्तन रक्खा था, मुरजिक उस खिड़की पर फांद गई और ज्यों ही वह लौट कर कूदने वाली थी कि अपना संतुलन खो बठी और एक झटके के साथ वह बर्तन में घुस गई। और अब वह काँपती हुई बाहर आई—माँ ने उसकी गर्दन पकड़ रक्खी थी।

"अब मैं तुझको अच्छा सबक दूँगी।"

"माँ! माँ! कृपा करके उसे मारो मत!" वितालिक चिल्लाया और आँसुओं में फूट पड़ा।

"अब इस पर दया मत करो। उसने मछली पर दया नहीं की, या की?"

"उस पर दोष मत दो, माँ।"

"क्या इसका कसूर नहीं है? तब किसने मछली खाई?"

"इसने नहीं।"

"तब किसने?"

"वह मैं था......"

"क्या? तुमने मछली खा ली?"

"नहीं, मैंने उसे खाया नहीं। मैं......मैंने एक सीटी से उसे बदल लिया।"

"किससे?"

"इससे।" वितालिक ने सीटी अपनी जेब से निकाल कर माँ को दिखाई।

"तुम नटखट लड़के ! तुमको शर्म आनी चाहिये।"

"मुझे यह ध्यान नहीं था, माँ !" सरयोझा ने कहा : "'लाओ हम बदलें' और मैंने बदल ली।"

"मेरा कहना था कि तुमने मुझसे सच बात नहीं कही इसकी तुम्हें शर्म आनी चाहिये थी। मैंने मुरज़िक को दोषी बनाया। क्या यह अच्छा है कि अपना दोष दूसरों पर मढ़ो ?"

"मैं डर रहा था कि तुम मुझ पर नाराज होगी।"

"केवल डरपोक ही सच बात कहने से डरते हैं। यदि मैंने मुरज़िक को पीटा होता तो तुम्हें कैसा लगता ?"

"मैं अब फिर ऐसा नहीं करूँगा।"

"देखो, अब मत करना। इस बार मैं तुम्हें क्षमा किये देती हूँ क्योंकि तुमने उसे स्वीकार कर लिया है।"

वितालिक ने मुरज़िक को पकड़ा और उसे सुखाने के लिए स्टोव के पास ले गया।

मुरज़िक के बाल भीग जाने से खड़े हो गये थे और वह एक बिल्ली के बजाय सेह जैसी अधिक लगती थी। वह ऐसी दुबली लगती थी मानो हफ्ते भर से उसने खाना नहीं खाया हो वितालिक उसके लिये बड़ा दुखी था। उसने अपनी जेब से मांस का टुकड़ा निकाला और मुरज़िक के सामने मेज पर रख दिया। मुरज़िक ने उसे बड़े स्वाद से खाया और सूखने के लिये कुर्सी पर बैठ गई। क्षण भर बाद ही वह वितालिक की गोद में गुड़मुड़ी मार कर कूद पड़ी और अपनी पूरी ताकत से म्याऊँ म्याऊँ करने लगी। उसको म्याऊँ म्याऊँ से वितालिक को अपार हर्ष हुआ। यह उसकी प्रसन्नता की आवाज ही थी क्योंकि और हो ही क्या सकता था।
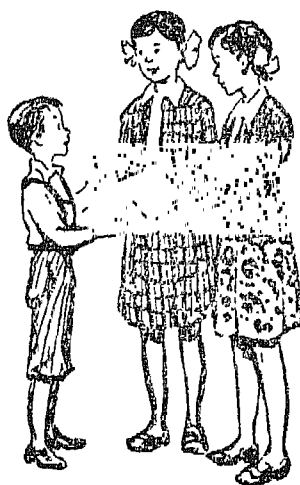
पिस्तौल

बहुत दिनों से साशा अपनी मां को उत्साहित कर रहा था कि वह उसे एक ऐसी नकली पिस्तौल दिला दे, जिससे टोपियां चलती हैं।

"मैं वैसी पिस्तौल तुम्हें नहीं दिलाऊँगी। वह खतरनाक होती है।" उसकी मां ने कहा।

"नहीं, ऐसी नहीं होती, मां।" साशा ने विरोध किया। "यदि वह गोलियाँ चलाती तब भयंकर होती, किन्तु उससे तुम किसी को मार नहीं सकतीं।"

"तुम किसी को चोट लगा दोगे या अपनी आँख में मार लोगे।"

"जब मैं उसे चलाऊँगा तो अपनी आँखें बन्द कर लूँगा।"

"नहीं, मैं नहीं दिलाऊँगी। उस नकली पिस्तौल से क्या हो जाय, क्या पता? वह सुरक्षित नहीं है। तुम उससे किसी को भी डरा सकते हो," उसकी माँ ने कहा।

और जहाँ तक माँ का सम्बन्ध था बात समाप्त हो गयी।

साशा के दो बड़ी बहनें थीं—मेरीना और इरा। अतः वह उनके पास गया और पिस्तौल के लिये प्रार्थना की।

"मुझे वह अवश्य चाहिये। मैं वादा करता हूँ कि यदि तुम मेरे लिये वैसी एक ले दोगी; तो तुम जो कहोगी मैं वही करूँगा।"

"ओह साशा," मेरीना ने कहा। "तुम बहुत सरल और छोटे बच्चे हो। जब तुम कोई वस्तु माँगते हो तो ऐसे अच्छे लगते हो जैसे समोसा किन्तु जैसे ही माँ बाहर चली जाती हैं, तुम शैतानी करते हो।

"मैं अब आगे शरारत नहीं करूँगा,। सच, अब मैं नहीं करूँगा। मैं सदा बहुत सीधा रहूँगा।"

"ठीक है," इरा ने कहा। "मेरीना और मैं इस पर विचार करेंगे। यदि तुम सत्यतापूर्वक यह वचन दोगे कि तुम आगे ठीक रहोगे तो हम तुमको एक पिस्तौल दिला सकते हैं।"

"मैं वचन देता हूँ। मैं ऐसा अच्छा रहूँगा जैसा सोना। तुम देखना।"

अगले दिन साशा की बहनें बाजार गयीं और उसके लिये पिस्तौल और एक डब्बा भर उसकी टोपियाँ ले आयीं।

जब साशा ने वह चमकदार काली पिस्तौल और टोपियों का

डब्बा देखा तो वह प्रसन्नता से उछल पड़ा और सारे कमरे में नाचता रहा।

"ओह, मेरी प्यारी पिस्तौल! मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूँ!"

तब उसने हैंडल पर अपना नाम खोद दिया और उसे चलाना प्रारम्भ कर दिया। थोड़ी ही देर में कमरा नीला हो गया और धुँआ भर गया।

"ओह! भगवान के लिये इसे बन्द कर दो," इरा ने कहा। "जब भी यह चलती है मैं उछल पड़ती हूँ।"

"डरपोक!" साशा ने कहा। "प्रत्येक लड़की डरपोक होती है।"

"यदि तुम हमें बुरा-भला कहोगे तो हम उसे छीन लेंगे," मेरीना ने कहा।

"ठीक है, मैं बाहर जाऊँगा और लड़कों को डराऊँगा," साशा ने कहा।

वह पीछे के मैदान में गया किन्तु वहाँ लड़के थे ही नहीं। तब वह सड़क पर दौड़ा गया। और यही वह स्थान है जहाँ से हमारी वास्तविक कहानी प्रारम्भ होती है। जब साशा अपने पीछे वाले मैदान से आ रहा था तभी उसने एक बुढ़िया को सड़क पर आते देखा। जब तक वह पास न आ गयी वह चुपचाप खड़ा रहा और उसके आते ही उसने पिस्तौल दाग दी। विस्फोट! बुढ़िया उछल पड़ी और उसने हलकी सी चीख मारी।

"हे भगवान, मैं तो डर गयी!" और तब उसने घूमकर साशा को देखा।

"तो, वह तुम थे जिसने पिस्तौल चलायी ? ख़राब लड़के।"

"वह मैं नहीं था," पिस्तौल को पीठ की तरफ छिपाते हुए साशा ने उत्तर दिया।

"और ए लड़के, तुम्हें झूठ बोलने की आवश्यकता नहीं है। मैंने तुम्हें देखा है। मैं तुम्हारी रिपोर्ट पुलिस में करने जा रही हूँ।"

उसने अपनी उंगलियाँ उसके सामने हिलायीं, सड़क पार की और मोड़ पर ओझल हो गयी।

साशा डर गया। "ओह, ओह ! मैं क्या करूँ ! वह शिकायत करने पुलिस में गयी है।"

डर से काँपते हुए वह घर पहुँचा।

"तुमको क्या हुआ ?" उसको लड़खड़ाते हुए देख इरा ने

पूछा। "तुम ऐसे लग रहे हो जैसे कोई भेड़िया तुम्हारा पीछा कर रहा हो। अब तुमने क्या कर डाला ?"

"अरे.........कुछ नहीं।"

"झूठ मत बोलो। मैं देख रही हूँ कि तुमने कुछ बदमाशी जरूर की है।"

"मैंने कुछ नहीं किया। ऐसा हुआ......पिस्तौल चल गयी और वह डर गयी।"

"कौन डर गयी ?"

"वह बुढ़िया जो सड़क पर जा रही थी।"

"तुमने पिस्तौल क्यों चलाई ?"

"मुझे पता नहीं। मैंने उसे आते देखा और सोचा कि वह बड़ा मनोरञ्जक होगा। अतः मैंने घोड़ा दाब दिया।"

"उसने क्या कहा ?"

"कुछ नहीं। वह शिकायत करने पुलिस में गयी है।"

"यह, देखो। तुमने ठीक से रहने का वादा किया था और अब तुमने यह किया।"

"मुझे क्या पता था कि वह ऐसी डरपोक और दकियानूस बुढ़िया है।"

"ठहरो, अब पुलिस का आदमी तुम्हें पकड़ने आवेगा। वह तुमको बेकार पकड़ ले जायगा।"

"वह मुझे ढूँढ़ेगा कैसे ? उसे पता ही नहीं मैं कहाँ रहता हूँ। वह मेरा नाम तक नहीं जानता।"

"घबड़ाओ नहीं। वह तुम्हें ढूँढ़ लेगा। पुलिस सब कुछ जानती है।"

साशा पूरे एक घंटे भर घर पर बैठा रहा और हर मिनट

खिड़की से झाँकता रहा कि कहीं कोई पुलिसवाला आ तो नहीं रहा है। किन्तु कोई नहीं आया। कुछ देर बाद वह शान्त हुआ और चमक उठा—

"वह बुढ़िया अवश्य मुझे डराने की चेष्टा कर रही होगी।"

उसने अपनी पिस्तौल निकालने के लिये जेबों में हाथ डाला किन्तु पिस्तौल गायब थी। टोपियों का डब्बा तो वहाँ था, किन्तु पिस्तौल नहीं थी। उसने दूसरी जेब देखी, किन्तु वह भी खाली थी। तब उसने समूचे कमरे को ढूंढ़ा। उसने मेज और सोफा के नीचे देखा किन्तु वहाँ भी उसका कोई निशान न था। निराशा में साशा रोने लगा।

"मैंने उसे ठीक से रखा भी नहीं," वह सिसकियाँ भरता रहा। "ऐसी अच्छी पिस्तौल। और अब वह चली गयी।"

"सम्भवतः तुम उसे मैदान में छोड़ आये?" इरा ने सुझाया।

"मैंने उसे द्वार पर गिरा दिया होगा," साशा बोला। "मैं जाता हूँ और देखता हूँ।"

वह बाहर सड़क पर गया किन्तु पिस्तौल का कहीं पता नहीं था।

"निश्चय, किसी ने उसे उठा लिया," उसने सोचा। तभी चौराहे पर से एक सिपाही आया और सीधा उसके मकान की ओर बढ़ा।

"वह मेरे लिए आ रहा है। अन्त में उस बुढ़िया ने रिपोर्ट कर ही दी," साशा ने सोचा और जितना तेज भाग सकता था भागकर घर में घुस गया।

"हाँ, तुमको मिल गयी?" उसकी बहनों ने पूछा।

"शिः" साशा ने चुप करते हुए कहा। "एक पुलिसवाला आ रहा है।"

"एक मिलिशिया-मैन ?"

"हाँ, वह यहीं आ रहा है।"

"उसे तुमने कहाँ देखा ?"

"बाहर सड़क पर।"

मेरिना और इरा उस पर हँसीं। "छोकरे, डरपोक ! बाहर एक मिलिशियामैन को देखा और डर गये। वह सम्भवतः इस ओर नहीं आ रहा होगा।"

"यदि वह आ भी रहा होगा तो मैं डरता नहीं," साशा ने बहादुरी से कहा। "मुझे उसकी चिन्ता नहीं।"

तत्क्षण ही बाहर खट् खट् के साथ पैरों की आवाज़ सुनाई दी और द्वार की घंटी बजी। मेरीना और इरा द्वार खोलने चलीं। साशा ने गैलरी में अपना सिर निकाला और सिसकारी भरते हुए कहा, "उसे अन्दर मत आने देना।"

किन्तु मेरीना द्वार खोल चुकी थी। निश्चित ही, प्रवेश द्वार पर एक पुलिसवाला खड़ा था। उसकी पोशाक के पीतल के बटन स्पष्ट दीख रहे थे। साशा अपने हाथों और घुटनों के बल सरक कर सोफा के अन्दर रेंग गया।

"क्या यही मकान नं० ६ है ?" उसने पुलिसवाले को पूछते हुए सुना।

"नहीं," इरा ने कहा। "यह नं० १ है। नं० ६ आगे के मकान का है, दाहिनी ओर।"

"धन्यवाद," पुलिसवाले ने कहा।

साशा ने सन्तोष की साँस ली और जैसे ही बाहर निकलने को हुआ कि पुलिसवाले ने पूछा :

"जरा बताइये, क्या उस मकान में कोई लड़का है जिसका नाम साशा है ?"

"हाँ," इरा ने कहा।

"उसी को मैं चाहता हूँ," पुलिसवाले ने कहा और सीधा कमरे में घुस आया।

जब लड़कियाँ अन्दर आयीं तो उन्होंने देखा कि साशा गायब था। मेरीना ने सोफा के नीचे झाँका किन्तु साशा ने बड़ी जोर से सिर हिलाया और उससे संकेत किया कि वह उसे बतावे नहीं।

"हाँ, और तुम्हारा साशा कहाँ है ?" पुलिसवाले ने प्रश्न किया।

इस समय तक लड़कियाँ भी डर गयी थीं और सोच रही थीं कि क्या कहें।

अन्त में मैरीना ने कहा : "वह......अरे, वह अभी घर पर नहीं है। वह......हां, वह बाहर खेलने गया है।"

"तुम उससे क्या चाहते हो ?" इरा ने प्रश्न किया "क्या तुम उसके सम्बन्ध में कुछ जानते हो ?"

"मैं सब तरह की बातें जानता हूँ," पुलिस वाले ने कहा। "मैं जानता हूँ कि उसका नाम साशा है। मैं यह भी जानता हूँ कि उसके पास एक बिलकुल नयी नकली पिस्तौल है; और यह कि अब वह उसके पास नहीं है।"

"वह सब जानता है।" साशा ने मन में सोचा !

वह इतना घबड़ा रहा था कि उसकी नाक फूलने लगी और वह अपने को रोके इसके पहले ही उसे छींक आगयी।

"वह कौन है ?"पुलिस वाले ने विस्मय से पूछा।

"वह हमारा कुत्ता है," मैरीना ने जल्दी से कह दिया।

"वह सोफा के अन्दर क्या कर रहा है ?"

"ओह ! वह सदा सोफे के नीचे ही सोता है," मैरीना कहती गयी।

"सच। और उसका नाम क्या है ?"

"ओ······बाबिक," चुकन्दर की जड़ की तरह लाल होते हुये मैरीना ने उत्तर दिया।

"बाबिक ! बाबिक ! हल्लो, ऐ बाबिक !" पुलिस वाले ने पुकारा और सीटी दी। "वह बाहर क्यों नहीं आता है, मुझे आश्चर्य है ? उसने पुनः सीटी बजायी।" नहीं आना चाहता। विचित्र कुत्ता ! वह किस नस्ल का है ?"

"अरे······वह······हाँ," मैरीना ने समस्त जीवन किसी नस्ल का नाम नहीं सुना था। "वह······तुम क्या पुकारते हो। बहुत अच्छी नस्ल······ओह, हाँ, एक डोबरमैंन पिन्सचर।"

"यह बड़ी अच्छी नस्ल है," एक बड़ी मुस्कान सहित पुलिस वाले ने कहा। "मैं उस नस्ल को अच्छी तरह जानता हूँ। उनके चेहरे पर लम्बे-लम्बे बाल होते हैं।"

वह झुका और सोफे के नीचे झाँका। साशा ने उसे देखा।
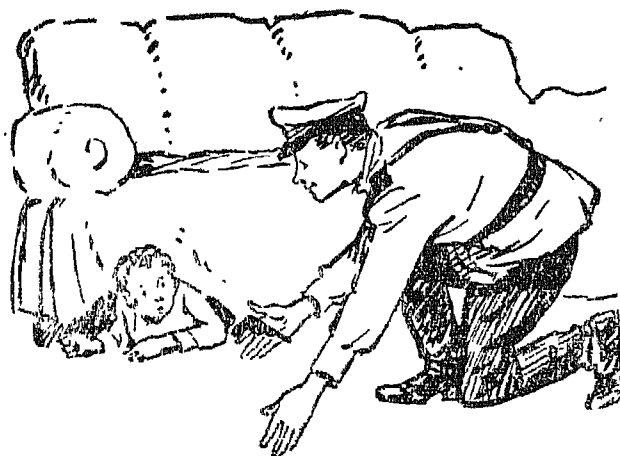
उसकी आंखें डर से गोल हो रही थीं। इस बार पुलिस वाले ने पुनः आश्चर्यचकित होकर सीटी बजायी।

"तो, यही तुम्हारा 'डोबरमैन पिन्सचर' है ? हः लड़के, तुम सोफे के नीचे क्या कर रहे हो ? बाहर आओ ! किसी तरह तुम पकड़े गये।"

"मैं नहीं आऊँगा," साशा चिल्लाया।

"क्यों नहीं ?"

"क्योंकि तुम मुझे पुलिस-स्टेशन ले जाओगे।"

"क्यों ?"

"उस बुढ़िया के लिये।"

"कौन सी बुढ़िया ?"

"वही, जिसको मैंने पिस्तौल से डरा दिया था।" पुलिसवाले ने अपनी भौंहें ऊपर उठायीं। "यह क्या कह रहा है ?"

"यह बाहर अपनी पिस्तौल से खेल रहा था और एक बुढ़िया इसके बराबर से निकली; तभी इसने पिस्तौल चला दी। और वह डर गयी," इरा ने समझाया।

"तब यह इसी की होगी ?" पुलिसवाले ने एक चमकदार छोटी पिस्तौल अपनी जेब से निकाल कर दिखाते हुये कहा।

"यह इसी की है।" इरा ने कहा। मैरीना और मैं इसके लिये खरीद कर लाये थे और इसने खो दी। यह तुमको कहाँ मिली ?"

पीछे मैदान में, तुम्हारे द्वार के निकट। हाँ, लड़के, उस बुढ़िया को डराने में तुम्हारा क्या लाभ था ?" पुलिसवाले ने साशा के सामने झुकते हुये, जो अभी भी सोफे में चिपका हुआ था, कहा।

"मैं वैसा नहीं चाहता था।"

"तुम सच नहीं कह रहे हो। मैं तुम्हारी आंखों को देख सकता

हूँ। यदि तुम सच बोलोगे तो मैं तुम्हें तुम्हारी पिस्तौल लौटा दूंगा।"

"और तुम मुझे पुलिस स्टेशन भी नहीं ले जाओगे?"

"नहीं।"

"मैं उसे डराना नहीं चाहता था। किन्तु मैं केवल यह देखना चाहता था कि वह डरती है या नहीं।"

"किन्तु लड़के, यह ठीक नहीं है। मुझे तुमको सचमुच पकड़कर बन्द कर देना चाहिये था, किन्तु मैंने वादा कर लिया है, अतः अब नहीं पकड़ूंगा। किन्तु अब कभी तुम्हें ऐसी शैतानी करते देखा, तो ......अब बाहर आओ। मैं तुम्हें तुम्हारी पिस्तौल दे दूंगा।"

"नहीं, जब तुम चले जाओगे, तब मैं आऊँगा।"

"तुम बड़े मजेदार हो," कहते हुये पुलिसवाला हँसा। "अच्छा, मैं जाता हूँ।"

उसने पिस्तौल मेज पर रख दी और चला गया। मैरीना उसे द्वार तक छोड़ने गयी। साशा सोफे से बाहर निकला, अपनी प्यारी पिस्तौल को झपट कर लिया और उसे चूमा।

"हुर्रे, मेरी प्यारी पिस्तौल। तो, जैसे भी हो तुम मेरे पास आ गयीं। किन्तु मुझे आश्चर्य है कि पुलिसवाले ने मेरा नाम कैसे जाना?"

"तुमने अपने आप उसे हैंडल पर लिखा था," इरा ने कहा।

तभी मैरीना लौटकर आयी और साशा पर बिगड़ी।

"तुम शैतान लड़के! जब मैं उस सारी झूठ को सोचती हूँ जो मैंने पुलिसवाले से कही थी तो मैं शर्म से मर जाती हूँ। अगली बार यदि तुम ऐसे चक्कर में फँसोगे, तो मत सोचना कि मैं बचाऊँगी।"

"मैं ऐसी उलझन में आगे नहीं फँसूंगा," साशा ने कहा। "मैं फिर किसी को नहीं डराऊँगा।"

ज़िस
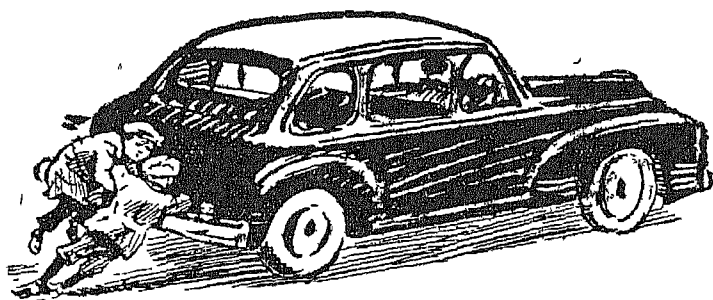
जब मिश्का व मैं छोटे थे तो बहुत चाहते थे कि किसी मोटरकार पर चढ़ें किन्तु हमें ऐसा कोई नहीं मिला जो ले जाता। जितने भी ड्राइवरों को हम जानते थे, उन सबसे हमने प्रार्थना की किन्तु वे सदा इतने व्यस्त रहते थे कि हमसे बात ही नहीं करते थे। एक दिन जब हम पीछे मैदान में खेल रहे थे, एक कार आयी। ड्राइवर उसे रोक कर बाहर निकला और कहीं चला गया। हम भागे भागे कार को देखने गये।

"यह एक 'ज़िस' है," मैंने कहा।

"नहीं, यह नहीं है, यह 'पोबेडा' है," मिश्का बोला।

"मै कहता हूँ, यह एक 'ज़िस' है।

"ग्रार भ कहता हूं कि यह 'पोबंडा' है। म सामने से कह सकता हूँ।"

"पहली बात, यह सामना नहीं है, यह 'बानेट' है। पीछे देखो उस सामान के स्थान को देखते हो ? तुमने इस प्रकार की 'पोबेडा' कभी देखी है ?"

मिश्का ने उसे देखा और कहा "हमें इस पर चढ़ना चाहिए और घूमना चाहिये।"

"नहीं," मैंने कहा। "मैं नहीं चाहता।"

"तुम डरो मत। हम थोड़ी दूर जायेंगे और तब कूद पड़ेंगे।"

तब ड्राइवर लौटा और कार में बैठ गया। मिश्का पीछे भागा, सामान के स्थान पर चढ़ गया और मुझसे फुसफुसाया, "आओ! जल्दी करो।"

"नहीं, मैं नहीं जाऊँगा।"

"आओ, डरपोक मत बनो।"

मैं दौड़ा और उसके बराबर में लद गया। कार चल दी और हम कुछ समझ सके इसके पहले ही वह सड़क पर दौड़ने लगी। मिश्का डरने लगा।

"मैं कूदने जा रहा हूँ," वह चिल्लाया।

"ऐसा साहस मत करना।" मैंने कहा। "तुम्हारे चोट ल जावेगी।"

किन्तु वह चिल्लाता रहा। "मैं कूदने जा रहा हूँ। मैं कूदने जा रहा हूँ।" और उसने सचमुच एक पैर लटका दिया। मैंने

सामने देखा, हमारे पीछे एक कार भागी चली आ रही थी। "रुको।" मैं चिल्लाया—"तुम पर वह कार चढ़ जायगी।"

सड़क पर चलने वाले हमें देखते और रुक जाते। एक पुलिस वाले ने चौराहे पर अपनी सीटी बजायी। मिश्का कूदा किन्तु वह उससे हिलग गया, उसके पैर सड़क पर घसिटने लगे। मैं नीचे झुका और उसके कोट के कालर को पकड़ कर खींचा। मैं उसे घसीटता रहा, घसीटता रहा और अन्त में उसे सामान के 'रेक' पर सुरक्षित चढ़ा लाया।

"अब कस कर पकड़े रहो, उल्लू।" मै चिल्लाया। तभी मैंने एक हँसी सुनी और देखा कि कार रुक गयी है और एक भीड़ एकत्र हो गयी है। मैं कूदा।

"ठीक है।" मैंने मिश्का से कहा, "अब तुम उतर सकते हो।" किन्तु वह हिलने-डुलने में भी डर रहा था। मुझे उसे घसीटना पड़ा। पुलिसवाला दौड़ा आया और ड्राइवर का नम्बर ले गया। ड्राइवर बाहर आया और सब उस पर चढ़ बैठे।

"तुमको शर्म आनी चाहिए। इस प्रकार पीछे लड़कों को लटकने देते हो।"

वहाँ बड़ी बहस हो रही थी और मुझे व मिश्का को भुला दिया गया था।

"चलो, हम भाग चलें," मैंने मिश्का के कान में कहा। जब कोई नहीं देख रहा था तभी हम एक गली में घूम गये और घर को भागे। जब हम पहुँचे तो हांफ रहे थे।

हमने तब अपना हाल देखा। घुटने पर मिश्का का पाजामा फट

गया था और उसका घुटना खुरच गया था तथा खून निकल रहा था। उसकी माँ ने उसे भली प्रकार डाँटा।

"मुझे अपने पाजामे की चिन्ता नहीं है, और मेरे घुटने भी जल्दी ही ठीक हो जायेंगे किन्तु मुझे उस बेचारे ड्राइवर का खेद है।" मिश्का ने कहा। "हमारे कारण वह विपत्ति में पड़ेगा। तुमने उस पुलिस वाले को नम्बर लेते देखा था न?"

"हाँ, हमें पीछे रुक कर कहना चाहिये था कि ड्राइवर का दोष नहीं है।"

"मैं कहता हूँ," मिश्का बोला। "हमको पुलिसवाले को एक पत्र लिखकर जो कुछ हुआ वह बताना चाहिये।"

मैंने सहमति प्रकट की और हम पत्र लिखने बैठ गये। उसको पूरा करने के पहले हमने बहुत से कागज खराब किये। हमने जो लिखा वह यह है:

"प्रिय कामरेड मिलिशियामेन!

तुमने एक कार का नम्बर लिया और यह उचित नहीं है। बात यह है कि नम्बर तो ठीक है किन्तु उसका नम्बर लिखना ठीक नहीं था क्योंकि ड्राइवर दोषी नहीं था। दोष तो मिश्का को और मुझे देना चाहिये। उसे पता नहीं था कि हम पीछे चढ़े हुए हैं। अतः आप उसको दंड मत दीजिये क्योंकि वह एक भला ड्राइवर है और वह सब हमारा अपराध है।"

हमने लिफाफे पर इस प्रकार पता लिखा—

वास्ते मिलिशियामेन

गोर्की स्ट्रीट और बोलशाया ग्रुजिन्सकाया वाला चौराहा।

हमने लिफाफा बन्द किया और लेटर-बक्स में डाल दिया। हम आशा करते हैं कि उसने उसे पा लिया होगा।